ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

समस्त चराचर जगत की आत्मा सूर्य

पं. सौरभ दुबे
संस्कृत विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर म.प्र

प्रस्तावना : वेदों में सूर्य को जगत की आत्मा कहा गया है। सूर्य आत्मा जगत्स्तथुषश्च ऋग्वेद समस्त चराचर जगत की आत्मा सूर्य ही है। सूर्य से ही इस पृथ्वी पर जीवन है यह आज एक सर्वमान्य सत्य है। वेदिक काल में आर्य सूर्य को ही सारे जगत का कर्ता धर्ता मानते थे। सूर्य का शब्दार्थ है सर्व प्रकाशक सर्व प्रवर्तक होने से सर्व कल्याणकारी है। ऋग्वेद के देवताओं के सूर्य महत्व स्थान है। यजुर्वेद ने चक्षों सूर्यो जायत कह कर सूर्य को भगवान का नेत्र माना है। छान्दोग्यपनिषद में सूर्य को प्रणव निरुपित कर उनकी ध्यान साधना से पुत्र प्राप्ति का लाभ बताया गया है। ब्रह्मवैर्वत पुराण तो सूर्य को परमात्मा स्वरुप मानता है। सूर्य ही संपूर्ण जगत की अंतरात्मा है। अतः कोई आश्चर्य नही कि वैदिक काल से ही भारत मे सूर्योपासना का प्रचलन रहा है। पहले यह सूर्योपासना मंत्रो से ही होती थी। बाद मे मूर्ति पूजा का प्रचलन हुआ तो यंत्र तंत्र सूर्य मन्दिरो का निर्माण हुआ। भविष्य पुराण में ब्रह्म विष्णु के मध्य एक संवाद मे सूर्य पूजा एवं मन्दिर निर्माण का महत्व समझाया गया है। अनेक पुराणों में यह आख्यान भी मिलता है कि ऋषि दुर्वाषा के आप से कुष्ठ रोग ग्रस्त श्री कृष्ण पुत्र साम्ब ने सूर्य को आराधना कर इस भयंकर रोग से मुक्ति पायी थी। प्राचीन काल मे भगवान सूर्य के मन्दिर भारत मेब ने हुए थे। उनमे आज तो कुछ विश्व प्रसिद्ध हैं। वैदिक साहित्य में ही नही आयुर्वेद ज्योतिष हस्तरेखा शास्त्रो मे सूर्य का महत्व प्रतिपादित किया गया है। श्रीमदभागवत पुराण म श्री शुक्रदेव जी महाराज के अनुसार भू लोक तथा भूलोक के मध्य मे अन्तरिक्ष लोक हे। इस भू–लोक मे सूर्य भगवान नक्षत्र तारो के मध्य मे विराजमान रह कर तीनो लोको को प्रकाशित करे है। उतरायण दक्षिणायन तथा विषुक्त नामक तीन मार्गो से चलने के कारण कर्क मकर तथा समान गतियों के छोटे बड़े तथा समान दिन रात्रि बनाते है। जब भगवान सूर्य मेष तथा तुला राशि पर रहते है तब कमशः रात्रि एक एक मास मे एक एक घड़ी बढ़ती जाती है ओर दिन घटते जाते है। जब सूर्य वृश्चिक मकर कुम्भ मीन ओर मेष मे रहते है। तब कमशः दिन प्रति मास एक एक घड़ी बढ़ता जाता है तथा रात्रि कम होती जाती है।

आकाश मे भगवान सूर्य का जितना मार्ग है उसका आधा वे जितने समय मे पार कर लेते है उसे एक अयन कहते उदय काल मे अयन के संबंध मे शास्त्रीय विवेचन होने लग गया था। ऋग्वेद मे कई स्थानों पर अयन शब्द आया है पर निश्चित रुप से यह नही कहा जा सकता है कि यह अयन शब्द सूर्य के दक्षिणायन या उत्तरायन का द्योतक है। शतपथ ब्राह्मण के निम्प पद्य से अयन के संबंध मे अवगत होता है–

वसंतों ग्रीष्मों वर्षा। ते देवा ऋतवः षरद्धेमन्तः शिशिरस्ते पितरो स सूर्य यत्रोदगावर्तते। देवेषु तर्हि भवति यत्र दक्षिणा वर्ततें पितुषु तर्हि भवति।।

शिशिर ऋतुः से गीष्म ऋतु पर्यन्त दक्षिणायन होता था लेकिन उदय काल की अंतिम शताब्दियोमे हेमन्त ऋतु के मध्य मे से ग्रीष्म के मध्य तेक उत्तरायण माना जाने लगा था। यद्यपि उपर्युक्त मंत्र मे उत्तरायण ओर दक्षिणायन का स्पष्ट कथन नही है पर प्रकरण के अनुसार अर्थ करने का उक्त अर्थ सिद्ध हो जाता है। तैत्तिरीय संहिता के तस्मादादित्यः षण्मासो दक्षिणेनैतिक षडुत्तरेण्ण मंत्र से सूर्य का छह महीने का उत्तरायन ओर छह महीने का दक्षिणायन सिद्ध होता हें। य उदगने प्रमीयते देवानोमेव महिमानं गत्वादित्यस्य सायुज्यं यो दक्षिज्ञण्णे प्रमीयते पितृणामेव महिमान गत्वा चंद्रमसः सायुज्यं सलोकतामाप्नोति।

मैत्रायणी उपनिषद मे उदग अयन उत्तरायन ये शब्द कई स्थानो पर आए हैं। उदक अयन के पर्यायवाची शब्द देवयान देवलोक ओर दक्षिणायन के पर्यायवाची पितृयान पितृलोक बताए गय है। सूर्य चन्द्र आदि समस्त ज्योर्तिलिंग जम्बुद्वीप के मध्य मे सुमेरु पर्वत की परिकमा किया करते है। सूर्य प्रदक्षिणा की गति उत्तरायन ओर दक्षिणायन इन भागो मे विभक्त है ओर इसकी वीथियां गमन मार्ग 183 है जो सुमेरु की प्रदक्षिणा के रुप में गोल किंतु बाहर की ओर फैलते हुए है। इन

मार्गो की चौड़ाई 48/61 योजन है तथा एक मार्ग से दूसरे मार्ग का अंतर दो योजन बताया गया है। ज्योदिषशास्त्र की परिभाषा मे ये चार क्षेत्र कहलाता हैं। 510 योजन म से 180 चार क्षेत्र जम्बूदीप मे और अवशेष 330 योजन लवण समुद्र मे है। सूर्य एक मार्ग को दो दिन मे पूरा करता है जिससे 366 दिन या एक वर्ष पूरा करने मे लगते है।

सूर्य जब जम्बूदीप के आभ्यांतर मार्ग से बाहर की ओर निकलता हुआ लवण समुद्र की ओर जाता है तब बाहय लवण समूद्र के अंतिम मार्ग पर से चलने तक के काल को दक्षिणायन ओर जब सूर्य लवण समुद्र के अंतिम मार्ग से भ्रमण करता हुआ आभ्यान्तर जम्बूद्वीप की ओर जाता है। उसे उत्तरायण कहते हैं। अतएव स्पष्ट है कि उदयकाल की –2 समस्त चराचर जगत की आत्मा सूर्य

अंतिम शताब्दियों में उत्तरायण का ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से सूक्ष्म विचार होने लग गया था। भारतीय आचार्यों ने इस विषय को आगे खूब पल्लवित और पुष्पित किया।

श्रीमद भागवत में उत्तरायण का सन्दर्भ प्राप्त होता है, जब भीष्म पितामह जब अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे होते है और उत्तरायण के आने के पश्चात ही अपने शरीर का त्याग करते है।

धर्म प्रवदतस्तस्य स कालः प्रत्युपस्थितः।

यो योगिनश्छन्दमृत्योर्वाञ्छिततस्तूत्तरायणः।।

उत्तरायण व दक्षिणायन :–

प्रपद्येते श्रविष्ठादौ सूर्याचन्द्रमसावुदक। सापार्धे दक्षिणार्कस्तु माघश्रावणयोः सदा।।

युगारम्भ के बाद जब सूर्य व चन्द्रमा उक साथ पुनः श्रविष्ठा (धनिष्ठा) नक्षत्र के शुरू में आते हैं, उसी क्षण अगले अगले वर्षो में उत्तरायण होता है।

दक्षिणायन का आरम्भ भी इसी तरह श्लेषा के आधे पर आने के समय होता है। जहां तक सूर्य के अयनो का सम्बन्ध है, वह सदा माघ व श्रावण मासों में ही होता है।

आयन का अर्थ होता है चलना। पूरे वर्ष में सूर्य गतिमान रहता है, सूर्य की अवस्था से ही ऋतुओं का निर्धारण होता है। हिन्दू धर्म में अयन 'समय प्रणाली' है, जिससे ऋतुओ का ज्ञान होता है। कान्ति वृत के प्रथम अंश का विभाजक उत्तर और दक्षिण गोल के मध्यवर्ती ध्रुवों के द्वारा माना गया है। यह विभाजन 'उत्तरायण' और 'दक्षिणायण' कहलाता है।

एक वर्ष दो अयन के बराबर होता है और एक अयन देवता का एक दिन होता है, 360 अयन देवता का एक वर्ष बन जाता है। सूर्य की स्थिति के अनुसार वर्ष के आधे भाग को अयन कहते हैं। अयन दो प्रकार के होते हैं–

उत्तरायन – सूर्य के उत्तर दिशा में अयन अर्थात गमन को उत्तरायन कहा जाता है।

दक्षिणायन – सूर्य के दक्षिण दिशा में अयन अर्थात गमन को दक्षिणायन कहा जाता है।

भारत सरकार ने स्व. निर्मल चंद लाहिरी की अनुशंसा पर इसे ही आधार मानते हुए 21 मार्च 1956 को अयनांश 23 अंश 15 कला स्वीकृत किया था। अयन बिंदु की यही गति साक्ष्य है कि आज से लगभग 436 वर्ष पश्चात अर्थात 2443 ई. के आसपास अयनांश का मान 30 अंश (अर्थात एक राशि) हो जायेगा। तब सायन मेष राशि निरयन मीन तथा पूर्वा भाद्रपद के तृतीय व चतुर्थ चरण के संधि बिंदु से आरम्भ होगी। उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि चित्रा नक्षत्र के मध्य बिन्दु (180 अंश) पर शारद संपात तथा इससे 180 अंश स्थित रेवत्यंत बिंदु पर वसंत संपात की आदर्श स्थिति है, किन्तु वास्तव में ऐसा है नहीं। निरयण पद्धति का प्रयोग केवल भारत, नेपाल तथा लंका आदि तीन–चार देशों में ही प्रचलित है जबकि विश्व के अन्य शेष भागों में सायन पद्धति का प्रयोग चलन में है।

सायन पद्धति में विसंगति खिसका हुआ वसंत संपात बिंदु, जिसे सायन पद्धति के ज्योर्तिविद राश्यानुसार मेष का आरंभ बिंदु मानते है, वास्तव में अश्विनी नक्षत्र का आरंभ बिंदु नहीं है। यह बिंदु वास्तविक अश्विनो के प्रथम बिंदु से वर्तमान में लगभग 23 अंश 56 कला पीछे अर्थात 336 अंश 04 कला के निकट मीन राशिस्थ उत्तरा भाद्रपद के प्रथम चरण में है। इस प्रकार देखें तो सायन पद्धति में मेषादि राशियों का अश्विन्यादि

नक्षत्रों से सामंजस्य भंग हो गया है। यही कारण है कि पाश्चात्य ज्योतिर्विद मात्र राशि व्यवस्था के अनुयाी हैं जबकि निरयण पद्धति के दैवज्ञ नक्षत्र व्यवस्था पर आधारित फल कथन की विद्या का अनुसरण करते है। सायन गणना में मेषारंभ बिंदु विचलन का परिणाम यह हुआ कि वह मेषारंभ बिंदु, जो आज से लगभग 1500 वर्ष पूर्व रेवत्यंत तारे पर था, अब कान्तिवृत पर लगभग 24 अंश

पश्चिम में हट गया है। तदनुसार ही मेषारंभ बिंदु के साथ–साथ अन्य राशियों के आरंभ बिंदु भी 24–24 अंश पश्चिम में हट गए हैं तथा यह प्रकिया अभी भी निरंतर जारी है। फलरूवरूप सायन मेषादि राशियों का उनके विशिष्ट तारा मंडलों के विस्तार से सामंजस्य पूर्णतः भंग हो गया है, जिनकी विशिष्ट रचना आकृति के आधार पर राशियों का मेष, वृषादि नामकरण निर्धारित किया गया था, यही इस पद्धति की प्रमुख विसंगति सिद्ध होती है।

वैदिक से महाभारत काल तक भारतीय ज्योतिष में राशियो को कोई स्थान नहीं दिया गया था, केवल जन्म नक्षत्र अथवा नक्षत्रों के आधार पर भविष्य कथन किया जाता था जैसे (1) राम वनवास से पहले दशरथ का कथन था, अंगारक मेरे नक्षत्र को पीड़ित कर रहा है, (2) महाभारत काल में कृष्ण ने जब कर्ण से भेंट की तब कर्ण के कथानुसार ग्रह स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया गया–शनि रोहिणी नक्षत्र से मंगल को पीड़ित कर रहा है। मंगल ज्येष्टा नक्षत्र में वकी होकर अनुराधा नक्षत्र से युति कर रहा है। इस प्रकार के कई उदाहरण ज्योतिष ग्रन्थों में प्राप्त हो सकते हैं जिनमें केवल नक्षत्रों को ध्यान मे रख कर फल कथन किया जाता था।

वैदिक और महाभारत काल में केवल नक्षत्र ही ज्योतिष के आधार थे। राशियों अवधारणा पाश्चात्य जगत की देन है। फिर भी भारतीय ज्योतिष शास्त्रियों ने बडी सूझ–बूझ से राशियों का समायोजन ज्योतिष शास्त्र में किया। उन्होंने राशियां भी सम्मिलित कर ली और निरयण पद्धति भी नहीं छोडी।

ज्योतिष शास्त्रों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शुभारंभ योग, मुर्हूत इत्यादि नक्षत्रों पर आधारित हैं। निरयण पद्धति ही भारतीय ज्योतिष के अनुरूप है।

निरयण सायन – अयनांश ज्योतिषीय गणनाओं के लिए ग्रहों के निरयण व सायन राश्यांशों को परस्पर परिवर्तित करने की आवश्यकता होती है। अतः शास्त्रकारों विद्वानों का परामर्श है कि निरयण व साधन राशियों का उपयुक्त संबंध का ज्ञानप ज्योतिर्विद को अवश्य होना चाहिए। जहां तक ज्योतिष में किसी पद्धति के प्रयोग का प्रश्न है, अनेक विद्वान एक मतह हैं कि निरया पद्धति का प्रयोग ही भारतीय ज्योतिष में करना चाहिए।

12वीं सदी ईसवी में भारतीय खगोलशास्त्री और गणितीय भास्कराचार्य ने पृथ्वी के अयनांश काल का अनुमान 25461 वर्ष लगाया था जो कि आधुनिक 25771 वर्षो के अनुमान के अत्यंत निकट है।

वर्षों का यदि कल्पों तक की गणना में उपयोग किया जाय तो उनमें से सूर्य सिद्धान्त का मान ही भ्रमहीन एवं सर्वश्रेष्ट प्रमाणित होता है। सृष्टि संवत के प्रारम्भ से यदि आज तक का गणित किया जाय तो सूर्य सिद्धान्त के अनुसार एक दिन का भी अन्तर नहीं पड़ता। सूर्य सिद्धान्त से प्रतिवर्ष गणना में साढ़े आठ पल से भी अधिक का अन्तर है। सूर्य सिद्धान्त के प्राचीन मान से आधुनिक मान का अन्तर 8 पल 34 विपल का होता है।

इस प्रकार सूर्य सिद्धान्त के मान में एक पल कम करके गणित करने से 5000 वर्ष तक के दिनादि सब ठीक मिलते है।

वर्ष हिन्दू समय मापन करी इकाई हैं। यह इकाई माध्यम श्रेणी की है। एक वर्ष दो अयन के या छः ऋतुओं के या बारह मासों के बराबर होता है।

एक तिथि वह समय होता है, जिसमें सूर्य और चंद्र के बीच का देशांतरीय कोण बारह अंश बढ़ जाता है। तिथियां दिन में किसी भी समय आरम्भ हो सकतो हैं और इनकी अवधि उन्नीस से छब्बीस घंटे तक हो सकती है।

एक पक्ष या पखवाड़ा पंद्रह (15) तिथियां।

एक मास त्र 2 पक्ष, कृष्ण पक्ष (पूर्णिमा से अमावस्या तक) एवं शुक्ल पक्ष (अमावस्या से पूर्णिमा तक)

एक ऋतु त्र दो (2) मास।

एक अयन त्र तीन (3) ऋतुएं।

एक वर्ष त्र दो अयन, उत्तरायन (आषाढ़ से माघ तक) एवं दक्षिणायन (माघ से आसाढ़ तक)

सूर्य संपूर्ण लोकों की आत्मा है। जितने काल में सूर्यदेव इस संवत्सा का छठा भाग भोगते हैं, उसका वह अवयव 'ऋतु' कहा जाता है। भारत के जो पंचांग प्राचीन ग्रंथों के आधार पर बनते हैं उनमें वर्ष मान ठीक नहीं रहता और इस कारण वर्तमान समय के सावन भादों तथा कलिदास के समय के सावन भादों में लगभग 22 दिन का अंतर पड़ गया है। सामान्यतः नवंबर से फरवरी तक जाड़ा, मार्च से मध्य जून तक गर्मी औी मध्य जून से अक्टूबर तक बरसात गिनी जा सकती है।

ऋतुओं का मूल कारण यह है कि पृथ्वी सूर्य की प्रदक्षिणा करती है। उसके चारों और चक्कर लगाती रहती है और साथ ही अपने अक्ष पर घूमती रहती है। यह अक्ष पूर्वोक्त प्रदक्षिण के समतल पर लंब नहीं है। लंब से अक्ष लगभग 23 1/2 अंश का कोण बनाता है। इसका परिणाम यह होता है। कि एक वर्ष में आधे समय तक प्रत्येक द्रष्टा को सूर्य उत्तर की ओर धीरे धीरे बढ़ता हुआ दिखाई देता हैं। ओर आधे समय तक दक्षिण की ओर। वर्ष के यें ही दो आधे उत्तरायण ओर दक्षिणायन कहलाते हैं।

सौर वर्ष के दो भाग है– उत्तरायण छह माह का ओर दक्षिणायन भी छह मास का। जब सूर्य उत्तरायण होता हैं तब हिन्दु धर्म अनुसार संहिता स्कंध का परिचय देते हुए सनक मुनि नक कहा चैत्र से फाल्गुन मास तक मेष से मीन तक यें बारह राशिया आती हे। चैत्र प्रतिपदा के पड़ने वाला दिन उस वर्ष का राजा कहा जाता है। तैतरीय संहिता मे 12 महिनो के नाम मधु माधव श्शुक श्शुचि नभस नभस्य इष उर्ज सहस सहस्य तपस एवं तपस्य आये हैं। इसी प्रकरण में संसर्प अधिमास का द्योतक ओर अहस्पति क्षयमास का द्योतक भी आया हैं। पद्य निम्न प्रकार हैं–

मधुश्व माधवस्य शुक्रश्च शुचिश्व नभस्य श्चेषश्चोजस्य सहश्व।
सहस्यश्व तपस्च तपस्यश्चोपयामगृ हितोअपि स सर्वौस्य हस्पत्याय त्वा ।।

ऋग्वेंद मे चंद्रमास और सोरमास की चर्चा कई स्थानो मे आती हैं। इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि चान्द्र ओर सौर का समन्वय करने के लिए अधिमास की कल्पना ऋग्वे द के समय मे प्रचलित थी।

सूर्य प्रत्यक्ष देवता है सम्पूर्ण जगत के नेत्र हैं। इन्ही के द्वारा दिन ओर रात का सृजन होता हें। इनसे अधिक निरन्तर साथ रहने वाला ओर कोइ देवता नही हें। इन्ही के उदय होने पर लोग अपने घरों के किवाड़ खोलकर आने का स्वागत करते ह और अस्त होने पर अपने घरो के किवाड़ बन्द कर देते है। सूर्य ही कालचक के प्रणेता है। सूर्य से ही दिन रात पल मास पक्ष तथा संवत आदि का विभाजन होता है। सूर्य सम्पूर्ण संसार के प्रकाशक है। इनके बिना अन्धकार के अलावा और कुछ नही है।

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

आधुनिक भारत में पंचायती राज एवं सशक्तिकरण

नंदकिशोर निकोसे
(राजनीति विज्ञान) नेट जबलपुर (म.प्र.)

ग्राम पंचायत की आत्मा तथा स्थानीय स्वशासन का आधार ''ग्रामसभा'' है। निसंदेह रूप से ग्रामसभा ही वह सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा ग्रामीण जनों की सकिय सहभागिता सुनिश्चित करके देश की वास्तविक तस्वीर बदली जानी संभव है।

''देश के 73वें संविधान संशोधन अधिनियम 1992 के तहत ''ग्रामसभा'' को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया और 'गांव की पत्येक आवाज को सुना जाए' ऐसी परिकल्पना को मूर्त रूप देने की दिशा में ठोस पहल की गई।''[1] सुनिश्चित रूप से संविधान संशोधन के माध्यम से ग्रामसभा को महत्वपूर्ण इकाई के रूप में गठित करके ग्रामीण विकास हेतु एक क्रान्तिकारी कदम उठाया गया। अनुच्छेद 243 (क) के तहत ग्रामसभा को शक्तियाँ एवं कृत्य प्रदान करने का कार्यभार राज्य सरकारों को सौंपा गया तथा संविधान की 11वीं सूची में निर्दिष्ट 29 विषयों के संबंध में योजना बनाने, क्रियान्वित करने तथा उनका मूल्यांकन करने का कार्य ग्रामसभाओं को सौंपा गया।

पंचायती राज कानून 24 अप्रैल 1993 से लागू हो गया। ''ग्रामीण भारत में पंचायती राज की स्थापना के लिए, 73वां संविधान विधेयक लोकसभा ने 22 दिसंबर 1992 को और राज्यसभा ने अगले दिन लगभग सर्वसम्मति से पारित कर दिया था। आधे से अधिक राज्यों के विधानमंडलों द्वारा इसकी पुष्टि कर दिए जाने के बाद राष्ट्रपति 20 अप्रैल 1993 को इस पर अपनी मंजूरी की मोहर लगा दी थी। इस संशोधन में पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा दिया गया, साथ ही ग्रामसभा को भी संवैधानिक मान्यता मिली। इसके तहत प्रत्येक गांव में एक ग्रामसभा हागी जो राज्य विशेष के विधानमंडल द्वारा प्रदत अधिकारों का उपयोग तथा निर्धारित कर्तव्यों का निर्वाह गांव–स्तर पर करेगी।''[2]

क्यों ऐतिहासिक 73वां संशोधन :

यह ऐतिहासिक इसलिए था, चूकिं 73वें संविधान संशोधन के बाद ही हमारी पंचायतों को संवैधानिक दर्जा हासिल हुआ। 73वें संविधान संशोधन के बाद ही, संविधान के अनुच्छेद 40 में नीति निर्देशक सिद्धान्त के रूप में पूर्व में दी गई सलाह को मानना , हमारी राज्य सरकारों की बाध्यता बन गई। संविधान के भाग–आठ के पश्चात् भाग नौ को जोड़कर उसमें अनुच्छेद 243 का शामिल करने से ऐसा हुआ। 73वें संशोान ने पंचायतों के लिए गांव, ब्लॉक और जिला यानी त्रिस्तरीय व्यवस्था बनाई। 73वें संशोधन ने पांच वर्षीय कार्यकाल की अनिवार्यता सुनिश्चित की। इससे पहले ऐसा नहीं था। लिहाजा, इससे पहले कई राज्यों में 20–20 साल तक पंचायतो चुनाव नहीं हुए।

''सभी स्तर पर सीधे जनता द्वारा चुनाव, जनसंख्या के अनुपात में निर्वाचन क्षेत्र का परिसीमन,अनुसूचित जाति–जनजाति का आबादी आधारित आरक्षण तथा प्रधान/प्रमुख/अध्यक्ष पदों पर महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटों का आरक्षण का प्रावधान भी 73 वें संशोधन की बदौलत हुआ। पिछड़े वर्गो हेतु सीटों के आरक्षण का मुद्दा राज्य सरकारों पर छोड़ा गया। 73 वें संशोधन ने संसाधनों की व्यवस्था हेतु राज्य वित आयोग तथा चुनाव हेतु राज्य चुनाव आयोगों के गठन का रास्ता खोला। 11वीं अनुसूची के माध्यम से विकास संबंधी 29 विभागों के काम पंचायतों के सुपुर्द कर दिए।'' [3]

सबसे महत्वपूर्ण कदम, ग्रामसभाओं के गठन को अनिवार्य बनाना तथा राज्यों के विधानमंडलों को यह निर्देश देना था कि वे ग्रामसभाओं को अधिकार देने के लिए अपने–अपने स्तर पर कानून बनाएं। '' ऐसे उल्लेखनीय प्रावधानों के साथ 24 अप्रैल, 1993 को नया पंचायती राज कानून पूरे देश में लागू हो गया। राज्यों को समय दिया गया कि वे अपने–अपने राज्यों के पंचायत अधिनियम को 73वें संविधान संशोधन के अनुरूप संशोधित कर लें।''[4]

पंचायती राज और राजोव गांधी :जब हम पंचायत को वही दंगे, जो संसद और विधानसभाओं को प्राप्त है, तो हम लोकतांत्रिक भागीदारी में सात लाख लोगों की भागीदारी के दरवाजे खोल देंगे। सत्ता ने इस तंत्र पर कब्जा कर लिया है। सत्ता के दलालों के हित में इस तंत्र का संचालन हो रहा है। सत्ता के दलालों के नागपाश को तोड़ने का एक ही तरीका है और वह यह है कि जो जगह उन्होंने घेर रखी है, उसे लोकतंत्र की प्रकियाओं द्वारा भरा जाए। सत्ता के गलियारों से दलालों को निकाल कर, पंचायते जनता को सौंपकर, हम जनता के प्रतिनिधियों पर और जिम्मेदारी डाल रहे हैं कि वे सबसे पहले लोगों पर ध्यान दें, जो सबसे करीब हैं, सबसे वंचित है। सबसे जरूरतमंद है। हमे जनता में भरोसा दें जनता को ही अपनी किस्मत तय करनी है और इस देश की किस्मत भी। आइये, हम भारत के लोगों को अधिकतम लोकतंत्र दें और अधिकतम सत्ता सुपुर्द कर दें। आइये, हम सत्ता से दलालों का खात्मा कर दें। आइये, हम जनता को सारी सत्ता सौंप दे।

ये उस भाषण का अंश है जो पंचायती राज विधेयक को संसद के पटल पर रखते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने दिया था। यह वह दौर था, जिससे काफी पहले ही हमारी जनप्रतिनिधि सभायें, जनप्रतिनिधित्व की बजाय, सत्ता का केन्द्र समझी जाने लगी थीं, हमारे जनप्रतिनिधि स्वयं को 'राजा' और जनता को 'बेजान प्रजा' ही समझने लगे थे। वे इस तरह व्यवहार करने लगे थे कि मानो वे किसी और लोक के प्राणी हों। उन्होंने अपने आसपास एक ऐसा रौब और दायरा बना लिया था, कि वे भारत की आत्मा से कट गये थे। ऐसे दौर में ऐसी खुली बात ! ऐसी उदार मंशा ! आमजन की भाषा और आंतरिक भाव के साथ भारत की संसद में बहुत इतना कटु सत्य कहना, एक प्रधानमंत्री के लिए सचमुच बहुत हिम्मत को बात थी। कहना न होगा कि कभी इतने कान्तिकारी उद्‌बोधन के साथ भारत में वर्तमान पंचायती राज व्यवस्था की नींव रखी गई।

जमीनी लोकतंत्र का सशक्तीकरण :

विश्व के सबसे बढ़े लोकतंत्र के रुप में भारत विश्व मानचित्र पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्शाता है तो इसके पीछे कहों ना कही जमीनी लोकतंत्र यानी ग्राम पंचायत स्तर के लोकतंत्र की अहम भूमिका है। यह अलग बात है कि अब भी इस स्तर पर लोकतांत्रिक परिपक्वता स्थापित नही हो सकी है किन्तु इस दिशा में जितने भी प्रयास किए गय है उससे काफी बदलाव रेखांकित किए गये है। ये सारे प्रयास प्राचीनकालीन से किए जा रहे है। भारत ऐसा पहला देश है जहां पर स्थानीय स्वशासन के प्राचीनकालीन प्रमाण मिलते हे। यहां प्राचीन समय से ही स्थानीय स्वशासन की व्यवस्था की गई थी जिसमें प्रशासनिक सुविधा के लिये क्षेत्र विभाजित किए गये थे। विभिन्न ऐतिहासिक स्त्रोतों से इस व्यवस्था की जानकारी हमें मिलती हे। ग्राम पंचायत राज के वर्तमान स्तर तक पहुंचने के लिये सदियों के प्रयास का हाथ हैं धीरे धीरे विकास के विभिन्न चरणों से होते हुए पंचायती राज संस्था आज इस स्वरुप में हमारे सामने मौजूद है।

पंचायती राज संस्था का विकास :

ऐसा नही था कि पंचायती राज संस्था अचानक आस्तित्व में आ गई। इसके पीछे दशकों की मेहनत प्रयास ओर राजनीतिक इच्छाशक्ति ने काम किया। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के दोरान भी देश में स्थानीय स्वशासन की वकालत विभिन्न विद्वानों द्वारा की जाती रही थी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का इस दिशा में अहम योगदान रहा। उन्होनें गावों के महत्व को व्यापक रुप से रेखांकित किया ओर स्थानीय स्वशासन तथा सत्ता के विकेन्द्रीकरण की आवश्यकता बतायी। भारतीय सविंधान के निर्माताओं ने भी इस तथ्य की ओर आवश्यकता को बखूबी समझा। इसी का नतीजा था कि संविधान के नीति निदेशक तत्वों में अनुच्छेद 40 के अंतगर्त राज्यों को ग्राम पंचायत राज व्यवस्था की नीव डालने के साथ ही इस दिशा में प्रगति की एक महत्वपूर्ण राह खुली। इस व्यवस्था को ओर भी मजबूत किया 73 वे सविंधान संशोधन ने जिसमें ग्राम पंचायतो के वर्तमान स्वरुप का श्रेय जाता है। 1957 में गठित बलवंत राय मेहता समिति को जिसने त्रिस्तरीय पंचायती संरचना बनायी। देश में पंचायतों को सुदृढ़ व विकसित करने के उपाय सुझाने के लिये समय समय पर विभिन्न समितियों का गठन किया जाता रहा है। ओर यथा संभव उनकी सिफारिशों को अमल मे लाने का प्रयास भी किया गया है। के. राव समिति 1985 एल एम सिंघवी समिति 1986।

1986 में राजीव गांधी ने लोकतंत्र व विकास के लिये पंचायती राज संस्थाओं का पुनारुद्धार मुद्दे पर एल एम सिंघवी की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया। इस समिति की सिफारिशों के मद्देनजर राजीव गांधी सरकार ने 1989 में 64 वां सविंधान संशोधन विधेयक लोकसभा से पारित किया। इसके कुछ विवादास्पद प्रावधानों के कारण यह राज्य सभा से पारित नही कराया जा सका। पुनः 1990 में वी.पी. सिंह की अध्यक्षता में मुख्यमंत्रियों के दो दिवसीय सम्मेलन में इस विधेयक के प्रस्तावों को मंजूर किया गया। तत्पश्चात इसे सितम्बर 1990 में लोकसभा में पेश किया गया। तत्कालिक प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव के काल में सरकार ने विवादास्पद प्रावधानों को हटाकर पुनः इस विधेयक को सितम्बर 1991 में लोकसभा में पेश किया। अंततः 73 वे सविधान संशोधन विधेयक 1992 के रुप में यह लोकसभा से फिर राज्यसभा से ओर 17 राज्य की सरकारों द्वारा पारित होते हुए राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद यह 24 अप्रैल 1993 से प्रभावी हुआ।

अधिनियम का महत्व व विशेषता :

इस अधिनियम के तहत भारत के संविधान में सशोधन किया गया ओर इसमे पंचायते नाम से एक नया खंड शामिल किए गये। इसमें नए अनुच्छेद 243 से 243 के प्रावधान शामिल ि23कये गये। इसके तहत ही संविधान में एक नयी 11 वी अनुसूची जोड़ी गई जिसमें पंचायतों के लिये 29 कार्यकारी विषय श्शामिल किए गयें। अधिनियम की सबसे खास बात यह रही कि इसने नीति निदेशक सिद्धान्तों के अंतगर्त अनुच्छेद 40 के प्रावधानों को एक व्यावहारिक स्वरुप प्रदान किया जिसमें कहा गया है कि ग्राम पंचायतों को गठित करने के लिये राज्य कदम उठायगा ओर उन्है उन आवश्यक श्शक्तियों तथा अधिकारों से विभूषित करेगा जिससे कि वह स्वशासन की इकाई की तरह कार्य करने में सक्षम हो। इस अधिनियम ने पंचायती राज संस्था को संवैधानिक बना दिया जिससे कि अब पंचायतों के गठन नियमित चुनाव आदि राज्य सरकारों की इच्छा पर निर्भर नही रहें।

इस अधिनियम के तहत पंचायती राज सस्था के तीन स्तर बनाए गये है। इस अधिनियम में सभी राज्यो के लिये त्रिस्तरीय प्रणाली का प्रावधान किया गया है।

1. पंचायत स्तर ग्रामीण क्षेत्रों में स्वशासन की संस्था पंचायत विभिन्न भिन्न नामों से जाना जाने वाला,
2. ग्राम स्तर – इस प्रयोजन के लिये निर्दिष्ट गांवों का समूह ओर,
3. माध्यमिक स्तर गांव या जिला स्तर के बीच। यह इस तरीके से बनाया गया है जो देशभर में एक समान पंचायती राज संस्था की स्थापना करता है। अधिनियम के प्रावधानों के तहत प्रत्येक पंचायत में एक ग्रामसभा का गठन किया जाता है।

अधिनियम तहत पंचायतों के लिये 11 वी अनुसूची के विषय :

कृषि जिसमें कृषि विस्तार सम्मिलित है भूमि विकास भूमि सुधार लागू करना भूमि संगठन व भूमि विकास भूमि सुधार लागू करना भूमि संगठन व भूमि संरक्षण लघु सिंचाई जल प्रबंधन व नदियों के मध्य भूमि विकास पशु पालन दुग्ध व्यवसाय व मुर्गीपालन मत्स्य उद्योग वनजीवन तथा कृषि खेती वनों में लघु वन उत्पत्ति लघु उद्योग जिसमें खाद्य उद्योग सम्मिलित है खादी ग्राम एवं कुटीर उद्योग ग्रामीण विकास पीने वाला पानी ईंधन व पशु चारा सड़के पुल तटों जलमार्ग व अन्य संचार के साधन ग्रामीण विद्युत जिसमें विद्युत विभाजन समाहित है गैर परंपरागत उर्जा स्त्रोत गरीबी उन्मुलन कार्यक्रम प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा संबंधी विद्यालय यांत्रिक प्रशिक्षण व व्यावसायिक शिक्षा वयस्क व गैर वयस्क औपचारिक शिक्षा पुस्तकालय सांस्कृतिक कार्य बाजार व मेले स्वास्थ एवं स्वास्थ संबंधी संस्थाएं जिसमें अस्पताल प्राथमिक स्वास्थ केन्द्र व दवाखाने शामिल है पारिवारिक समृद्धि महिला व बाल विकास सामाजिक समृद्धि जिसमें विकलांग व मानसिक रोगी की समृद्धि निहित है कमजोर वर्ग की समृद्धि जिसमें विशेषकर अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति वर्ग श्शामिल है लोक विभाजन पद्धति सार्वजनिक संपति की देखरेख।

पंचायती राज मंत्रालय :''देश में स्थानीय स्वशासन के प्रति यह सरकार की गंभीरता का ही प्रमाण था कि इस उदेश्य से 27 मई 2004 को अलग पंचायती राज मंत्रालय का गठन कर दिया गया। इसका उदेश्य था। 73 वे संविधान संशोधन द्वारा जोड़े गए संविधान के खंड 9 के प्रावधानों के क्रियान्वयन की बेहतर निगरानी समन्यवयन किया

जा सके। यह मंत्रालय पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से विकेन्द्रीकरण ओर स्थानीय स्वशासन भागीदारी को पाने के लिये कार्य करते है। अधिकारिता सक्षमता ओर समावेशी सामाजिक न्याय के साथ विकास को सुनिश्चित करने के लिये पंचायती राज संस्थाओं की जवाबदेही ओर सेवाओं के कुशल वितरण को सुनिश्चित करना इसका लक्ष्य है।''[5] आज भारत में करीब 2.51 लाख पंचायती राज संस्थाएं है। इसमें 589 जिला परिषद 6405 लाख प्रतिनिधि जनता द्वारा चुने हुए है। जिसमें करीब 40 प्रतिशत महिलाएं 19.1 प्रतिशत अनुसूचित जाति ओर 11.8 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति से है। इसे ध्यान में रखते हुए 2009 में पंचायती राज मंत्रालय की ओर से 110 वां संविधान संशोधन विधेयक लाया गया जो कि त्रिस्तरीय पंचायतीराज संस्था में सीटों और अध्यक्ष के 50 प्रतिशत पद महिलाओं के लिये आरक्षित करता है। हालांकि जागरुकता और महिला शिक्षा के प्रसार से इस दिशा में हमें लगातार उत्साहजनक नतीजे देखने को मिल रहे है। सरकार के विभिन्न कार्यकमों योजनाओं आदि में नारी सशक्तिकरण के अनुकूलन प्रयासों से भी इसमें काफी प्रगति देखी जा रही है।

पंचायतों में आरक्षण :

''73 वे संविधान संशोधन के अनुरुप पंचायत राज विधानों में महिलाओं अनुसूचित जातियों अनुसूचित जनजातियों एवं पिछड़े वर्गों के लिये स्थानों का आरक्षण किया गया हैं। कुल स्थानों के एक तिहाई स्थान महिलाओं हैतु आरक्षित किया गया है। अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों हेतु स्थानों का आरक्षण उनकी जनसंख्या के अनुपात में किया गया है। पिछड़े वर्ग हेतु आरक्षण का यह प्रावधान किया गया है। कि ग्राम जनपद एवं जिला स्तर पर अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति हेतु आरक्षण का प्रतिशत 50 अथवा कम हैं तो 25 प्रतिशत स्थान पिछड़े वर्ग हेतु आरक्षित किये जायेंगें यह सम्पूर्ण व्यवस्था चकानुकम में चलेगीं।''[6]

आरक्षण के प्रावधान के माध्यम से स्वतंत्रता के पश्चात प्रथम बार अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति अन्य विछड़े वर्ग एवं महिलाओं की व्यापक स्तर पर राजनीतिक भर्ती हुई है।

महिलाओं का सशक्तिकरण :

महिलाएं समाज के लगभग आधे भाग का प्रतिनिधित्व करती हे। लेकिन उनकी अब तक की राजनीतिक सहभागिता लगभग नगन्य रही हे। 73 वे संविधान संशोधन अधिनियम में किये गये प्रावधनों से कुल स्थानों के एक तिहाई स्थान महिलाओं को प्राप्त हुए। सभी निर्वाचित महिला प्रतिनिधि में से अधिकांश को निर्वाचन का यह प्रथम अवसर प्रथम चुनाव में प्राप्त हुआ इसके पश्चात इस नेतृत्व में आरक्षण के प्रतिशत को बढ़ाते हुए 50 प्रतिशत कर दिया गया।

पंचायती राज संस्था के सशक्तिकरण के प्रयास :

स्थानीय स्वशासन को आधुनिक भारतीय लोकतंत्र का आधार कहा जा सकता हैं। यह लोकतांत्रिक ओर लोकतंत्र व्यवस्था के प्रति जनमानस में एक चेतना और जागरुगता के स्तर को बढ़ाने के प्रति भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। अतः इसके सफल संचालन व्यवस्थित कायवाही तथा इससे सकारात्मक संदेश जाए इसके प्रति सरकार और आम जन दोनो को हमेशा सचेत प्रयास करना होगा। पंचायतों के सशक्तिकरण के लिये नवगठित पंचायती राज मंत्रालय ने अनेक उपाय भी किए है। इनमें से एक है। पिछड़ा क्षेत्र अनुदान काष। इस योजना के तहत 272 जिले शामिल किए गए है।

पंचायतों के सशक्तिकरण ओर विकास के लिए एक अन्य प्रयास है– राजीव गांधी पंचायत सशक्तिकरण अभियान। यह 12 वी पंचवर्षीय योजना के दौरान आरंभ किया गया था। इस अभियान का मुख्य उदेश्य देश की सभी पंचायतों को मजबूत करना ओर उन कमियों का दूर करना जिससे इसके सफल संचालन में बाधा आती हो। इसके लक्ष्य थे– ग्रामसभा ओर पंचायतो की क्षमता ओर प्रभाव को बढ़ाना लोगो को लोकतांत्रिक ओर सहभागिता स्वशासन के लिये जागरुक ओर सक्षम बनाना। इसके अलावा सरकार ने लोगों को नीति निर्माण में सहभागिता बनाने। शासन को पारदर्शी बनाने के प्रयोजन से वर्ष 2006 में नेशनल ई–गवर्नेश प्लान जारी किया। इसी के तहत ई–पंचायत एक मिशन मोड़ प्रोजेक्ट है। इसका उदेश्य पंचायतों के लिये निर्णय लेने में सहायक बनना आम जन के लिए सूचना प्रदान कराना पारदर्शिता जवाबदेही सुनिश्चित करना आदि है। इसके अलावा अन्य कई उपाय किए गये है। ताकि ग्राम पंचायती राज संस्था या कहे। कि जमीनी लोकतांत्रिक सशक्त मजबूत ओर सक्षम बन सके।

इसके अलावा विभिन्न सरकारी योजनाओं कार्यक्रमों का कियान्वयन निगरानी सीधे ग्राम पंचायतों को सौंप दी गई है जसे मनरेगा इंदिरा आवास योजना आदि।

समस्या और निवारण :

इन तमाम संवैधानिक ओर राजनैतिक प्रयासों के बावजूद आज पंचायती राज संस्था कई चुनोतियों से जूझ रही है। प्राय देखने में आता है कि पंचायती राज व्यवस्था की महत्वपूर्ण इकाई ग्रामसभा की नियमित बैठके नही हो पायी है। इसमें होने वाले विचार विमर्श नीति निर्माण कार्य योजनाएं आदि बनाने के लाभो से इसी कारण हम वंचित रह जाते है। 73 वे संविधान संशोधन के द्वारा ग्रामसभा को संवैधानिक मान्यता की गई।

ग्रामसभा ऐसी नोडल एजेंसी के रुप में चिन्हित की जा सकतो है जिसे ग्रामीण विकास के तमाम लक्ष्यो/उद्देश्यों को पूरा करने की क्षमता रखती है। इसके लिये हमें पंचायतो में रोजगार केंद्र सूचना केन्द्र ज्ञान केन्द्र की स्थापना करनी होगी। साथ ही कौशल विकास के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ पंचायतों में ग्रामीणो के बीच आजीविका के नये साधन बना सकते है। इस दिशा में ईमानदार ओर बेहतर पहल की जाए तो इसके दूरगामी परिणाम ग्रामीण उद्योगीकरण के रुप में भी सामने आ सकेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 कुरूक्षेत्र : सितम्बर 2011 :– ग्रामीण महिला सशक्तिकरण
2 एम.एम.लावनिया :– भारतीय महिलाओ का समाजशास्त्र रिसर्च पाब्लिशष जयपुर 2004
3 सुभाष कश्यप :– भारत का संविधान नेशनल बुक द्रस्ट 2013
4 कुरूक्षेत्र : सितम्बर 2011 – ग्रामीण महिला सशक्तिकरण
5 प्रतियोगिता दर्पण नवम्बर 2008
6 एम.एम.लावनिया :– भारतीय महिलाओ का समाजशास्त्र रिसर्च पब्लिशर्ष कश्यप जयपुर 2004
7 डॉ. शर्मा, प्रभुदत्त :– पंचायती राज प्रशासन, रिसर्च पब्लिकेशन, आगरा, 1995
8 देवेन्द्र उपाध्याय :– पंचायती राज व्यवस्था सामाजिक प्रकाश, नई दिल्ली, 2001
9 माधंर, शकुन्तला :– प्रचीन भारत में पंचायती राज, विधि भारती पब्लिकेशन, 1964

ISSN : 2394-3580 **Swadeshi Research Foundation** Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

एक औषधीय फसल अश्वगंधा

मंजरी झा
शोध छात्रा, अर्थशास्त्र मध्यप्रदेश में औषधीय कृषि और उसका विपणन जबलपुर जिले के संदर्भ में

अश्वगंधा : भारत औषधीय पौधों का सबसे बड़ा उत्पादक है ओर इसे दुनिया का वास्तविक उद्यान कहा जाता है। आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में अश्वगंधा को एक महत्वपूर्ण औषधीय वनस्पति माना गया हे। अश्वगंधा एक ऐसी औषधीय फसल है जिसका उपयोग युनानी औषधीयों में बहुतायत में किया जा रहा हे। अश्वगंधा की खेती ठंडे प्रदेशों को छोड़कर देश के सभी भागों में होती है। किसानों को अवश्गंधा की खेती से अधिक मुनाफा प्राप्त होता है। देश में अश्वगंधा की मांग अधिक है जो हमारे विदेशी व्यापार के लिये लाभदायक है। अश्वगंधा एक एसी औषधीय फसल हैं जिसका उपयोग आयुर्वेदिक के साथ साथ एलोपैथिक दवाओं में भी इस्तेमाल किया जाता है। अश्वगंधा किसानों की अर्थव्यवस्था को घोड़े की तरह दोड़ाने वाली उपज है। कम खर्च कम मेहनत व कम सिंचाई का उपयोग कर के किसान इसके अधिक मुनाफा कमा सकता है। अश्वगंधा की खेती भारत में ही नही बल्कि विदेशों में भी की जा रही है। स्पेन, ईजराइल, जार्डन, ईरक्कों, श्री लंका, पूर्वी अफीका में भी इसकी खेती की जा रही है।

मुख्य शब्द : औषधीय पौधा युनानी पद्धति अश्वगंधा आयुर्वेद।

प्रस्तावना : अश्वगंधा का वानस्पतिक नाम ॒पजींदपं वउदपतिम कनदंस है। जो`वसमवदमबमं कुल से संबंधित है। अश्वगंधा या असंगद एक सींचा बढने वाला छोटा पौधा है। जिसकी सामान्य लंबाई 1.4 से 1.5 मीटर तक होती है। यह पौधा उष्णकटीबंधीय और सूखे क्षेत्रो में अच्छी तरह बढ़ता है। अश्वगंधा एक कठोर और सूखा बर्दाश्त करने वाला पौधा है। अश्वगंधा इंडियन मिनसेन या जहरीला करोंदा प्वाइजन गुजबेरी या विंटर चेरी ओर भारत के उत्तर पश्चिमी ओर मध्य हिस्से में उपजने वाले देशी दवाई के पौधों के तोर पर भी जाना जाता है। इसकी कच्ची जड़ से घाड़े जैसी गंध आने की वजह से इसे अश्वगंधा कहा जाता है। अश्वगंधा जड़ी बूटी या औषधीय बहुत महत्वपूर्ण ओर प्राचीन हैं। जिसकी जड़ों का इस्तेमाल भारतीय पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली जैसे आयुर्वेद ओर युनानी में दवाओं के रुप में किया जाता रहा है। अश्वगंधा की पत्तिया हल्की हरी अंडाकार सामान्य तोर पर 10 से 12 सेमी. लंबी होती है। सामान्यतोर पर इसके फूल छोटे हरे ओर घंटे के आकार के होते है। आमतोर पर पका हुआ फल नारंगी ओर लाल रंग का होता है। अश्वगंधा की व्यवसायिक खेती में खेती प्रबंधन ओर उपयुक्त बाजार मॉडल बनाकर अच्छी कमाई कर सकते है।

अश्वगंधा को कई नामों से जाना जाता है– असगंध, नागौरी, पुनीर, विंटर चेरी, प्वाइजन, गुड़बेरी ओर इंडियन जिनसेंग।

भारत में अश्वगंधा का स्थानीय नाम : अश्वगंध, असगंध,अजर्गन्धा, हिन्दीं में रसभरी, अमुक्का , असरागंधी तमिल, अमक्कुरम, त्रिताषु, अयामोदकम मलयालम, धुप्पा बंगाली, केरामादीनागड्डी, केचुकी कन्नड़, आस्कनंदा, डोरगुंज, घोड़ा, तिल्ली मराठी, असोद, घोड़ा अहान, घोड़ा अकान, असुन, असम, घोड़ासोडा गुजराती, पेन्नेरु, वाजीगंधा अहान तेलगु।

भौगोलिक विवरण : विश्व में विदानिया कुल के पौधे स्पेन, मोरक्कों, जार्डन, पाकिस्तान, भारत में प्राकृतिक रुप में पाए जाते है। भारत में इसकी खेती 1500 मी की उंचाई तक के सभी क्षेत्रों में की जा रही है। भारत के पश्चिमोतर भाग राजस्थान, महाराष्ट, गुजरात, मध्यप्रदेश, पंजाब, उत्तर प्रदेश, एवं हिमालय प्रदेश आदि प्रदेशों में अश्वगंधा की खेती की जा रही हैं। राजस्थान ओर मध्यप्रदेश में अश्वगंधा की खेती बड़े स्तर पर की जा रही है। इन्ही क्षेत्रों से पूरे देश में अश्वगंधा की मांग को पूरा किया जा रहा है।

जलवायु : अश्वगंधा की फसल रबी ओर खरीफ में की जाती है। रबी में उष्णकटीबंधीय से समशीतोष्ण जलवायु औसम चाहिये। खरीफ में कम वर्षा की आवश्यकता पड़ती है। ओसतन 100 सेमी वर्षा में इसकी फसल ठीक आती है। भूमि में की जा सकती है। जैसे बलुई, दोमट से हल्की रेतीली जिसका जल निकास अच्छा हो एवं पी. एचए मान 6–8 तक होना चाहिये।

रासायनिक संगठन : अश्वगंधा की जड़ में कई एन्केलाइडस पाए गये है। इनकी कुल मात्रा 0.13 से 0.31 प्रतिशत तक होती है। वेल्थ ऑफ इण्डिया के मतानुसार 13 एल्केलाइड कोमेटोग्राफी की विधि से अलग किये जा चुके है। इनमें प्रमुख है। कुस्कोहाइग्रीन एनाहाइग्रीन टोपीन, स्मुजोडोपीन, ऐनाफेरीन, आईसोपेलीन, टोरीन और तीन प्रकार के टोपिलोटग्लोएट। जर्मन व रुसी वैज्ञानिकों ने असगंध की जड़ में अन्य एल्केलाइड होने का भी दावा किया है। जिसमें प्रमुख हैः– विदासोमिन एवं विसामिन एल्केलाइडो के अलावा इस की जड़ में स्टार्च, श्शर्करा, ग्लाइकोमाइड्स–हेण्टियाकाल्टेन तथा अलसिटील विदनाल पाए गय है। इसमें बहुत से अमीनों अम्ल मुक्तावस्था में होते है तथा एस्पार्टिक अम्ल ग्लाइसिन आयरोसिन, एलेनिन, प्रोलीन, टिरप्योफैन, ग्लूटेमिक अम्ल एवं सिस्टीन। अश्वगंधा की पत्तियों में विदानोलाइड परिवार के पदार्थ पाए जाते है। जो बदलते रहते है। इसकी पत्तियों का स्वरुप एक सा रहने पर भी रासायनिक दृष्टि से अंतर पाया गया हे। बारह प्रकार के विदानोंलाइड अलग अलग पौधो से प्राप्त किये गये है। जो एक ही क्यारी में एक साथ रोपे गये थे। इसके अलावा पत्तियों में एल्केलाइडन ग्लाकोसाइडस ग्लूकोष एवं मुक्त अमीनों अम्ल भी पाए गये है। असगंधा के तने में प्रोटीन बहुतायत से पाए गये है। इनमें रेशा बहुत कम तथा केल्सियम व फास्फोरस प्रचुर मात्रा में होते है। कई अमीनों अम्ल भी मुक्तावस्था में पाए गये है। जड़ तने तथा फल में टेनिन एवं फलेविनाइड भी होते है। इसके फलों में प्रोटीनों को पचाने वाला एक एन्जाइम कैमेंश भी उपस्थित होता हैं।

औषधीय गुण : अश्वगंधा का प्रयोग भारत में प्राचीन समय से ही कारगार औषधि के रुप में होता है। औषधि के रुप में इसका कुछ मुख्य औषधीय गुण निम्नलिखित हैः

1. इसके पोधे की पत्तिया त्वचा रोग शरीर की सूजन एवं शरीर पर पेड़ घाव ओर जख्म भरने जैसी समस्या से लेकर बहुत सी बीमारियों में भी बहुत उपयोगी है।
2. अश्वगंधा के पौधे को पीसकर लेप बनाकर लगाने से शरीर की सूजन या शरीर के किसी भी विकृत गंथि ओर किसी भी तरह के फोड़े फुंसी को हटाने में काम आती है।
3. पौधे की पत्तियों को घी, शहद, पीपल इत्यादि के साथ मिलाकर सेवन करने से शरीर निरोग रहता है।
4. यदि किसी को चर्मरोग है। तो उसके लिये भी अश्वगंधा जड़ी बूटी बहुत लाभकारी है। इसका चूर्ण बनाकर तेल के साथ लगाने से चर्म रोग से निजात पाई जा सकती है।
5. उच्च रक्तचाप की समस्या से पीड़ित लोग यदि अश्वगंधा के चूर्ण का दूध के साथ नियमित सेवन करेंगे तो निश्चित तोर पर उसका रक्तचाप सामान्य हो जाएगा।
6. शरीर मे कमजोरी या दुर्बलता को भी अश्वगंधा तेल से मालिश कर दूर किया जा सकता है। इतना ही नही गैस संबंधी समस्या में भी ये पौधा अत्यंत लाभदायक होता हे।
7. सास संबंधी रोगों से निजात पाने के लिये अश्वगंधा के क्षार को शहद ओर घी के साथ मिलाकर सेवन करने से बहुत लाभ मिलता है।
8. वृद्धावस्था मे होने वाली बीमारियों को दूर करने, तरोताजा रहने ओर उर्जावान बने रहने के लिये अश्वगंधा चूर्ण को प्रतिदिन दूध के साथ लोना चाहिए। इससे मस्तिष्क भी तेज होता है।
9. इसके अतिरिक्त अश्वगंधा पौधे के ओर लाभ हैं कि यह खांसी क्षयरोग गठिया में भी बहुत लाभदायक हे।
10. अश्वगंधा पौधे की जड़ पौष्टिक होने के साथ ही पाचक अम्ल व प्लेग जैसी बीमारियों से निजात दिलाती हे।

अश्वगंधा पौधे के जड़, पत्ती, तना, बीज, फल सभी का उपयोग दवाई बनाने में किया जाता हैं। अश्वगंधा एक ऐसा ओषधीय पौधा है। जिस पौधे का हर एक भाग दवा बनाने के काम आता है।

पौधे का नाम	उपयोग का प्रतिशत
जड़	40
पत्ती	14
बीज	32
तना	2
फल	12

दिये गये चित्र से प्रदर्शित है कि अश्वगंधा के पौधे मे सबसे अधिक उपयोग उसकी जड़ का किया जाता है। इसकी सूखी व गीली दोनों ही काम आती हे। अश्वगंधा की जड़ का उपयोग टॉनिक बनाने में किया जाता है।

अश्वगंधा की खेती से लाभ :

देश विदश में अश्वगंधा की काफी मांग है। अश्वगंधा के बाजार के लियें मध्यप्रदेश का नीमच ओर मंदसोर पूरी दुनिया में मशहूर हे। देश से आयातक खरीददार प्रोफेसर पारंपरिक व्यापारी आयुर्वेदिक ओर सिद्ध डग मैन्युफैक्चरर प्रति साल यहां आकर अश्वगंधा की जड़ खरीदते है। प्रदेश में इसकी खेती लगभग 4300 हेक्टेयर में होती है। इसमें तकरीबन 1650 टन प्रति वर्ष उत्पादन होता हे। जबकि इसकी मांग 7000 टन सालाना है। अधिकतर एक में 65–80 क्विंटल ताजा जड़े प्राप्त होती है। जो सूखने पर 3 से 5 क्विंटल री जाती है। इससे 50 से 60 किग्रा. बीज प्राप्त होता है। एक हेक्टेयर मेंअश्वगंधा पर अनुमानित लागत करीब 1000 रुपये आता है। जबकि लगभग 5 क्विंटल जड़ों का सामान्य विक्रय मूल्य लगभग 80 हजार रुपये होता है। इससे शुद्ध लाभ करीब 68 हजार रुपये होता है। इससे 750 रुपये प्रति हेक्टेयर होता हे। उन्नत प्रजातियों में यह लाभ बढ़ जाता है। अधिक लाभ कमा सकते है। तथा इसकी बड़े पैमाने पर खेती करके व अश्वगंधा का उपयोग कर बनाई गई दवाओं का निर्यात कर हम विदेशी व्यापार में योगदान देकर देश की आर्थिक स्थिति को मजबमत कर सकते है।

उपसंहार : पूर्व में औषधीय वनस्पतियों का संग्रह वनों से होता था इनकी कृषि पर विचार नही किया गया था किंतु मांग बढ़ने के कारण अब औषधीय पौधो की कृषि प्रारंभ हो गई हे। औषधीय पौधों कृषि अन्य फसलों की तुलना में लाभप्रद सिद्ध हो रही है। अश्वगंधा एक एसी औषधीय है जिसका बाजार काफी बड़ा व लाभप्रद है। इसके द्वारा हम काफी बीमारियों का इलाज आयुर्वेदिक पद्धति से कर सकते है। जो हमारे रोगों को दूर करने में सहायक है। यह एक एसी जड़ी बूटी है। जो हमें बड़ी ही आसानी से उपलब्ध हो जाती है। इसका उपयोग कई एलोपैथिक दवाओं को बनाने में किया जाता हें। इसका उपयोग कर बनाई गई दवाओं का हम विदेशों में बड़ी मात्रा में निर्यात करते है। इसके कच्चे माल की मांग भी दिनो दिन बढ़ रही है। जो हमारे विदेशी व्यापार के लिये लाभप्रद सिद्ध हो रही है। 6 से 10 रुपये की सालाना मुद्रा हमें औषधीय पौधो के उत्पाद को निर्यात करने से प्राप्त होती है। जो हमारे देश के आर्थिक विकास को सुदृढ़ बनाती है।

संदर्भ ग्रंथ :

- अश्वगंधा की संपूर्ण जानकारी पब्बिव सपअम अश्वगंधा विकिपीडिया।
- तिवारी,ए.बी. 2015 म.प्र. के प्रमुख औषधीय सें।
- पौधो की उन्नत कृषि तकनीक जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय जबलपुर 2016।
- देशपांडे, धनंजय 2014 ओषधीय वनस्पतिया नई दिल्ली।
- शर्मा,संतोष हर्बल मेडिशनल प्लांट राजस्थान।

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम

डॉ. प्रवीण चौधरी
अर्थशास्त्र विभाग, शासकीय नेहरू अग्रणी महाविद्यालय अशोक नगर(म.प्र.)

सारांश : भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश के समग्र विकास के लिये ग्रामीण विकास का होना आवश्यक है। रोजगार सृजन से ग्रामीण क्षेत्र के अन्तर्गत स्वरोजगार प्रदान करने में शासन का महत्वपूर्ण योगदान होता है। ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार सृजन का सबसे बड़ा माध्यम स्वरोजगार प्रदान करना होता है। ग्वालियर जिले में ग्रामीण क्षेत्र के अन्तर्गत स्वरोजगार प्रदान करने हेतु शोध अवधि में कियान्वित प्रमुख योजनाऐं, समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम एवं जवाहर रोजगार येाजना है जिसका प्रमुख उद्देश्य स्वरोजगार प्रदान करना है। समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम को 1978–79 में प्रारम्भ किया गया, तथा ग्रामीण क्षेत्र में स्वरोजगार के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराने के लिये जवाहर रोजगार योजना 1 अप्रैल 1989 को प्रारम्भ की गई। ग्वालियर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम के कियान्वयन में शोध अवधि के प्रारम्भ में प्रदत्त अनुदान 25.08 लाख रूपये और अन्त में 70.61 लाख रूपये रही। जो अनुदान राशि में तेजी से उतार–चढाव कार्यक्रम के अस्थिरता के परिणास्वरूप है। ग्वालियर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में जवाहर रोजगार योजना का प्रारम्भिक वर्ष 1990–91 में आर्थिक लक्ष्य 11.18 लाख था जबकि लाभान्वित व्यक्ति 7.45 लाख जिसमें अनुसूचित जाति के 7.25 लाख तथा अनुसूचित जनजाति के 1.25 लाख थे। शोध अवधि के अन्तिम वर्ष में वार्षिक लक्ष्य 5.59 लाख व्यक्ति रहा जिसमें लाभान्वित व्यक्ति 5.08, जिसमें अनुसूचित जाति 2.91 लाख तथा अनुसूचित जनजाति 1.01 लाख व्यक्ति रहे। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जवाहर रोजगार योजना वार्षिक लक्ष्यों को पूरा नहीं कर सकी तथा कहीं–कहीं ग्रामीण क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार कार्यक्रमों को कागजों पर चलाया जा रहा है एवं ये कार्यक्रम लोगों तक नहीं पहुॅच पा रहे हैं इसलिय ग्रामीण क्षेत्र के विकास के लिये ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम : ;ल्तंस म्उचसवलउमदज च्तवहतंउउमद्ध

भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसका एक बड़ा भाग ग्रामीण क्षेत्र में निवास करता है। देश के समग्र विकास के लिये ग्रामोण विकास एक अहम धुरी है। ग्रामीण क्षेत्र में खुली बेरोजगार, अर्द्ध बेरोजगारी की समस्याऐं हैं। रोजगार सृजन से ग्रामीण क्षेत्र के अन्तर्गत स्वरोजगार प्रदान करने में शासन का महत्वपूर्ण योगदान होता है। ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार सृजन का सबसे बड़ा माध्यम स्वरोजगार प्रदान करना है। ग्रामीण क्षेत्र में प्रमुख रूप से जो मौसमी बेरोजगारी, अदृश्य बेरोजगारी तथा अल्प रोजगार सम्बन्धी बेरोजगारी पाई जाती है। उसका निवारण स्वरोजगार के माध्यम से ही सम्भव है। ग्वालियर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में स्वरोजगार प्रदान करने के लिऐ शोध अवधि मं मुख्य रूप से स्वरोजगार कार्यक्रम क्रियान्वित की गई है। उसमे प्रमुख समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम तथा जवाहर रोजगार योजनाऐं सम्मिलित है।

समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम : ;प्दजमहतंजमक ल्तंस क्मअमसवचउमदज च्तवहतंउउमद्ध

ग्रामीण संदर्भ में स्वरोजगार सृजन के लिए अति महत्वाकांक्षी समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम को वर्ष 1978–79 में प्रारम्भ किया गया। केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा 50–50 के अनुपात में वित्त पोषित कर यह कार्यक्रम सम्पूर्ण देश में 2 अक्टूबर 1980 से प्रारम्भ किया गया। इस कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य चिन्हित ग्रामीण परिवारों को स्वरोजगार के माध्यम से समर्थ तथा सक्ष्म बनाना है। इस उद्देश्य के लक्षित समूहों को उत्पाद परिसम्पत्तियॉ एवं निवेश उपलब्ध कराकर प्राप्त किया जाता है।

यह परिसम्पत्तियॉ प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों में वित्तीय सहायता के माध्यम से उपलब्ध कराई जाती हैं। यह वित्तीय सहायता शासन द्वारा दिया गया अनुदान एवं बैंकिंग तथा वित्तीय संस्थाओं द्वारा दिये गये ऋणों के रूप में होता है।

लक्षित समूह में लघु एवं सीमान्त किसान, कृषि मजदूरों एवं ग्रामीण कारीगर सम्मिलित हैं। इसमें कम से कम 50 प्रतिशत परिवार अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के होने चाहिए तथा कम से कम 40 प्रतिशत महिलाऐं होनी चाहिए।

इस कार्यक्रम की सहायता प्राप्त करने वाले परिवारों में 5 प्रतिशत व्यक्तियों को निर्धारित किया गया है इसमें परिवार कल्याण कार्यक्रम के ग्रीन कार्ड धारकों, मुक्त बन्धुआ मजदूरों को प्राथमिकता देने का प्रावधान है। गरीबी रेखा को 6400 रूपये प्रति वर्ष प्रति परिवार को बढ़ाकर वर्ष 1992–93 से 11000 रूपये कर दिया गया है एवं भूमि की खरीद को इस कार्यक्रम में एक स्वीकार्य गतिविधि बना दिया गया है।

ग्वालियर जिले में समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम के क्रियान्वयन में शासन की भूमिका वर्ष 1985–86 से 1994–95 की शोध अवधि हेतु निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका

ग्वालियर जिले में समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम के कियान्वयन में शासन की भूमिका (लाख में)

वर्ष	अनुदान राशि
1985–86	25.86
1986–87	76.65
1987–88	81.38
1988–89	14.60
1989–90	56.57
1990–91	87.01
1991–92	108.18
1992–93	66.66
1993–94	119.26
1994–95	70.61

स्त्रोत : कार्यालय परियोजना अधिकारी, ग्रामीण विकास अभिकरण ग्वालियर

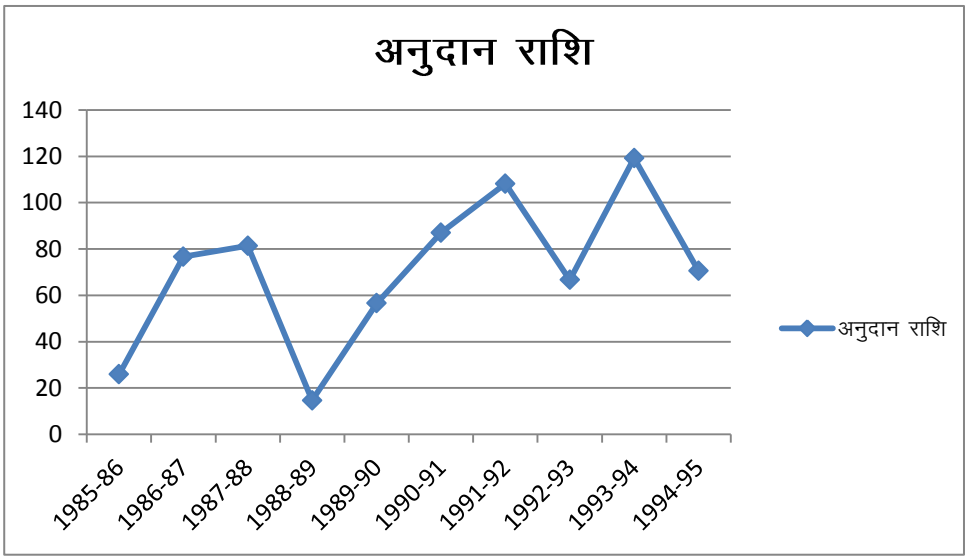

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि ग्वालियर जिले में समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम के कियान्वयन में शासन की भूमिका, अनुदान राशि के रूप मे व्यक्त की गई है। वर्ष 1985–86 में यहॉ अनुदान राशि केवल 25.86 लाख रूपये थी वह क्रमशः 1986–87 एवं 1987–88 में बढ़कर 76.65 एवं 81.38 लाख रूपये हो गई किन्तु 1988–89 में अनुदान राशि 14.60 लाख रूपये होकर ही रह गई। तदोपरान्त वर्ष 1989–90, 1990–91 एवं 1991–92 में यह अनुदान राशि वढ़कर क्रमशः 56.57, 87.07 एवं 108.18 लाख रूपये हो गई। वर्ष 1992–93 में अनुदान राशि घटकर 66.66 लाख रूपये रह गई जबकि वर्ष 1993–94 में यह

अनुदान राशि बढ़कर 119.26 लाख रूपये हो गई। वर्ष 1994–95 में यह राशि घटकर 70.61 लाख रूपये रह गई।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि अनुदान राशि में परिवर्तन यह प्रदर्शित करता है कि ग्वालियर जिले में शोध अवधि में समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम अस्थिर रहा है।

जवाहर रोजगार योजना : ;श्रींत त्वरहंत ल्वरंदंद्ध

ग्रामीण क्षेत्र में स्वरोजगार के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराने के लिए जवाहर रोजगार योजना 1 अप्रैल 1989 में ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम एवं खेतीहर मजदूर रोजगार गारंटी कार्यक्रम को विलय करके प्रारम्भ की गई। जवाहर रोजगार योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में उत्पादक, आर्थिक परिसम्पत्तियों का निर्माण कर बेरोजगार तथा अल्प रोजगार प्राप्त पुरूषों एवं महिलाओं, विशेषकर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं मुक्त बंधुआ मजदूरों के लिए स्वरोजगार अथवा अतिरिक्त रोजगार की व्यवस्था करना है।

जवाहर रोजगार योजना का उद्देश्य गैर कृषि मौसम में रोजगार के इच्छुक 18 वर्ष से अधिक और 60 वर्ष से कम आयु के ग्रामीणों को 100 दिवस तक का रोजगार उपलब्ध कराना है। इस योजना की दो उपयोजनाओं में इन्दिरा आवास योजना एवं निर्धन किसानों को निःशुल्क कुंऐ, तालाब, अल्प सिंचाई योजना एवं भूमि विकास के कार्यो को सम्मिलित किया गया है। इस योजना में केन्द्र एवं राज्य सरकार का व्यय 80 एवं 20 अनुपात में होता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जवाहर रोजगार योजना का प्रारम्भिक लक्ष्य ग्रामोण क्षेत्रों में स्वरोजगार एवं द्वितीयक लक्ष्य ग्रामीण अधोसंरचना एवं परिसम्पित्तियों का निर्माण, मजदूरी स्तर पर सकारात्मक प्रभाव एवं जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।

जवाहर रोजगार योजना को अब तीन धाराओं में बॉटकर कार्य किया जा रहा है। प्रथम धारा के अधीन सरकारी एवं सामुदायिक निर्माण कार्य, वृक्षारोपण भूमि तथा जल संरक्षण, छोटी सिंचाई योजनाऐं, सड़कों एवं भवनों का निर्माण आदि कार्य सहित इन्दिरा आवास उपयोजना एवं 10 लाख कुओं की उपयोजना को सम्मिलित किया गया है।

द्वितीयक धारा के अन्तर्गत चिन्हित 120 पिछले जिलों में अतिरिक्त आवंटन से योजना को अधिक तीव्र बनाना है।

तृतीय धारा के अन्तर्गत ऑपरेशन, ब्लेड बोर्ड कार्यक्रम चलाना, श्रम प्रवासों को रोकना, महिला रोजगार को बढ़ावा देना। जल प्रबंधन एवं बंजर भूमि विकास को प्रोन्नत करना है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के लिए जवाहर रोजगार योजना का निर्माण उत्तम उद्देश्यों, विस्तृत लक्ष्य, नवक्रिया एवं, नवीन कार्यक्रम को सम्मिलित कर किया गया है।

ग्वालियर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में जवाहर रोजगार योजना वर्ष 1990–91 से क्रियान्वित हो सकी। जवाहर रोजगार योजना का प्रमुख उद्देश्य स्वरोजगार का सृजन करना था।

ग्वालियर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में जवाहर रोजगार योजना का क्रियान्वयन निम्नाकिंत तालिका से दर्शाया गया है।

तालिका

ग्वालियर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में जवाहर रोजगार योजना का क्रियान्वयन (लाख में)

वर्ष	वार्षिक लक्ष्य	लाभान्वित व्यक्ति	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
1990–91	11.18	7.45	2.75	1.25
1991–92	10.89	8.29	3.39	1.62
1992–93	अप्राप्त	5.26	2.71	1.04
1993–94	7.43	6.87	3.16	1.64
1994–95	5.59	5.08	2.91	1.01

स्त्रोत : जिला ग्रामीण विकास अभिकरण ग्वालियर (म.प्र.)

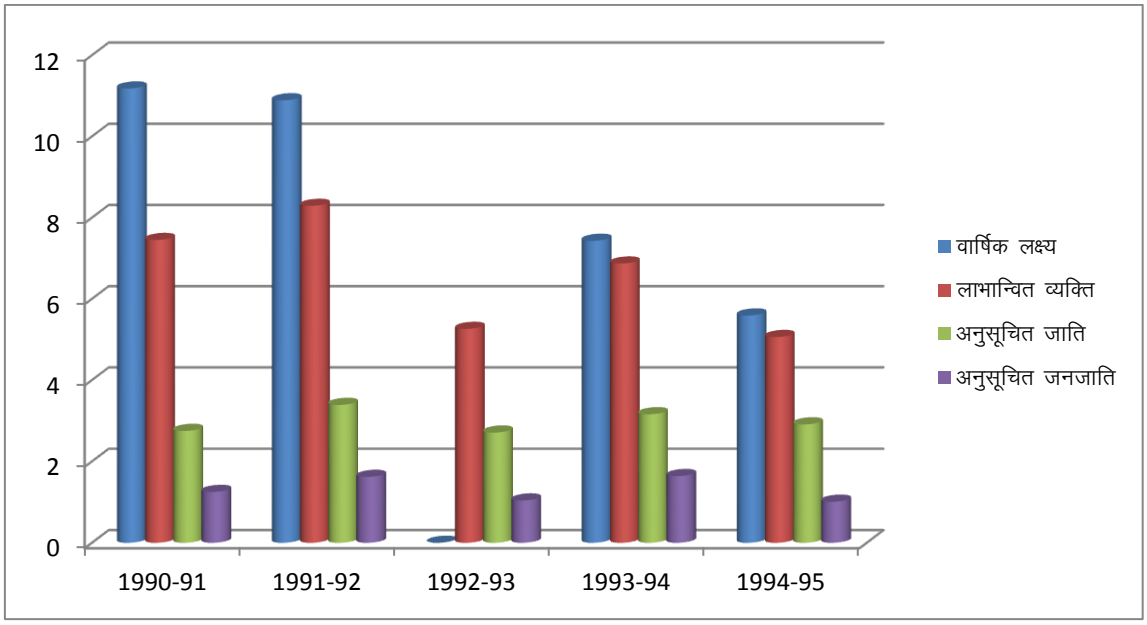

उपयुक्त तालिका से स्पष्ट है कि ग्वालियर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में जवाहर रोजगार योजना का लक्ष्य वर्ष 1990–91 में 11.18 लाख व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करना था किन्तु यह लक्ष्य पूरा नहीं किया जा सका तथा केवल 7.45 लाख व्यक्ति लाभान्वित हो सके जिससे 2.75 लाख अनुसूचित जाति एवं 1.25 लाख अनुसूचित जनजाति के व्यक्ति लाभान्वित हो सके। वर्ष 1991–92 में 10.89 लाख के वार्षिक लक्ष्य से कम 8.29 लाख व्यक्ति लाभान्वित हो सके तथा इस वर्ष में लाभान्वित अनुसूचित जाति के 3.39 लाख एवं 1.62 लाख अनुसूचित जनजाति के थे। वर्ष 1992–93 में वर्षिक लक्ष्य अप्राप्त होते हुये 5.29 लाख व्यक्ति लाभान्वित हुये अनुसूचित जाति के 2.71 लाख तथा अनुसूचित जनजाति के 1.04 लाख व्यक्ति लाभान्वित हुऐ। वर्ष 1993–94 में वार्षिक लक्ष्य 7.43 लाख से कम 6.87 लाख व्यक्ति लाभान्वित हुये तथा अनुसूचित जाति के 3. 16 लाख और अनुसूचित जनजाति के 1.64 लाख व्यक्ति लाभान्वित हुये। वर्ष 1994–95 मे वार्षिक लक्ष्य 5.29 लाख व्यक्ति रखे गये, किन्तु इस लक्ष्य से 5.08 लाख व्यक्ति लाभान्वित हो सके जिसमें अनुसूचित जाति के 2.91 लाख तथा अनुसूचित जनजाति के1.01 लाख व्यक्ति लाभान्वित हुऐ।

इस प्रकार स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि जवाहर रोजगार योजना अपने वार्षिक लक्ष्यों को तथा लक्ष्यों के बार–बार कम करने के पश्चात् भी उन लक्ष्यों को पूरा नहीं किया जा सका।

निष्कर्ष : ग्रामीण संदर्भ में रोजगार सृजन में ग्रामीण बेरोजगारी की प्रकृति को देखते हुये स्वरोजगार प्रदान करने में शासन की महत्वपूर्ण भूमिका है। ग्वालियर जिले में ग्रामीण क्षेत्र के अन्तर्गत स्वरोजगार प्रदान हेतु शोध अवधि में क्रियान्वित प्रमुख योजनाऐं समन्वित ग्रामीण विकास कार्यकम एवं जवाहर रोजगार योजनाऐं हैं। जिसका प्रमुख उद्देश्य निर्धनता की रेखा के लक्ष्य समूहों उत्पादक परिसम्पत्यिों एवं निवेश उपलब्ध कराकर स्वरोजगार प्रदान करना है। ग्वालियर जिले में समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम की क्रियान्वयन में जो शोधावधि के प्रारम्भ में प्रदत्त अनुदान राशि 25.08 लाख रूपये थी वह अन्त में 70.61 लाख रूपये रही। शोधावधि के मध्य में अनुदान राशि में तेजी से उतार–चढाव कार्यक्रम के अस्थिरता के परिणामस्वरूप है। ग्रामीण क्षेत्र में अधिक से अधिक रोजगार सृजन हेतु जवाहर रोजगार योजना प्रारम्भ की गई है। इस योजना का एक उद्देश्य गैर कृषि मौसम में इच्छुक ग्रामीण को 100 दिवस का रोजगार उपलब्ध कराना है। इसके साथ ही बेरोजगार तथा अल्प रोजगार प्राप्त पुरूषों एवं महिलाओं विशेषकर अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों एवं मुक्त बन्धुआ मजदूरों को उत्पादक, आर्थिक परिसम्पत्तियों का निर्माण कर या अन्य ग्रामीण विकास योजनाओं द्वारा स्वरोजगार अथवा अतिरिक्त रोजगार की व्यवस्था करना है। इस योजना को तीन धाराओं में बॉटकर नवक्रिया एवं नवीन कार्यक्रम को सम्मिलित कर किया गया है।

ग्वालियर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में जवाहर रोजगार योजना वर्ष 1990–91 से क्रियान्वित की गई तथा प्रारम्भिक वर्ष 1990–91 में वार्षिक लक्ष्य 11.18 लाख था जबकि लाभान्वित व्यक्ति 7.45 लाख जिसमें अनुसूचित जाति के 7.25 लाख तथा अनुसूचित जनजाति के 1.25 लाख थे। शोध अवधि के अन्तिम वर्ष 1994–95 में वार्षिक लक्ष्य 5.59 लाख व्यक्ति रहा जिसमें लाभान्वित व्यक्ति 5.08 लाख, अनुसूचित जाति 2.91 लाख तथा अनुसूचित जनजाति 1.01 लाख व्यक्ति रहे। इस प्रकार जवाहर रोजगार योजना वार्षिक लक्ष्यों को बार–बार कम करने के पश्चात भी लक्ष्यों को पूरा नहीं कर सकी। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कहीं–कहीं ग्रामीण क्षेत्र में इन कार्यक्रमों को कागल पर ही चलाया जा रहा है तथा ये कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्र के लोगों तक नहीं पहुँच पा रहे है इसलिये ग्रामीण क्षेत्र के विकास के लिये ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

- अग्रवाल ए.एन. – ''भारतीय अर्थव्यवस्था'' (विकास एवं नियोजन) विश्व प्रकाशन नई दिल्ली।
- भण्डारी एवं जौहरी – ''भारतीय अर्थव्यवस्था'' प्रगति पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- भटनागर डॉ. कालका प्रसाद – ''भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था'' किशोर पब्लिकेशन हाउस।
- दत्त एवं सुन्दरम् – ''भारतीय अर्थव्यवस्था'' एस चन्द्र एण्ड कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली।
- हजेला तिलक नारायण – ''आर्थिक विचारों का इतिहास'' शिवलाल अग्रवाल एंड कम्पनी, आगरा।
- जैन एवं सिसौदिया – ''म.प्र. सामान्य ज्ञान'' उपकार प्रकाशन, आगरा।
- जैन डॉ. बी.एम.– शोध प्रविधि एवं तकनीकी, कोणार्क पब्लिकेशन, दिल्ली।
- जैन डॉ. एस.सी. – ''औद्योगिक अर्थशास्त्र'' कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल।
- मिश्र एवं पुरी – ''भारतीय अर्थव्यवस्था'', हिमालय पब्लिकेशिंग, नई दिल्ली।
- माथुर डॉ. बी.एल. – ''कृषि अर्थशास्त्र'' अर्जुन पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।
- पाटनी आर.एल. – ''भारतीय अर्थव्यवस्था'' राजीव प्रकाशन, मरठ।
- सिंघई डॉ. जी.सी. एवं. डॉ. जे.पी. मिश्रा – ''यूनीफाइड अर्थशास्त्र'', साहित्य भवन, आगरा
- जिला सांख्यिकी पुस्तिका
- प्रतियोगिता दर्पण
- प्रतियोगिता निर्देशका
- कुरूक्षेत्र
- योजना
- उद्योग एवं व्यापार पत्रिका
- इंटरनेट
- दैनिक समाचार पत्र

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

डॉ. अम्बेडकर के आर्थिक विचारो पर प्रभाव

महिताप सिंह धुर्वे
शोधार्थी (हिन्दी) हिन्दी एवं भाषा विज्ञान रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

भूमिका : किसी भी व्यक्ति के विचार या आर्थिक विचार जिन दशाओं और पर्यावरण में वह रहता है, उससे प्रभावित होते हैं। भारतीय अर्थशास्त्रियों पर भी यही बात लागू होती है। यह सही है कि उनके लेखन में सैद्धान्तिक विकास के संबंध में कोई महत्वपूर्ण योगदान नहीं मिलता है। परन्तु उनके लेखन ने व्यावहारिक आर्थिक अनुसंधान का निश्चित रूप से विकास किया है। यदि आर्थिक विचारों से आशय किसी शुद्ध सिंद्धात के प्रतिपादन एवं विकास से है तब तो अधिकांश भारतीय अर्थशास्त्रियों के लेखन में कुछ भी मूल्यवान नहीं है और यदि इसका आशय देश की आर्थिक समस्याओं के लिए तार्किक दृष्टिकोण, एक स्पष्ट दृष्टि और उद्देश्य के प्रति निश्चित एकता से है तो भारतीय अर्थशास्त्रियों ने पर्याप्त सफलता प्राप्त की है। यही बात डॉ. आम्बेडकर और उनके लेखन के बारे में सही है। अर्थशास्त्र विषय पर उनका अधिकांश लेखन सन् 1913 से 1923 के बीच की अवधि में हुआ और वह भी या तो अमेरिका में या इंग्लैंड में। उनके विचार उनके अपने प्रारंभिक जीवन की पीड़ाओं में, भारत में अछूतों के प्रति व्यवहार, उनके शिक्षकों तथा देश की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दशाओं से प्रभावित थे। अमेरिका, इंग्लैंड और जर्मनी की दशाओं ने भी उनके विचारों को प्रभावित किया।

वैदिक काल में आर्यो के समय में जाति प्रथा नहीं थी। बाद में आर्यो ने अपने आपको श्रम विभाजन के आधार पर और व्यक्ति की अपनी योग्यता, पंसद तथा क्षमता के अनुसार विभिन्न व्यवसायों में विभाजित कर लिया था। अध्ययन, अध्यापन और धार्मिक संस्कारों को कराने का काम अपनाने वाले ब्राहम्ण कहलाने लगे। प्रशासन और सुरक्षा का दायित्व लेने वाले को सामान्यतः क्षतिय कहा गया, जिन्होनें व्यापार एवं व्यवसाय करना शुरू किया उन्हें वैश्य कहा गया और जोलोग इन तानों श्रेणी के लोगों की सेवा करते थेया अनिवार्य या दायित्व का कार्य करते थे, उन्हेंशूद्र कहा गया। यही विभाजन आगे चल कर जाति–पाति की कठोर चारदीवारी में परिणत हो गया और किसी व्यक्ति की जाति का निर्धारण उसके जन्म से ही होने लगा। इस प्रकार हिन्दू समाज में सामाजिक संगठन जाति प्रथा के आधार पर स्थिर हो गया और इसे चार वर्ण व्यवस्था के नाम से जाना जाता है। समय बीतने के साथ ही प्रत्येक वर्ण या जाति का विभिन्न उपजातियो में विभाजन हुआ और फिर प्रत्येक वर्ण कई नाम वाली सैंकड़ों उपजातियों में विभाजित हो गया।

सार्वजनिक सेवाएं भी उनके लिए निषिद्ध थीं। कुछ लोग अवश्य ही भाग्यशाली थे जिन्हें जीतने के लिए काश्तकार के रूप में भूमि प्राप्त हो गई थी या श्रमिको के रूप में कार्यरत् थे। ''इस प्रकार सामाजिक, धार्मिक और नागरिक अधिकारों से वंचित इन लोगों के पास अपनी दशाएं सुधारने का कोई अवसर नही था। ये अछूत हिन्दू एक मृत भूतकाल का जीवन जी रहे थे। सामाजिक अलगाव, स्वास्थ्य के लिए हानिकारक वातावरण और अपर्याप्त आवास में अपने जीवन की गाड़ी खींचते थे।''

डॉ. अम्बेडकर ने एक अछूत परिवार में जन्म लिया था। उनके नाना कबीर सम्प्रदाय के अनुयायी थे। डॉ. आम्बेडकर को अछूतों की दशाओं का गहन ज्ञान था। उनकी दयनीय दशाओं से वे भली–भांति परिचित थे। स्वयं अदूत होने के कारण उन्हें कई बार मर्मान्तक पीड़ा सहन करनी पड़ी थी। ऐसा उनके साथ कई प्रकरणों में हुआ। स्कूल में पढ़ते समय या गांव जाने के लिए गाड़ी में यात्रा करते समय या बड़ौदा राज्य में सेवा के समय या सिडनहम कालेज बम्बई में प्रोफेसर के रूप में कार्य करते समय अछूत होने के कारण उनके साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया गया था। इन मर्यादाहीन और तिरस्कारपूर्ण अपमानों से प्रेरित होकर उन्होनें समस्या के मूल को खोजने की कोशिश की। उन्होनें इस कार्य सहानुभूति रखने वालों से सम्पर्क किया। साथ ही दलितों और अछूतों के उद्धार के लिए कार्य करने की निश्चय किया।

देश में अंग्रेजों का शासन था। वे लोगों का शोषण और देश का दोहन कर रहे थे। लोगों

में सामाजिक–राजनीतिक चेतना का जागरण हो चुका था। भारतीय नेताओं ने राजनीतिक और सामाजिक दोनों ही आंदोलन एक साथ चलाए। इन नेताओं में प्रमुख थे – रानाडे, आगारकर और डॉ. भंडारकर। लोकमान्य तिलक रोबदार, आक्रामक और पांडित्यपूर्ण व्यक्तित्व के धनी थे। उनके अनुसार राजनीतिक कष्टों को दूर करना देश की प्रथम आवश्यकता है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हो चुकी थी। कांग्रेस ने अपने सम्मेलन में ब्रिटिश सरकार से अपील की थी कि कम से कम शासकीय पदों व समितियों का भारतीयकरण किया जावे। इस अवधि में अंग्रेजी सरकार ने भारतीय नागरिकों के अधिकारों का सम्पूर्ण शक्ति के साथ दमन किया था। वाद–विवाद और सभा करने की स्वतंत्रता को धीरे–धीरे समाप्त कर दिया गया था। इन अधिकारों का दमन करने के विरूद्ध शिकायतें, विरोध और अपील करने वालों को सरकार द्वारा राज्यद्रोही करार देकर उनकी सार्वजनिक भर्त्सन की जाती थी। लोगों में व्याप्क रूप से असंतोष था और इसने देश में राजनीतिक अशांति को जन्म दिया। बाल गंगाधर तिलक ने कांग्रेस दल में राष्ट्रीय भावनाओं को जगाया। तिलक ने आत्मनिर्भरता और स्वयं सहायता का मंत्र सिखाया।

यह उनकी पुस्तक ''दि इवाल्यूशन ऑफ प्राविन्शियल फादनेन्स इन ब्रिटिश इंडिया'' उद्धृत निम्नलिखित वाक्यों से स्पष्ट है – ''सत्ता कदाचित ही स्वयं अपनी आत्महत्या करती। जब लोग स्वेच्छा से सरकार की आज्ञा का पालन नहीं करते है तो यह ताकत का उपयोग करती है – केवल उस शक्ति सम्पन्नता से संतुष्ट न होते हुए जो कार्यपालिका को अपराधों की विरोधक विधि, क्रिमिनल और पीनल कोड के प्रावधानों से प्राप्त हुई थी सरकार ने इंडियन इस्टीट्यूट बुक मे ऐसे दमनकारी कानूनों के समूह को सम्मिलित किया जिन्हें विश्व के किसी अन्य जगह में पाना कठिन था।'' डॉ. आम्बेडकर ने उस समय की सरकारी नौकरशाही को अनुदार, अंहानकारी और अनुत्तरदायित्वपूर्ण कह कर भर्त्सना की थी। उनके अनुसार सार्वजनिक सभी करने के अधिकार का दमन उसी प्रक्रिया और कठोरता के साथ किया गया जैसा कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार और विवाद की स्वतंत्रता के अधिकार का दमन किया गया था।

डॉ. अम्बेडकर अमेरिका के संविधान विशेषकर उसके चौदहवें संशोधन से भी प्रभावित हुए थे। इस संशोधन के अनुसार नीग्रो लोगों की स्वतंत्रता की घोषणा की गई थी। इसी प्रकार बुकर टी. वांशिगटन के जीवन से भी वे अत्याधिक प्रभावित थे, इनकी मृत्यु 1915 में हुई थी। श्री वाशिंगटन, अमेरिका में नीग्रो जाति के महान सुधारक और शिक्षा शास्त्री थे। इन्होनें 'टस्कीज इन्स्टीट्यूट' की स्थापना की थी और उसके अध्यक्ष रहे थे। यह संस्था नीग्रो लोगों में शिक्षा का प्रचार–प्रसार करती है। इसी संस्था ने नीग्रो लोगों को दासत्व के उन बंधन से मुक्त कराया जिनसे ये युगों से भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से पीड़ित थे।

डॉ. अम्बेडकर के विचारों को प्रभावित करने वाली आर्थिक दशाओं का अध्ययन करते समय हमें हमारा दृष्टिकोण अधिक व्यापक करना होगा। इन दशाओं को प्रांरभिक रूप तीन भागों में बांटा जा सकता है – प्रथम, विश्व अर्थव्यवस्था की स्थिति, द्वितीय, भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति और तृतीय भारत में दलित वर्गो की आर्थिक स्थिति।

विभिन्न देशों के लोगों के विचारों को प्रभावित करने वाली कई समस्याऐं और कई तत्व थे। ''उन्नीसवीं सदी का प्रांरभ सभी प्रकार की सरकारों का था बुराई करने के साथ हुआ था और व्यक्तिगत पहल और आर्थिक स्वतंत्रता की अच्छाईयों सभी जननेताओं तथा प्रचारकों ने असीमित विश्वास प्रकट किया था। शताब्दी का अंत आर्थिक और सामाजिक संगठन की सभी दशाओं में राज्य के हस्तक्षेप की मांग के साथ हुआ। प्रत्येक देश में ऐसे जननेताओं और अर्थशास्त्रियों की संख्या निरंतर बढ़ रही थी। जो राज्य की आर्थिक क्रियाओं में विस्तार चाहते थे। विद्वानों के इस मत परिवर्तन को राज्य समाजवाद के रूप से जसनस जाता है और डॉ. आम्बेडकर ने राज्य के स्वामित्व और संचालन, तथा बीमा पर राज्य एकाधिकार की सिफारिश की थी।

वर्ष 1848 से 1849 में आस्ट्रेलिया और केलीफोनिया की स्वर्ण खदानों की खोज हुई तथा स्वर्ण, चांदी की तुलना में सस्ता हो गया। तथाकथित ग्रेशम का नियम लागू होने लगा अर्थात् सस्ती धातु मंहगी को चलन से बाहर कर दिया। कम मूल्य वाले स्वर्ण ने चांदी को चलन से बाहर कर दिया। अमेरिका से बड़े पैमाने पर स्वर्ण

के निर्यात के लिए अमेरिकन गृह–युद्ध उत्तरदायी था। इस स्वर्ण का कुछ भाग भारत पहुंच गया था। इससे भारत से स्वर्ण मुद्रा हेतु एक आंदोलन प्रारंभ हो गया। सन् 1874 तक चांदी के मौद्रिक स्तर में एक परिवर्तन प्रारंभ हो गया था। 1873 में जर्मनी ने चांदी का विमुद्रीकरण किया था। बाद में नीति स्वीडन, डेनमार्क, नार्वे, लेटिन संघ के देशों ने भी अपनाई। इसके परिणामस्वरूप बाद में चांदी बहुत बड़ी मात्रा में आ गई। इस समय चांदी का उत्पादन भी अत्याधिक हो रहा है। इसके दो कारण थे– एक तो प्रक्रिया में सुधार और दूसरा नई खदानों से चांदी निकाली जाने थो। विमुद्रीकरण चांदी ने रजतमान वाले दो प्रमुख देशों भारत और चीन में शरण ली, इसे उन देशों में भारी टंकण हुआ। परिणामतः चांदी की कीमतों में भारी कमी आ गई। इनमें भारत में स्वर्णमान प्रारंभ करने संबंधी आंदोलन को अधिक बल मिला। परन्तु अस्तित्व में भारत स्वर्ण विनियमान की स्थापना की गई। डॉ. आम्बेडकर ने सन् 1800 से 1893 की भारतीय चलन की दशाओं का विश्लेषण किया और स्पष्ट किया कि किस तरह वर्तमान के स्थान पर स्वर्ण विनियममान स्थापित हुआ। इस सारे विश्लेषण को डॉ. आम्बेडकर ने ''दि प्राब्लम ऑफ दि रूपी'' नामक पुस्तक का रूप दिया।

सन् 1914 के बाद विकसित और प्रस्तुत किये जाने वाले सभी विचारों पर महायुद्ध और उससे निर्मित समस्याओं की छाप अवश्य रहती है। अंर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के सभी पहलुओं जैसे व्यापार, उद्योग, वाणिज्य, यातायात, और वित्त आदि पर महायुद्ध का प्रभाव पड़ा था। प्रथम महायुद्ध के बाद अंतर्राष्टीय व्यापार की समस्याओं ने ने अभूतपूर्व महत्व धारण कर लिया था। जब मित्र देशों में जर्मनी से अपूर्ति की मांग की और अमेरिका ने साथी देशों को दिये गए असाधारण अग्रिमों के भुगतान की मांग की तो कई कठिन समस्याएं उठ खड़ी हुई। इस सबसे एक देश से दूसरे देश को अत्याधिक मात्रा में धन और मुद्रा का अंतरण होता है।

युद्ध के दौरान भी इंग्लैंड और फ्रांस ने अमेरिका को बड़ी मात्रा में स्वर्ण में भुगतान किया था। इन देशों ने युद्ध काल में बड़ी मात्रा में सामरिक सामग्री का आयात किया था। आयात के स्थान पर अन्य वस्तुओं का निर्यात नही किया जा सका था। युद्ध के समाप्त पर स्वर्ण भुगतान न केवल जारी रहा बल्कि उसमें वृद्धि हो गई और इससे विश्व में स्वर्ण वितरण असमान हो गया।

ब्रिटेनवासियों को आर्थिक नीति का उद्देश्य ''इग्लैंड तथा भारत की लागत'' था। उनकी इस नीति के परिणामस्वरूप ग्रामीण समुदाय का संगठन छिन्न–भिन्न हो गया। देश के आर्थिक जीवन में भारी परिवर्तन हो गये। कुटीर उद्योगों हास हो गया। परिणामतः काम करने वाले बेरोजगार हो गए। उनकी क्रयशक्ति कम हो गइ भूमि पर जनसंख्या का दवाब बढ़ गया। भारी करारोपण और अत्यधिक ऊँची ब्याज दर भुगतान तथा भूमि पर निर्भरता ने लोगों को और अधिक गरीब बना दिया। कुटीर उद्योगों ने तो गरीब लोगों के जीवन को और अधिक दयनीय बना दिया। भूमि कर ने कृषकों के आत्मसमृद्धता पर भी अवरोध लगाए।

भारतीय वस्तुओं को मशीनों से निर्मित वस्तुओं से प्रतियोगिता का सामना करना बड़े पैमाने के उद्योगों की स्थापना से केवल कुछ ही हाथों में आर्थिक शक्ति का चयनीकरण हो गया। इससे अनुचित वितरण की समस्या ने जन्म लिया – अमीर, अधिक अमीर हो गए और गरोब, अधिक गरीब। औद्योगिकरण के विकास के साथ ही शोषण भी हो रहा।

सीमा शुल्कों ने व्यापार और उद्योग दोनों को हानि पहुंचाई। ये राजनीतिक आधार पर गए थे भारतीय वस्तुओं पर ऊँची दरों से निर्यात शुल्क लगाया जाता था। और ब्रिटेन की वस्तुओं पर नीची दरों से आशत शुल्क लिया जाता था। व्यापार नीति के समस्त लाभ ब्रिटेनवासियों को ही प्राप्त थे। भारत केवल कच्चे माल का ही निर्यात कर सकता था आयात में निर्मित वस्तुएं होती थीं।

भारत सरकार ने सेना में जाति के लोगों की भर्ती पर प्रतिबन्ध लगा दिया जो उन्होनं श्री रानाडे से पिटीशन लिखवा कर प्रस्तुत की कि यह अन्यायपूर्ण आदेश रद्द किया जाए। शासन द्वारा निर्मित भवनों में अछूतों के लिए भी जगह हो इस हेतु एक बार वे मुम्बई के गवर्नर से भी मिले थे। इस प्रकार डॉ. आम्बेडकर को ''परिश्रमी भावना, शक्तिशाली मानसिक ऊर्जा और अपने समाज के कल्याण की तीव्र अपने पिता से प्राप्त हुई थी।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि डॉ. साहेब को साहित्य सृजन के लिए प्रेरणा स्वयं

अपने मन और विचारों से भी प्राप्त हुई। यदि वे महार जाति के अछूत परिवार में पैदा नही होते तो उनको छुआछूत का कटु अनुभव नही हुआ होता तो संभवतः उनकी लेखनी कुछ और ही स्पष्टतः डॉ. साहेब की रचनाओं के प्रेरणास्त्रोत वे स्वयं और उनके चारों ओर की सामाजिक परिस्थितियां रही है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. धनंजय कीर, डॉ. आम्बेडकर, लाइफ एण्ड मिशन, 1984 पृ. 2
2. डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर, राइटिंग एण्ड स्पीचेज़, वाल्यूम 6, एजुकेशन डिपार्टमेंट, गर्वनमेंट ऑफ महाराष्ट्र, 1989, पृ. 235
3. चार्ल्स जीड एंड चार्ल्स रिस्ट, हिस्टरी ऑफ इकानामिक डाक्ट्रीन्स, जार्ज जी हेरप एण्ड कम्पनी लि. लंदन, 1961 पृ. 410
4. धनंजय कीर, डॉ. आम्बेडकर, लाइफ एण्ड मिशन, 1987 पृ. 12
5. डॉ. डी.आर.जाटव, बाबा साहेब डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, व्यक्तितव एवं कृतित्व, समता साहित्य सदन, जयपुर, द्वितीय संस्करण, 1988, पृ. 254

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

भारत में बागवानी उत्पादन का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. सुनील कुमार चौधरी,
(Ph.D., UGC-NET, MPPSC-SLET, and M.Phil. M.A)Ujjain university
वन्दना मंडलोई

1. PDF- ICSSR, New Delhi, अर्थशास्त्र अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, (म.प्र.) पिनकोड–456010 ।
2. शोधार्थी, (डॉक्टोरल फैलो ICSSR New Delhi) अर्थशास्त्र अध्ययनशाला,विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन,।

सारांश :देश की अर्थव्यवस्था में कृषि का एक महत्वपूर्ण योगदान हैं। वर्तमान वर्ष 2016–17 में राष्ट्र के सकल घरेलू उत्पादन में कृषि क्षेत्र का योगदान 13.9 प्रतिशत आसन्नता देखा गया है। जिसमें बागवानी क्षेत्र का कृषि जी.डी.पी. में 30.4 प्रतिशत से भी अधिक का योगदान प्रदान करता है। बागवानी क्षेत्र कृषि क्षेत्र की ही एक विस्तृत शाखा है जिसमें लगभग छः प्रकार की कृषि उपज को शामिल किया जाता है। जैसे फल, सब्जि, औषधीय पौधे तथा सजावटी, पुष्प, मसाले, पौधीय फसले, आदि वर्तमान में बागवानी क्षेत्र में मधुमक्खी पालन, बांस उत्पादन आदि को भी शामिल कर लिया गया है। इन सबके पीछे का प्रमुख कारण रहा है देश में किसानों की आमदनी, गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी जैसे चिन्ताओं के साथ पोषण सुरक्षा, आय एवं लिंग की विषमता को कम करना, और सम्पोषित विकास की अभिकल्पनाओं को पूरा करने के लिए हर नागरिक और सरकार की चिंता का कारण रहा है। सन् 1980 में भारत सरकार ने बागवानी बोर्ड की स्थापना की और वर्ष 2004–05 में राष्ट्रीय बागवानी मिशन के साथ अन्य ऐसे कार्यक्रमों का निष्पादन किया है जिससे देश में पिछले एक दशक में बागवानी के क्षेत्र 2.7 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर्ज की हुई है। जबकि उत्पादन में 7 प्रतिशत सालाना की दर से बढ़ रहा है। बागवानी फसलों में उत्पादन में सबसे अधिक वृद्धि 9.5 प्रतिशत वार्षिक दर्ज की जा रही है। देश में वर्ष 2013–14 से देश में बागवानी फसलों का उत्पादन लगातार खाद्यान्न फसलों की तुलना में अधिक रहा है। इसे अर्थशास्त्र के सिद्धांत में टेक ऑफ की अवस्था को पार करना कहा गया है। यद्यपि कुछ समस्या तथा चुनौती होने के कारण बागवानी विकास में काफी दिक्कतों का भी सामना करना पड़ रहा है।

लेकिन देश की पृष्ठभूमि कुछ अन्य राष्ट्रों की तुलना में अलग होने से भी भारत में बागवानी विकास की अपार संभवनाओं को विस्तारित करता है। बशर्ते इन इन संभवनाओं की जांच कर, उपयुक्त दिशा में पहल करना है। सरकार ने दिशा में अपना पूरा प्रयास करना शुरू भी कर दिया है। जिससे वर्तमान कृषि क्षेत्र में द्वितीय हरित क्रांति के रूप में अति–उत्पादन की अवस्था कहा गया है। जिससे कृषकों को उनकी उपज की कीमत सही ढंग से प्राप्त नहीं हो पा रही है। इस प्रकार से भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बागवानी फसलो का विशेष महत्व है। वर्ष 1950 से आज तक बागवानी फसलों का उत्पादन 9.5 प्रतिशत से अधिक गुना में बढ़ चुका है। जबकि कृषि क्षेत्र की विकास बहुत न्यूनतम देखी गई है। अतः बागवानी विकास में लगातार वृद्धि हो रही है। किन्तु बदलते जलवायु परिदृश्य में पर्यावरण और मानसून एक गंभीर समस्या बनती जा रहीं है। बागवानी फसलों के विकास से काफी सीमा तक कम किया जा सकता है। क्योकि बागवानी फसलों कुछ ऐसी भी फसले उगाई जाती है जो मानसून के प्रभाव को नकारती है।

इन्हीं सभी कारणों ने बागवानी विकास की महत्वतता को और अधिक बढ़ा दिया है। इस प्रकार से बागवानी विकास की एक सही दशा और दिशा का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। जिनके विश्लेषण के लिए बागवानी की उत्पादन प्रवृति और संभवनाओं तथा चुनौतियों को जानना आवश्यक हो जाता हैं हमारे द्वारा शोध पत्र में इन्हीं बातों का अध्ययन किया गया हैं जिससे बागवानी विकास की एक उचित रणनीति तैयार कर, बागवानी विकास के माध्यम से कृषि विकास के साथ देश की अर्थव्यवस्था में बागवानी और अपनी अहम् भूमिका का निर्वाह कर सके।

प्रस्तावना : भारत की अर्थव्यवस्था में बागवानी फसलों का विशेष महत्व है क्योंकि बागवानी का देश की कृषि अर्थव्यस्था में 30 प्रतिशत से भी अधिक की हिस्सेदारी रही हैं जो नौवीं पंचवर्षीय

योजना से 12 वीं पंचवर्षीय योजना में 4.6 प्रतिशत से भी अधिक की वद्धि हुई है क्योंकि देश में बढ़ती मांग और बदलते परिदृश्य ने कृषि विकास के ढंग में पूर्णतः बदलाव किया है जिसमें वैश्वीकरण के विविधीकरण ने बागवानी विकास की चेतना को सर्वाधिक जगाया है। इससे भारत आज बागवानी उत्पादन में न सिर्फ राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित बल्कि अतंराष्ट्रीय सीमाओं में भी देश की बागवानी ने विश्वप्रतिस्पर्धा में अपनी पहचान बना चुका है। भारतीय कृषि विकास के स्वरूप में स्वतंत्रता प्राप्ति के दशकों बाद कृषि उत्पादन कई गुना बढ़ चुका है किन्तु भारतीय कृषि में व्याप्त कारक इसके संतुलित विकास व वृद्धि में अवरोधक हैं। क्योंकि भारत का बागवानी उत्पादन वर्ष 2015–16 के दौरान लगभग 283 मिलियन टन है।, इससे न केवल छोटे और सीमांत किसान खुशहाल हुए हैं अपितु राष्ट्र को खाद्य और पौष्टिक आहार सुरक्षा भी प्राप्त हुई है। भारत विश्व में फलों और सब्जियों का दूसरा सबसे बडा उत्पादक देश है, आज भारत में बागवानी भारतीय कृषि का एक बहुत ही महत्वपूर्ण गुंजायमान क्षेत्र बनकर उभरा है।

इस दिशा में राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड एवं राष्ट्रीय बागवानी मिशन का योगदान बहुआयामी है। बोर्ड वर्ष 1999–2000 से अपनी व्यापक आधार वाली योजनाओं के माध्यम से उन्नत विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। बागवानी विकास की कड़ी में 8 जुलाई, 2004 एनएचएम में शुरू हुआ और वर्ष 2005–06 से बागवानी विकास को विस्तारित कर रहीं है। सरकार के विकास के बदलते पायदान ने कृषि विकास और विविधीकरण पर अधिक जोर देने से कृषि विकास की संभावनाओं में बदलाव किया है। जिसमें मांग के अनुरूप उत्पादन की तकनीक को अपनाया है। जिसमें सरकार द्वारा चलाये गये एकीकृत कार्यक्रमों ने कृषि विकास में तीव्र वृद्धि ला दी जिससे देश में कृषि उत्पादन तीव्र गति से बढ़ा है।

इससे राष्ट्र में अति–उत्पादन, नाशवान फसलों के उत्पादन के कारण और विपणन तथा भण्डारण के साथ कीमत तंत्र कृषको के समक्ष अनेक चुनौतियॉ ला खड़ी कर दी है। जिससे कृषकों की आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय और मरमीय होती जा रही है। यद्यपि इन सभी समस्याओं के समाधान और संभावनाओं को पूरा करने में प्राथमिक क्षेत्र का ही एक विस्तृत क्षेत्र बागवानी ने देश की अर्थव्यवस्था एवं कृषि की नई कायाकल्प का निर्माण किया है। बागवानी ने बीते कुछ दशकों में समुचित विकास पर अपना ध्यान केन्द्रित सरकार की इच्छा शक्ति एवं नियोजन और रणनीति को इतना प्रभावित किया है कि सरकार की आज प्रमुख प्राथमिकता कृषि विकास करना है क्योंकि अन्य क्षेत्रों के विकास के साथ कृषि क्षेत्र में निवेश को प्रेरित किया है। इन्हीं प्रेरणा ने कृषि को एक रोजगार परक व्यवसाय का विकल्प प्रदान किया है, बागवानी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कर रहा है क्योंकि देश में बागवानी का विकास एक स्थिर दर के साथ हो रहा है जो कृषकों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है और बागवानी देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहा है। किन्तु बागवानी के सम्मुख कुछ चुनौतियॉ है। जिससे बागवानी का विकास अन्य देश की तुलना में पिछड रहा है। जिसका प्रमुख कारण विभागीय समन्वय और बाजार तंत्र को विफलता, भण्डारण, और कीमत तत्रं में उतार–चढ़ाव के साथ मानसूनी और अल्प आय और उपयुक्त जोत के आकार में निरंतर कमी और कृषकों के अलगाव कार्य भावना ने बागवानी विकास में अवरोधक के रूप में खड़ा है। इस–प्रकार से अनेक समस्याओं के होने के बावजूद वर्तमान में बागवानी विकास एक प्रसंगीय है। बागवानी विकास पर पिछले आठ वर्षो से अध्ययन निरन्तर जारी है और हमारे द्वारा बागवानी विकास पर कई आलेख एवं शोध पत्रों का लेखन कार्य किया गया है। जिसमें हमने विषय की समीक्षा का गहन अध्ययन किया है। विभिन्न प्रबुद्धजनों के सिद्धात व निष्कर्ष का विश्लेषण किया है और पाया है कि वर्तमान समय में बागवानी विकास आज कृषि विकास की एक कुंजी है। किन्तु इस अति उत्पादन से कृषकों को उनकी कीमत प्राप्त नहीं हो पाती है। इस कारण से भी हमारा यह शोध लेखन आवश्यक हो जाता है कि भविष्य में बागवानी उपज की कीमतों का किस प्रकार से निर्धारण किया जाये और कितना अधिक उत्पादन होगा और उसकी प्रवृति क्या रहेगी? जिससे बागवानी विकास पर इस प्रकार से निवेश किया जाये कि कृषि कार्य पूर्णता एक लाभ का धंधा बन जाये और कृषि कार्य को सम्पादित करने में कृषकों के साथ व्यापारी, उद्योगी, सहकारी, और सरकार सभी की एक रूख कृषि क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत रह पायें और सरकार की आय दोगुना करने की

रणनीति एवं सतत् तथा सम्पोषित विकास की पूर्ण अवधारणा को सहीं ढंग से प्रस्तुत किया जा सकें। किन्तु विषय की व्यापकता और गंभीरता को देखते हुये शोध के माध्यम से अपने उद्धेश्यों को स्पष्ट एवं सीमित करना आवश्यक हो जाता है। इसलिए हमने अपने उद्धेश्य को सीमित करते हुये निम्न प्रकार से रेखांकित किया है–

अध्ययन के उद्धेश्य :

किसी भी कार्य की शुरूआत में यदि उद्धेश्यों का स्पष्ट एवं निश्चित न होना कार्य की अपूर्णतः एवं विश्सनीयता उपयोगिता को बात करना एक मिथक हो जाता है क्योंकि कार्य प्रारम्भ में यदि उद्धेश्यों का स्पष्ट एवं निश्चित कर लिया जाता है तो कार्य के क्रियान्वयन करने की रणनीति एवं कार्ययोजना का निर्माण आसानी से किया जा सकता है। इससे कार्य की गुणवत्ता के साथ उपयोगिता भी रहती है। इसलिए हमने भी अपने शोध पत्र को लिखने एवं तैयार करने से पूर्व अपने कुछ उद्धेश्यों को स्पष्ट कर सीमित किया है। जिनके अध्ययन के लिए अपनी अभिकल्पना का निमार्ण किया है। हमारे अध्ययन के उद्धश्य निम्न पकार है :

1. भारत में बागवानी फसल अवधारणा, महत्वता, आवश्यकता, की पृष्ठभूमि का विश्लेषण का अध्ययन करना और वर्तमान में इसकी उपादेयता की प्रंसगता को ज्ञात करना।
2. भारत में बागवानी विकास की स्थिति का अध्ययन करना।
3. भारत में बागवानी फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता की स्थिति एवं प्रवृति दर का अध्ययन करना।
4. अगले वर्ष में बागवानी फसलों की उपज की संभावनाओं का अध्ययन करना। जिससे अति–उत्पादन और मांग–आपूर्ति का विश्लेषण को स्पष्ट कर कीमत का उचित प्रतिफल का निष्कर्ष का निर्धारण किया जा सकें।
5. भारत में बागवानी विकास की संभवनाओं एवं चुनौतियों का अध्ययन कर उनके निराकरण हेतु, समाधान प्रस्तुत करना।

अतः अपने यह शोध पत्र के माध्यम से उक्त उद्धेश्यों की प्राप्ति करना इस आलेख शोध पत्र का मुख्य उद्धेश्य है। यह उद्धेश्य वर्तमान समस्याओं के निराकरण, प्रसंगिता को ध्यान में रख कर पूर्णता तैयार किया है। क्योंकि हमारे इस शोध की उपादेयता तब प्राप्त हो सकती है।

अध्ययन की शोध विधिः– जब हम समय के साथ एक उपयुक्त तर्क एवं विधि के आधार पर उद्धेश्य की अंतिम प्राप्ति तक पहुच सकें, और विषय शीर्षक से भी सीधा जुड़ा रहें। उक्त उद्धेश्यों की प्राप्ति के लिए हमारे एक स्पष्ट कार्ययोजना भी तैयार की गई है। जो निम्न प्रकार हैः– हमारा यह शोध पत्र विश्लषणात्मक अभिकल्पना पर आधारित है। जिसमें मुझे विश्लेषण कर अपने उद्धेश्यों की प्राप्ति करना है। इस हेतु हमारे द्वारा द्वितीय संमकों का सहारा लिया गया है क्योंकि शोध शीर्षक भारत में बागवानी उत्पादन की प्रवृति का विश्लेषण के साथ विकास की संभवनाओं तथा चुनौतियों को अवगत कराता है जो कि एक विश्लेषण के माध्यम से निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है। इसके लिए मुझे समय श्रेणी संमक की सहायता से पूरा किया जा सकता है। इसके लिए हमारे द्वारा पिछले कम से कम दस वर्षो के बागवानी उत्पादन के समंक के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षो का विवेचना एवं निर्वचन किया गया है। हमने अध्ययन में वृद्धि दर, सीजीएआर, फोरकाष्टिंग, प्रतिशत, आदि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया है जिसमें समकों की व्याख्या वर्गीकरण सारणीयन चित्रमय प्रदर्शन को एसपीएसएस की सहायता से किया है।

विश्लेषण एवं परिणाम : बागवानी श्कृषि विकास की वह शाखा है जिसके अंतर्गत फल, सब्जियों, कंदीय फसलों, मशरूम, कट फूल, समेत शोभाकारी पौधे, मसाले, रोपण फसलें, औषधीय एवं सुगंधीय पौधों की खेती के साथ मधुमक्खी, बांस, नारियल, आदि को भी बागवानी के अंतर्गत शामिल कर लिया गया है। जो कृषकों की आमदनी को दोगुना से भी अधिक बढाती है। इस प्रकार से उच्च मूल्य एवं न्यूनतम लागत और जलवायु दशाओं के अनुकूल वाली फसलों को भी शामिल किया गया है। बागवानी फसलों में मुख्यतः छः प्रकार की फसलों को शामिल किया जाता है। बागवानी क्षेत्र को भी दो भागों में वर्गीकृत किया गया है। 1. शीघ्र नष्ट होने वाली फसलें 2. दीर्घ अवधि तक सर्म्वद्धन कर रख सकने वाली फसलें। इस प्रकार से बागवानी विकास की प्रमुख समस्या कटाई पाश्च प्रबंध और विपणन प्रसंस्करण, तथा कीमत तंत्र के साथ

मध्यस्थों के कारण बागवानो विकास एक सही दिशा में नहीं हो पा रहा है। यद्यपि बागवानी विकास की कल्पना आदीकाल से निरंतर चली आ रही है। किंतु पहले आवश्यकता सीमित होने के कारण बागवानी क्षेत्र की सही उपादेयता को पहचान करने में असमर्थता व्यक्त की जाती थी लेकिन जैसे–जैसे आवश्यकता बढी देश के समक्ष अनेक चुनौतियॉ सामने आने लगी। इन समस्याओं में प्रमुख भुखमरी, बेरोजगारी प्रमुख थी हरित क्रांति के पश्चात भारत वर्ष 1980 में बागवानी बोर्ड की स्थापना की उसके बाद बोर्ड ने बागवानी विकास के लिए अनेक कार्यक्रमों का संचालन किया गया है। जिसमें वर्ष 1991 से बागवानी विकास की विशेष ध्यान दिया जाने लगा। वर्ष 2004–05 में मिशन की स्थापना और वर्ष 2013–14 तक विकास एक अस्थिरता था किन्तु वर्ष 2013–14 के बाद से बागवानी विकास में स्थितरता के बाद उत्पादन अधिक किया जाने लगा है। इससे मण्डी में अनियिमिता, का सामन करना पड़ा है।

बगवानी का देश के साथ–साथ कई राज्यों के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। और कृषि जीडीपी में इसका योगदान 30.4 प्रतिशत से भी अधिक रहा है। भारत में फलो, और सब्जियों का विश्व में दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है आम, केला, नारियल, काजू, पपीता, अनार का उत्पादन शीर्ष होने कारण मसालों का बडा उत्पादक और निर्यातक भी है। भारत में बागवानी फसलों का उत्पादन पिछले दो दशको से तीव्र वृद्धि हुई है एवं देश में बागवानी उपज की स्थिति एवं विस्तार को निम्न तालिका द्वारा प्रदर्शित किया है।

तालिका क्रमांक1
भारत की प्रमुख बागवानी फसलों का क्षेत्र तथा उत्पादन,
(क्षेत्रः हजार हेक्टेयर, उत्पादनः हजार टन में)

वर्ष	फल		सब्जियॉ		पुष्प		मसाले		फसले		कुल बागवानी	
	क्षेत्र	उत्प.	क्षेत्र	उत्प.	क्षेत्र	उत्प.	क्षेत्र	उत्प.	क्षेत्र	उत्प.	क्षेत्र	उत्प.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1991-92	2874	28632	5593	58532	.	.	2005	1900	2298	7498	12770	96562
2001-02	4010	43001	6156	88622	106	535	3220	3765	2984	9697	16592	145785
2002-03	3788	45203	6092	84815	70	735	3220	3765	2998	9697	16270	144380
2003-04	4661	45942	6082	88334	101	580	5155	5113	3102	13161	19208	153302
2004-05	5049	50867	6744	101246	118	659	3150	4001	3147	9835	18445	166939
2005-06	5324	55356	7213	111399	129	654	2366	3705	3283	11263	18707	182816
2006-07	5554	59563	7581	114993	144	880	2448	3953	3207	12007	19389	191813
2007-08	5857	65587	7848	128449	166	868	2617	4357	3190	11300	20207	211235
2008-09	6101	68466	7981	129077	167	987	2629	4145	3217	11336	20662	214716
2009-10	6329	71516	7985	133738	183	1021	2464	4016	3265	11928	20876	223089
2010-11	6383	74878	8495	146554	191	1031	2940	5350	3306	12007	21825	240531
2011-12	6705	76424	8989	156325	760	2218	3212	5951	3577	16359	23243	257277
2012-13	6982	81285	9205	162187	790	2647	3076	5744	3641	16985	23694	268848
2013-14	7216	88977	9396	162897	748	3192	3163	5908	3675	16301	24198	277352
2014-15	6110	86602	9542	169478	908	3143	3534	6108	3317	15575	23410	280986
2015-16	6301	90183	10106	169064	912	3206	3474	6988	3680	16658	24472	286188
2016-17	6480	92846	10290	175008	943	3277	3535	7077	3677	16867	24925	295164
2017-18	7305	94516	10096	180614	786	3420	3289	6701	3300	16907	20816	302043
CAGR	5.32%	6.86%	3.34%	6.46%	12.51%	11.53%	2.79%	7.25%	2.03%	4.62%	2.75%	6.54%

स्त्रोतः हॉर्टिकल्चर स्टेटिसटिक्स एट ग्लास 2016, एवं अग्रिम अनुमान, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ क्रमांक–35–52, ' द्वितीय अनुमानित मूल्य, नोटः रु. परिगणित अनुमान

उपर्युक्त तालिका का विश्लेषण कर देखने से स्पष्ट है कि भारत के बागवानी क्षेत्र के कुल 72,974 आनुवांशिक संसाधन है, जिसमें फलो

की 9240 सब्जी और कंदीय फसलों की 25400 रोपण फसलों और मसालों की 25800 औषधीय और सुगंधीय पौधों की 6250 सजावटी पौधों की 5300 और मशरूम की 984 प्रविष्टयॉ शामिल है। बागवानी बोर्ड उद्यानिकी फसलों के विस्तार तथा विकास के लिए अनेक प्रयास किये है। इसके परिणामस्वरूप विश्लेषण में वर्ष2012–13 में पहली बार भारत में सब्जियों,फलों का उत्पादन खाद्यान्न से भी ज्यादा हुआ देश बागवानी का उत्पादन 96562 हजार टन का उत्पादन हुआ जो वर्ष 2016–17 में भारत में कुल बागवानी उत्पादन 295164 हजार टन का उत्पादन हुआ है। जो प्रारिम्भक वर्ष की तुलना में 32.71 प्रतिशत है। और यह वष 1991–92 की तुलना में कुल बागवानी क्षेत्र के अंतगर्त वर्ष 2015–16 तक की कुल वृद्धि का 205.67 प्रतिशत है। जिससे स्पष्ट है कि देश विगत दशकों उत्पादन की वृद्धि काफी तीव्र रही है किन्तु वर्ष 2014 से अधिक विस्तारित है। वहीं वर्ष 2017–18 में कुल बागवानी उत्पादन होने की संभवानाओं का आकलन किया गया है जिसमें पाया है कि इस वर्ष बागवानी का कुल उत्पादन 302043 टन का उत्पादन होने का अनुमान है। जिसके लिए पहले भण्डारण, विपणन, प्रस्संकरण की आधारभूत व्यवस्था का संचयन करना होगा। बागवानी फसलों के कुल उत्पादन में 60 फीसदी हिस्सेदारी सब्जियों की और 30 फीसदी फलों की है। इस प्रकार स पिछले दो दशकों में बागवानी उत्पादन दो गुने भी अधिक बड़ा हुआ है।

ग्राफ क्रमांक1

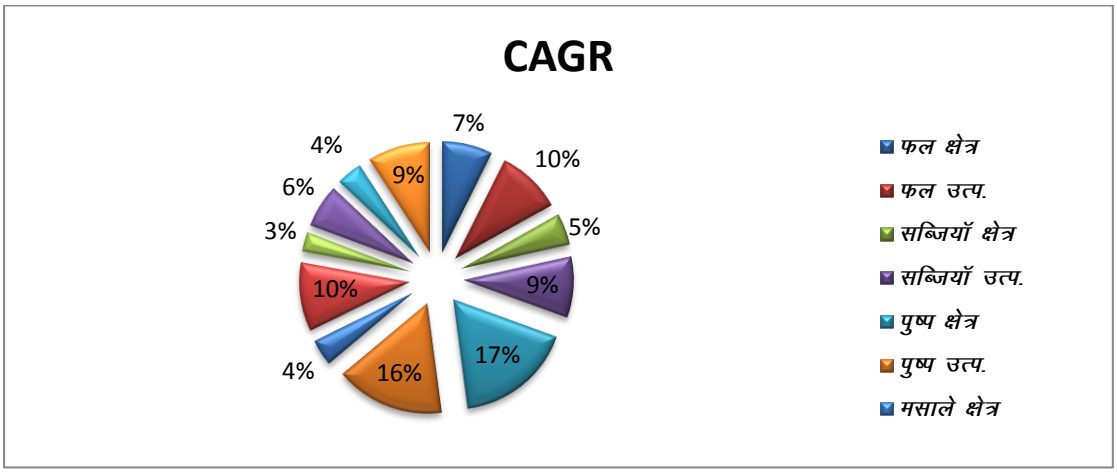

उपर्युक्त ग्राफ में तालिका क्रमांक 1 की मद्द से प्रमुख बागवानी उत्पादन एवं क्षेत्रफलों का मिश्रित वार्षिक वृद्धि दर का अध्ययन किया गया है। जिसके विश्लेषण से पता चलता हैं कि कुल बागवानी उत्पादन में वृद्धि सर्वाधिक फल, सब्जियों, मसालों के क्षेत्र में सबसे अधिक रहीं है। अथात देशों में सब्जी का उत्पादन, फलों का उत्पादन एवं मसालों का उत्पादन सर्वाधिक रूप में किया जाता है। इसलिए इनके उत्पादन अन्य क्षेत्रों की तुलना में काफी अधिक हैं। भारत में बागवानी फसलों के उत्पादन के विविध उपजों के क्षेत्र का अध्ययन निम्न चित्र की सहायता किया गया ह :–

ग्राफ क्रमांक 2

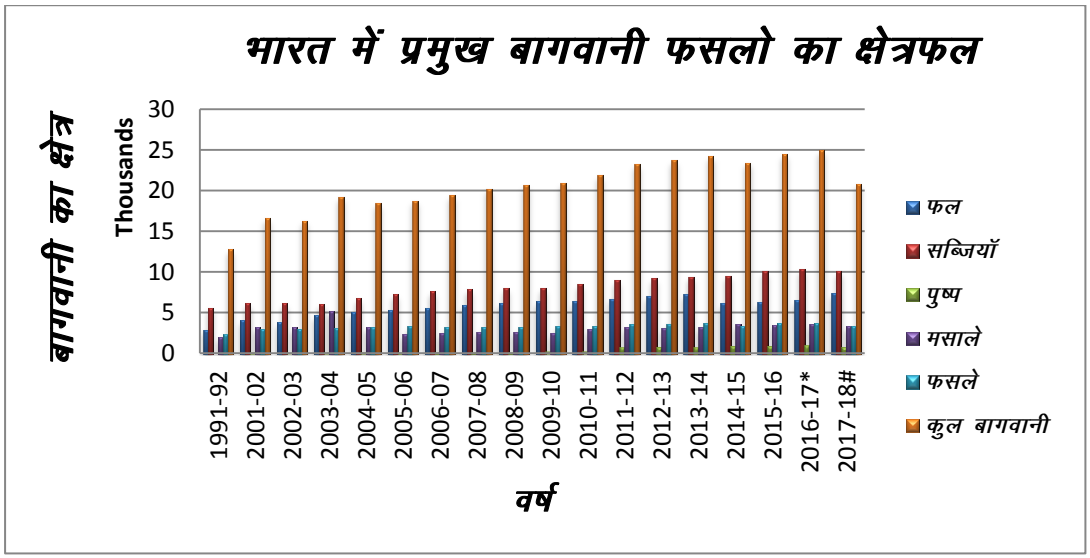

उक्त चित्र के विवेचन से स्पष्ट होता है कि भारत में बागवानी फसलों के क्षेत्रफल में सर्वाधिक वृद्धि एवं विस्तार सब्जियों, फलो, मसालों में प्रमुख रूप से विस्तारित हुआ। साथ चित्र की सहायता से स्पष्ट होता हैं कि भारत में बागवानी फसलों के क्षेत्र में जो वृद्धि हो रही वह एक स्थिर दर के साथ हो रही किन्तु यह विस्तार भी एक स्थिर गति के साथ है। जिससे भविष्य में बागवानी के क्षेत्रफल में कितने का विस्तार होने वाला है। इसका आकलन स्पष्ट रूप से लगाया जा सकता है।

ग्राफ क्रमांक3

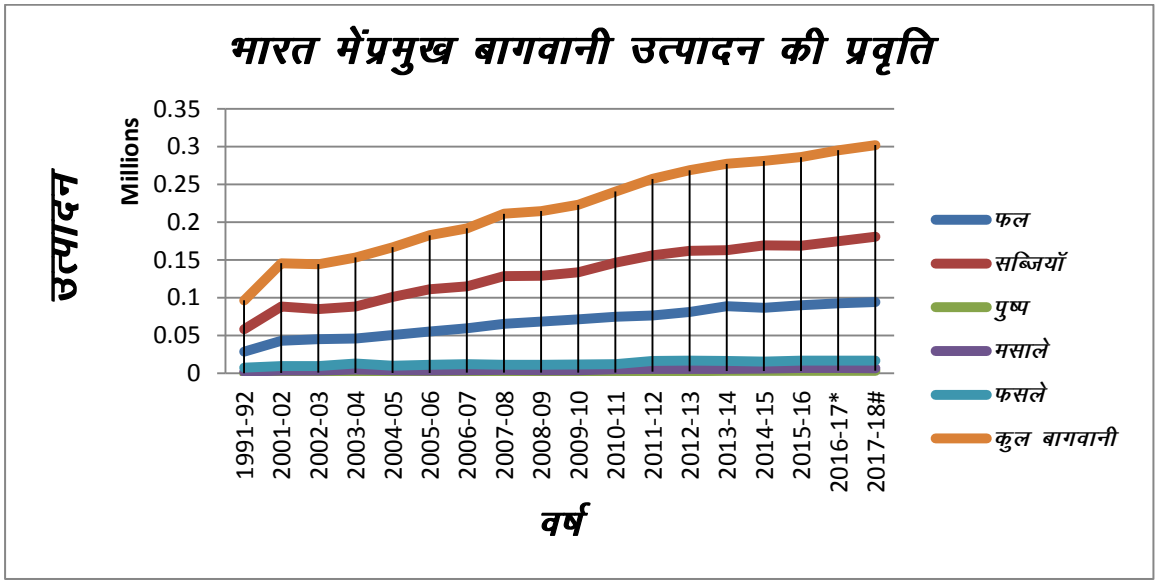

उपर्युक्त ग्राफ में भारत में प्रमुख बागवानी उत्पादन की प्रवृति का अध्ययन किया गया है। जिसमें देखा गया है। कि देश में बागवानी उत्पादन जो वृद्धि हो रही वह एक बढ़ते क्रम देखी गई है। देश में बागवानी उत्पादन होता है। उनमें प्रमुख फसले सब्जी, फल, मसाले, प्रमुख है। जिनकी उत्पादन वृद्धि दर भी स्थिरता के साथ बढ़ रही है।

ग्राफक्रमांक4

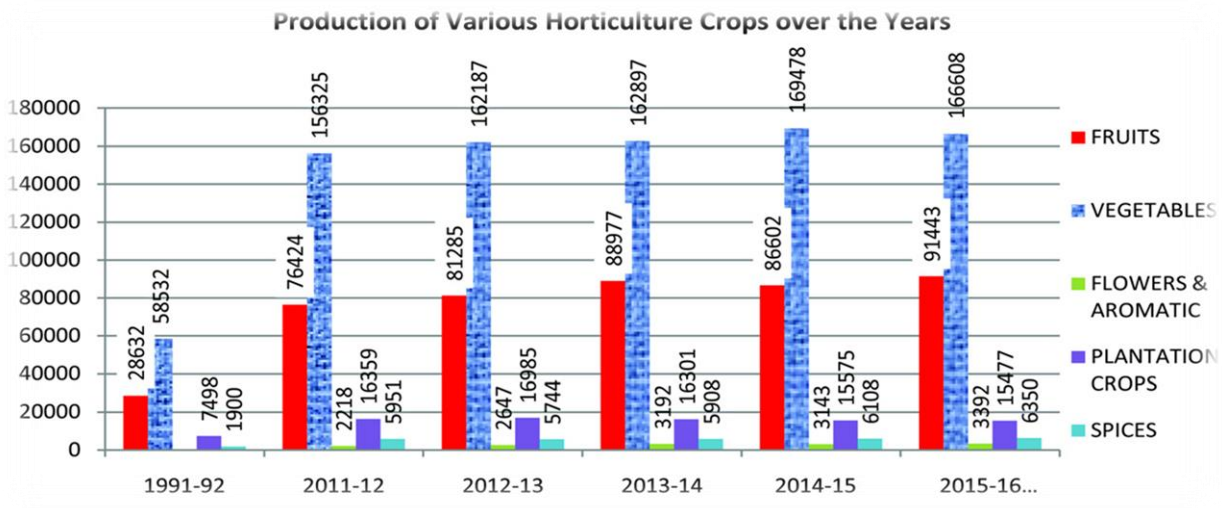

उपुर्यक्त तालिका में भी विभिन्न वर्षो में प्रमुख बागवानी फसलों के उत्पादन की स्थिति की तुलना की गई है। जिसमें भी पाया गया है कि वर्ष 1991–92 में फल तथा सब्जियों की उत्पादन वृद्धि सर्वाधिक रहीं है। भारत में बागवानी उत्पादन पिछले पांच वर्षो में काफी प्रगति एवं विस्तार किया हैं। इस प्रकार से देश में बागवानी विस्तार में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गइ है। वर्ष 2015–16 में वार्षिक वृद्धि 2.7 प्रतिशत से वढ़कर 5.5 प्रतिशत की वृद्धि प्राप्त की गई है। जबकि फल, सब्जि, मसाले आदि की वार्षिक वृद्धि दर 16प्रतिशत से भी अधिक रही है।

ग्राफ क्रमांक 5

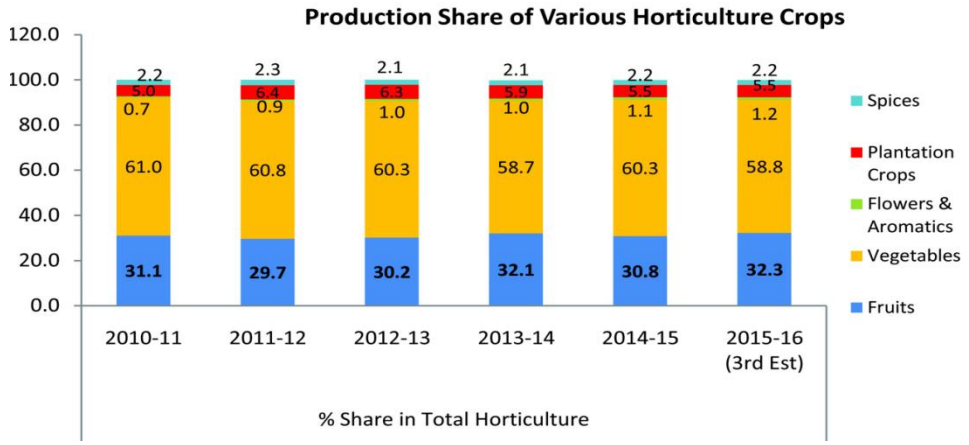

उक्त ग्राफ में पिछले छः वर्षो की उत्पादन और प्रमुख बागवानी फसलों का कुल उत्पादन में उनके हिस्सेदारी का अध्ययन किया है। हमारे द्वारा इन पांच वर्षो के अध्ययन हेतु आधार वर्ष 2011 को आधार बनाया गया है। जिसके पीछे का तर्क की सुखे की स्थिति के पश्चात देश में बागवानी ही कृषि क्षेत्र अभिन्न अंग है जिसमें भी स्पष्ट होता है। कि भारत में जिन उद्यानिकी फसलों का उत्पादन हो रहा है। उसमें प्रमुख फल, सब्जी और मसालो की हिस्सेदारी अधिक रही है।

ग्राफक्रमांक 6

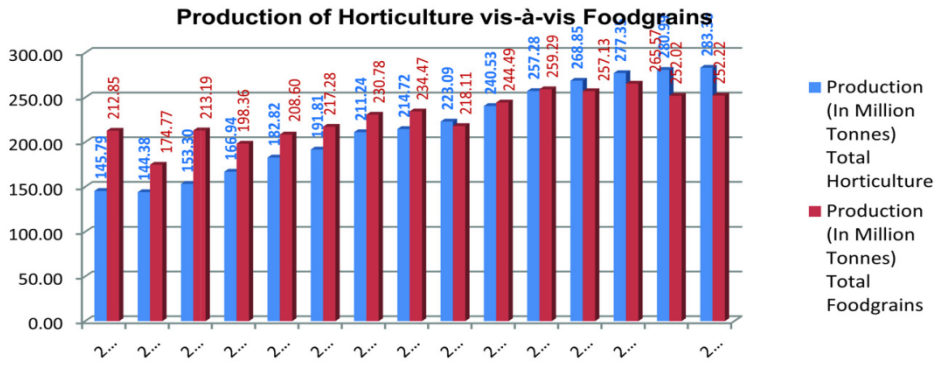

उक्त ग्राफ में कुल खाद्यान्न फसले और बागवानी फसलों के उत्पाद के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। जिसमें पाया कि प्रारिम्भ में बागवानी उत्पादन काफी कम था किन्तु जैसे जैसे वर्तमान समय की और जाने फर उद्यान फसलों के उत्पादन में तीव्र वृद्धि हुईहै।

ग्राफ क्रमांक 7

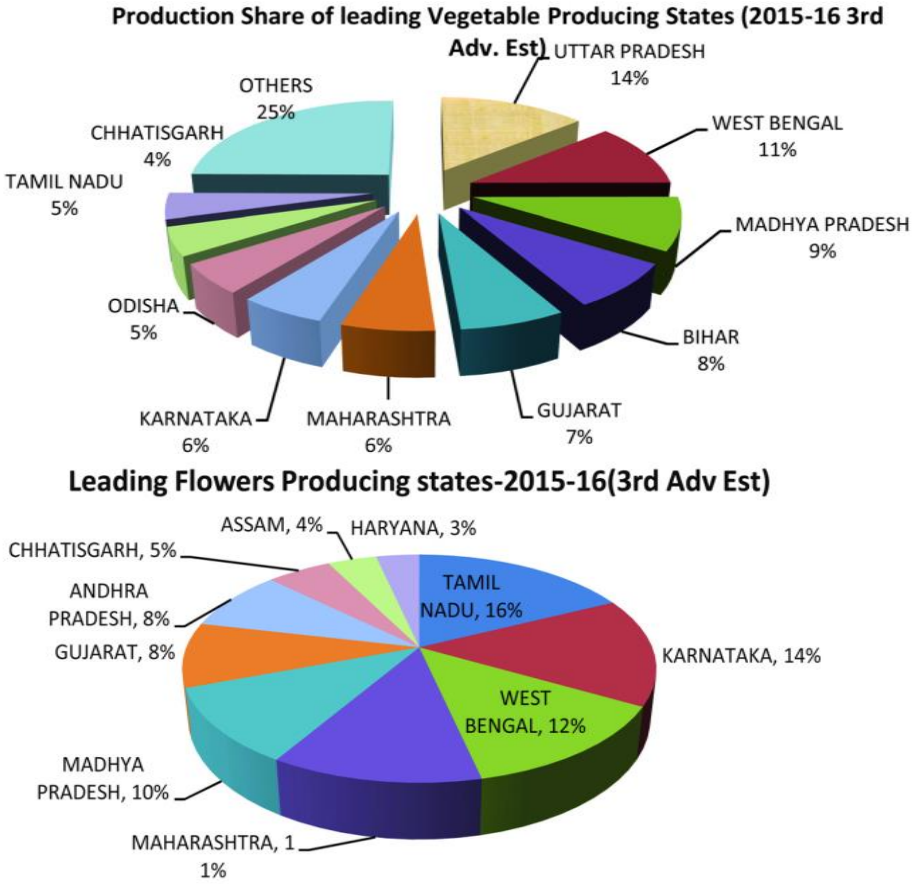

उक्त तालिका में भारत के विभिन्न राज्यों में सब्जी के उत्पाद तथा फूल के उत्पादन की स्थिति का विश्लेषण किया गया हैं जिसमें देखा है कि सब्जियों के उत्पादन उत्तरप्रदेश 14 प्रतिशत तक की हिस्सेदारी
रखता है। वहीं मध्यप्रदेश में सब्जियों केवल 9 प्रतिशत का उत्पादन किया जाता है। देश में

बागवानी फसलों की उत्पादन अलग–अलग राज्यों की अपनी अलग विशेषता है इन विभिन्ता से बागवानी विकास की संभावनाओं की स्थिति का विश्लेषण किया गया है

भारत में बागवानी विकास की संभावनाएँ एवं चुनौतियॉ :–

भारत में बागवानी उत्पादन की प्रवृति में काफी उल्लेखनीय वृद्धि रहीं है। किन्तु कुछ अपनी समस्याओं के कारण बागवानी विकास के समक्ष अनेक चुनौतियॉ मौजूद है। जिनमें प्रमुख निम्न प्रकार हैः–

बागवानी का पाश्च प्रबंध का उचित व्यवस्था, भारत में लगभग 30 प्रतिशत से अधिक की उपज कटाई उपरांत के कारण खराब हो जाती है। इसका प्रमुख कारण है कि प्रदेश में विपणन और भण्डारण व्यवस्था का उचित प्रबंधन एवं रखरखाब के साथ कीमत तंत्र और शीघ्र खराब होने के कारण बागवानी विकास और कृषको दानों के समक्ष अनेक चुनौती है, इसलिए आवश्यक हो जाता है कि सरकार एवं राज्य दोनो मिलकर कटाई पाश्च प्रबंधन व्यवस्था का उचित होना आवश्यक हो जाता है। बागवानी फसलो का निर्यात एवं आयातः में भारत फलों और सब्जियों का विश्व में दूसरे सबसे बडा उत्पादक देश है। और विश्वभर पर बागवानी का निर्यात भी करता है। किन्तु इतना अधिक उत्पादन होने के बावजूद भारत बागवानी फसलों का आयात भी करता है। इस प्रकार बागवानी विकास में प्रबंधन की भूमिका सर्वाधिक रहती है। उचित प्रसंस्करण':–सरकार को प्रसंस्करण इकाईयो को अधिक से अधिक लगाई जाए क्योंकि देश मे जिस गति से उत्पादन बढ़ रहा है। इसलिए कीमत को स्थिर करने के लिए मांग और पूर्ति की शक्ति को ध्यान में रखते कीमत तत्रं को मजबूत बनाना है। इसके अलावा आधारध्भूत की व्यवस्था करना बहुत ही आवश्यक है।साथ सस्ते तथा कौशल श्रमिक के उपाय, जागरूकता, पोषण सुरक्षा, का भी पूरा ध्यान दिया जाये।

निष्कर्ष : कृषि विकास के लिए बागवानी क्षेत्र का विस्तार करना अति आवश्यक है। और बागवानी विकास में जो बाधाए एवं समस्याएँ आ रहीं है उन्हें प्राथमिकता के साथ निवेश किया जाये है। देश में कृषि उत्पादन कार्य को एक उद्योग के रूप में अपनाना चाहिए। इससे जहां सरकार की आय बढ़ेगी वहीं दूसरी ओर देश में व्याप्त बेरोजगारी भुखमरी गरीबी मानव–मूल्यों के ह्रास्य, आय की विषमता, लिंग–विभेद जैसी समस्याओं से देश को निजात मिलेगा और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी देश की छबि अच्छी उकरेगी। क्योंकि विश्व के जितने विकसित देश व प्रदेश है वे वहां की कृषि से ही संवृद्ध हुए है। कृषि क्षेत्र में जितने रोजगार सृजन के विकल्प है उतने शायद अन्य क्षेत्रों में नहीं हैं। जहां भारत एक जनसंख्या बहुल्य देश है तो वहीं भारत के लिए अति आवश्यक हो जाता है कि वह उन्नत/पूंजी प्रदान तकनीकी के साथ श्रम प्रधान तकनीकी को विशेष महत्व दे। यद्यपि इस दिशा में सरकार अपना प्रयास भी शुरू कर दिया हैं। भारत में बागवानी विकास की जितनी विविधता हैं उतनी शायद विश्व के अन्य किसी देश में विविधता पायी गई हो जिसका प्रमुख कारण है। देश में बागवानी विकास की अनेक अनुकूल जलवायु विशेषतायें पायी जाती है जो बागवानी विकास की संभावनाओं को और अधिक विस्तारित कर विविधीकरण को बढ़ावा देता है। देश के फलों और मसालों का स्वाद विश्व बाजार में मांग को बढाता है। जिसके कारण भी भारत की बागवानी फसलों की मांग बढ़ी हुई है। यद्यापि देश में बागवानी विकास की अनेक सम्भावनाएँ मौजूद होने के बावजूद भी देश में बागवानी विकास को उचित दिशा नहीं मिली हुई और अन्य देशों की तुलना में भारत में बागवानी का विकास पिछड़ा हुआ है प्रमुख कारणों में अनेक बाधक तत्व और चुनौतियॉ देखी गई हैं जिसके कारण बागवानी उत्पादन की दर में उतनी वृद्धि दर्ज नहीं की गई हैं। जितनी की राष्ट्रीय बागवानी मिशन के तहत आशा की गई थीं देश में बागवानी विकास की दर काफी तीव्र गति से देखी गई किन्तु अनेक समस्याओं होने के कारण बागवानी अपने विकास के पूर्ण चरण अवस्था तक नही पहुच पा रही है इसीलिए आवश्यक हो जाता है कि समविन्त विकास के कार्योक्रमों की सहायता बागवानी के समग्र की परिकल्पना को पूरा किया जाये। बागवानी क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत सुविधाओं , बाजार, प्रसंस्करण, अनुसंधान, पोषण की गुणवत्ता,बागवानी फसलों की कटाई पाश्च और उपरांत तकनीकी और मूल्यवर्धन, भण्डारण, परिवहन, जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर वैज्ञानिक नीतिधारकों एवं किसानो को अपना ध्यान केंद्रित करना होगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि बागवानी क्षेत्र में भारत का भविष्य उज्जवल है। जरूरत हैं तो इस दिशा में समन्वित प्रयासों

की। साथ ही, यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि किसानों तक नई तकनीकी की जानकारी पहुंचे ताकि वे उसका फायदा उठा कर अपना उत्पादन और आय दोनो को बढ़ा सकें। इस प्रकार उक्त समस्याओं के निराकरण हेतु बताये गये सुझावों को अपनाए जाए तो निश्चित ही देश में बागवानी विकास से समग्र कृषि विकास और धारणीय विकास, जलवायु परिर्वतन का निराकरण छिपा हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Area and Production of Horticulture Crops - All India, Annual report 2015-16, Nation Horticulture Board, Govt. Of India, www.nhb.gov.in,
2. वार्षिक प्रतिवेदन 2015.16ए एवं वार्षिक प्रतिवेदन, 2016–17, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली 110001www.agricoop.nic.in,
3. Horticulture Statistics at a Glance, 2014, 2015, 2016 Horticulture Statistics Division, Deparment of Agriculture, Cooperation& Farmer Welfare, Ministriy of Agriculture & Farmer Welfare, Govt. of India,
4. Impact Evaluation Study of National Horticulture Mission,2005-06 to 2010-11, National Horticulture Mission (NHM) **Department of Agriculture and Cooperation,** Ministry of Agriculture, Government of India, New Delhi, Andhra Pradesh Productivity Council **"Productivity House"** Plot No. 87, Road No. 2, Banjara Hills, Hyderabad – 500 033 Phone: 040-23544622, 23542827 website: www.appc.in
5. A Comprehenship Study to Assess, Growth in Agriculture and Horticulture in the state of Madhya Pradesh (2007-2012)
6. Research Study No. 2011/03 Impact of the National Horticulture Mission (NHM) Scheme in Haryana

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन का बदलता परिदृश्य

(उद्यमिता विकास के विशेष संदर्भ में)

Madan Murari Prajapati
Research Scholar Economics Department,R.D.V.V., Jabalpur (M.P.)

सारांश : सर हेनरी मेनियो मैकॉफ ने भारतीय ग्राम समुदाय को लघु गणतंत्र के समान बताते हुए कहा था, कि यह बाह्य सम्बंधों से बिल्कुल पृथक और विभिन्न राजनैतिक फेरबदल के बावजूद अपरिवर्तित रहा है। ग्रामीण समुदाय के लोगों का जीवन एक–दूसरे पर निर्भर था। वास्तव में भारतीय समुदाय एक लघु गणतंत्र की भांति ही था, क्योंकि यह उन सभी शर्तों को पूरा कर रहा था जो एक गणतंत्र के लिए अनिवार्य मानी जाती है, जैसे आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था, प्रशासन और न्याय अर्थात् उस समय के गॉव उत्पादन उद्यमिता और प्रशासन के मामले में आत्मनिर्भर थे :–

वर्ष	G.D.P. में कृषि	रोजगार में कृषि	निर्यात में कृषि	मानसून निर्भर कृषि	पूंजी निर्माण में कृषि	आत्म हत्या में कृषि	ऋण ग्रस्तता में कृषि	गांव से पलायन
1960-61	56.5%	69.50%	50.60%	60%	27.1%	Nil	7%	Nil
2013-14	13.9%	52% जनसंख्या	13.8%	45.0%	7.1%	हर 4 घंटे में एक किसान मर रहा है ।	80% किसान ऋण ग्रस्त	80% ग्रामीण युवा

स्रोतः आर्थिक सर्वेक्षण 2015–16

धीरे–धीरे गांव की हैसियत कमजोर पड़ी, जबकि वे राज्य के लिये आर्थिक स्रोत ठीक उसी प्रकार से बने रहे जैसे वे पहले थे। आजादी के बाद बहुत कुछ बदला, पर गॉव अपनी पुरानी हैसियत प्राप्त नहीं कर पाये। परिणाम यह हुआ, कि ग्रामीण युवा ग्रामीण उद्यमिता के अभाव में अपने भविष्य की तलाश करने शहरों की ओर निकल पड़ा।

विकास गाथा तब तक अधूरी है जब तक अधिकतम श्रमबल को गुणवत्तापूर्ण रोजगार नहीं मिलता, यह तब तक प्राप्त नहीं हो सकता, जब तक कि हमारा श्रमबल, कुशल एवं बाजार की मांग क अनुरूप प्रतिस्पर्धी नहीं बन जाता। मानव पूँजी निर्माण के माध्यम से ही भारत अपने जनांककीय लाभाश का अधिकतम दोहन कर सकता है।

लोगों का मानना है, कि जहां एक ओर ग्लोबलाईजेशन के दौर में G.D.P. की औसतन दर 6% से ज्यादा रही है, वहीं रोजगार की दर में लगातार गिरावट आई है, जिसे ''रोजगार रहित विकास'' के रूप में जाना जाता है। आर्थिक सर्वेक्षण 2015–16 में G.D.P. की वृद्धि दर 7.6%हो गई है। भारत विकास कर रहा है, किन्तु यह विकास किसके लिये ? NSSO के अनुसार भारत में कुल बेरोजगारी 4.9%है। वहीं सी. रंगराजन, विशेषज्ञ दल (2011–12) के अनुसार भारत की 29.9% जनसंख्या मात्र जीवित रहने के लिये मजबूर है, केवल इन दोनों आंकड़ों से ही भारत में रोजगार गुणवत्ता की पोल खुल जाती

है। इस दिशा में भारत सरकार ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अनेकों योजनायें बनाकर प्रयास किये, किन्तु दोषपूर्ण क्रियान्वयन एवं निर्माण होने के कारण योजनाऐं मृतप्राय होती गईं । वर्तमान में सरकार ने पहली बार स्वरोजगार मूलक कौशल आधारित, ग्रामीण उद्यमिता संबंधी कार्यक्रमों द्वारा सराहनीय प्रयास किये हैं। प्रयासों को देखकर यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि पहली बार भारत ग्रामीण युवाओं (युवतियों) का श्रम दोहन करने की क्षमता भी रखता है और मंशा भी।

INTRODUCTION:

महात्मा गॉधी ने बेरोजगारी को एक सामाजिक अपराध की संज्ञा देते हुए कहा था, किसी भी स्वस्थ्य समाज के अंदर चंद व्यक्तियों के पास धन केन्द्रित हो जाना और लाखों का बेकार होना एक महान सामाजिक अपराध या रोग है, जिसके कारण देश के विकास को ग्रहण लग सकता है। यदि ग्रामीण अंचलों में गंभीरता से झांक कर देखा जाये तो स्पष्ट हो जाता है, कि अभी भी ग्रामीण युवा के लिये भारतीय कृषि का 60 फीसदी भाग मानसून पर निर्भर होने के कारण मानसूनी जुआं बन गयी है, इसलिये कृषि क्षेत्र में रोजगार की क्षमता नगण्य प्रायः होती जा रही है। कृषि क्षेत्र में अल्प रोजगार एवं अदृश्य रोजगारी विद्यमान होने के कारण अब वह मौसमी धंधा मात्र हैं। देश की सर्वाधिक जटिल समस्या विशाल ग्रामीण जनसंख्या को रोजगार उपलब्ध कराना है। कृषि में व्याप्त अदृश्य बेरोजगारी के कारण सीमांत उत्पादकता की शून्यता और कुटीर उद्योगों की रोजगार सृजन की दृष्टि से उपादेयता निर्विवाद है, किन्तु आज जीवन का मकसद मात्र रोजी रोटी तक ही सीमित नहीं है, बदलते परिवेश में कदमताल वास्ते सरकार का लक्ष्य अब लोगां को मछली देने की बजाय उन्हें मछली पकड़ना सिखाना होना चाहिये, अर्थात् मजदूरी आधारित रोजगार के बदले ग्रामीणों की कौशल व सहभागिता आधारित स्व–रोजगार उद्यमों की स्थापना होना चाहिये, ताकि लाभकारी और संपोषीय रोजगार उपलब्ध कराकर गरीबी और बेरोजगारी का समूल उन्मूलन किया जा सके ।

आजादी के बाद से गरीबी हटाने पूर्ण रोजगार जैसे बड़े–बड़े नारे दिये गये, लेकिन इनकी धुरी कौशल विकास आधारित उद्यमिता की ओर शुरूआत में ध्यान नहीं दिया गया। कौशल विकास जहां व्यक्ति की विशेषता को बढ़ाता है, वहीं उसकी रचनात्मकता का विस्तार भी करता है, साथ ही उत्पादन के स्तर, उत्पादो की गुणवत्ता को भी बढ़ाता है। कौशल विकास एक साथ सम्बद्ध जैसे– मांग आपूर्ति, प्रति व्यक्ति आय, उपभोग एवं विकास जैसे शिक्षा स्वास्थ्य पर व्यय व गुणवत्तापूर्ण जीवन को सुनिश्चित करता है। वही उद्यमिता एक अभिनव और गतिशील प्रक्रिया है, जिसके तहत् नये–नये उद्यम उत्पन्न होते हैं। उद्यमी परिवर्तन का एक उत्प्रेरक एजेंट है, जिसे कौशल विकास के माध्यम से विकसित किया जा सकता है। ग्रामीण उद्यमिता सामाजिक रोजगार विकास का प्रभावी साधन प्रतीत हो रही है।

OBJECTIVE:

ग्रामीण क्षेत्र रोजगार के महत्वपूर्ण व आकर्षक क्षेत्र होने के बावजूद ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों का रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन जारी है तथा पलायन की यह गति लगातार तेज होती जा रही है, शोध तीन प्रमुख उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है:–

- क्या गामीण युवाओं में उद्यमिता की संभावनायें वैसी ही हैं, जैसी शहरी युवाओं में।
- क्या ग्रामीण युवा उद्यमिता के मौलिक आधार बन सकते हैं अथवा नहीं ।
- क्या सरकार नगरों की तरह गॉव में भी उद्यम स्थापना के प्रति प्रतिबद्ध है, जहां ग्रामीण युवा रोजगार की संभावनायें तलाश सके।

HYPOTHESIS:

शोध–पत्र निम्न परिकलपनाओं के आधार पर किया गया है:–

1. ग्रामीण उद्यमिता विकास, ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।
2. ग्रामीण उद्यमिता विकास ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभा सकती हैं।

RESEARCH METHODOLOGY:

शोध द्वितीय समंकों के विश्लेषण के आधार पर किया गया है। द्वितीय समंक विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं, शासन के सर्वे, वेबसाइटों तथा रिपोर्टों से संकलित किया गया है । समंकों के

संकलन उपरांत विश्लेषण से प्राप्त विष्कर्षों का विवरण निम्नानुसार हैः–

Present situation in Rural Area Employment, Janration:

- स्वतंत्रता के दशकों पश्चात् भी हम ग्रामीण क्षेत्रों पर दृष्टि डालते हैं तो स्थितियॉं बहुत उतसाहवर्धक नहीं कही जा सकतीं। नियोजित विकास के पश्चात् भी ग्रामीण भारत का एक बड़ा हिस्सा गरीबी, कुपोषण, सामाजिक असमानता तथा बेरोजगारी जैसे बुराईयों से ग्रस्त है तथा सैकड़ों की संख्या में योजना संचालन के बावजूद स्थितियां आपेक्षित तथ्यों से बहुत नीचे है। यह ऐतिहासिक सत्य है, कि शहरीकरण की व्यापक प्रक्रिया ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रति उदासीनता पैदा की है। शहर न केवल उत्पादन, वितरण और प्रबंधन के केन्द्र बने हैं, बल्कि सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था की दिशा भी तय कर रहे हैं। सम्पूर्ण आर्थिक व्यवस्था में ग्रामीण क्षेत्र विगत कई दशक से महज कच्चे माल के एवं मजदूरों के स्रोत बनकर रहे गये हैं। पारम्परिक ग्रामीण अर्थ व्यवस्था, जो कि कृषि, हस्त शिल्प, लघु कुटीर उद्योगों पर निर्भर थी, वे औद्योगीकरण, शहरीकरण तथा वैश्वीकरण के आगमन के साथ समाप्त सी होती चल जा रही है ।

- ''ग्लोबलाइजेशन एवं उदारीकरण के इस दौर में सभी आम और खास ने खेती का लाभ का धंधा मानने से परहेज करते हैं, यही कारण है कि स्वतंत्रता के बाद से 40 लाख हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि कृषि से इतर कार्यों के लिये छीन ली गई है और इसी दौर में 4 करोड़ किसान खेती को छोड़कर दिहाड़ी मजदूरी कर जीवन निर्वाह करने पर मजबूर है। सीमात उत्पादकता शून्य होने के बावजूद देश के आधे श्रम शक्ति को कृषि ही खपाये हैं और जिस तरह से विदेशी निवेश के दौर में कृषि हांसिये पर धकेला जा रह है, कृषि क्षेत्र को लेकर नीतियों में जिस तरह से शून्यता स्पष्ट होती है और सरकार ग्रामीण क्षेत्र में पैदा संकट से निपटने के लिए बहुत धीमी प्रतिक्रिया दे रही है, यदि स्थिति से सही ढंग से निपटा नहीं गया तो आर्थिक सुधारों को योजनाओं पर पानी फिर जावेगा।

यदि सामाजिक आर्थिक एवं जाति आधारित जनगणना 2011 के आंकड़ों पर नजर डालें तो पता चलता है, कि देश के 640 जिलों में रहने वाले शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में 17.91 करोड़ परिवार रहते हैं, अर्थात् लगभग73% परिवार ग्रामीण हैं। महत्वपूर्ण बात यह है, कि 5.37 करोड़ यानि 29ण्97ः परिवार भूमिहीन हैं और 51.14% परिवार दैनिक मजदूरी पर तथा 30.10% परिवार कृषि पर निर्भर हैं। उम्मीद की जा सकती हैं, कि कृषि पर लोगों की निर्भरता और सकल घरेलू उत्पाद में जितना बड़ा अंतर है, उसी अनुपात में गॉव का युवा कार्य से वंचित है व वंचित होने की संभावना से ग्रस्त है। वैसे सामान्य स्थिति में भी कृषि में वर्षभर रोजगार निर्मित नहों होते और सीमांत उत्पादकता की शून्यता की स्थिति में अतिरेक आय का निर्माण न होने के कारण उद्योगों की ओर ग्रामीण युवाओं का रूझान नहीं हो पाता, परिणाम यह होता है, कि ग्रामीण युवा उद्यम या रोजगार की तलाश में शहर की ओर प्रवर्जन होता हैः–

(B)रोजगार में प्रमुख क्षेत्रों का हिस्सा

क्षेत्र	2000–04	2011–12
कृषि	58.5%	48.9%
उद्योग	18.2%	24.3%
सेवा	23.3%	26.9%

स्रोत : NSSO का 68वॉ चक्र

(C)कामगारों का क्षेत्रवार विवरण

क्षेत्र	ग्रामीण		शहरी		कुल
	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष+महिला
कृषि क्षेत्र	59.6	17.0	6.0	11.0	48.9
द्वितीयक क्षेत्र	22.0	17.0	35.0	34.0	24.3
तृतीय क्षेत्र	19.0	8.0	59.0	26.9	

स्रोतः NSSO का 68वां चक्र

संगठित क्षेत्रों मं रोजगार के अवसर घट चुके हैं। सत्तर के दशक में उद्योग जगत में काम की तलाश वालों को 10% रोजगार मिलता था, वह अस्सी के दशक में घटकर 05 प्रतिशत और नब्बे के दशक में आकर स्थिर हो गया है। वर्तमान में संगठित क्षेत्रों की राजगार वृद्धि दर ऋणात्मक है।

क्षेत्र	रोजगार (31 मार्च 2011) लाख में			परिवर्तन प्रतिशत में	
	2009	2010	2011	2010–2009	2011–2010
सार्वजनिक	177.94	178.62	175.48	0.4	–1.8
निजी	103.77	108.46	114.52	4.5	5.6
कुल	281.72	287.08	297.93	1.9	1.0
महिलायें	55.80	58.59	59.54	5.1	1.62

स्रोतः लेबर ब्यूरो रिपोर्ट 2013–14

उपरोक्त सारणीकृत समंकों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि भारतीय अर्थ व्यवस्था अपने अतिरिक्त श्रम बल के एक बड़े हिस्से को रोजगार प्रदान करने में असमर्थ हैं। इसके अतिरिक्त भारत में रोजगार की लोच लगभग नगण्य (0.1%)है। भारत सरकार को विकास के साथ–साथ रोजगार लोच को भी करने पर ध्यान देना होगा ।

लेबर ब्यूरो शिमला की 'वार्षिक रोजगार एवं बेरोजगार सर्वेक्षण रिपोर्ट 2013–14 के अनुसार वर्ष 2013–14 में समग्र बेरोजगारी दर 4.9% थी, यह ग्रामीण क्षेत्रों में 4.7 तथा शहरी क्षेत्रों में 5.5%आंकी गयी थी। भारत के विभिन्न सामाजिक समूहों में बरोजगारी दरें 2013–14 में भिन्न भिन्न थीं, जो इस प्रकार हैः–

समूह	ग्रामीण			शहरी			अखिल भारतीय		
	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल
Gen वर्ग	4.5	8.3	5.2	3.8	14.5	5.6	4.2	10.5	5.3
OBC वर्ग	4.1	6.4	4.7	3.8	11.5	5.3	4.0	7.6	4.8
SC वर्ग	3.9	5.7	4.4	4.5	10.7	5.8	4.0	6.6	4.6
ST वर्ग	4.0	5.1	4.3	4.4	9.5	5.5	4.0	5.5	4.5
कुल	4.2	604	407	3.9	12.4	5.9	4.1	7.7	4.9

स्रोत लेबर ब्यूरो रिपोर्ट 2013–14

Prevebility of Entrepreneurship in Rural Regions:

भारतीय युवाओं मे जिस मनोविज्ञान का निर्माण किया गया है, उसक केन्द्र में नौकरी है, उद्यम नहीं। जबकि वास्तविकता राह उद्यमिता के विकास से ही होकर जाती है, इसलिये आज की जरूरत यह है, कि हमारा युवा वर्ग एक सफल उद्यमी बनने का मनोविज्ञान विकसित करे या स्वप्न देखे, ताकि वह स्वयं रोजगार की तलाश न करे, बल्कि रोजगार पैदा करे। युवा बंधनों और बने–बनाये रास्तों पर चलने की बाध्यता नहीं मानता, वह नये रास्ते बनाते हैं, इन नये रास्तों को ही बदलाव कहते हैं, इसलिए युवाओं को बदलाव का वाहक कहा जाता है। उत्साहवर्धक परिवर्तन या परिवर्तनकारी उत्साह दोनों ही युवा मन के संकेत है। भारतीय युवा के सशक्तीकरण में ही भारत का सशक्तीकरण निहित है। यह वर्तमान की भी मांग है और युवा भारत के भविष्य

की भी। आइये, उद्यमिता विकास के माध्यम से इसका आगाज करें।

उद्यमिता की भावना अपने जान, कौशल, दक्षता, उत्पादन एवं सेवाओं में नवाचार की कला का अभ्यास करने क लिये व्यक्तियों की मदद करता है। इसकी उत्कृष्टता को शिक्षण एवं प्रशिक्षण क माध्यम से पूरा किया जा सकता है। उद्यमिता एक प्रक्रिया है, जहां व्यक्तियों को एक व्यवसाय या उद्योग में संगठित कर दूसरों को रोजगार के अवसर प्रदान किया जाता है। यह ग्रामीण गरीबी, बेरोजगारी के साथ–साथ सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिये एक प्रभावी रणनीति के रूप में देखा जाता है। ग्रामीण उद्यमी आय सृजन की गतिविधियों का संचालन करते हैं। बेहतर कौशल प्रशिक्षण उपरान्त स्थापित ग्रामीण उद्यमिता केन्द्र लोगों को गांव में ही रोजगार उपलब्ध कराकर गरीबी के निवारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इस दृष्टिकोण से उद्यमिता प्रणाली ग्रामीण भारत के विकास के लिये बेहद प्रासंगिक हैं । यही कारण है कि ग्रामीण रोजगार का एक बड़ा भाग उद्यमिता की तरफ आकर्षित हो रहा हैः–

कामगारों का बदलता परिदृश्य

रोजगार की प्रकृति	ग्रामीण	शहरी	अखिल भारतीय
स्व–रोजगार	60%	40%	52%
अस्थाई	31%	17%	30.0%
नियमित	9%	43%	18-0%

स्रोतः NSSO का 68वां चक्र

ग्रामीण भारत के विभिन्न क्षेत्रों में उद्यमिता की विविधताओं एवं उनके उत्पादन एवं वितरण की स्थानीय विविधताओं के अनुसार ढालकर उद्यम स्थापित करने की आवश्यकता है, ऐसे उद्यमों की देश में अपार संभावनायें हैं, जैसेः–

- खनिज आधारित ग्रामीण उद्यमिताः– कुम्हारी काम, चूना उत्पाद, पत्थर की कटाई, नक्कासी, स्लेट निमाण आदि।
- कृषि खाद्य आधारित उद्यमिताः– अनाज, दाल, मसाला उद्यज्ञेग, विपणन एवं पैकिंग गन्ना, गुड़, मधुमक्खी पालन, तेल निकालना, आटा चक्की, धान मशीन, दलिया निर्माण, पशु चारा निर्माण, मुर्गी चारा निर्माण इत्यादि।
- बहुलक तथा स्थयनक आधारित उद्यमिताः– चर्मशोधन उद्योग, खान आधारित उद्योग, रबड़ एवं चमड़ा आधारित वस्तुओ का निर्माण, हाथी दांत, सींग उद्योग, मोमबत्ती बनाना इत्यादि।
- इंजीनियरिंग पराम्परागत उद्यमिताः– बढ़ई गिरी, लोहारगिरी, एल्युमीनियम के घरेलू बर्तन बनाना, कृषि पत्र हल इत्यादि बनाना, साइकिल रिपयेरिंग, सगीत के सामान बनाना आदि उद्यमिता।
- वन आधारित ग्रामीण उद्यमिताः– कत्था, गोंद, लाख, अगरबत्ती आदि बनाना, कुटीर टिपासवार्ड, झाड़ू बनाना, रेशम उद्योग, कापी जिल्द कागज बनाना, लकड़ी का फोटो प्रेम बनाने से संबंधित उद्यमिता।
- वस्त्र आधारित उद्यमिताः– ऊनी, पाली, रेशम, सूती, वस्त्र निर्माण, हथकरघा, होजरी का काम, जाल निर्माण, छींटाकारी खिलौने, कशीदाकारी गुड़िया निर्माण करना आदि।

सेवा आधारित उद्यमिताः– ड्राई क्लीनिंग, पार्लर, नाई दुकान, बिजली वायरिंग, मरम्मत, पम्पलेट मरम्मत, ढावा, टेन्ट हाउस, कैटरिंग, टी–स्टाल आदि।

इस तरह से देखा जाये तो ग्रामीण क्षेत्र में हर वर्ग को उद्यमिता से जोड़ने की अपार

संभावनाऐं विद्मान हैं। सरकार को लोगों को उनसे जाड़ने की कोशिश की जानी चाहिए। उससे ग्रामीण गरीबी एवं बेरोजगारी का समूल उन्मूलन किया जा सकता है।

Role of Government in Rural Intrepreneurship Development:-

हर अर्थव्यवस्था में सबसे ज्यादा चर्चित, लेकिन सर्वाधिक वंचित सदस्य मजदूर होता है। हर नीति बनाने के पहले उसकी चर्चा जरूर होती है, लेकिन शायद ही कोई देश या कोई अर्थव्यवस्था हो, जहां मजदूर वर्ग अपनी न्यूनतम जरूरतें पूरी कर पाता हो, तो समाधान क्या है ? इस दिशा में स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर अब तक अनेकों योजनायें बनीं, फिर बनी और बनती रहीं, किन्तु केन्द्र बिन्दु में कभी स्व–रोजगार या उद्यमिता नहीं रही, बल्कि हमेशा करो और खाओ की नीति रही, जबकि जरूरत कौशल आधारित उद्यमिता विकास नीति अपनाने की थी। देर से ही सही सरकार ने इस दिशा में सार्थक कदम उठाये हैं और लोगों को स्व–रोजगार स्थापित करने में मदद कर रही है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन का परिदृश्य बदलता जा रहा है और गरीबी एवं बेरोजगारी निवारण में सार्थक भूमिका निभा रहे हैं, उनमें से कुछ निम्नानुसार है:–

- 25 सितम्बर 2014 को भारत सरकार द्वारा गरीब परिवारों के ग्रामीण युवाओं के कौशल विकास और उत्पादन क्षमता के विकास पर बल देने के लिये पंडित दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना (DDUGKY)का शुभारंभ किया। इसका उद्देश्य कौशल विकास और अन्य उपायों के माध्यम से ग्रामीण आजीविका के अवसरों में वृद्धि कर ग्रामीण युवाओं के जीवन में सुधार लाना और उनका समावेशी विकास करना है। योजनान्तर्गत कुल 10.94 लाख उम्मीदवारों को प्रशिक्षित किया गया और कुल 8.51 लाख उम्मीदवारों को रोजगार प्रदान किया गया। इस योजना के माध्यम से स्वास्थ्य, निर्माण, चमड़ा, बिजली, प्लंबिंग आदि जैसे 250 से अधिक ट्रंडों में कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों हतु वित्त पोषण किया जा रहा है।

- ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता निवारण के लिए स्व–रोजगार की एक योजना राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन ;छत्स्डद्ध की शुरूआत सरकार ने 3 जून 2011 को किया, जिसमें IRDP, TRYSEM, DWACRA, SITRA, GKY, MWS, SGSYका विलय किया है। इस योजनान्तर्गत BPLपरिवार के 100% SC/ST के 50%अल्पसंख्यकों के 15: तथा विकलांगों के 3%परिवारों को स्व–सहायता समूह के रूप में गठितकर क्षमता निर्माण तथा कौशल विकास के लिये प्रशिक्षण दिया जाता है तथा उन्हें देश की तेजी से विकसित अर्थव्यवस्था के निर्माण में योगदान देने लायक बनाएगा। वर्तमान में स्व–सहायता समूह ग्रामीण रोजगार एवं गरीबी निवारण तथा महिला सशक्तीकरण मं केन्द्रीय भूमिका निभा रहा है।

- 8 अप्रैल 2015 को मुद्रा योजना(Micro Units Development Refinance Agency)की शुरूआत की। जिसका उद्देश्य छोटी उद्यमी इकाईयों को कम लागत पर वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाना है, रोजगार को बढ़ावा देना, स्वरोजगार को बढ़ावा देना, सस्ती दरों पर आसानी से लोन की उपलब्धता करवाना आदि इसके अंतर्गत–

शिशु ऋण योजनाः 50,000 तक का ऋण

किशोर ऋण योजनाः 50,000 से 5 लाख तक का ऋण

तरूण ऋण योजना : 5 लाख से 10 लाख तक का ऋण मुद्रा द्वारा उठाए गए कदमों का लक्ष्य युवाओं, शिक्षितों या कथन श्रमिकों और महिला उद्यमियों समेत सभी उद्यमियों को मुख्य धारा में लाना है। 2015–16 के बजट में 20,000 करो की राशि इसके लिये प्रावधानिक किया गया है ।

- भारत सरकार ने कौशल विकास एवं उद्यमिता के लिये राष्ट्रीय नीति स्किल इण्डिया 15 जुलाई 2015 को मंजूरी दी है, जिसका लक्ष्य 2022 तक 40 करोड़ से अधिक लोगों को उनकी पसंद के कौशलों का प्रशिक्षण देते हुए उनकी स्व–रोजगार सम्बन्धी योजना को बढ़ाना है। कौशल प्रदान प्रक्रिया में निजी क्षेत्र, गैर–सरकारी संगठनों, स्थानीय स्तरों पर पंचायती राज संस्था तथा कौशल प्रशिक्षण के अनुभव वाले शिक्षण संस्थानों को जुटाना पड़ेगा। इसमें सभी वर्गों को समान महत्व दिये जाने की आवश्यकता है।

- 15 मई 2015 को अल्प संख्यकों में पारम्परिक कला एवं समुदाय से सम्बंधित हस्तकला को बढ़ावा देने के लिये कौशल विकास

एवं प्रशिक्षण योजना 'उस्ताद' शुरू की गई है, जिससे की ग्रामीण उद्यमिता की स्थापना होगी एवं गरीबों को रोजगार प्रारंभ करने के अवसर बढ़ेंगे।

- 21 मार्च 2015 को रू. 1120 करोड़ के कुल परिव्यय वाली प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)स्वीकृत की गई, जिसका लक्ष्य 1.5 मिलियन युवा को कौशल विकास हेतु प्रशिक्षित करना, प्रशिक्षण में 10वीं एवं 12वीं पास घर बठे लड़कों को प्राथमिकता देना। मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, छठ। जैसे कार्यक्रमों में श्रम बल की मांग के अनुरूप युवाओं को प्रशिक्षण देना तथा तत्संबंधी उद्यमिता स्थापित में उनको आर्थिक सहयोग प्रदान करना है ।

- स्वरोजगार के अधिकारिक अवसर सृजित करने के लिए एक नया प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP)15 अगस्त 2008 को प्रारंभ किया गया। इस कार्यक्रम के तहत् लघु उद्यमिता स्थापित करने के लिये ऋण स्वरोजगारी को उपलब्ध कराया जायेगा, जिसमें कुछ अंश सब्सिडी का होगा। विनिर्माण क्षेत्र में 25 लाख व व्यापार/सेवा क्षेत्र 10 लाख तक की परियोजना इसके तहत् स्थापित की जा सकती है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नये अवसर प्राप्त हो रहे हैं, इस योजना का कार्यान्वयन ग्रामीण क्षेत्रों में खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग द्वारा किया जा सकता है। वर्ष 2013–14 में इसके लिये 1418 करोड़ रूपये आवंटित किये गये थे।

- भारत सरकार ने 1956 में खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग (KVIC)की स्थापना की थी। विकेन्द्रीकृत क्षेत्र की यह एक महत्वपूर्ण संस्था है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में कौशल आधारित उद्यमिता स्थापित करने के साथ गैर–कृषि क्षेत्र में रोजगार अवसरों का सृजन करती है, जिससे ग्रामीण पलायन भी रूका है। रोजगार उपलब्ध कराने में इस बात का भी ध्यान रखा जाता है, कि रोजगार उद्यमिता पर्यावरण को किसी तरह का नुकसान न पहुंचायें साथ ही उससे ग्रामीण आबादी लाभांवित हो। फिलहाल खादी ग्रामोद्योग 115 प्रकार की ग्रामीण उद्यमिता स्थापित करने में मदद कर रहा है, जिनमें खनिज, वन, कृषि, पम्परागत एवं सेवा आदि प्रमुख क्षेत्र हैं। वर्ष 2016 में इसके अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्र में 3.502 करोड़ उद्यम स्थापित थी, जो कुल उद्यमों का 59.9%है। इन उद्यमों की औसतन वृद्धि 39-28%की है तथा उद्यमों में रोजगारों की औसतन वृद्धि ग्रामीण क्षेत्र में 3.59% है।

- ग्रामीण रोजगार वृद्धि की दृष्टि से पशुपालन का महत्वपूर्ण स्थान है, सहकारी बैंक व क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, ग्रामीण बेरोजगार युवकों को लगभग 25 लाख रू. तक के ऋण डेयरी लगाने हेतु प्रदान कर रहे हैं, जो कुल उद्यमों का 59.9%है। इन उद्यमों की औसतन वृद्धि 39.28% है तथा उद्यमों में रोजगारों की औसतन वृद्धि ग्रामीण क्षेत्र में 31.59% है।

- ये ग्रामीण रोजगार वृद्धि की दृष्टि से पशुपालन का महत्वपूर्ण स्थान है। सहकारी बैंक व क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, ग्रामीण बेरोजगार युवकों को लगभग 25 लाख रू. तक के ऋण डयरी लगाने हेतु प्रदान कर रह हैं। रोजगार को विस्तार करने के लिये स्वयं डेयरी परियोजना, व्यवसायिक डेयरी विकास परियोजना, सघन डेयरी परियोजना आदि की शुरूआत की गई है। इस महत्वाकांक्षी योजना को सुचारू रूप प्रदान करने में गुजरात ने सफलता हासिल की है। अन्य राज्य भी इसका अनुसरण करते हुए गाँवों में रोजगार के अवसरों का सृजन करके ग्रामीण युवकों को गांव में ही रोजगार प्रदान कर सकते हैं।

- ग्रामीण क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सुंदरता एवं देशज विशिष्टताओं के कारण पर्यटकों के लिये हमेशा से आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। इसी के मद्देनजर ग्रामीण विकास मत्रालय ने ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिये व्यापक कदम उठाये हैं। पर्यटन की असीम संभावनाओं को देखते हुए सरकार देश में हस्तशिल्प ज्ञान संस्कृति आदि को भी बढ़ावा दे रही है।

CONCLUSION:

- कौशल विकास के जरिये उद्यमिता अब युवाओं के द्वार पहुँच रही है, जरूत है, देश में कौशल विकास संबंधी योजनाओं को सही तरीके से समझकर इसका समुचित लाभ उठाने की। भारत में ऐसे माहौल की जरूरत है, जिसमें कौशल विकास एक गरिमापूर्ण काम माना जाए और इसे प्रतिष्ठा मिले। कौशल विकास के अच्छे केन्द्रों और अलग–अलग कारोबार के बीच संस्थागत सम्पर्क बढ़ाने पर भी जोर देना उपयोगी होगा, तभी कौशल आधारित उद्यमिता विकसित करने की दिशा में अड़चन रहित यात्रा आगे बढ़ेगी

और ग्रामीण रोजगार का परिदृश्य गैर कृषि आधारित आत्मनिर्भरता में संलग्न होगा ।

- देश में दरिद्रता और बेरोजगारी का तो मानो चोली दामन का साथ है, एक व्यक्ति गरीब है, क्योंकि वह बेरोजगार है, इसलिये गरीब है। वर्तमान दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली भी विद्यार्थियों को उद्यमिता संबंधी रचनात्मक कार्यों में लगाने स्वावलंबी बनाने तथा आत्म विश्वास पैदा करने में असफल रही है। अर्थ व्यवस्था के सामने सबसे महत्वपूर्ण और दीर्घकालीन चुनौती यह है, कि गुणवत्तापूर्ण रोजगार के अवसर कहां से निकलेंगे। उत्पादक रोजगार विकास के लिये बहुत जरूरी है, तत्संबंध में स्व–रोजगार आधारित उद्यमिता विकास महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

- प्रारम्भ से वर्तमान तक ग्रामीण विकास हमारी सम्पूर्ण नियोजन प्रक्रिया में सर्वोच्च प्राथमिकता का क्षेत्र रहा है, तब भी हम, योजनाओं के दोहरेपन, कार्यक्रमों की पुनरावृत्ति, सामंजस्यता में कमी, सामाजिक अंतर्सम्बद्धता का अभाव तथा जन सामान्य की भागीदारी का अभाव आदि के कारण हम लक्षयों से दूर होते चले गये और गरीब अधिक गरीब तथा अमीर अधिक अमीर होता चला गया। आज जरूरत है रोजगार मूलक योजनाओं के बजाय स्व–रोजगार मूलक योजनाओं का दायरा पारदर्शिता एवं बेहतर क्रियान्वयन के जरिये बढ़ाया जाये।

- भारत की जनसंख्या दर घटी है, दहेज हत्याओं में कमी आई है, हमारे गॉव के खेतिहर मजदूर अब खेत मालिक की शर्तों पर काम करने को मजबूर नहीं हैं । बधुआ मजदूरी का दाग मिट रहा है। झारखण्ड की बंजर टाड धरती पर खेती संग सामूहिक बागवानी की हासिल होती मंजिल बताती है, कि युवाओं में उद्यमिता विकास/ कौशल विकास रंग ला रहे हैं एवं ग्रामीण उद्यमिता विकास के माध्यम से ही भारत ग्रामीण बेरोजगारी तथा गरीबी से निजात पाने की दिशा में अग्रसर हैं।

REFERENCE :

- Indian Economic Sarve : 2015-16

  NSSO का 68 चक्र सर्वेक्षण : 2011–12
- लेबर ब्यूरो शिमला की वार्षिक रोजगार एवं बेरोजगारी सर्वेक्षण रिपोर्ट वर्ष 2013–14
- भारतीय जनगणना रिपोर्ट : 2011
- प्रतियोगिता दर्पण अतिरोकांक (अर्थव्यवस्था) : 2016
- आर्थिक परिदृश्य : 2016 (दृष्टि पब्लिकेशन), पी.पी. 221–328
- ओझा शिवकुमार (2015) : भारतीय अर्थ व्यवस्थाः बौद्धिक प्रकाशन, इलाहाबाद, Vol.3 ISBN : 979-81-225710-3-4 PP: 69-113
- झा, अजीत, मार्च 2015, उदारीगण के दौर में रोजगार एवं योजनायें, योजना, Vo. : 3 ISSN - 09971 - 8397, PP: 45
- सिंह, उत्सव कुमार एवं मनीष, मार्च 2016, रोजगार सृजन एवं उद्यमिता की सगमिता, योजना Vol: 3, ISSN : 0971-8400 PP : 53
- सिंह रहीस, अगस्त 2016, 'ग्रामीण युवाओं में उद्यमिता की संभावनाऐं, कुरूक्षेत्र, Vol. 10, PP: 9-12
- राजगढ़िया विष्णु, अप्रैल 2016, कौशल विकास पर जोर, कुरूक्षेत्र Vo. : 06, PP : 34-38
- Agrawal, A.N. Indian Economy, Weily Publisher, New Delhi 1997, PP : 342.
- Jhingan M.L. Economic Development and Planing, Vrinda Publication Pvt.Ltd., Delhi (1998), PP : 422
- Bohre R.K. Rural Poverty and Unemployment in India Northen Delhi (2002), PP : 58

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

मेक इन इंडिया स्कीम से रोजगार के क्षेत्र में बढ़ती संभावनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. नीलम सिंह

अर्थशास्त्र विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र)

पिछले कुछ वर्षों में दुनिया के विकसित देश जब वित्तीय मंदी और अपने ऋण संकट के प्रभाव से उबरने के लिए कठिन संघर्ष कर रहे थे तब भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थवयवस्थाओं में से एक था। सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (एमओएसपी) द्वारा 31 जनवरी 2015 को जारी जीडीपी आकलन की नई प्रणाली से माना जा रहा है कि भारत देश सबसे ज्यादा तेजी से विकास कर रहा है और तेजी से आर्थिक विकास के लाभ को अच्छी तरह से पूरे समाज के बीच वितरित करने की आवश्यकता हैं। साथ ही यह भी सुनिश्चित करना होगा कि समाज के निम्न वर्ग में इस आर्थिक विकास को कैसे ले जाया जा सकता हैं? भारत मे विगत कुछ दशकों के दौरान सेवा क्षेत्र में नौकरियां नहीं रही है। बल्कि इससे बेरोजगार आबादी की बढ़ोत्तरी हुई है ,भारत एक जनसांख्यिकीय लाभांश वाला देश माना गया हैं। जिसकी जनसंख्या का बड़ा भाग कार्यशील आयु समूह के अतंर्गत आता हैं। जो अपने आप एक दुधारी तलवार हैं। विनिर्माण क्षेत्र ही एक ऐसा क्षेत्र है जिससे आत्मनिर्भर अर्थवयवस्था के द्वारा जनसंख्या का एक बड़े भाग के रूप में निर्माण हो सकता है वहीं इससे उन प्रक्रियाओं की भी शुरूआत होगी जिससे जनसंख्या के एक बड़े भाग को रोजगार मिल सकेगा।

मेक इन इंडिया राष्ट्रोय और राज्य स्तर पर एक साथ शुरूआत की गई जिसका उद्देश्य वैश्विक स्तर पर भारत को एक पसंदीदा निवेश स्थल के रूप में प्रस्तुत करना हैं। इसके साथ ही नवाचार को बढ़ावा देना , कौशल विकास के कार्यक्रमों को गहन और व्यापक बनाना , बौद्धिक संपदा अधिकारों का संरक्षण देने के साथ ग्रामीण एवं शहरी इलाकों के छोटे उद्यमी को बढ़ावा देना जिससे रोजगार में अधिक से अधिक वृद्धि हो सके। विनिर्माण क्षेत्र सहित अन्य सभी क्षेत्रों में मेक इन इंडिया के लक्ष्य को पाने के लिए भारत अतंर्राष्ट्रीय स्तर का आधारभूत संरचना उपलब्ध करवाने के लिए प्रतिबद्ध हैं क्योंकि मेक इन इंडिया मुख्य रूप से विनिर्माण क्षेत्र से जुड़ा हुआ हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए सरकार ने 25 महत्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान की जिनमें विश्व स्तर पर भारत अग्रणी बन सकता हैं। ये क्षेत्र है – ऑटो मोबाइल , उडड्यन, जैव प्रौद्योगिकी रसायन ,निर्माण उद्योग, रक्षा – विनिर्माण भारी मशीन,इलेक्ट्रानिक, खाद्य संस्करण, सूचना प्रौद्योगिकी,चमड़ा, मीडिया, व मनोरंजन ,खनन, तेल व गैस दवा, बंदरगाह ,रेल, नवीनीकरण ऊर्जा, सड़क व राजमार्ग, अतंरिक्ष, वस्त्र व कपड़ा, तापीय ऊर्जा, पर्यटन व अतिथि सत्कार और कल्याण।

इन सभी क्षेत्रों में रोजगार सृजन की अपार संभावनाएं है और इस कार्यक्रम की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि भारतीय श्रम को अधिक से अधिक रोजगार मिलें।

देश की 65 प्रतिशत आबादी 35 साल से कम उम्र की हैं। सीआईआई की नवीनतम इंडिया स्किल रिपोर्ट के अनुसार हर साल सवा करोड़ युवा रोजगार बाजार में आते हैं। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार 2013 में भारत की जीडीपी में विनिर्माण क्षेत्र का योगदान मात्र 13 फीसदी ही रहा है, इसका कारण उत्पादकता के स्तर पर रही कमियां जिम्मेदार है, आर्थिक समीक्षा 2015–16 की रिपोर्ट से स्पष्ट होता है कि औद्योगिक क्षेत्र में रोजगार के अवसरों के मामले में भारत अन्य एशियाई देशों के साथ बराबरी पर खड़ा हैं लेकिन खास उत्पाद तैयार करने वाले उद्योंगों में यह हिस्सेदारी काफी कम है। इसका मतलब यह हुआ कि भारत के श्रमिकों की उत्पादकता कम है। वहीं चीन, इडानेशिया और दक्षिण कोरिया इस मामले में भारत से आगे निकल गए है। ऐसी स्थिति में मेक इन इंडिया स्कीम एक अच्छा कदम माना जा सकता हैं।

मेक इन इंडिया की आवश्यकता –वर्तमान में प्रतिवर्ष 1 करोड़ तीस लाख लोग कामकाजी वर्ग (वर्कफोर्स) से जुड़ते है। इसके बावजूद भारतीय अर्थवयवस्था को उत्पादन के दबाव का सामना करना पड़ता हैं। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) के अनुसार उच्च वृद्धि वाले 22 क्षेत्रों को साल 2022 तक लगभग 34 करोड़

कुशल श्रमिकों की जरूरत पड़ेगी और इसके साथ–साथ 15 करोड़ श्रमिकों को अपनी कुशलता में गुणात्मक सुधार करना होगा। संयुक्त राष्ट्र की नवीनतम जनसंख्या रिपोर्ट 2015 के अनुसार 2020 तक भारत में औसत आयु 29 वर्ष होगी, जो चीन और अमेरिका में 37 वर्ष तथा यूरोप में 45 वर्ष होगी। जनसंख्या से संबंधित ये लाभ भारत के लिए विश्व का मानव संसाधन कारखाना बनाने और विश्व की बूढ़ी होती अर्थवयवस्थाओं की आवश्यकताएँ पूरी करने का अवसर है। मेक इन इंडिया उद्यमिता को प्रोत्साहन देने तथा कौशल विकास के साथ रोजगार को बढ़ावा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। ऐसे बहुत से क्षेत्र है जो मेक इन इंडिया के कारण विकास की ओर अग्रसर हो सकते हैं। जिसमें प्रमुख हैं–

- बेरोजगारी परिदृश्य– भारत में बेरोजगारी परिदृश्य गंभीर बना हुआ है इसके अलावा कृषि का जीडीपी में योगदान सिर्फ 14 प्रतिशत है लेकिन इसमें 50 प्रतिशम श्रम बल को रोजगार मिला हुआ है यह इस बात का द्योतक है कि कषि में छुपा हुआ श्रम बहुत ज्यादा है। तथा श्रम उत्पादकता भी निम्न हैं। सेवा क्षेत्र में जीडीपी में 60 प्रतिशत का योगदान देता है लेकिन मात्र 25 प्रतिशत कार्यबल को रोजगार मिलता हैं।
- विनिर्माण क्षेत्र पर ध्यान देने की आवश्यकता– भारत अपनी जनसांख्यिकी और मांग स्वरूप में विशिष्ट हैं। भारत 3 डी यानी डेमोक्रेसी (लोकतंत्र), डिमांड (मांग), तथा डेमोग्राफी (जनसांख्यिकी) वाला एक अद्भूत देश हैं। यहां एक बहुत बड़ा घरेलु उपभोक्ता आधार हैं। मेक इन इंडिया भारत को वैश्विक विनिर्माण केन्द्र में बदलने वाली एक समयबद्ध पहल है। नए निवेशकों को आकर्षित करने तथा विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए यह कार्यक्रम हस्तक्षेप के जरिए विनिर्माण क्षेत्र में समस्याओं की पहचान करता है तथा उसका हल सामने लाता हैं।
- मेक इन इंडिया तथा सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्यम (एमएसएमई)– एमएसएमई रोजगार सृजन के मुद्दों ,जीडोपी में विनिर्माण की हिस्सेदारी में बढ़ोत्तरी तथा निर्यात प्रोत्साहन पर ध्यान देते हुए मेक इन इंडिया को सशक्त करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता हैं। इस क्षेत्र के पहले से ही कुल विनिर्माण उत्पादन का लगभग 45 प्रतिशत की भागीदारी है और देश के निर्यात में इसका लगभग 40 प्रतिशत का योगदान हैं।
- मेक इन इंडिया में व्यापार की सहजता– विश्व बैंक की व्यापार सहजता सूची 2015 में 189 देशों में भारत का स्थान 142वाँ था, यह चितां का विषय हैं कि व्यापार को आसान बनाने के संदर्भ में वैश्विक रूप में प्रतिद्वंदिता के बावजूद भारत अब भी बहुत पीछे हैं। मेक इन इंडिया ने व्यापार को सुलभ बनाने का विशेष ख्याल रखा हैं। पहली बार निवेशकों की सहायता के लिए मार्गदर्शन करने वाले समर्पित समूह बनाने का प्रावधान किया जाएगा तथा सिंगल विडों क्लियरेंस सिस्टम खोलने के लिए विनिर्माण क्षेत्र में निवेश करने पर जोर दिया जाऐगा। इसके अलावा एक सरल सुनिश्चित और गैर विरोधात्मक कर व्यवस्था पर जोर दिया जा रहा हैं।

उद्देश्य–मेक इन इंडिया स्कीम से रोजगार में बढ़ती संभावनाओं का अध्ययन करना हैं।

परिकल्पना– क्या विनिर्माण एक ऐसा क्षेत्र हैं जिस पर मेक इन इंडिया में ध्यान देना चाहिए। क्या इससे रोजगार का विस्तार हो सकेगा।

विवेचन –मेक इन इंडिया का उद्देश्य जितना मुखर है उतना ही इसके मार्ग में चुनौतियां हैं। ये चुनौतियां अत्यंत विषम हैंक्योंकि भारतीय निर्माण निचले स्तर पर ही थमा हुआ हैं। ऐसे समय में यह प्रश्न उठता है कि क्या विनिर्माण एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ पर निवेश करने से रोजगार मं वृद्धि हो सकती हैं। इसी का अध्ययन इस शोध पत्र में किया गया हैं।

रोजगार के क्षेत्र में बढ़ती संभावनाओं में सबसे प्रमुख है मेक इन इंडिया के चार प्रमुख स्तभं है जो इस प्रकार है–

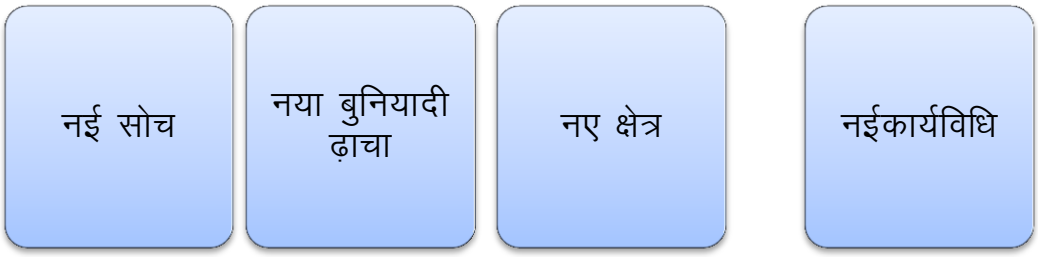

नई कार्यविधि– व्यवसाय के माहौल को आसान बनाने के लिए इंडस्ट्री को डी. लाइसेंस और डी. रेग्युलेट करना है।

नया बुनियादी ढ़ाचा– उद्योगों के विकास के लिए आधुनिक और सुविधाजनक बुनियादी ढ़ाचे की उपलब्धता बेहद महत्वपूर्ण होती है। आधुनिक हाई–स्पीड कम्युनिकेशन और इंटीग्रटेड लॉजिस्टिक अरेंजमेंट के साथ ही उत्कृष्ट तकनीक पर आधारित इंफास्ट्रक्चर उपलब्ध कराने के लिए इंडस्ट्रियल कॉरिडोर्स और स्मार्ट सिटीज को बनाना।

नए क्षेत्र– विनिर्माण ,बुनियादी ढ़ाचे और सेवा गतिविधियों में 25 क्षेत्रों की पहचान करना हैं।

नई सोच– सरकार देश के आर्थिक विकास में उद्योगों के साथ साझेदार बनेगी जिसका सिद्धांत है देश की सरकार का नजरिया एक फैसिलिटेटर का होगा रेग्युलेटर का नहीं।

अतः हम यह कह सकते है कि ये चार स्तंभ अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के नए अवसर स्थापित करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

आर्थिक सर्वेक्षण की रिपोर्ट 2016–2017 से यह ज्ञात हुआ है कि वैश्विक जनांकिकी रूझानों में वर्ष 1950 के बाद पहली बार हुआ है कि उन्नत देशों की संयुक्त कार्यशील आयु की जनसंख्या में कमी आई हैं। तीन दशकों के दौरान संयुक्त राष्ट्र ने अनुमान लगाया था कि चीन और रूस की कार्यशील जनसंख्या में 20 प्रतिशत स अधिक की गिरावट आएगी। तथापि ऐसा प्रतीत होता है कि उसी अवधि के दौरान भारत की जनांनकीय लाभांश में कार्यशील आयु जनसंख्या के मामले में अनुकूल स्थिति में होने का अनुमान किया गया हैं।

अतः हमें सदैव इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जनांनकीय लाभांश रोजगार के अवसर भी प्रदान कर सकती हैं। बस उनका सही तरीके से प्रयोग में लगाया जाए।

भारत के लिए अनुमानित जनांनकीय लाभ

दशाब्दि	जनानंकीय लाभ	कुल जनसंख्या में कार्यशील जनसंख्या का अनुपात
2001–2010	1.44	1.33(57.1)
2011–2020	2.62	1.53(60.5)
2021–2030	1.81	1.81(64.4)
2031–2040	1.92	1.72(63.2)
2041–2050	1.37	1.72(63.3)

स्त्रोत– आर्थिक समीक्षा 2016–2017 , पृष्ठ संख्या 49

अतः सारिणी से स्पष्ट है कि जहां विश्व में कार्यशील जनसंख्या के अनुपात में कमी आ रही हैं वही भारत में कार्यशील जनसंख्या के आयु वर्ग में वृद्धि हो रही है और ऐसे समय में मेक इन इंडिया जैसी स्कीम विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार को बढ़ावा देने में प्रमुख भूमिका अदा कर सकती हैं।

भारत के मूल्यवान क्षेत्रों में रोजगार की भूमिका – रक्षा निर्माण और रेलवे अब वैश्विक साझेदारी के लिए खल गए है। रक्षा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को 26 प्रतिशत से बढ़ाकर 49 प्रतिशत तक कर दिया गया हैं। इसके साथ ही रेल ढ़ाचागत परियोजनाओं में ऑटोमेटिक रूट के

तहत निर्माण परिचालन और रखरखाव के लिए 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की भी मंजूरी दी गई।

श्रम और रोजगार मंत्रालय की तिमाही रिपोर्ट के अनुसार रोजगार सृजन में 118 प्रतिशत की वृद्धि हुई हैं। जुलाई से दिसंबर 2014 के बीच 2.75 लाख नई नौकरियां पैदा हुई है जबकि 2013 में इसी अवधि के दौरान 1.26 लाख नौकरियां का निर्माण हुआ हैं।

मानव संसाधन उद्योग के विश्लेषकों और पर्यवक्षेकों ने कहा है कि रोजगार सृजन में यह घातीय वृद्धि एक मजबूत संकेत हो सकता हैं। मेक इन इंडिया के कारण ही समग्र स्पेक्ट्रम में सकारात्मक बदलाव देखे जा सकते हैं।

निवेश के दृष्टिकोण से मेक इन इंडिया –मेक इन इंडिया से भारत देश में नौकरी सृजन से बाजार में मौजूदा तेजी से आर्थिक विकास में संचयी प्रभाव देखे जा सकते हैं। आज सबसे बड़ी चुनौती भी यही है कि विकास की उच्च दर को बनाए रखने और रोजगार सृजन के लिए और अधिक अवसर खोलने होंगें। देश में रोजगार को बढ़ावा देने के लिए पहले से ही उद्यमशीलता का एक विशेष मंत्रालय बनाया गया हैं। जिसका लक्ष्य 12 लाख युवाओं को प्रशिक्षित करना हैं। जो हर साल नौकरी में प्रवेश करते है। सरकार के द्वारा बेरोजगार कुशल श्रमिक के लिए एक नौकरी पोर्टल भी शुरू किया गया हैं।

मेक इन इंडिया के तहत् कई कंपनियां भारत में निवेश के लिए आगे आ रही है जो विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो सकती हैं। जिसमें प्रमुख है वो इस प्रकार हैं –

- ❖ फॉक्सकॉन भारत में निर्माण करेगा महाराष्ट्र में फॉक्सकॉन एप्पल उत्पादों के लिए इसका उत्पादन कारखाना स्थापित करेगा। फॉक्स ऑन विनिर्माण का सबसे बड़ा आधार हो सकता है जिससे यह स्पष्ट है कि मेक इन इंडिया नीति केवल देश में निवेश को लाने पर ध्यान केन्द्रित नहीं करती है बल्कि इसके साथ ही ज्यादा रोजगार पैदा करने की उम्मीद भी रखती हैं।
- ❖ फोर्ड भारत में 6000 करोड़ की फेक्ट्री खोलने के लिए भारत में निवेश करेगा।
- ❖ माइक्रोसॉफ्ट ,मोटोरोला कंपनी ने भी भारत में निवेश के लिए हामी कर दी हैं।
- ❖ सोनी, सैमसंग कंपनी ने भारत में निर्माण शुरू करने के लिए हस्ताक्षर भी कर दिया हैं।
- ❖ और जापान ने भी भारत में टॉउनशिप लांच करने की तैयारी शुरू कर दी हैं।

इन कंपनियो के द्वारा भारत में निवेश करने से देश की जीडीपी में वृद्धि तो होगी साथ ही रोजगार के नए अवसर भी स्थापित होगें और ये तभी संभव होगा जब मेक इन इंडिया अपने उद्देश्य को पूरा करें अतः रोजगार की दृष्टि से मेक इन इंडिया स्कीम रोजगार को बढ़ाने में काफी मददगार हो सकती हैं।

सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण का योगदान –

क्षेत्र	रोजगार का प्रतिशत	जीडीपी (2010)
कृषि क्षेत्र में	47.2	15.8
विनिर्माण क्षेत्र में	30.2	24.3
सेवा क्षेत्र में	22.6	59.9

उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट है कि कहीं न कहीं आर्थिक विकास के प्रमुख क्षेत्रों में सबसे ज्यादा रोजगार की संभावनाए विनिर्माण क्षेत्र में ही हैं जहां देश के विकास में इसकी भागीदारी भी कम है साथ ही रोजगार क्षेत्र में भी इसका योगदान बहुत कम है अतः मेक इन इंडिया स्कीम का प्रमुख उद्देश्य ही विनिर्माण क्षेत्र का विकास करना है जिससे आर्थिक विकास में वृद्धि तो होगी ही साथ ही रोजगार की संभावनाएँ बढ़ने की आशा भी की जा सकती हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव–

- ➢ प्रधानमंत्री के मेक इन इंडिया कार्यक्रम के क्रियान्वयन या इसके उद्देश्य को पूरा करने के लिए स्किल इंडिया के लक्ष्य को उच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- ➢ मेक इन इंडिया एक ऐसा प्रयास है जिनका उद्देश्य रोजगारपरकता में सुधार लाना और रोजगार के अवसरों का सजृन करना है चूकिं जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ हमें उठाना होगा क्योकि किसी भी हालात में वर्ष 2050 से आगे जनानंकीय लाभांश नही बढ़

पाएगा इसलिए भारत के लिए जरूरी है कि अगले दो दशकों में इस जनसांख्यिकीय लाभांश के अवसर का लाभ उठाए।

- मेक इन इंडिया के सपनों को साकार करने के लिए आज समय की मांग है कि पंचायती राज संस्थाओं ,शहरी स्थानीय निकायों को परिवर्तन के अग्रदूत के रूप में इस्तेमाल करके जमीनी स्तर से विकास करने का रास्ता अपनाया जाए।
- भारत तथा भारत के बाहर की दुनिया के बीच के जुड़ाव को सशक्त करने में सड़क का विस्तार, रेल तथा जलमार्ग की कनेक्टविटी तथा भारत में विशाल समुद्र तटीय इलाको को बेहतर बनाकर विनिर्माण क्षेत्र के लिए एक मजबूत बुनियाद डाली जा सकती हैं।
- स्वदेशी संस्कृति और परपंरागत रोजगार के सृजन भी विनिर्माण में मदद कर सकती हैं। कला और शिल्प की विविधता पर आधारभूत जानकारियों का समयबद्ध सुरक्षा , प्रोत्साहन तथा उन्हें बढ़ावा देने एवं बेहतर विपणन रणनोतियों के साथ उन्हें सुलभ कराने की आवश्यकता हैं। ताकि वैश्विक तथा एवं घरेलु स्तर पर भी आंध्रप्रदेश की पोचमपल्ली, बंगाल का टाट और जमदानी, यूपी की बनारसी साड़ी आदि ऐसे कुछ स्वदेशी वस्त्र उत्पाद हैं , जिन्हें विश्व स्तर पर आयोजित होते प्रर्दशनी, मेले तथा कला प्रर्दशनी के जरिए पूरे विश्व भर में लोकप्रिय बनाया जा सकता हैं। इस तरह के कदमों से युवा भी खुद के लिए रोजगार का सृजन कर सकते हैं।
- गुणवत्ता पर नियंत्रण रखकर और उत्पादों को बेचने की सुविधाजनक व्यवस्था कर सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में घरों के आसपास आय के स्त्रोत पैदा कर सकती हैं। इससे सुनिश्चित होगा कि विश्वस्त जनसांख्यिकी लाभांश के फायदे की फसल बेहतर तरीके से काटी जा सकती हैं।
- डिजिटल बाजार में जगह मजबूत बने ये तभी संभव होगा जब सूक्ष्म,लघु और मध्यम उद्यम को तमाम नई सहूलियतों में बड़े उद्योंगों के बराबर की जगह मिलें। इसी को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना मेक इन इंडिया में इन्हें खास अहमियत दी गई हैं। सरकार के द्वारा क्रेडिट गारंटी स्कीम के माध्यम से कोलेटरल मुक्त ऋण का प्रावधान करने , क्रेडिट लिंक्ड कैपिटल सबिस्डी स्कीम (सीएलसीएसएस) के माध्यम से आधुनिक मशीनरी लगाने के लिए सब्सिडी का प्रावधान करने, वैश्विक प्रतिस्पर्धा विनिर्माण के लिए विश्व बैंक की सहायता से 15 नए प्रौद्योगिकी केद्रों (टीसी) के माध्यम से इको सिस्टम का निर्माण करने और मौजूदा 18 प्रौद्योगिकी केद्रों में नई प्रौद्योगिकी और परीक्षण सुविधाओं से सवंर्धित करने जैसे कदम उठाए गए हैं।

मेक इन इंडिया स्कीम के माध्यम से देसी विनिर्माण उद्योगों को नई रफ्तार मिलेगी और रोजगार के मौकों में अच्छी खासी बढ़ोत्तरी होगी। इस कार्यक्रम के माध्यम से विदेशी कंपनियों को भारत में निवेश करने का आमंत्रण दिया गया हैं। इस योजना के सफलतापूर्वक लागू होने से भारत में 100 स्मार्ट शहर प्रोजेक्ट और वहन करने योग्य घर बनाने में मदद मिलेगी। प्रमुख निवेशकों के मदद के साथ देश में ठोस वृद्धि और मूल्यवान रोजगार उत्पन्न करना इसका मुख्य लक्ष्य हैं।

संदर्भ सूची –

1- http://www.make in india.com/sectors

2.http://www.skilldevelopment.govt.in/focus

3. आर्थिक समीक्षा 2014–2015 पृष्ठ 33

4. शिशिर सिन्हा, ई–कामर्सः छोटे उद्यमी के लिए बड़ा बाजार, योजना अप्रैल 2015,पृष्ठ संख्या 25–27

5. द इकोनामिस्ट, रिवाइनिंग इंडियाज इकनॉमी,24 मई 2014

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

FINANCIAL SERVICES AND WOMEN EMPOWERMENT IN RURAL MAHARASHTRA

Dr. Madhu Satam
Modern College, Pune

ABSTRACT : A financial system provides benefits to the people of a country but majority of them are expelled from the banking system as they are financially excluded people which mean that these people are unable to access even the basic financial services in a suitable manner. In this study the researcher has focused on the steps taken by banks to help the rural women in the context of financial inclusion. Each bank has its development section where free training is given to encourage self employment and to increase awareness about the saving and investment schemes of banks. There are Self Help Groups and various training programs as well as schemes for development of business and entrepreneurship skills. The Minimum Balance Account or the Jan Dhan Yojana has been successful in providing self employment through Financial Inclusion and by providing free training facilities. The researcher has made a study on how financial inclusion objectives are being adequately achieved in rural areas.

INTRODUCTION : Finance is the backbone of a modern economy. A financial system is the most relevant conveyance for economic metamorphosis. It comprises of inter - related activities which work collectively to accomplish pre - determined objectives of economic growth. It involves financial markets, financial institutions, financial instruments and financial services which have the power to manipulate the creation of savings, investment, and capital formation to induce economic growth. The financial system has to play an important role in enhancing this spirit as it affects the overall economic growth of a country and then comes the role of financial inclusion. This shows that financial inclusion is a part of financial system.

Financial inclusion is regarded as a way to raise poor people from the grab of the exorbitant money lenders. It also brings peoples' savings in the formal financial system. Therefore financial inclusion is considered as one of the important indicator for inclusive growth. So in recent years the Indian government is giving top priority to financial inclusion. Financial services have proven potential to initiate a series of 'virtuous spirals' of economic empowerment, increased well-being for women and their families and wider social and political empowerment. Financial services can enable men to provide for their families and work with women on an equal basis for household wealth creation. They can be a significant contribution to equitable development and civil society strengthening.

In recent years, the empowerment of women has been recognized as the central issue in determining the status of women. The National Commission for Women was set up by an Act of Parliament in 1990 to safeguard the rights and legal entitlements of women. The 73rd and 74th Amendments (1993) to the Constitution of India have provided for reservation of seats in the local bodies of Panchayats and Municipalities for women, laying a strong foundation for their participation in decision making at the local levels. Reporting organizations like Census, Central Statistical Organization, Government policies and Planning, Documents are made to take cognizance by women in changing spectrum. Hence, automatically it becomes the responsibility of an academia to make a study on women and women related issues.

Financial inclusion and services, managed properly, can increase the level of empowerment of women in a number of ways. **Firstly**, having access to resources on their own account and to the tools that help them to earn a living can increase women's bargaining power within households and their influence over how money and other resources are used. **Secondly**, financial inclusion can help increase women's opportunities to earn an income or control assets outside the household. **Thirdly**, it is reducing women's

vulnerability, allowing them to insure against risk or borrow to meet unexpected expenses, such as medical treatments. These are all key factors for economic empowerment.

Objectives of the study :

1. To find out the awareness about various financial services available to, and obtained by Women in rural areas
2. To find out the preferences given to the types of financial services available in rural areas
3. To find out how financial services benefit women in creating self- employment.

Analysis of the Data collected :

The study is carried out in two Villages of Satara District, Maharashtra. The villages are Maswad Village and Vaduj Village. These villages are selected on the criterion of highest female population in these villages. The researcher has selected 100 women from each village in terms of self-employment. In total 200 women have been interviewed through structured questionnaire. Women from these villages are doing their own small business like beauty parlor, tailoring & dress designing, domestic catering, vegetable vendors, small retail shops, artificial jewelers, agriculture, employed in others farm, making & selling bags which are made from cloth etc.

Majority of women from the village are above 25 years of age and are married. Maximum families in the village have only 2-4 members. The data reveals that out of the total sample women, majority of them are literate. Very few have taken higher education. Majority of them are X-XII pass. The practice of small family norm is an important feature seen in the rural families also.

While making the survey it has been observed by the researcher that most of the women belong to low income groups. Out of all 200 women, nobody is having a monthly income of above Rs. 25000. They are in need of financial help for their personal as well as employment needs. Many of them take help from Self Help Groups. Bank of Maharashtra has taken initiatives in providing financial services for self employment of women in these villages.

Majority of the rural women in Satara District have a bank account in nationalized bank particularly, Bank of Maharashtra and very few women have account in co-operative bank, Mann Deshi Mahila Bank and Cooperative credit society also. Out of the total sample, more than 60 percent of rural women are availing saving bank account services, and some women are using current account and are having fixed deposit account also. In this case it has been found that bank officials are helping women or their customers for opening the account in the bank which is a good thing for the progress of banks.

About 70% of women have opened an account for saving purpose. From this we can conclude that women are aware about virtue of saving. Other 30% of women have opened an account for taking loan, insurance, interest rate profit etc.

Most of the women are aware of the zero/ minimum balance account scheme. Banks have taken efforts in making women aware of the Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana and Insurance link deposit schemes. However, the awareness needs to increase as 40 percent of the respondents are yet away from this knowledge.

80 percent of women took loan for self employment from banks and only 20 women took loan from their family, relatives. Many of them have already started their small business and their creditworthiness is remarkable. Maximum number of women took loan from banks for self employment because the banks are providing various schemes. They consider bank as a trustworthy lender. Only 20 percent women took loan from other sources (from family, relatives) because majority of them know their lender and they can repay the loan whenever they have cash with them. They found bank procedures to be lengthy and time consuming. But majority still confides in banking services. Women are also aware of the insurance policies like life insurance policies and health insurance. However, efforts are to be made to increase awareness and concern about health insurance among women.

Majority of women are using ATM card and are aware of debit & credit cards. This shows that women are moving towards innovative technological banking system. However, due to technical ignorance and non availability, they are not familiar to the Net Banking. Technical knowhow and availability of these services also depend on financial literacy rate and their economic conditions.

Maximum women took their own decisions regarding financial matters. Some women took advice from the banks about various financial services launched and the benefits of these services. Only 10 percent of women took advice about money matters from their family and friends. 90 percent women are a member of self help group. Banks have been providing financial help through Self Help Groups in villages. Various aspects of empowerment like Decision making, self employment, small family practice and awareness about banking services have been found by the researcher among the rural women.

Most of the women are aware of the various financial services like direct transfer benefit, zero balance account, life insurance plan etc. Financial literacy is sufficiently improving among women in villages. However, banks need to increase awareness and confidence among the customers regarding the use of these services. Almost all women have agreed with the fact that banking and financial services like loans and savings have been advantageous to them in terms of motivation for self employment, increasing awareness and economic empowerment.

They also admit that their incomes have increased due to financial literacy and feel economically empowered. The Data also reveals that banks are playing an important role in empowering women by providing the financial services that have helped them in self employment and Economic growth. Women are not only made aware of the services and schemes but also have been able to avail these services for Economic empowerment and self employment.

Conclusion :

With access to financial services (bank accounts, loans, etc.) women's bargaining power in society increases as they are equipped with the tools that help them earn and maintain a living. Additionally, studies overwhelmingly show that women are more likely to save, allocate, and invest money in order to be protected against unexpected expenses, and for their children's education; giving an opportunity for a better livelihood to the next generation. Women are making their own Bachat gat. They are aware that money in Bachat gat is their own money. Women have ability to lead the group and come together for common goal. They are able to take decision about all economic matter. Women are aware about property rights. Good numbers of women are becoming entrepreneurs. So we can conclude that women are financial decision makers. Though not very educated, they can handle their financial matters. They are leading with leadership and group development qualities. In order to improve female autonomy and empowerment, there is a need to discourage the stereo typed thinking among the males and females both within the household and in the society.

References :

1. "Financial Inclusion in India - Policies and Programmes" by N. Mani; New Century Publications, New Delhi, India; (July 2015) –
2. Achyut Krishna Borah&Enami Hazarika "Empowering women by enhancing their access to financial services with special reference to Ujani Majuli Development Block under Jorhat District: An analytical study of selected SHGs", A Journal of Humanities & Social Science, published by: Dept. of Bengali Karimganj College, Karimganj, Assam, Indi
3. Anita Banerji & Raj Kumar Sen "Women and Economic Development"; Deep & Deep Publications, PVT. LTD., New Delhi; (2000)

4. Anju Batra, "Financial Inclusion and Women Empowerment: A Myth or Reality", Faculty, Delhi Institute of Advanced Studies, Rohini, Delhi – 85, International Journal of Research in Finance and Marketing, (2013).
5. Anju Batra, "Financial Inclusion and Women Empowerment: A Myth or Reality", Faculty, Delhi Institute of Advanced Studies, Rohini, Delhi – 85, International Journal of Research in Finance and Marketing, (2013).
6. Archana H. N.in her article on "Financial Inclusion – Role of Institutions", Innovative Journal of Business and Management (2013)
7. Banerjee A. & Sen R.K. (ed), 2000, Women & Economic Development, Deep & Deep Publications, New Delhi,55 – 56.
8. Banerjee R, 2005, Women just 6% of India's workforce, Dec. 15, 2005, Times of India.
9. Becker G., 1957, The Economic of Discrimination, 2nd edition, Chicago University Press.
10. Becker G., 1957, The Economic of Discrimination, 2nd edition, Chicago University Press.
11. Blau F. and Ferber M, 1986, The Economics of Women: Men and Work, Englewood Cliffs, Prentice Hall.
12. Brij Mohan (2014), "Pradhan Manti Jan Dhan Yojana (PMJDY): Features, Needs and Challenges", International Journal of Marketing, Financial Services & Management Research, ISSN 2277-3622, Vol.3 (12), pp. 111-117. 6 –
13. Centre for Rural Development, Bank of Maharashtra, Hadasar, Pune
14. Claudia G., 1986, The Economic Status of Women in early Republic, Journal of Interdisciplinary History, 16 Winter.
15. Divyesh Kumar (2014),"Financial Inclusion Using Pradhan Mantri Jan-Dhan Yojana –A Conceptual Study", Asia Pacific Journal of Research ISSN: 23205504, E-ISSN-2347-4793, Vol. 1 (20), pp.37-42.
16. Douglas PH, 1957, edited by A. Banerji and RK Sen, Women and Economic Development, Deep and Deep,
17. Dr. Babita Agrawal "Empowerment of Education",Omega Publications, New Delhi, India; (2011)
18. Dr. Pulidindi Venugopal, "Financial Inclusion and Women Empowerment: A Study on Women's Perception of East Godavari District, Andhra Pradesh", Vit Business School, Vit University, Vellore, International Journal of Research in Commerce and Management, (2012).
19. Engels, F., 1884, The Origin of Family, Private Property and the State, New York, International Publishers, 1972.
20. Financial Inclusion - Innovation in Indian Banking Sector" by Sarita Thakur, Department of Management, Punjab University Regional Centre Mohali, India; Paripex - Indian Journal of Research; Vol 4; Issue 8; ISSN - 2250-1991 (Aug 2015)
21. Harpreet Kaur & Kawal Nain Singh (2015), "Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana (PMJDY): A Leap towards Financial Inclusion in India", International Journal of Emerging Research in Management &Technology, Vol. 4 (1), pp. 25-29.

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

INCULCATING SOCIAL SKILLS: THE NEED OF THE HOUR

Prof. G. Vidya Sagar Reddy
Dr. D.Chandra Mouli Reddy
Dr. G. Vasudevaiah

*Head, Dept. of Adult, Continuing Education and Extension, Sri Krishnadevaraya University Ananthapuramu. Andhra Pradesh.

** Asst. Prof. ,Dept. of Political Science & public Administration, Sri Krishnadevaraya University, Ananthapuramu. Andhra Pradesh.

***Teaching Assistant, Dept. of Adult, Continuing Education and Extension, Sri Krishnadevaraya University, Ananthapuramu. Andhra Pradesh

Abstract : In the modern era, thanks to Globalization, liberalization, the path breaking and epoch making inventions being made in the world of science and technology, the human life is moving at a breath taking speed, the speed that has never been witnessed before. There is tectonic shift in the way the people are leading their lives. At the core of this change is computer technology. Computer technology portends the immense changes in life style that are being heralded in. In this technological world, the computer education, which has now become ubiquitous, has become an inevitable and indispensible part of our lives. It has spread its tentacles to every nook and corner of our world and its influence has become all pervasive and this has resulted in a crucial role for it to play in our education system. At present, by providing myriad skills and knowledge, the computer education has been ensuring good living conditions and a cosy and comfortable life for all those who have consummate knowledge of it.

In terms of material life though the human beings have been making rapid strides, the value system has taken a cruel beating. The norms, principles, morals and ethics which were deemed to be bench marks for leading an honourable and altruistic life are being scattered to high winds. It is quite regrettable to witness in the recent years that there has been a steady decrease in the ethical behaviour of people in the society and this is nothing but a poor reflection of the present day educational system. The yawning gap between the behavior of educated individuals in their everyday activities and what they have learnt at school is becoming increasingly shocking. The following are some of the unsavoury characteristics and trends that are being witnessed in the society on everyday basis:

- Personally motivated interests are quite manifesting in the present day generation instead of universal good. People tend to be self serving instead of being altruistic.
- Denying regard and respect for the elders and teachers is strikingly glaring.
- Gradually losing foot in religious practices among the commoners has become more of a norm than exception.
- The Samaritan values of love, kindness charity, compassion, sympathy etc are conspicuous by their absence
- Hospitality, love towards animals, concern for environment etc are getting eroded away from the individuals as well as from the society. Deceit, cheat and rectory have become a dime – a – dozen in the business world- today.
- Violence, criminal activities are tearing the fabric of society to shreds and are destroying the mental peace and solace of the society as a whole.

Against this unpleasant and shocking backdrop, this paper focuses and harps on the dire need to inculcate human values among the students who happen to be the future torch bearers of the society.

Introduction : Education happens to be one of the omnipotent agents in the process of imbuing values & ethics to equip the learner to lead a life – a kind of life that is both gratifying and satisfying to the individual who is in tune with the cherished and venerated values and ideals of the society. Philosophers, spiritual leaders and educationists of all hues of our country, all in myriad ways, have perennially been emphasizing and harping on the imperativeness of education for 'character development', ' for bringing out the latent potentialities and inherent qualities' and for developing an 'integrated personality' for the well being of the individual and the society at large. Whatever term that one may choose to use, the significance of cultivating and developing values has long been deeply implanted in the age old traditions of India's civilizational and cultural heritage, spanning over the centuries. The diverse and rich cultural heritage that we are so fortunate to inherit in our country and of which we are immensely proud of, is the fountain from which we draw our values nourishment. Lives of individuals and communities along with that of our saints, sages and philosophers exemplify our cherished and most sought after values like self-discipline, survival in the absence of material resources, simplicity, abstinence from luxuries, handling conflicts without violence and bloodshed, exploring simple but revolutionary ideas as a mark of superior conduct and living. The concern and the stress on value education is amply reflected in our key policy documents which are made from time to time. After independence the National Commission of Secondary Education (1952-53) has been consistently and unequivocally emphasizing character building as the defining goal of education. "The supreme end of the educative process should be the training of the character and personality of students in such a way that they will be able to realize their full potentialities and contribute to the well-being of the community."

The Report of the University Education Commission (1962) noted, "If we exclude spiritual training in our institutions, we would be untrue to our whole historical development." The Report went on to make a case, not for religious or moral education, but for evolving "a national faith, a national way of life based on the Indian outlook on religion, free from dogmas, rituals and assertions."

The Education Commission of 1964-66 put the spotlight on "education and national development", from which perspective it identified the "absence of provision for education in social, moral and spiritual values" as a serious defect in the curriculum. The Commission recommended that these values be taught "with the help, wherever possible, of the ethical teachings of great religions." Agreeing with the Sri Prakasah Committee Report, it recommended "direct moral instruction" for which "one or two periods a week should be set aside in the school time-table."

The National Policy on Education (1986) expressed concern over "the erosion of essential values and an increasing cynicism in society". It advocated turning education into a "forceful tool for the cultivation of social and moral values." Education should "foster universal and eternal values, oriented towards the unity and integration of our people". The Programme of Action of 1992 tried to integrate the various components of value education into the curriculum at all stages of school education, including the secondary stage.

Development of Values through Education :

To make the value aspect of our education programs more prominent and pertinent, the following ideas may be incorporated into the educational programs.

- Developing self-respect, awareness of self-growth, one's own uniqueness, and self-confidence.
- Promoting selflessness, cooperative spirit and the spirit of sharing with others.
- Cultivating respect for property both for one's own and for that of others.
- Understanding the contribution and stressing the importance of home towards the physical, emotional, cultural and spiritual development of young people.

- Imparting clear direction on cleanliness, punctuality, use of refined language, courtesy, proper manners, respect for elders.
- Knowing of surroundings –visiting slums, villages, hospitals, orphanages, old people's homes and keeping them clean and hygienic.
- Becoming aware of the needs and necessity of others.
- Promoting civic scene, awareness of oneself as a member of a community and reminding everyone of their civic duties.
- To be aware of one's own strength and weakness, and also those of others.
- Developing love for one's friends, classmates, and also for those who are not so fortunate in life.
- Seeking to realize one's potentialities and talents, accomplishing disciplined learning in academics and sports and cultivating the scientific temper.
- Foster independent thinking, not blindly following others.
- Exposure to great personalities.
- Knowledge of the Constitution and rights, and duties of the citizens.
- Knowing the provisions to promote human dignity and justice, patriotism, national integrity, international understanding.
- Protection of environment.
- Dissemination of cultural heritage.
- Modifying human behavior through values.
- Knowing one's village/city, state, country.
- Promotion of equality and justice for all the citizens.
- Prayer of various religions.
- Awareness of good point in other religions.
- Appreciating the useful views of others and their cultural traditions.
- Propagation of value philosophy.

Causes of the Values Crisis in Modern Society :

Crisis in the present day society is not so much intellectual but rather moral and spiritual. There is due to lack of development of sound moral vision among human being along with the scientific and technological development. The balance that ought to have been there between scientific and technological development on one hand and the moral and ethical and moral principles on the other is quite conspicuous by its absence. As a result human being can attain the technological prowess to produce such powerful means of destruction like hydrogen and nuclear bombs and destroy the whole world in no time without really pondering as to what it is going to hold out for the mankind. Everything is being sacrificed at the altar of wealth and wealth happens to be the presiding deity for all and sundry , Pride has become a creed by itself and Selfishness is deeply and thoroughly entrenched in the intellect. The ego is flaunted without any sense of abasement, and desires have become an adornment, righteousness has become merely ritualistic and a figurehead in the world, compassion has dried up, gratitude has waned, Hypocrisy has become the hall mark of life and love and affection has become lustful afflictions. Distortion of values is partially due to incompatibility between ancient values and their cherishment on one hand and the explosion of knowledge pertaining to destructive technologies like war field technology. Atomic weapons, bio-weapons, explosives, missiles etc., which are threatening the very existence of mankind. Today the entire mankind is living in the shadow of fear. Man's very existence is at stake as he is indulging in wicked and nefarious activities. Prostitution, illegal marriages, broken home structure, divorce, illicit relationships outside the marriage etc., are also some of the factors which are contributing substantially for the decline of values. Lack of mutual concern between parents at home, disaffection and lack of securities in families are other factors which are instrumental for the erosion of values. The role of home, school and society have been neglected for too long and this is turn had detrimental and disastrous

consequences and has led to the degradation of values which for centuries were held close to heart by many generations. Definitely the living styles of parents leave deep and lasting impression on the minds of children and as result the behavior of parents must be exemplary and be worthy of emulation which will make the children pick up the right value system.

Even in this rapid and unfathomable change, values and standard do not change quickly and some of them, at any rate, have an abiding significance. Notwithstanding this fact, the whole socio- political setting and physical environment in which the values have to be worked out are in a state of constant flux and transition and consequently, they have to be seen and interrupted in the light of challenging and changing conditions. Cultural values, the gracious fruit of centuries of co-operative efforts and moral values, which are distinguished, which set apart men from animals, have undergone a sea change in these years. The modern youth who have been receiving the present day bland education devoid of any values are losing their sense of idealism and are living in spiritual vacuum. Moral values command no respect and significance now. Man is not in a position to discern right and wrong and good and evil. Everything is sacrificed at the altar of power and wealth and they command premium respect Religions have now become a private affair and stress is being laid on secularization of social relationships. Human relations are becoming impersonal, irrelevant, cold and secondary.

Due to disdain and lack of regard for the cultural heritage and the age old ethical values, the older generations have lost their sense of morality. As a result, the younger generation which ought to have imbibed the ethical values from their parents missed the opportunity to do so. This has made the youngsters not only to completely ignore but also to mock at anything that is remotely related to the traditions and scoff at even the very idea of value system. Lack of moral authority and ethical leadership among the teachers is another manifestation of the degradation and deterioration of ethical values in the modern society. With neither the teachers nor the parents being able to be the role models for youngsters as for as imbibing ethical values is the concerned, they have become disoriented and have lost the sense of significance and the utility of value system to lead a happy, fulfilling, meaning and contented life. Unless these distortions are corrected and the value system is brought back into the centre stage of the lives of human beings and is given the due importance that it richly deserves, the human beings are condemned to a lead pathetic, and miserable lives.

Conclusion : In modern society, the values in the life of an individual and the society at large are withering and disappearing at the cost of human happiness and the human beings have none else but themselves to blame for this deplorable condition. Value education, like charity begins at home. It is the primordial duty of the older members of the families to imbue the value system into the younger generation consciously and the baton of responsibility for furthering the cause of value system and spreading should be shouldered by the schools once the younger generation start attending the school. Because of the unmitigated and the relentless role that families, teachers and educational programs have in imparting value education, they are crucial for the persistence of value system in the society. Parents are the first teachers and home is the first school for every child and as a result the parents should set a healthy example and should be careful about their behaviours and attitudes as children see them as a role model. Cooperation and coordination within families and between families and teachers is highly significant for the child to develop into a man with wholesome personality that a society can be proud of. Besides this, education programs must be reorganized in such a way that they cater to the needs of human beings. The educational institutions must organise educational programs like seminars, conferences etc which stress on the importance of the right kind of value system that needs to be picked up by the individuals. Families can take an active and meaningful part in organizing these programs. So that, there can be foster effective harmony among

families, educators and educational programs to inculcate human values among the students who happen to be torch bearers of the modern society.

References :

Norman, R., *The Moral Philosophers – An introduction to Ethics*, Oxford University Press, Oxford, 1998.

Tripathy, Preeti, *An Introduction to Moral Philosophy*, Axis Publications, New Delhi, 2011

Teichmann, Roger, *Nature, Reason and the Good Life – Ethics for Human Beings*, Oxford University Press, Oxford, *2011*

Grose. D. N – "A text book of Value Education' New Delhi (2005) Dominant Publishers and Distributors

Shrimali K. L – A Search for Values in Education" Delhi (1974) – Vikas Publishers

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

A DETAIL STUDY OF PATANJALI AYURVED LTD: A THREAT TO FMCG COMPANIES

Dr. Deepa Katiyal
Associate ProfessorShri Vaishnav Institute of ManagementIndore (M.P.)

ABSTRACT : Patanjali Ayurved Ltd. has become a very popular company which is having lot of good qualities. It started with Ayurvedic Medicines but now has introduced lot of variety in FMCG products in the market. Indian FMCG market is a market which has a very wide range of customers. There are many competitors in all the categories and although they all have similar products available at almost similar prices, Patanjali is trying to prove it different through their marketing strategies. This has created lot of threat for other FMCG Companies. However, entry to this business is easy (low entry barriers) and this fact has been utilized very efficiently to result in combined benefit for both Patanjali and the consumers. Patanjali Ayurved Ltd is giving a tough competition to FMCG Companies by producing the similar type of products but with effective cost, no chemicals, Ayurvedic, easy avalaibility and Baba Ramdev as Brand Ambassador .With its rich biodiversity and heritage of Indian Medical system ,it is drawing the attention of the whole world. The acceptability and popularity of the Patanjali Group is increasing day by day. Our research is also based on the study of factors which are making Patanjali Ayuvedic so popular. The study is also on the popular Patanjali products which can be a threat to other FMCG products. The research is descriptive in nature in which a questionnaire is formulated. Data analysis is done on the basis of Percentage analysis and correlation analysis.

Key words: FMCG Companies, biodiversity, heritage, correlation Analysis.

INTRODUCTION : Patanjali Ayurved Ltd has sensed the consumers of India. They have developed an effective pricing strategy in the marketing process which helps in skimming and penetration. Patanjali follows a very smooth Supply Chain Management which helps the wholesalers. The company sources products directly from farmers and cuts on middlemen to boost profits. Hence, they are able to reduce their raw material procurement cost and are able to produce goods at a much cheaper price. Ayurvedic and Herbal remedies are available in all Patanjali and organic stores. Ayurvedic products are reasonably cost effective and well accepted by customers. They are easily available and do not have side effects.

There advertisement and Baba Ramdev as brand ambassador has increased the awareness of the products. Baba Ramdev's association with the brand who is considered to be a veteran of yoga has made more people attracted to Patanjali's products and are re-buying products more frequently.

In recent times, people have become more health conscious so Patanjali, with its Ayurvedic product line, is capitalizing on this changing consumer behaviour and hence capture more market share. Patanjali is getting the advantage of word of mouth promotion also. People are brand loyal and using the products again and again.

The ten Factors have been identified, responsible for the success of the Patanjali Products and also they have the effect on the mindset of the consumers: Price, Swadeshi Ayurvedic, No Chemicals, Baba Ramdev as Brand Ambassador, Good Quality, Health Benefits, Advertisement, Good Experience and Availability. The Patanjali Products are divided into six segments: Personal Care, Healthcare, Ready Made Food, Medicines, Beverages, and Grocery Items. Toothpaste, face wash, soaps, beauty products are included in Personal Care Products whereas chavanprash, honey, aloe vera, amla juice etc are included in Health Care Products. Noodles, biscuits, chocolates, pasta etc are enlisted under Readymade Food Products. Beverages are mainly fruit juices and

sharbats. Grocery items are all miscellaneous items like atta, dal, Rice, oils.

LITERATURE REVIEW :

Piyush Panday(2015), Executive Chairman Ogilvy South Asian Brands "Ramdev is a great proponent of a direct marketing FMCG company, and one step ahead of Avons and Amways. He is an all rounder who is batting, bowling and fielding at the same time."

Layak and Singh (2015), in his report "Desi bustle v/s MNC muscle" said that Ramdev's Patanjali is setting trend for HUL and Baba Ramdev's unconventional marketing and strong follower base coupled with aggressive pricing has helped him overtake established players in ayurvedic FMCG like Emami and Himalaya.

Roy, Lath and Sharma (2015) believe that factors like strong innovation and new products pipeline, pricing discounts , ayurvedic and natural propositions with low A&P spends and manufacturing indigenously lend Patanjali's products a competitive advantage .

Pransho Pandey ,Rahul Shah (2016) conducted a case study on Patanjali Ayurved limited . He made a report on the analysis of Patanjali Ayurved and its performance and impact in the Indian FMCG space. The report first analyses the FMCG Industry of India in terms of major players, segments, growth trends etc. The position of Patanjali Ayurved is then investigated with special focus on product range, market share, revenue trends, marketing strategies, distributor network, export analysis etc.

G Satheesh Raju, 2R Rahul (2016), did a study on consumer preference towards Patanjali Products in district Warangal. The main objective of this research was to find out why consumers prefer patanjali products and to know the source of preference. The study was done with seven variables of consumer buying behavior.

Chandiraleka , Hamsalakshmi R (2016) , in their research work mentioned that consumer awareness factors to use the selected product, and buying preferences towards selected Ayurvedic and herbal products. In the paper Patanjali Products got a very high ranking.

OBJECTIVES :

1. To study the factor influencing the customers to use Products of Patanjali Ayurved Ltd..
2. To find the relationship between the factors that affects the mindset of consumers to buy Patanjali Ayurved Ltd.
3. To find out the relationship between various segments of Patanjali Products in respect to demographical variables.

RESEARCH METHODOLOGY :

The present study is to find out the relationship between the factors that affect the mindset of consumers to buy Patanjali Ayurved Ltd. and also to find out the relationship between of demographical variables and various segments of Patanjali Products.

a. Data Collection Methods: The data has been collected from both primary and secondary data. Primary data has been collected with the help of a structured questionnaire, personal interviews and discussions with people of Indore. Secondary data is collected from various sources such as books, journals, Magazines, Company reports, websites, etc.

b. Research Design: The study is Descriptive in nature.

c. Sampling: The sample of 159 respondents of Indore city were selected in which people of all age, gender, qualification and income group are included. Convenient sampling technique is used for survey. People who don't use Patanjali Products are excluded from the study so 100 respondents are included in the study.

d. Research Tools and Techniques: The questionnaire was divided into three sections: the first section included questions related to

demographical variables, the second section had questions related to factors of preference for Patanjali Products and third section had questions related to different segments of Patanjali Products. Questionnaire of likert scale was developed in1 to 5 scale, 1- strongly disagree, 2- disagree, 3- neutral, 4- agree, 5- strongly agree. Correlation analysis is the main tool used for hypotheses testing with 5% significance level.

e.Hypotheses

Ho1: There is a no relationship between the factors that affect the mindset of consumers of Patanjali Ayurved Ltd.

Ho2: There is no relationship between age of the respondents and various segments of Patanjali Products.

Ho3: There is no relationship between Gender of the respondents and various segments of Patanjali Products.

Ho4: There is no relationship between Qualification of the respondents and various segments of Patanjali Products.

Ho5: There is no relationship between Income of the respondents and various segments of Patanjali Products.

FINDINGS AND DISCUSSIONS

The identified factors which affect the mindset of consumers of Patanjali are: price, swadeshi Ayurvedic, no chemicals, Baba Ramdev as brand ambassador, good quality, health benefits, advertisement, good experience and availability.

Table 1 shows the correlation among various factors which affects the consumer preference. The hypothesis **Ho1: There is a no relationship between the factors that affect the mindset of consumers of Patanjali Ayurved Ltd.**, is tested at .05 sig. level by applying correlation test. The findings are as follows:

- Price of the Patanjali Products is having strong relationship with Swadeshi, Ayurvedic, No Chemicals, Health Benefits, and Good Experience factors.
- Patanjali Ayurvedic Ltd is Swadeshi Company; it is having strong relationship with Price, Ayurvedic, No Chemicals, Health Benefits and Good Experience factors.
- All Patanjali Products are Ayurvedic. It is having strong relationship with Price, Ayurvedic, No Chemicals, Good Quality and Good Experience.
- Patanjali Products are having no harmful chemicals. It is having strong relationship with Price, Swadeshi, Ayurvedic, No Chemicals, Baba Ramdev and Health Benefits factors.
- Baba Ramdev is the Brand Ambassodor of Patanjali Ayurved Ltd. It is having Strong relationship with Advertisement, Good quality, Availability and No Chemicals factors.
- Patanjali Products are of Good Quality, it is having strong relationship with Swadeshi, Ayurvedic, No Chemicals, Baba Ramdev and Advertisement factors.
- Patanjali Products are having lot of health benefits: It is having strong relationship with Price, Swadeshi, No Chemicals and Good experience.
- Patanjali Ayurvedi Ltd. doing lot of publicity through Advertisement. It is having strong relationship with Baba Ramdev, Availability and Good quality factors.
- People are having good experience with Patanjali Products which is having strong relationship with Price, Swadeshi, Ayurvedic and health benefits Factors.
- Availability of Patanjali Products is having strong relationship with Baba Ramdev, Availability and Good experience Factors.

Table 2 shows the correlation among Demographical Variables and Various segments of Patanjali Products. The findings are as follows:

The hypothesis **Ho2: There is no relationship between age of the respondents and various segments of Patanjali Product**is tested at .05 sig. level by applying correlation test. The age of the respondents is having relationship with Personal Care and Healthcare Products. That means Personal Care Products and Health Care products choices are different for different age groups whereas the age

of the respondents does not matter in the choice of ready food, medicine, beverages and grocery items.

The hypothesis **Ho3: There is no relationship between Gender of the respondents and various segments of Patanjali Products** is tested at .05 sig. level by applying correlation test. The hypothesis is accepted because there is no relationship between gender of the respondents and various segments of the Patanjali Products. Gender does not matter for purchasing Patanjali Products.

The Hypothesis **Ho4: There is no relationship between Qualification of the respondents and various segments of Patanjali Products**is tested at .05 sig. level by applying correlation test. Qualification of the respondents is having relationship with Healthcare Products but not with any other products. That means qualification cannot be the strong criteria for the choice of Patanjali Products.

The hypothesis **Ho5: There is no relationship between Income of the respondents and various segments of Patanjali Products**is tested at .05 sig. level by applying correlation test. The income of the respondents is very important as it is having positive relationship with Personal Care Products, Ready Made Food, Beverages, and Grocery items.

CONCLUSION :

Our three objectives of the research have been fulfilled. Ten factors are identified which are responsible for mindset of the consumers. Effecting Pricing is very important factor for consumers as they compare with other FMCG products and decide to go for Patanjali Products. Swadeshi , No chemicals, health Benefits, Ayurvedic factors are related to each other. Consumers are considering these factors positively. Baba Ram Dev is the Brand Ambassador, so it is increasing popularity in India as well abroad. As he is related to the company so Good quality and health benefit are believed to be related with the products. The Demographical study shows that older generation is more attracted towards Patanjali Products. They are using more of health care Products were as younger generation is using more of beauty Products. All products are for both men and women so no difference in preference for six segments of products is found. Healthcare products are generally purchased by the professionals and health conscious people. Income group is playing important role as middle class people are getting influenced with Patanjali Products.

LIMITATIONS OF THE STUDY :

The study is done in urban area of Indore, Madhya Pradesh. The data collected is from 159 respondents, if sample is increased may be the results are different.

REFERENCES

[1] Chandiraleka , Hamsalakshmi R (2016) .A study on customer awareness and satisfaction of selected ayurvedic & herbal products. *International Journal of Advanced Research and Development* .Volume 1; Issue 8; August 2016; pp 06-12.

[2] Harish B. Bapat, Vishal Khasgiwala (2016). A Yogic Business Revolution: Back to the Future! *IOSR Journal of Business and Management.volume-1 issue11,* PP 59-67.

[3] Pranshoe Pandey, Rahul Sah (2016). Growth of Swadeshi- A Case Study on Patanjali Ayurved Limited.*International Journal of Engineering Technology, Management and Applied Sciences*.Volume 4, Issue 7, pp7-14.

[4] Sandhya Rani ,Chhaya Shukla (2012) .Trend of Patanjali Products: An Ayurvedic Magic Wand for Healthy Living.*Indian Journal of Research,* Vol.1,Issue9 pp21-25.

[5] Satheesh Raju G, Rahul R (2016) .Customer preferences towards Patanjali Products: A study on consumers with reference to Warangal district' *International Journal of Commerce and Management Research* .Volume 2; Issue 11; pp26-28.

[6] Seema Gosher(2017) .Customer preferences towards Patanjali products: A study on consumers with reference to Mumbai Suburban district', *IJARIIE* Vol-3 Issue-1pp37-40.

Shinde (2017) .Product positioning Of Patanjali Ayurved Ltd.*An International Journal Of Advance Studies.* Vol.1issue3pp1-6.

[7] Shomnath Dutta (2015). Study of Present Market Standing of Yogi Guru Ramdev's Flagship Brand Patanjali In Ayurved & Fmcg Sectors In & Around Siliguri City Of North Bengal. *International Journal Of Research In Engineering, Social Sciences.* Volume 5 Issue 4,Pp 114.

[8] Shweta Singh (2015) .Study of marketing strategies of Patanjali Ayurveda.*Journal of Accounting & Marketing* .Volume 4, Issue 3 pp59-62.

[9] Vinod Kumar. Ankit Jain (2014). Marketing through Spirituality: A Case of Patanjali Yogpeeth,*Procedia- Social and Behavioural Sciences*.Vol.133,Issue 15. Pp 481-490

APPENDIX

Table1: shows the correlation among various factors which affects the mindset of consumer.

		Price	Swadeshi	Ayurvedic	No Chemicals	Baba Ramdev	Good Quality	Health Benefits	Advertisement	Good Experience	Availability
Price	PC	1	.690**	.219*	.385**	.144	.107	.237*	.106	.199*	.121
	Sig		.000	.029	.000	.152	.288	.018	.295	.047	.232
Swadeshi	PC	.690	1	.211*	.416**	.082	.215*	.253*	-.034	.365**	-.003
	Sig	.000		.036	.000	.415	.032	.011	.739	.000	.978
Ayurvedic	PC	.219	.211*	1	.245*	.168	.211*	.188	.150	.216*	.148
	Sig	.029	.036		.015	.096	.036	.062	.137	.032	.143
No Chemicals	PC	.385	.416**	.245*	1	.340**	.263**	.634**	-.031	.123	.170
	Sig	.000	.000	.015		.001	.008	.000	.759	.223	.091
Baba Ramdev	PC	.144	.082	.168	.340**	1	.494**	.151	.464**	-.057	.265**
	Sig	.152	.415	.096	.001		.000	.133	.000	.574	.008
Good Quality	PC	.107	.215*	.211*	.263**	.494**	1	.050	.277**	.164	.164
	Sig	.288	.032	.036	.008	.000		.624	.005	.104	.102
Health Benefits	PC	.237	.253*	.188	.634**	.151	.050	1	-.094	.259**	.136
	Sig	.018	.011	.062	.000	.133	.624		.351	.009	.176
Advertisement	PC	.106	-.034	.150	-.031	.464**	.277**	-.094	1	.073	.465**
	Sig	.295	.739	.137	.759	.000	.005	.351		.472	.000
Good Exp.	PC	.199	.365**	.216*	.123	-.057	.164	.259*	.073	1	.191

	Sig	.047	.000	.032	.223	.574	.104	.009	.472		.058
Availability	PC	.121	-.003	.148	.170	.265*	.164	.136	.465**	.191	1
	sig.	.232	.978	.143	.091	.008	.102	.176	.000	.058	
*. Correlation is significant at the 0.05 level (2-tailed).											

Table 2: The correlation among Demographical Variables and Various segments of Patanjali Products

		Personalcare	Healthcare	Readyfood	Medicine	Beverages	Grocery
AGE	Pearson Correlation	.292**	.238*	.000	.032	.013	.014
	Sig. (2-tailed)	.003	.017	.998	.755	.898	.894
	N	100	100	100	100	100	100
GENDER	Pearson Correlation	.062	-.084	.013	-.082	.167	.028
	Sig. (2-tailed)	.537	.408	.897	.419	.096	.782
	N	100	100	100	100	100	100
QUALIFICATION	Pearson Correlation	.025	.198*	-.038	-.143	-.120	-.023
	Sig. (2-tailed)	.805	.040	.704	.156	.233	.817
	N	100	100	100	100	100	100
INCOME	Pearson Correlation	.349	-.115	.319**	.007	.244*	.279**
	Sig. (2-tailed)	.000	.254	.001	.944	.014	.005
	N	100	100	100	100	100	100

*. Correlation is significant at the 0.05 level (2-tailed).

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

STUDY OF DETERMINANTS OF FOREIGN DIRECTINVESTMENT (FDI) IN INDIA.

RAVIKIRAN P

REASEARCH SCHOOLER SCSVMV UNIVERSITY (T.N)
UNDER THE GUIDENCE OF Dr. G P RAMAN CONTROLLER OF EXAMINATIONS
SCSVMV UNIVERSITY (T.N)

ABSTRACT : The step was taken to add some source of capital formation in India as other developing economies were already in this practice. As a result inflow of Foreign Capital has become striking measure of economic development in both developed and developing countries Now the developing countries are witnessing changes in the composition of capital flows in their economies because of the expansion and integration of the world equity market. FDI and FII thus have become instruments of international economic integration and stimulation. The Indian stock markets are also experiencing this change. FDI & FII are becoming important source of finance in developing countries including India. It is widely assumed that FDI & FII along with some other external factors such as global economic cues, Exchange rate and Internal factors such as demand and supply, market capitalization, EPS generally drive and dictates the Indian stock market. The current project makes an attempt to study the relationship and impact of FDI & FII on Indian stock market using statistical measures correlation and regression analysis. Sensex and CNX Nifty were considered as the representative of stock market as they are the most popular Indian stock market indices. Based on 10 years data starting from 2004 to 2014, it was found that the flow of FDI has no significant impact on stock market but FII in India determines the trend of Indian stock market.

KEY WORDS : Foreign Direct Investments (FDI), Stock Market, Determinants, Foreign Institutional Investments, Sensex, CNX Nifty

INTRODUCTION : Foreign investment plays a significant role in development of any economy as like India. Many countries provide many incentives for attracting the foreign direct investment (FDI). Need of FDI depends on saving & investment rate in any country foreign direct investment act as a Bridge to fulfill gap between investment and saving. In the process of economic development foreign capital helps to cover the domestic saving constraint and provide access to the superior technology that promote efficiency and productivity of the existing production capacity and generate new production opportunity. Portfolio investment does not seek management control, but it motivated by profit. Portfolio investment occurs when individual investors invest mostly through stock holders in stock of foreign companies in foreign land in search of profit opportunities. India is suffering from the scarcity of financial resources and low level of capital formation because it has to majorly depend upon the external sources of Finance. Also the domestic resources are entirely inadequate to carry out development programs. In India foreign capital comes from private individuals and institutional investors on commercial terms in the form of Euro-issues comprising, external commercial borrowings, portfolio investments by non-resident of India's. Overseascorporate bodies and investments by foreign financial institutions. Foreign exchange reserves have played a pivotal role in India to supplement the low level of foreign investment. The flows of foreign exchange reserves came in India in the form of SDR (special drawing rate) and gold, foreign currency assets. Both FDI and FII is related to investment in a foreign country. FDI is an investment on that a country. FDI is an investment that a parent company makes in a foreign country. On the country, FII is an investment made by an investor in the markets of a foreign nation. In FII, the companies only need to get registered in the stock

exchange to make investments. But FDI is quite different from it as they invest in a foreign nation. The foreign institutional investors are also known as hot money as the investors have the liberty to sell it and take it back. But in FDI, that is not possible. In simple words, FII can enter the stock market easily and also withdraw from it easily.But FDI cannot enter and exit that easily. This difference is what makes nation to choose FDI's more than FII's. FDI is more preferred to the FII as they are considered to be the most beneficial kind of foreign investment for the whole economy.

STATEMENT OF THE PROBLEM : The present study tries to assessing the determinants and impact of FDI in Indian economic factors. Thus, the present study is an endeavor to discuss the trends and patterns of FDI, and its impact of FDI on FII, SENSEX, NIFTY, FOREX RATE and FOREX RESERVES.

OBJECTIVE OF THE STUDY :

1. To find out the growth rate of FDI, and its determinants.
2. To examine the relation between FDI and determinants.
3. To understand the influence of selected determinants on FDI.

HYPOTHESES OF THE STUDY :
To achieve the objective of the study the following hypotheses have been developed:

Ho = there is no significant difference in terms of FDI and its determinants
H1 = there is significant difference in terms of FDI and its determinants

Ho = there is no significant difference in terms of FDI and equity FDI
H1 = there is significant difference in terms of FDI and equity FDI

SCOPE OF THE STUDY :

It is apparent from the above discussion that FDI is a predominant and vital factor in influencing the contemporary process of global economic development. The study attempts to analyze the important dimensions of FDI in India. The study works out the trends and patterns, main determinants and investment flows to India. The study also examines the role of FDI on economic growth in India for the period 2004- 2014. The period under study is important for a variety of reasons. First of all, it was during July 2014 India opened its doors to private sector and liberalized its economy.

Secondly, the experiences of South-East Asian countries by liberalizing their economies in 2014s became stars of economic growth and development in early 2014s. Thirdly, India's experience with its first generation economic reforms and the country's economic growth performance were considered safe havens for FDI which led to second generation of economic reforms in India in first decade of this century. Fourthly, there is a considerable change in the attitude of both the developing and developed countries towards FDI. They both consider FDI as the most suitable form 5 of external finance. Fifthly, increase in competition for FDI inflows particularly among the developing nations. The shift of the power center from the western countries to the Asia sub – continent is yet another reason to take up this study. FDI incentives, removal of restrictions, bilateral and regional investment agreements among the Asian countries and emergence of Asia as an economic powerhouse (with China and India emerging as the two most promising economies of the world) Develops new economics in the world of industrialized nations. The study is important from the view point of the macroeconomic variables included in the study as no other study has included the explanatory variables which are included in this study. The study is appropriate in understanding inflows during 2004-2014

RESEARCH METHODOLOGY :

With a view to achieve the objectives of the present study, the secondary sources of information have been utilized. The history, genesis, components, growth, performances etc.

of the Foreign Institutional Investments and Indian capital market have been examined on the basis of secondary data like periodicals, magazines, text books, journals, reports, office records of various organizations like SEBI, RBI and ministry of finance, and different websites containing information and data of FIIs and Indian Capital market. Thus, research work is heavily banked on the secondary source of information.

The following tool were used in this research paper is;

Correlation analysis,

REVIEW OF LITERATURE :

Rad A (2011) used the unrestricted VAR model to examine the relationship between Tehran Stock Exchange (TSE) price index and three macroeconomic variables – Consumer Price Index (CPI), free market exchange rate and liquidity (M2) on the monthly data for a period from 2001 to 2007. The impulse response analysis indicated that the response of TSE price index to shocks in the three macroeconomic variables is weak. The generalized forecast error variance decomposition reveals that the contribution of macroeconomic variables in fluctuations of TSE price index is around 12%.

Asaolu T &Ogunuyiwa (2011) examined the impact of macroeconomic variables on Average Share Price (ASP) for the Nigerian stock market. The monthly data from 1986 to 2007 was taken for six macroeconomic variables – external debt, exchange rate, foreign capital flow, investments, industrial output and inflation rate. The Average Share Price for 25 quoted companies from Insurance, Manufacturing, Banking, Services and Real estate were taken representing dependent variables where as others as exogenous variables. Granger causality test, co-integration and ErrorCorrection Method (ECM) were employed and results revealed existence of weak relationship between ASP and macroeconomic variables. A long-run relationship was found between ASP and macroeconomic variables. The findings indicated that ASP is not a leading indicator of macroeconomic performance in Nigeria.

Conceptual Framework :

For the current study total 120 variables are collected namely FDI, FII, BSE, NSE, FOREX RATE, FOREX RETURN. This study made on 10 years statistics from 2004 to 2014 all the data will be collected as secondary data through RBI, Stock Exchanges and Indian Economy websites.

FDI: Data were collected for 120 months (10 years).

Source- RBI website

FII: Data were collected for 120 months (10 years).

Source- RBI website

BSE: Data were collected for 120 months (10 years).

Source- BSE website

NSE: Data were collected for 120 months (10 years).

Source- NSE website

FOREX RATE: Data were collected for 120 months (10 years).

Source- RBI website

FOREX RESERVES: Data were collected for 120 months (10 years).

Source- RBI website

DATA ANALYSIS& INTERPRETATION:

TABLE REPRESENTS CORRELATION BETWEEN FDI AND ITS DETERMINANTS :

Correlations							
		fdi	forex	Bse	Fii	nse	forex rate
Fdi	Pearson Correlation	**1**	.629**	.511**	-.306**	.376**	.016
	Sig. (2-tailed)		.000	.000	.001	.000	.859
	N	120	120	120	120	120	120
Forex	Pearson Correlation	.629**	**1**	.870**	-.529**	.764**	.270**
	Sig. (2-tailed)	.000		.000	.000	.000	.003
	N	120	120	120	120	120	120
Bse	Pearson Correlation	.511**	.870**	**1**	-.547**	.823**	.367**
	Sig. (2-tailed)	.000	.000		.000	.000	.000
	N	120	120	121	120	120	120
Fii	Pearson Correlation	-.306**	-.529**	-.547**	**1**	-.485**	-.645**
	Sig. (2-tailed)	.001	.000	.000		.000	.000
	N	120	120	120	120	120	120
Nse	Pearson Correlation	.376**	.764**	.823**	-.485**	**1**	.448**
	Sig. (2-tailed)	.000	.000	.000	.000		.000
	N	120	120	120	120	120	120
forex rate	Pearson Correlation	.016	.270**	.367**	-.645**	.448**	**1**
	Sig. (2-tailed)	.859	.003	.000	.000	.000	
	N	120	120	120	120	120	120
**. Correlation is significant at the 0.01 level (2-tailed).							

INTERPRETATION : This table represents the KarlPearson correlation between the FDI and its determinants like FII, FOREX rate, FOREX reserves, SENSEX and NIFTY. As per the table FDI is having

high positive correlation with FOREX reserves and BSE. NSE and FOREX rate is having low degree

positive correlation at last the FII is having negative correlation with FDI. In case of FOREX reserves, it showing the correlation with FDI,BSE and NSE is high degree positive correlation at the same time there is a low degree positive correlation with FOREX rate and negative correlation with FII. In case of FII as per the table there is a low degree negative correlation with all determinants. In case of NSE there is a high degree positive correlation with FOREX reserves and BSE. And low degree positive correlation with FDI and FOREX rate. At last there is a negative correlation with FII. In case of there is a low degree correlation with FDI, FOREX reserves, BSE and NSE. At last there is a negative correlation with FII.

TABLE REPRESENTS CORRELATION BETWEEN TOTAL FDI AND EQUITYFDI

Correlations			
		fdi equity	total fdi
fdi equity	Pearson Correlation	1	.988**
	Sig. (2-tailed)		.000
	N	10	10
total fdi	Pearson Correlation	.988**	1
	Sig. (2-tailed)	.000	
	N	10	10
**. Correlation is significant at the 0.01 level (2-tailed).			

INTERPRETATION : This table represents the KarlPearson correlation between FDI equity and Total FDI. With the 1% level of significance in between these two variables are having a perfect positive correlation (0.988). So the Equity FDI is having highest correlation with the Total FDI.

FINDINGS :

The FDI has the highest correlation between FII,BSE,NSE,FOREX RATE and
FOREX RES during the period 2004-14.

- The correlation between total FDI and Equity FDI has the highest positive correlationof 0.988 during the period of study.
- The correlation between FDI and all other determinants, FDI has the positivecorrelation with FOREXRES and BSE and negative correlation with FII, NSE andFOREX rate during the period of study

CONCLUSION : Empirical results shows that the five independent variables FII's, BSE, NSE, FOREX

RATE and FOREX RESERVES are significant determinants of FDI inflows in INDIA. Hence the null hypothesis of all are rejected. Thus the overall significance of the model satisfied in this study would contribute the greater understanding of the FDI determinants in the emerging markets like India. This study suggest that India should continue this program of economic reforms as a sustained healthy economic growth is the biggest

attraction for foreign capital inflows. From the current study it is Evident that there is a strong positive correlation between FDI and SENSEX & FDI and NIFTY. And moderate positive correlation between FII and SENSEX.

REFERENCES :

[1] Kumar, S.S. "Indian stock market in international diversification: An FIIs perspective" Indian Journal of Economics, Vol, lxxxii, No-327, April, pages 85- 102. 2002.

[2] Rai. K. and Bhanumurthy, N.R."Determinents of Foreign Institutional Investments in India: The Role of Return, Risk and Inflation" . 2003.

[3] Chopra, C. "Determinates of FDI Inflows in India", Decision, IIM, Calcutta, 27(2): 137-152. 2002.

[4] StanleyMorgan , "FII's influence on StockMarket", Journal: Journal of impact of Institutional Investors on ism. Vol 17. Publisher: Emerald GroupPublishingLimited. 2002.

[5] Agarwal, R.N. (1997). "Foreign portfolio investment in some developing countries: A study of determinants and macroeconomic impact", Indian Economic Review, Vol,32, Issue 2, pages 217-229.

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

STUDY ON FINANCIAL LITERACY IN ARIYALUR PANCHAYAT UNION WITH SPECIFIC REFERNCE TO CUSTOMERS OF IOB

Name of the first and corresponding author

Miss Caroline Priyanka Koorse,

Phd Research scholar ,Department of Management

Dr. G.R. Damodaran College of Science Civil Aerodrome Post, Avinashi Road, Coimbatore.

Dr.S.Kavitha ,Guide and Associate Professor (Department of Management)

Dr. G.R. Damodaran College of Science, Civil Aerodrome Post, Avinashi Road, Coimbatore.

ABSTRACT : India being a developing country, financial literacy plays a key role in the overall development of the country. Financial literacy goes beyond the provision of financial information and advice, it means understanding the different aspects of financial literacy and its importance in our lives. Dating back to the history of financial literacy we learn that the economic crisis had brought into sharp focus that financial literacy is an important element for promoting financial inclusion and ultimately financial stability.Lack of basic financial literacy contributes to personal hardship and broader economic risk. Thus it can be said that Financial literacy can easily be linked to financial behaviour, Financial inclusion and on a larger scale to economic development and social inclusion. Financial literacy is particularly relevant for people who are resource poor and who operate at the margin and are vulnerable to persistent downward financial pressures. With no established banking relationship, the un-banked poor are pushed towards expensive alternatives. The present study has been conducted in a low per capita income district of Ariyalur in its district headquarters with customers of Indian Overseas bank. A structured questionnaire has been used to collect data. The uniqueness of the present study is that it would bring forth the financial awareness and knowledge that the respondents have, the dimensions of various aspects of financial literacy and the effect of financial literacy.

KEYWORDS: Financial literacy, Financial behaviour, Financial inclusion, Financial stability, Development, Unbanked Poor.

Introduction : Economic development of a country is possible only when various factors are set right. One such important factor is financial literacy. Financial literacy is defined as below:

The OECD (organization for economic cooperation and development), an International organization for economic growth and world trade, Paris, defines financial literacy as –"A combination of awareness, knowledge, skill, attitude and behaviour necessary to make sound financial decisions and ultimately achieve individual financial well-being."

Financial literacy is the ability to use knowledge and skills to manage financial resources effectively for a lifetime of financial well-being. Financial Literacy is the process by which individuals gain an understanding of their financial situation and learn how to strengthen it over a period of time by inculcating the financial habits of savings, budgeting, planning and hence making the right financial decisions.

Why the need for Financial literacy? The challenges of household cash management under difficult circumstances with few resources to fall back on could be accentuated by the lack of skills or knowledge to make well informed financial decisions. Financial literacy can help them prepare ahead of time for life cycle needs and deal with unexpected emergencies without assuming unnecessary debt. The present study has covered the below mentioned aspects of Financial literacy

Review of Literature :

Reviews related to financial literacy have been tabulated below for easy reference

- Divya Joseph (January to march 2014) in her research paper "A Study On Financial Inclusion and Financial Literacy" have concluded that not only should people have basic access to financial services but should also actively use them.
- Dr. Upendra Singh (July 2014) in his research paper "Financial Literacy and Financial Stability are two aspects of Efficient Economy" have concluded that Financial literacy appears to also be linked to economic and social development. Recently most of the developing countries launched various programmes to effective financial education and definitely,it would be helpful for sound financial and economic stability in the organization.
- Lavanya Rekha Bahadur (September 2015) in her research paper "Financial Literacy: The Indian Story" have found that the levels of financial literacy in the area were very low.
- Neha Ramnani Bhargava (September 2016) in her research

  paper "A Studyon Financial Literacyand Financial Education:An Overview of Scenario In India" has concluded that imparting financial literacy should be on the priority list of policy makers, government agencies, educators etc. The policy making should be based on bottom up approach she also suggested that

  there is a need to spread financial education in both urban and rural areas with more concentrated efforts in rural sector due to poor levels of education and household incomes.
- Sumit kumar&Dr.Md. Anees (December 2016) in their research paper "Financial Literacy & Education: Present Scenario in India" have concluded that the strategy for improving financial wellbeing of individuals in India should be focusing on the young investors.

Research Objectives :

- To study the basic socio-economic status and banking profile of the respondents.
- To check if there is an association between number of literate members and monthly savings of the respondents.
- To know the financial literacy level of the respondents
- To find the various dimensions of knowledge of financial services, rates and charges and investment.
- To analyze the effect of financial literacy among the respondents

Research Methodology :

- The study is conducted in the Ariyalur district which is the district in Tamilnadu state with the lowest per capita income as per the census 2011 and based on the study the Ariyalur taluk which is the district headquarters has been chosen. The Bank chosen for the study is Indian Overseas Bank which is one of the public sector banks and the second bank to be opened in Ariyalur.

- Based on the number of customers per week visiting the bank which is 400 the sample taken is 100 customers from IOB which is representative of the population.
- IOB is located in 4 villages in Ariyalur Taluk data has been collected from 100 respondents from these villages.
- The research design is descriptive and analytical in nature
- Simple random sampling in probability sampling was used. The statistical instrument which is to be used to collect primary data is a structured questionnaire with 21 questions. The pattern of questionnaire is given below.

SL.NO	DIMENSION	NO OF ITEMS
1 TO 9	BASIC DEMOGRAPHIC AND SOCIAL PROFILE	9
10 to 14	BASIC BANKING PROFILE	5
15to 17	GENERAL FINANCIAL MATTERS AND SOURCE	3
18	KNOWLEDGE OF FINANCIAL SERVICES	10
19	KNOWLEDGE OF RATES AND CHARGES	9
20	KNOWLEDGE OF INVESTMENT AVENUES	9
21	EFFECT OF FINANCIAL LITERACY	6

- SPSS Version 21 was used to analyze data.
- The statistical techniques which are to be used to be used include
  - Reliability test
  - Percentage analysis
  - Chi-square test
  - Factor analysis

Analysis and Interpretation

TABLE: 1

BASIC DEMOGRAPHIC, SOCIAL PROFILE OF RESPONDENTS

VARIABLE	OPTIONS	PERCENTAGE
NAME OF THE VILLAGE	RAYAMPURAM	25.0
	ELUPPAIYUR	30.0
	OTTAKOIL	30.0
	USENEBATH	15.0
AGE	20-30	14.0
	31-40	22.0
	41-50	32.0
	51-60	18.0
	>60	14.0
GENDER	MALE	63.0

	FEMALE	37.0
HOUSEHOLD SIZE	2	17.0
	3	33.0
	4	34.0
	5	12.0
	>5	4.0
NO. OF EARNING MEMBERS	1	51.0
	2	44.0
	3	5.0
NO. OF LITERATE MEMBERS	1	27.0
	2	49.0
	3	22.0
	4	1.0
	5	1.0
OCCUPATION OF THE EARNING MEMBERS	CULTIVAGTORS	80.0
	AGRICULTURAL LABOURERS	6.0
	HOUSEHOLD INDUSTRY	5.0
	OTHERS	9.0
MONTHLY INCOME	0-5000	68.0
	5001-10000	17.0
	10,001-15000	13.0
	15,001-20,000	2.0
MONTHLY SAVINGS	0-2500	72.0
	2501-5000	11.0
	5001-7500	15.0
	7501-10,000	2.0

The above table shows that 25% of the IOB customers were from Rayampuram village, while 30 %% were from Eluppaiyur villare, 30% were from Ottakoil village and 15% were from Usenebath Village.

32% of the IOB customers were between the age group of 41 to 50, while 22% of customers were in the age group of 31-40. 14 % of customers were in the age group of 20-30 and above 60 while 18 % of customers were in the age group of 51 to 60.Out of the 100 IOB customers who responded 63 % were male while only 37 % were female.

The household size of the respondents ranged from 2 members to above 5 members and 34 % of the respondents had a household size of 4 while 33% had 3 members in their family, 17 % of members had 2 members in their family, 12% had 5 members in their family and 4 % had a household size of above 5 members.

51 % of respondents had only one earning member in the family, while 44% had 2 earing members and only 5 % had 3 earning members.

49 % of the respondents have said that 2 members are literate in their family. 27 % of the respondents say only 1 member is literate in the family and 22% of the respondents say 3 members are literate in the family.

80 % of the respondents are Cultivators while 5% of respondents are working in a household industry, 6 % of respondents are agricultural labourers and 9 % are doing other work.68 % of the respondents earn between Rs. 0 to Rs.5000 while 17% of the customers earn between Rs.5001 to Rs.10, 000 and 13% of the customers earn between Rs.10,000 and Rs.15,000.

72 % of the respondents save between Rs.0 to Rs.2500 in a month. Only 11% of customers save between Rs.2501 and Rs.5000 while 15 % of the customers save between Rs.5000 to Rs.7500 in a month.

TABLE : 2

BASIC BANKING PROFILE OF THE RESPONDENTS

.

VARIABLE	OPTIONS	PERCENTAGE
SECTOR HAVING ACCOUNT	PUBILC BANK	96.0
	BOTH PUBLIC AND PRIVATE BANK	4.0
TYPE OF ACCOUNT	SAVINGS A/C	95.0
	RECURRING DEPOSIT A/C	2.0
	CURRENT A/C	2.0
	FIXED DEPOSIT	1.0
YEAR OF OPENING ACCOUNT	2002-2005	1.0
	2006-2009	28.0
	2010-2013	28.0
	2014-2017	43.0
REASON FOR OPENIN THE ACCOUNT	TO RECEIVE REMITTANCES	40.0
	SAVINGS	54.0
	LOAN	1.0
	OTHERS	5.0
NO. OF BANK ACCOUNTS IN THE FAMILY	1	42.0
	2	39.0
	3	15.0
	>3	4.0

96 % of the customers said that they have a bank account in the public sector while only 4% of customers said they have account in both private and public sector.

95 % of customers have opened savings bank account. While Recurring deposit and current account were opened by 2% of customers only one customer opened a FD account

43% of customers opened their account between 2014 to 2017, while 28 % of customers have opened their account between 2006 to 2009 and during 2010-2013 28 % of respondents have opened their accounts.

54 % of respondents have said that the reason for opening a bank account is to secure their savings, while 40 % of respondents have said that they have opened a bank account to receive remittances.

The above table shows that 42% of customers have opened only 1 bank account in the family. While 39% of customers say they have opened 2 bank accounts. 15 % of customers have 3 bank accounts.

ASSOCIATION BETWEEN NO OF LITERATE MEMBERS AND MONTHLY SAVINGS

Null hypothesis (Ho): There is no association between number of literate members and monthly savings of the respondents.

TABLE NO: 3

Crosstab						
Count						
		MONTHLY SAVINGS				Total
		0-2500	2501-5000	5001-7500	7501-10,000	
NO OF LITERATE MEMBERS	1	22	2	3	0	27
	2	36	1	11	1	49
	3	13	7	1	1	22
	4	1	0	0	0	1
	5.00	0	1	0	0	1
Total		72	11	15	2	100

TABLE NO: 4

Chi-Square Tests			
	Value	Df	Asymp. Sig. (2-sided)
Pearson Chi-Square	26.842[a]	12	.008
Likelihood Ratio	23.115	12	.027
Linear-by-Linear Association	1.169	1	.280
N of Valid Cases	100		
a. 15 cells (75.0%) have expected count less than 5. The minimum expected count is .02.			

The above table shows that the maximum number of literate members were 2 in the respondent's family and the maximum monthly saving was between Rs.0 to Rs.2500. The chi square test was performed and the significance value is .008(Which is less than 0.05, which is the standard level of significance).Therefore the null hypothesis is rejected and we can infer that there is association between number of literate members and monthly savings of the respondents.

Level of Financial Literacy

TABLE NO: 5

RELIABILITY TEST

ASPECT	CRONBACHS ALPHA	N NO OF ITEMS
Financial Literacy- Services	.955	10
Financial Literacy-Interest rates and charges	.909	9
Financial literacy –Investment Avenues	.769	8
Effect Of Financial Literacy	.889	6
OVERALL FINANCIAL LITERACY	.944	33

Cronbach's alpha was performed to check reliability and the values were ranging between .769 and .955 which are satisfactory. Overall value for all items in financial literacy was calculated as .944 which is also very satisfactory.

General Financial Matters & Source

TABLE NO: 6

LOAN AVENUES TO YOUR KNOWLEDGE					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	BANKS	81	81.0	81.0	81.0
	MONEY LENDERS	7	7.0	7.0	88.0
	FRIENDS AND RELATIVES	9	9.0	9.0	97.0
	OTHER	3	3.0	3.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

The above table shows that 81 % of respondents said that the loan avenues to their knowledge were banks. While 9 % of respondents said that the loan avenues to their knowledge were from friends and relatives, and 7 % said money lenders were an avenue to get loans to their knowledge.

TABLE NO: 7

DO U KNOW OF BUDGET FOR FAMILY					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	YES	78	78.0	78.0	78.0
	NO	22	22.0	22.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

78% of the respondents said that they knew about the budget of the family and only 22% of respondents said they had no idea about the budget of the family.

Sources of Information

TABLE NO: 8

SOURCE OF GETTING TO KNOW OF BANK AC					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	MEDIA	11	11.0	11.0	11.0
	BANK EFFORTS	65	65.0	65.0	76.0
	FRIENDS AND RELATIVES	23	23.0	23.0	99.0
	SOME OTHER MEANS	1	1.0	1.0	100.0
	Total	100	100.0	100.0	

65% of respondents have said that the source through which they gained knowledge of bank accounts is through bank efforts, 23% said through friends and relatives and 11% of respondents said through media.

Knowledge of Financial Products And Services Services

TABLE NO: 9

PERCENTAGE ANALYSIS OF KNOWLEDGE OF FINANCIAL SERVICES

VARIABLE	NOT AWARE	POORLY AWARE	FAIRLY AWARE	AWARE	VERY AWARE
Bank loans	8	45	14	14	19
Debit cards	19	37	17	19	8
Credit cards	28	41	10	15	6
Pass book	29	40	14	9	8
Cheque book	29	41	15	12	3
Zero balance account	39	36	9	11	5
Kissan credit cards	46	38	11	3	2
ATM's	42	37	8	6	7
Internet banking	49	34	7	3	7
Mobile banking	48	31	4	10	7

INTERPRETATION

The above table shows that 45 % of respondents were poorly aware of bank loans, while 19% said that they were very aware and had knowledge of bank loans and only 8% said they were not aware of bank loans.

37% of the respondents said that they had poor awareness of debit cards, while 19 % said they were aware and not aware of Debit cards. 17 % of respondents said they were fairly aware of debit cards only 8% of respondents said they were very aware of debit cards.

41% of respondents said they have poor awareness of credit cards while 28 % of the respondents said they were not aware of credit cards, while 15 % of the respondents said they are aware of credit cards, and only 6% of respondents felt they were very aware of credit cards.

40 % of the respondents said they were poorly aware of passbook, 29 % said they were not aware of passbook 8 % of respondents were very aware of passbook.

39% of the respondents said they were not aware of zero balance accounts. 36 % of respondents said they were poorly aware of zero balance accounts only 11 % respondents said they were aware of zero balance accounts.

46 % of respondents said they were not aware of Kissan credit cards 38% of respondents said that they were poorly aware of Kissan credit cards, only

3% of respondents were aware and 2 % of respondents were very aware of Kissan credit cards.

42% of respondents said they are not aware of ATM's, while 37 % of respondents said they are poorly aware of ATM's, only 7% of respondents said they were very aware of ATM's

49% of respondents said they are not aware of internet banking, while 34 % of respondents said they are poorly aware of internet banking, only 7% of respondents said they were very aware of internet banking.

48% of respondents said they are not aware of mobile banking, while 31 % of respondents said they are poorly aware of mobile banking, only 7% of respondents said they were very aware of mobile banking.

Rates & Charges

TABLE NO: 10
PERCENTAGE ANALYSIS OF KNOWLEDGE OF FINANCIAL RATES AND CHARGES

VARIABLE	NOT AWARE	POORLY AWARE	FAIRLY AWARE	AWARE	VERY AWARE
Savings Bank	3	56	12	18	11
Fixed Deposit	19	52	18	5	6
Recurring deposit	25	50	15	6	4
Home loans	27	51	8	10	4
Education loans	37	48	10	2	3
Vehicle loans	45	37	7	7	4
Insurance services	30	45	5	9	11
NEFT/RTGS	42	27	10	9	12
Other ATM	23	46	8	11	9

INTERPRETATION

The above table shows that 56% of respondents were poorly aware of savings bank interest rates, 18% were aware of savings bank interest rates and 11% were aware of savings bank interest rates.

52 % of the respondents had poor awareness of fixed deposit interest rates, 19% were not aware of fixed deposit interest rates , 6 % were very aware of fixed deposit interest rates and 18% were fairly aware of interest rates.

50% of the respondents had poor awareness of recurring deposit interest rates while 25% of respondents had no awareness of recurring deposit interest rates and only 4% of respondents were very aware of recurring deposit interest rates.

51 % of respondents said they were poorly aware of the home loan interest rates while 27 % of respondents said they were not aware of home loans. And only 4% of respondents said they were very aware of home loan interest rates.

48% of respondents said they were poorly aware of education loans interest rates while 37 % of respondents said they were not aware of education loan interest rates and only 3% of respondents said they were very aware of the interest rates charged for educational loans.

45% of respondents said they were not aware of vehicle loans interest rates, 37 % of respondents said they are poorly aware of vehicle loan interest rates only 4% of respondents said they are very aware of vehicle loan interest rates.

45 % of respondents said they were poorly aware of the charges for insurance services, 30 % of customers said they were not aware of the charges for insurance services and 11% of respondents they were very aware of the charges for insurance services.

42% of respondents said they are not aware of NEFT/RTGS charges and 27% of respondents said they were poorly aware of the charges towards NEFT/RTGS and 12% of respondents said they were very aware of NEFT/RTGS charges.

46% of respondents said they were poorly aware of charges to use other ATM's while 23% of respondents were not aware of the charges to use other ATM's and only 9% of respondents were very aware of the charges to use other ATM's.

Investment Avenues

TABLE NO: 11
PERCENTAGE ANALYSIS OF KNOWLEDGE OF INVESTMENT AVENUES

VARIABLE	NOT AWARE	POORLY AWARE	FAIRLY AWARE	AWARE	VERY AWARE
Savings bank A/c	5	49	10	13	23
Fixed deposits	26	46	8	11	9
Recurring deposits	34	49	11	2	4
Gold	40	47	10	1	2
Insurance	13	54	2	0	31
Mutual funds	48	44	5	0	3
Chit Funds	51	41	5	0	3
Real estate	52	40	5	0	3

INTERPRETATION

From the above table it is clear that 23% of the respondents said they were very aware of savings bank A/c as an investment avenue, while 49% of the respondents were poorly aware of savings bank as an investment avenue and only 13 % of respondents were aware of savings bank a/c as an investment avenue.

46% of respondents say they are poorly aware of fixed deposits as an investment avenue. 26 % of respondents say they are not aware of fixed deposits as an investment avenue. 11 % of respondents say they are aware of fixed deposits as investment avenues and 9% of respondents say they are very aware of investment avenues.

49% of respondents say they are poorly aware of recurring deposits as an investment avenue. 34 % of respondents say they are not aware of fixed deposits as an investment avenue and only 4% of respondents say they are very aware of recurring deposit as investment avenues.

47% of respondents say they are poorly aware of gold as an investment avenue. 40 % of respondents say they are not aware of fixed deposits as an investment avenue and only 2% of respondents say they are very aware of investment avenues.

In the case of insurance as an investment avenue 31 % of the respondents said they are very aware of insurance as an investment avenue 54% of the respondents said they were poorly aware of insurance as an investment avenue and 13% of the respondents said they are not aware of insurance as an investment avenue.

44% of respondents say they are poorly aware of mutual funds as an investment avenue.44 % of respondents say they are not aware of mutual funds as an investment avenue and only 4% of respondents say they are very aware of mutual funds as investment avenues.

41% of respondents say they are poorly aware of chit funds as an investment avenue.51 % of respondents say they are not aware of chit funds as an investment avenue and only 3% of respondents say they are very aware of chit funds as investment avenues.

And finally 52% of the respondents were not aware of real estate as an investment avenue, 40 % of respondents were poorly aware of real estate as an investment avenue and only 3 % of respondents were very aware of real estate as their investment avenue.

Dimensions Of Financial Literacy (Factorisation)

TABLE NO: 12
FACTORISATION FOR KNOWLEDGE OF FINANCIAL SERVICES

FACTOR NAMES	% of Variance Explained	Variables	Communalities	MSA	Rotated Factor Loading
Factor 1 TRADITIONAL SERVICES Factor	**71.281**	CHEQUE BOOK	.871	.910	.856
		BANK LOANS	.783	.931	.836
		DEBIT CARDS	.823	.916	.833
		PASS BOOK	.870	.920	.816
		CREDIT CARDS	.806	.933	.815
		ZERO BALANCE A/C	.747	.907	.802
Factor 2 MODERN SERVICES Factor	**10.081**	INTERNET BANKING	.878	.819	.866
		ATM	.820	.917	.826
		KISSAN CREDIT CARD	.714	.889	.802
		MOBILE BANKING	.824	.879	.761
KMO – MSA = .910, Total % of Variance Explained = 81.326 Bartlett's Test of Sphericity Chi-Square value of 1035.392 with df of 45 and P value of .0000					

INTERPRETATION

The above table shows that variables with their communality values ranging from **0.714 to 0.7**, have goodness of fit for factorization. **KMO-MSA value of 0.910** and **chi-square value of 1035.392** with df of **45** and **P-value of 0.000** reveal that factor analysis can be applied for factorization of 10 variables. Two dominant independent factors explaining **81.326%** of total variance have been extracted out of 10 Variables. The two factors are Traditional services and Modern services Factor.

TABLE NO: 13
FACTORISATION FOR KNOWLEDGE OF FINANCIAL RATES &CHARGES

FACTOR NAMES	% of Variance Explained	Variables	Communalities	MSA	Rotated Factor Loading
Factor 1 CHARGE RATE Factor	**58.614**	Aware Of Other ATM Charges	.924	.767	.933
		Aware Of charges For NEFT/RTGS Rates	.884	.808	.886
		Aware Of charges For Insurance Service	.731	.802	.770
		Aware Of SB Ac Interest Rate	.766	.799	.600
Factor 2 LOAN RATE Factor	**14.020**	Aware Of Education Loan Rate	.838	.755	.856
		Aware Of Home loan Rate	.827	.827	.853
		Aware Of Vehicle Loan Rate	.794	.826	.816
Factor 3 DEPOSIT RATE Factor	**11.724**	Aware Of FD Interest Rate	.944	.651	.936
		Aware Of RD Interest Rate	.884	.711	.885
KMO – MSA =.772 , Total % of Variance Explained = 84.358 Bartlett's Test of Sphericity Chi-Square value of 756.685 with df of 36 and P value of .0000					

INTERPRETATION

The above table shows that variables with their communality values ranging from **0.944 to 0.731**, have goodness of fit for factorization. **KMO-MSA value of 0.772** and **chi-square value of 756.685** with df of **36** and **P-value of 0.000** reveal that factor analysis can be applied for factorization of 9 variables. Three dominant independent factors explaining **84.358%** of total variance have been extracted out of 9 Variables. The three factors are Charge rate,Loan rate and Deposit rate Factor.

TABLE NO: 14

FACTORISATION FOR KNOWLEDGE OF FINANCIAL INVESTMENT AVENUES

FACTOR NAMES	% of Variance Explained	Variables	Communalities	MSA	Rotated Factor Loading
Factor 1 LONG TERM INVESTMENT Factor	**41.807**	Aware Of Real Estate As Investment Avenue	.953	.726	.968
		Aware Of Chit Fund As Investment Avenue	.960	.692	.973
		Aware Of Mutual Fund As Investment Avenue	.880	.876	.935
Factor 2 SAFETY INVESTEMT Factor	**27.971**	Aware Of Saving Bank Ac As Investment Avenue	.859	.590	.894
		Aware Of Insurance As Investment Avenue	.898	.577	.941
Factor 3 LIQUID INVESTMENT Factor	**15.670**	Aware Of FD As Investment Avenue	.801	.679	.769
		Aware Of RD As Investment Avenue	.801	.641	.871
		Aware Of Gold As Investment Avenue	.684	.711	.617
KMO – MSA =.692 , Total % of Variance Explained = 85.447 Bartlett's Test of Sphericity Chi-Square value of 658.991 with df of 28 and P value of .0000					

INTERPRETATION

The above table shows that variables with their communality values ranging from **0.684 to 0.953**, have goodness of fit for factorization. **KMO-MSA value of 0.692** and **chi-square value of 658.991** with df of **28** and **P-value of 0.000** reveal that factor analysis can be applied for factorization of 9 variables. Three dominant independent factors explaining **85.447%** of total variance have been extracted out of 9 Variables. The three factors are Long term, Safety and Liquid Investment Factor.

TABLE NO: 15
PERCENTAGE ANALYSIS FOR EFFECT OF FINANCIAL LITERACY

VARIABLE	SA	A	NA	D	SD
Financially literacy has helped during the time of emergency	7	85	2	4	2
Financial literacy has helped you understand risk and return related to financial products and services.	5	85	7	2	1
Being financially literate has helped you choose the right avenue to invest	10	79	5	3	3
Are you aware of the procedures to avail any product or service from the Bank	11	65	20	3	1
There is a need in today's competitive world for the awareness of financial literacy	19	65	11	4	1
Financial literacy is linked to your financial behaviour.	20	59	17	3	1
STRONGLY AGREE(SA), AGREE(A), NOT APPLICABLE(NA),DISAGREE(D), STRONGLY DISAGREE(SD) HAVE BEEN EXPRESSED AS PERCENTAGE VALUES					

INTERPRETATION

From the above table we can identify that 85% of respondents agree that financial literacy has helped during the time of emergency. While only 2% of the respondents strongly disagreed that financial literacy has helped during the time of emergency.

85% of the respondents agreed that financial literacy has helped them understand risk and return related to financial products and services while only 2 % of respondents disagreed that financial literacy has helped them understand risk and return related to financial products and services

79% of respondents agreed that being financially literate has helped them choose the right avenue to invest 10 % of respondents strongly agreed that being financially literate has helped them choose the right avenue to invest and only 3 % of respondents strongly disagreed that being financially literate has helped them choose the right avenue to invest.

65% of the respondents said that they agree aware of the procedures to avail any product or service from the Bank. 20 % of the respondentsfelt that the question was not applicable to them. While only 1% of the respondents strongly disagreed that they agree aware of the procedures to avail any product or service from the Bank.

65% of the respondents said that they agree there is a need in today's competitive world for the awareness of financial literacy. 19% of the respondents strongly agreed that there is a need in today's competitive world for the awareness of financial literacy. Only 1 % of respondents strongly disagreed that there is a need in today's competitive world for the awareness of financial literacy.

59 % of the respondents said that financial literacy is linked to their financial behaviour. 20 % of the respondents strongly agreed that financial literacy is linked to their financial behaviour. Only 1 % of respondents strongly disagreed that financial literacy is linked to their financial behaviour.

Findings

Basic Demographic, Social Status of Respondents

It was found that the maximum number of IOB customers were from Ryamapuram (30%) and Ottakoil villages (30%) in Ariyalur District headquarters being male (63%) and between the age group of 41 to 50 years (32%). The maximum number of customers had a household size of 4 members (34%) and the maximum number of respondents say that 2 members are literate in their family (49%). All most three fourth (80%) of the respondents are cultivators and being cultivators their income also ranges between Rs.0 to Rs.5, 000 (69 %) and savings (72%) between Rs0. And Rs.2500.

Banking Profile of The Respondents

Public sector has managed to gain the confidence of the people as most respondents have opened account in the public sector (96%). Most of the customers have opened savings bank accounts (95%). Most of the respondents have said that the reason for opening a bank account is to secure their savings (54%) and (42%) of customers have opened only 1 bank account in the family.

Association Between Number Of Literate Members And Monthly Savings Of The Respondents.

It is a common thinking that literacy is related to saving after performing the chi square it was found there is association between number of literate members and monthly savings of the respondents.

Level of Financial Literacy

General Financial Matters & Source

Most of the respondents (81%) said that the loan avenue to their knowledge are banks and they were aware of the budget of the family (78%). The source of getting to know about bank accounts according to most respondents (65%) were because of bank efforts.

Financial Services

From the analysis done it can be clearly found that awareness and knowledge among the responds about financial services has been low. While most respondents claim they are not aware of zero balance accounts, Kissan credit cards, ATM's , internet banking and mobile banking, they felt they were poorly aware of the rest of the services.

Rates & Charges

Rates and charges are very important while dealing with any finance, and having literacy about these rates and charges is even more important but from the analysis it can be inferred that customers felt they had poor knowledge and awareness of the rates and charges related to saving bank account, Fixed deposit account, Recurring deposit account, Home loans, Educational loans, Insurance services and other ATM's while the customers were not aware of rates and charges for Vehicle loans and NEFT/RTGS.

Investment Avenues

While studying about financial literacy it is important to have knowledge of financial investment avenues. Majority of respondents said they were poorly aware of Savings Bank account, Fixed deposits, Recurring deposits, gold and insurance as investment avenues, while majority of respondents said they were not aware of Mutual funds, Chit funds and Real estate as investment avenues.

Dimensions of Knowledge Of Financial Services, Rates And Charges And Investment

Factorisation was performed on knowledge of financial services, rates and charges and a number of factors could be extracted. In the case of Knowledge of financial services 2 dominant factors were extracted traditional service factor and modern service factor in their order of dominance. 3 independent dominant factors in the case of knowledge of rates and charges were Charge rate factor, Loan rate Factor, and Deposit rate factor in their order of dominance. While in the case of knowledge of investment avenues 3 factors were extracted which were Long term investment factor, Safety investment factor and liquid investment factor in their order of dominance.

The Effect of Financial Literacy among the Respondents

The findings of effect of financial literacy is the most important section in the entire findings as it consolidates the entire study. The findings clearly shows a positive sign as most customers agreed that financial literacy helped them during the time of emergency, helped them understand the risk and return related to financial products and services and the right avenues to invest in. The most important outcome of the study was that respondents felt that there was a need for financial literacy and that financial literacy was linked to financial behaviour.

Conclusion : Financial literacy is a necessity in order to help any economy develop as financial literacy is linked to many other aspects which included, financial behaviour, financial stability, and financial inclusion. From the present study we can conclude that the respondents said they have low awareness and knowledge of financial services, rates & charges and investment.

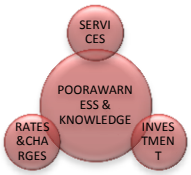

Moving ahead we learn that the three aspects of financial literacy have various dimensions which we could find using statistical tools. Given below is a diagrammatic representation of the various dimensions.

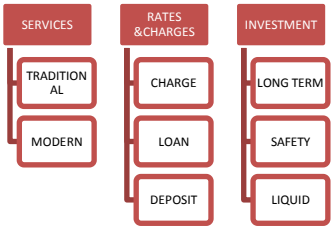

The last and final conclusion that the study has presented is the effect of financial literacy as per the feedback from the customers. The same has been diagrammatically represented below.

Concluding the study it would be apt to say that financial literacy can be achieved not only by having an awareness and knowledge but understanding it to make the right decisions, thus it would be necessary to study financial behaviour of the respondents in further studies. It would be

the responsibility of the financial institutions to cater to the awareness and knowledge needs of the customers as the present study clearly reveals that the respondents find a need to be aware and informed. The Government and banks need to concentrate on both rural and urban financial literacy and follow a approach to gain a feedback from the people. Finally concluding financial literacy when achieved can bail out a country from many factors that are standing as a hindrance to the overall social inclusion and economic development.

Acknowledgement

My heart felt gratitude to **Mr.G.V.Koorse**, Retired General Manager IOB and Head finance Srifamily ,**Mr.Jaybal**, Manager,IOB Ariyalur, and all the **Business Correspondents** of Ariyalur for their help in the process of data collection. The process of data collection would not have been possible without their help and support.

REFERENCES

Books and Chapters from Books

- Lusardi, Annamaria, (2009). Overcoming the Saving Slump: How to Increase the Effectiveness of Financial Education and Saving Programs, book manuscript.
- S.Shajahan,(2010) "Research Methods For Management", Jaico publishing house.

Articles/Papers in Journals and working papers

- Lusardi, Annamaria and Peter Tufano, (2008.) "Debt Literacy, Financial Experience, and Overindebtedness", Harvard Business School working paper.
- Cole, Shawn, Thomas Sampson and Bilal Zia,(2009). "Valuing Financial Literacy Training."Working Paper.
- C.Thilakam, Manonmaniam(2012), Financial Literacy Among Rural Masses In India,The International Conference On Business And Management6 – 7 September 2012, Phuket – Thailand.
- RBI(2012). National Strategy For Financial Education. Reserve Bank Of India/ From.Journal of Finance, Accounting and Management, 5(2), 59-76, July 2014 76
- X. Lisa, Z. Bilal.(2012). Financial Literacy around The World An Overview Of The Evidence With Practical Suggestions For TheWay Forward,Wps6107.
- K. Sobhesh, Agarwalla Samir, K. Barua, Joshy Jacob Jayanth R. Varma(2013) Financial Literacy Among Working Young In Urban W.P. No. 2013-10-02
- Pallavi Gupta & Bharathi Singh(August 2013) "Role OF Literacy Level In Financial Inclusion In India :Empirical Evidence" Journal of Economics, Business and Management, Vol. 1, No. 3.
- Sumit kumar&Dr.Md. Anees (December 2013) " Financial Literacy & Education: Present Scenario in India" ; International Journal of Engineeringand Management Research. ISSN No.: 2250-0758, Volume-3, Issue-6
- Dr. Upendra Singh(July 2014) "Financial Literacy and Financial Stability are two aspects of Efficient Economy" Journal of Finance, Accounting and Management; 5(2), 59-76.
- Neha Ramnani Bhargava (September 2016) "A Studyon Financial Literacyand Financial Education:An Overview of Scenario In India" ; Research Journal of Management Sciences,E-ISSN 2319–1171;Vol. **5(9),** 51-57

Conference

- Ananjan Singh Rawat & Bani Gambhir (January 2017) "Financial Literacy: Imperative to India's Economic Makeover"; Proceedings of the Tenth Asia-Pacific Conference on Global Business, Economics, Finance and Social Sciences (AP17Hong Kong Conference) ISBN: 978-1-943579-97-6 Hong Kong-SAR. 20-22,. Paper ID: HK757

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

CHALLENGES OF COMMEERCE & MANAGEMENT

Dr.Jitendra Kumar Yadav (Principal)
Laxmi Bai SahuJi Institute of Management Jabalpur

Commerce education which is to serve the business and industry in all aspects of its function is imparted mostly at senior secondary level in school, under graduate and post graduate levels in universities in our country. But none of the products prepared as these levels are accorded as professional status. Today commerce graduate is not being accepted even as qualified book-keeper. Consequently he fins himself in a " no man's land" neither a generalist nor specialist. In such a situation popularity of education is declining. There can be many reason for declining its popularity as; syllabi of commerce at competitive examination is not attracting, commerce education is not introduced at school level, no preference is given to commerce graduate in the admissions to professional courses as C.A., ICWA, CS, and MBA etc, poor teaching in many colleges forcing many students for tuitions, poor infrastructure in colleges or universities, lack of practical exposure etc. thus commerce is facing innumerable problems today. On the other side due to globalization, Liberalization, privatization, changes in the world made relations, tax reforms introduced by the Government, changes in legal environment in flow of foreign and multinational capital, demand for personnel to handle assignment in the commercial establishment has enhanced. Thus this is high time that commerce curriculum should be reshaped. Reshaping should be according to the requirements of the industry and business. In my view, at graduate level commerce curriculum should be the composition of three i.e. core courses, specialization courses and practical courses. The weight age should be between the three in proportion of 60:20:20 In core courses Economics, Indian Economy, B.O., International business, commercial Geography. Accounting and management accounting, computer application, IT, Mathematics, Statistics, and Business Law should be included. English should be the commercial language. In specialized courses banking, insurance, Income tax, Cooperation, Public Enterprises Management etc. should be included. All the specialized paper should be spread over three years making the learner to move from simple (first year) to difficult (Third Year). In practical courses practical training program should be arranged in bank branches, Insurance companies, Non-banking financial concerns, transport companies audit firms etc. at post graduate level various alternatives can be offered in commerce education as-Academic oriented courses, self employment oriented courses. Thus, I think student prepared in this pattern may be well suited to the requirements of the emerging commercial ventures in India.

Introduction

Commerce education which is to serve the business and industry in all aspects of its functioning is imparted mostly at senior secondary level in school, undergraduate and postgraduate levels in universities in our country, but none of the products prepared at these levels are accorded as professional status. At this time commerce graduate is not being accepted even as a qualified book-keeper. Consequently he finds himself in a " no man's land" neither a generalist nor a specialist like C.A. in this situation the popularity of commerce education is declining. The following some reason are responsible for its unpopularity:

1. Unpopularity of commerce at competitive examinations as the syllabi of commerce at competitive examinations is not attracting even the meritorious commerce students.
2. Lack of knowledge about commerce at school level as commerce education is not introduced at school in many states.
3. No preference or reservation for commerce graduate either in employment or in admission to

professional courses like C.A., C.W.A., CS, MBA etc.

4. Poor teaching in many colleges forcing many students to go for tuitions, which means additional cost and effort.
5. Lack of practical exposure- -perhaps commerce may be the only practical subject which is theoretically taught without practical exposure.
6. Defective admission policy, in many cases students who are not able to get seats in other courses are opting for commerce. In such a case it is futile to expect wonderful results.
7. Commerce teacher is a jack of all trades, perhaps he is the only person who is expected to teach all the subjects.

In addition to the above commerce education is facing innumerable problems today. These problems have a direct bearing on the course objectives, course content and course conduct. On the other hand the demand for accounting profession is enhancing due to the changing scenario as discussed below:

Changes in world trade Relations:-

with breaking up of trade barriers, the WTO has brought many opportunities and challenges for developing countries. The inflow of foreign investments exposure to global competition, reduction of tariff and dismantling of non-tariff barriers, less dependence on subsidies and concessions and concentration of industrial economics on core competencies are off-shoots of the process of globalization under the protection of WTO. Keeping in view these developments, the accounting profession has to contribute to the efficient allocation of the resources and to the cost efficiency of the industries.

Tax Reforms Introduced by the Government:

As per the recommendation of the tax reforms committee, the central government has introduced tax reforms, which have directly affected the accounting profession. The objective behind the tax reforms is to enhance revenue buoyancy through the overhauling of the structure and administration of the taxes. In tax reform measures, income tax rates are lowered, VAT is adapted to replace complex taxes on domestic trade. Law and procedure is drastically simplified and tax administration is modernized. These tax reforms had their positive impact in terms of improvement in the competence index. All these tax reform measures are increasing the importance of the personals prepared by commerce education in the coming year.

Changing in the legal Environment:-

Provisions are made regarding the Audit committee in the new companies bill. Under provision every public company having paid-up capital of not less then Rs.5 corer will constitute a committee which will be known as Audit committee. In this committee there will be at least three directors of the company and this committee will be attended by the auditor, CAO and internal auditor of the company. This committee will have the detailed discussion with auditor, regarding internal control system, observations of the auditors, all financial statements and also the right to investigate any matter referred to it by the board of directors. After investigation this committee can recommended to the board regarding the financial management including audit report. Board will be bound to aspect these recommendations. Thus the functioning of this committee has enhanced the importance of accounting professionals. In other areas customs, excise, service taxes special audit under sections 14A and 14AA of the central Excise Act 1944 and stock Audit in Banks have expanded the scope of accounting profession.

Inflow of foreign and multi-national capital:

Foreign institutional and multinational investors are thinking that Indian markets have a tremendous potential for future growth and it is expected that millions of US dollars will be invested in Indian market in the form of taking over the business and merging the business. In such a competitive situation it is necessary that Indian corporate should achieve the cost efficiency and improve the quality standards to give the higher 'shareholder value'. Adequate financial disclosure should be there to meet the demands of institutional investors and fund provides.

Changes due to information Technology:

Commerce education has to face revolutionary changes which are due to information Technology and the process of globalization. In the information technology age the countries of world are coming closer. These developments are enhancing the importance the commerce education. There will be a multisided role of a commerce graduate as a manager of information Technology, as a user of IT, accountant as evolution of information system etc.

Growing service sector:

This sector is increasing very fast, while primary (Agriculture) and secondary (Industry) sectors are not increasing so fast. Therefore accounting profession should satisfy all its special and growing requirements. A large part of public and government funds is invested in the building up the infrastructure as power, telecommunication, roads etc. here accounting professionals work will be to watch how best maximum benefits out of such investments are reaped by the Indian economy.

Behavioural Continuous improvement through training with respect to Indigo Airlines

Author 1: Bharti Meghani Mishra
Research Scholar, MLSU, Udaipur,
IIM-Indore Alumni
Assistant Professor: IIL, Indore
Author 2: Dr. Rajeshwari Narendran
MLSU, Udaipur

Abstract : Training is an important activity in the organization by which the behaviour of the employees can be improved. Training should be conducted to continuously improve the behaviour of the employees in the organization. In the present research, 31 items were considered for the analysis. The data collection was done in two parts: pre training and post training. For analysing the data, paired t-test was conducted. Paired t-test is useful in comparing the means of two sets of observations. It was found that every item gives positive results after training.

Introduction : Training is an activity to increase the knowledge of an individual to achieve a certain goal or objective. It is organised in a specific way for accomplishing the tasks. Training is needed at every stage of life. In organizations, training plays very important role. It transforms the person for acquiring certain skills. There are many types of training. Some of them are online training, offline training, on the job training, etc. Online training can be given with the help of internet from anywhere and at any place. Offline training means the training which is given manually to the employees to acquire certain skills or knowledge. On the job training is generally helpful for the workers who have to learn and have to gain the practical exposure of working on machines. On the job training is also fruitful to the employees for understanding the practical working exposure in the organization. Training gives the platform for learning and understanding. It gives the basis to the employees in the organization and helps in creating a good work culture. It helps in developing the skills of the people. It helps to continuously improve the people in the organization.

Kaizen is a Japanese philosophy which means 'continuous improvement. Continuous improvement helps the person to grow. Learning is the continuous process as the training. Kaizen strategy helps the employees for motivation and enhancing their skills professionally and personally both. Kaizen is also helpful to improve the performance of the employees at work place (Sheridan, 1997). Kaizen not only helps to improve the performance of the employees at work place but it also helps in the overall development and growth of the employee. It is useful for the organization's success also. Earlier, the term Kaizen was used only for improving the production process but now a days, it is being used to improve the performance of the employees also.

The continuous improvement of the employees in the organization helps to improve the performance with the help of improving the behaviour of the employees at workplace.

Continuous improvement is benefitted in two ways- enhancing the quality and improving the productivity. Behaviour is the 'state of mind' for learning and studying a specific deed. Behaviour of the person is connected with the culture or the atmosphere of working in the organization. The behaviour of the person can be changed continuously according to the circumstances. Continuous improvement is often seen as the improvement of employees at work place professionally and personally. Training can be given to improve the employees behaviour and finally to improve the performance of the employees. This represents that training is the crucial part in the organization by which the employees' performance can be improved. This is also linked with the behaviour of the employees.

The present research is focussed on identifying the pre and post training behaviour of the employees at work place and then evaluating the performance of the employees before and after the training.

Literature Review :

In organizations, usually the training is used for enhancing the knowledge, abilities and skills of the employees. Meta-analysis gives the proof that training is helpful in increasing the performance of the employees. It is also seen that team building activities are more effective for job satisfaction of the employees. According to this study, the main objective of the training was to improve the job satisfaction of the employees. In this research, the author has identified the effect of training on the employees of the organization with the help of training. But what can be done when job involvement and job satisfaction are not explicit and the implicit organizational goals. It can also be argued that organizations have faith on those employees who are satisfied with the job and those who are fully involved in the job. With respect to the job satisfaction, a study was conducted empirically and it was found that with the help of training the employees are able to satisfy with their job. The results were duplicated in the study, on the basis of the data from German Socio-economic Panel (Georgellis and Lange, 2007). On the contrary, a study was also conducted in the sector of Australian franchise (Choo and Bowley, 2007) which did not proved these results. Thus, provided with the equivocal results empirically, there must be some additional research for exploring the effect of training on the job satisfaction.

With respect to the job involvement, the hypothesis that training helps in improving the job involvement of the employees. The study was conducted on the registered nurses in the public hospitals, Bartlett (2001) has supported the notion that active participation of the employees is related positively for the job involvement. However, in other study, it is found that participating in training is related positively with the job satisfaction and is not related to the job involvement (Osca et al., 2005). Thus, future research is essential for understanding the impact of training on job involvement.

Melnyk et al. (1998) described 7 features that differentiates kaizen events from other processes improvement methods. Firstly, kaizen event is a self-sufficient short-term intervention (normally three to five days), with a clearly described, finite life (Cuscela, 1998). Secondly, the choice of kaizen

event is dedicated on part of a particular value stream (Laraia et al., 1999). Thirdly, kaizen events are low capital interferences. Events usually have little or no financial plan for capital equipment; thus, the emphasis is to improve the process which is already existing, rather to implement solutions which need investment in new technology (Sheridan, 1997). Fourthly, the events of kaizen are based on team work, consist of employees from the directed work area and support tasks including, for example, engineering, production control and purchasing. Kaizen events utilize the employee knowledge for developing better solutions, and are hypothesized for enhancing ownership (McNichols et al., 1999). Fifthly, events of kaizen are action-oriented. Kaizen teams are often given the authority for implementing results as they are developed, deprived of additional direct consent from management (Laraia et al., 1999; Sheridan, 1997). Sixthly, most events of kaizen goals are measurable. Commonly, metrics comprise productivity, work-in-process (WIP), floor space, lead-time, throughput, set-up time, travel time, defect rate, percent on-time delivery, throughput and product design measures for example price, product line diversity, etc. (Kosandal and Farris, 2004). Seventhly, kaizen events are considered to produce a cycle for continuous improvement. With the use of kaizen events at various points in time, series of performance improvement inside a given procedure are created.

The impact of human resource of kaizen events, however, is hardly measured in a direct way (Kosandal and Farris, 2004). Instead, the requested impact of human resource is most often described only anecdotally, if at all. To study the changes in human resource capabilities, it was essential to define the capabilities. The knowledge, skills and attitudes (KSA) framework from the industrial and organizational (I/O) psychology literature was used to operationalize human resource outcomes. Knowledge as defined by Muchinsky (1997, p. 182) refers to the "body of information necessary" for the employee to perform tasks; skill refers to the "psychomotor abilities" needed to perform tasks with "ease and precision;" and attitude refers to the "cognitive capabilities" required to perform the required tasks (e.g., desire to perform the given activity). The KSA framework was chosen for developing the measures and related instruments because it aligns with the human resource benefits cited within the existing practitioner and research literature.

Research Gap:

Many studies have been conducted on kaizen and training separately but very few studies have been conducted on combining the two factors. Only few studies have been conducted on behavioural aspect. In the present research, we will focus on behavioural continuous improvement with the help of training and the performance of the employees will then be evaluated.

Research Methodology:

There are two sources of data collection: primary and secondary. In the present research, we have collected the data with the help of primary source. Questionnaires were distributed to collect the data

from the employees of Indigo airlines. 150 questionnaires were distributed to the respondents out of which 86 were received. Out of

86, we found 70 questionnaires which were properly filled and those 70 questionnaire were used for the data analysing purpose. The respondents were asked to fill the questionnaires in two parts: one at the time of joining the company and second during the current position. The current position of the employee includes the data collected after training of the employee. The data is then analysed with the help of using paired t-test for comparing the means of the variables.

Paired t-test is normally used for comparison between two sets of means where the one set of mean is compared with the other set of mean in the other sample. The difference is then identified after comparing the mean value of the two observations from different sets of data. In the present study, we have used paired t-test for comparing the means of two sets of observations and the difference was then identified. One set of observations were derived at the time of joining of the respondent in Indigo airline and the second set of observation were derived at the current position of the respondent. Between these two sets of observations, the training was given to the employees of indigo airlines and the data was collected after the training.

Following data is considered for analysing the data:

	Mean		Mean Difference	t-value	p-value
	Pre-training	Post training			
Pair 1	3.32	4.47	1.14286	10.752	1.96
Pair 2	3.58	4.48	.90000	6.441	1.96
Pair 3	3.78	4.60	.81429	6.153	1.96
Pair 4	3.74	4.44	.70000	4.624	1.96
Pair 5	3.50	4.42	.90000	5.566	1.96
Pair 6	3.80	4.51	.67143	5.858	1.96
Pair 7	4.01	4.45	.41429	3.467	1.96
Pair 8	3.64	4.55	.91429	7.412	1.96
Pair 9	3.50	4.65	1.15714	7.765	1.96
Pair 10	4.10	4.48	.38571	2.728	1.96
Pair 11	3.72	4.15	.42857	2.318	1.96
Pair 12	3.14	4.67	1.52857	10.653	1.96
Pair 13	2.58	4.55	1.97143	13.311	1.96
Pair 14	3.22	4.64	1.41429	8.863	1.96
Pair 15	2.85	4.6	1.74286	9.717	1.96

Pair 16	2.44	4.57	2.12857	14.659	1.96
Pair 17	2.45	4.45	2.00000	13.501	1.96
Pair 18	2.50	4.65	2.15714	14.086	1.96
Pair 19	2.81	4.45	1.64286	8.508	1.96
Pair 20	3.10	4.58	1.48571	9.292	1.96
Pair 21	2.61	4.57	1.95714	13.282	1.96
Pair 22	2.34	4.40	2.05714	13.646	1.96
Pair 23	2.60	4.52	1.92857	12.203	1.96
Pair 24	3.01	4.50	1.48571	7.623	1.96
Pair 25	2.34	4.47	2.12857	14.115	1.96
Pair 26	2.44	4.61	2.17143	12.849	1.96
Pair 27	2.84	4.52	1.68571	10.155	1.96
Pair 28	2.94	4.57	1.62857	9.487	1.96
Pair 29	2.52	4.58	2.05714	12.007	1.96
Pair 30	2.72	4.54	1.81429	11.119	1.96
Pair 31	2.57	4.58	2.01429	12.834	1.96

Pair 1: 'I am soft spoken'

In pre-time of training means at the time of joining, the mean is 3.32 and after training, the mean is 4.47. It means the difference in the soft spoken skill is positive which is 1.14286. The t-value at 5% level of significance is 10.752 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in the soft skill of the respondent.

Pair 2: I have good communication skills.

At the time of joining, i.e. before training the mean is 3.58 and after training, the mean is 4.48. It means the difference in good communication skill is positive which is 0.90. The t-value at 5% level of significance is 6.441 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in communication skill of the respondent.

Pair 3: I possess positive body language

At the time of joining, i.e. before training the mean is 3.78 and after training, the mean is 4.60. It means the difference in positive body language is positive which is 0.81429. The t-value at 5% level of significance is 6.153 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in body language of the respondent.

Pair 4: I can easily understand the customer's queries

At the time of joining, i.e. before training the mean is 3.74 and after training, the mean is 4.44. It means the difference in easily understand the customer's queries is positive which is 0.70. The t-value at 5% level of significance is 4.624 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in understand the customer's queries of the respondent.

Pair 5: While listening, I keep patience

At the time of joining, i.e. before training the mean is 3.50 and after training, the mean is 4.42. It means the difference in this factor is positive which is 0.90. The t-value at 5% level of significance is 5.566 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in patience level of the respondent.

Pair 6: I am able to solve the problem easily

At the time of joining, i.e. before training the mean is 3.80 and after training, the mean is 4.51. It means the difference in problem solving is positive which is 0.67143. The t-value at 5% level of significance is 5.858 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in problem solving skill of the respondent.

Pair 7: My problem solving skills are appreciated by team members

At the time of joining, i.e. before training the mean is 4.01 and after training, the mean is 4.45. It means the difference in problem solving skills are appreciated by team members is positive which is 0.41429. The t-value at 5% level of significance is 3.467 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in problem solving skills are appreciated by team members of the respondent.

Pair 8: I am confident while taking decisions

At the time of joining, i.e. before training the mean is 3.64 and after training, the mean is 4.55. It means the difference in confident while taking decisions is positive which is 0.91429. The t-value at 5% level of significance is 7.412 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in confident while taking decisions of the respondent.

Pair 9: I initiate for keeping my work place happy

At the time of joining, i.e. before training the mean is 3.50 and after training, the mean is 4.65. It means the difference in initiate for keeping my work place happyis positive which is 1.15714. The t-value at 5% level of significance is 7.765 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in initiate for keeping my work place happy of the respondent.

Pair 10: I take initiative to work

At the time of joining, i.e. before training the mean is 4.10 and after training, the mean is 4.48. It means the difference in take initiative to work is positive which is 0.38571. The t-value at 5% level of significance is 2.728 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in take initiative to work of the respondent.

Pair 11: I take stress while working

At the time of joining, i.e. before training the mean is 3.72 and after training, the mean is 4.15. It means the difference in stress while working is positive which is 0.42857. The t-value at 5% level of significance is 2.318 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in stress while working of the respondent.

Pair 12: I keep good interpersonal relations

At the time of joining, i.e. before training the mean is 3.14 and after training, the mean is 4.67. It means the difference in good interpersonal relations is positive which is 1.52857. The t-value at 5% level of significance is 10.653 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in good interpersonal relations of the respondent.

Pair 13: My work is appreciable in team

At the time of joining, i.e. before training the mean is 2.58 and after training, the mean is 4.55. It means the difference in work is appreciable in team is positive which is 1.97143. The t-value at 5% level of significance is 13.311 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in work is appreciable in team of the respondent.

Pair 14: I coordinate teams very nicely

At the time of joining, i.e. before training the mean is 3.22 and after training, the mean is 4.64. It means the difference in coordinating teams very nicely is positive which is 1.41429. The t-value at 5% level of significance is 8.863 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in coordinating teams very nicely of the respondent.

Pair 15: People consider me while unwinding

At the time of joining, i.e. before training the mean is 2.85 and after training, the mean is 4.60. It means the difference in consider me while unwinding is positive which is 1.74286. The t-value at 5% level of significance is 9.717 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in consider me while unwinding of the respondent.

Pair 16: I timely complete my work

At the time of joining, i.e. before training the mean is 2.44 and after training, the mean is 4.57. It means the difference in timely complete my work is positive which is 2.12857. The t-value at 5% level of significance is 14.659 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in timely complete my work of the respondent.

Pair 17: I am a systematic person to follow norms and methods

At the time of joining, i.e. before training the mean is 2.45 and after training, the mean is 4.45. It means the difference in systematic person to follow norms and methods is positive which is2.00. The t-value at 5% level of significance is 13.501 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in systematic person to follow norms and methods of the respondent.

Pair 18: I possess good leadership qualities

At the time of joining, i.e. before training the mean is 2.50 and after training, the mean is 4.65. It means the difference in possess good leadership qualities is positive which is 2.15714. The t-value at 5% level of significance is 14.086 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in possess good leadership qualities of the respondent.

Pair 19: I confront easily with my peer members

At the time of joining, i.e. before training the mean is 2.84 and after training, the mean is 4.65. It means the difference in confront easily with my peer members is positive which is 1.64286. The t-value at 5% level of significance is 8.508 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in confront easily with my peer members of the respondent.

Pair 20: I have goal and role clarity

At the time of joining, i.e. before training the mean is 3.10 and after training, the mean is 4.58. It means the difference in possess goal and role clarity is positive which is 1.48571. The t-value at 5% level of significance is 9.292 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in possess goal and role clarity of the respondent.

Pair 21: I know very well about my job

At the time of joining, i.e. before training the mean is 2.61 and after training, the mean is 4.57. It means the difference in know very well about my job is positive which is 1.95714. The t-value at 5% level of significance is 13.282 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in know very well about my job of the respondent.

Pair 22: My pay is increased

At the time of joining, i.e. before training the mean is 2.34 and after training, the mean is 4.40. It means the difference in pay is increased is positive which is 2.05714. The t-value at 5% level of significance is 13.646 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in possess pay is increased of the respondent.

Pair 23: I achieve my targets, objectives easily

At the time of joining, i.e. before training the mean is 2.60 and after training, the mean is 4.52. It means the difference in achieve my targets, objectives easily is positive which is 1.92857. The t-value at 5% level of significance is 12.203 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in achieve my targets, objectives easily of the respondent.

Pair 24: I get promotions

At the time of joining, i.e. before training the mean is 3.01 and after training, the mean is 4.50. It means the difference in get promotions is positive which is 1.48571. The t-value at 5% level of significance is 7.623 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in possess get promotions of the respondent.

Pair 25: I can handle complaints of customers effectively

At the time of joining, i.e. before training the mean is 2.34 and after training, the mean is 4.47. It means the difference in pay is increased is positive which is 2.12857. The t-value at 5% level of significance is 14.115 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in possess pay is increased of the respondent.

Pair 26: I can work in teams

At the time of joining, i.e. before training the mean is 2.44 and after training, the mean is 4.61. It means the difference in work in teams is positive which is2.17143. The t-value at 5% level of significance is 12.849 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in work in teams of the respondent.

Pair 27: I have increased my capacity to learn new things

At the time of joining, i.e. before training the mean is 2.84 and after training, the mean is 4.52. It means the difference in increased my capacity to learn new thingsis positive which is 1.68571. The t-value at 5% level of significance is 10.155 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in increased my capacity to learn new things of the respondent.

Pair 28: I do my work with less errors

At the time of joining, i.e. before training the mean is 2.94 and after training, the mean is 4.57. It means the difference in do my work with less errors is positive which is 1.62857. The t-value at 5% level of significance is 9.487 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in do my work with less errors of the respondent.

Pair 29: I can make reasonable decisions

At the time of joining, i.e. before training the mean is 2.52 and after training, the mean is 4.58. It means the difference in can make reasonable decisions is positive which is 2.05714. The t-value at 5% level of significance is 12.007 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in can make reasonable decisions of the respondent.

Pair 30: I have increased my productivity in terms of output

At the time of joining, i.e. before training the mean is 2.72 and after training, the mean is 4.54. It means the difference in increased my productivity in terms of output is positive which is 1.81429. The t-value at 5% level of significance is 11.119 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in increased my productivity in terms of output of the respondent.

Pair 31: I am able to understand without more explanation

At the time of joining, i.e. before training the mean is 2.57 and after training, the mean is 4.58. It means the difference in able to understand without more explanation is positive which is 2.01429. The t-value at 5% level of significance is 12.834 which is greater than the p-value (1.96). Thus, we can say that there is overall improvement in able to understand without more explanation of the respondent.

From the above analysis, we can say that after training each and every factor has improvement.

Conclusion : Training plays very important role in changing the behaviour of the employees in the organization. Behaviour of the employee is dependent on the training of the employees which they get in the organization. At the end, it can be concluded that training is important criteria for the overall performance of the employees in Indigo airlines.

References:

Bartlett, K. (2001), "The relationship between training and organizational commitment: a study in the health care field", Human Resource Development Quarterly, Vol. 12, pp. 335-52.

Choo, S. and Bowley, C. (2007), "Using training and development to affect job satisfaction within franchising", Journal of Small Business and Enterprise Development, Vol. 14, pp. 339-52.

Georgellis, Y. and Lange, T. (2007), "Participation in continuous, on-the-job training and the impact on job satisfaction: longitudinal evidence from the German labour market", International Journal of Human Resource Management, Vol. 18, pp. 969-85.

Osca, A., Urien, B., Gonza ´lez-Camino, G., Martı ´nez-Pe ´rez, M.D. and Martı ´nez-Pe ´rez, N. (2005), "Organisational support and group efficacy: a longitudinal study of main and buffer effects", Journal of Managerial Psychology, Vol. 20, pp. 292-311.

Melnyk, S.A., Calantone, R.J., Montabon, F.L. and Smith, R.T. (1998), "Short-term action in pursuit of long-term improvements: introducing kaizen events", Production & Inventory Management Journal, Vol. 39 No. 4, pp. 69-76.

Cuscela, K.N. (1998), "Kaizen blitz attacks work processes at Dana Corp", IIE Solutions, Vol. 30 No. 4, pp. 29-31.

Sheridan, J.H. (1997), "Kaizen blitz", Industry Week/IW, Vol. 246 No. 16, pp. 18-27.

Laraia, A.C., Moody, P.E. and Hall, R.W. (1999), The Kaizen Blitz: Accelerating Breakthroughs in Productivity and Performance, The Association for Manufacturing Excellence, New York, NY.

McNichols, T., Hassinger, R. and Bapst, G.W. (1999), "Quick and continuous improvement through kaizen blitz", Hospital Material Management Quarterly, Vol. 20 No. 4, pp. 1-7.

Kosandal, P. and Farris, J. (2004), "The strategic role of the kaizen event in driving and sustaining organizational change", Proceedings of the 2004 American Society for Engineering Management Conference, Alexandria, VA, pp. 517-26.

Muchinsky, P.M. (1997), Psychology Applied to Work, 5th ed., Brooks/Cole Publishing, Pacific Grove, CA.

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

An analysis study of integrated child development services: challenges & Suggestion

***Ayushi Chaturvedi**
**** Dr. Sangram Bhushan**
*****Dr. SK Choudhary**
* Scholar, Pre Ph.D., School of Study in Economics, Vikram University, Ujjain, M.P. 456010
** Assistance Professor, (Ph.D., UGC-NET, M. Phil.), School of Study in Economics, Vikram University, Ujjain, M.P.
*** Post Doctoral Fallow, ICSSR, New Delhi, (Ph.D., UGC-NET, MPPSC-SLET, and M. Phil.) School of Study in Economics, Vikram University, Ujjain, M.P.

Abstract : India's Integrated Child Development Services (ICDS) is one of the world's largest child development programmes. It is a centrally sponsored scheme that has been the Government of India's (GOI) flagship programme since 1975 for addressing the holistic needs of the child. The ICDS programme offers a comprehensive range of services that aim to improve the nutritional and health status of children 0-6 years, as well as pregnant and lactating women. More recently, the programme was extended to cover adolescent girls. As well, ICDS lays the framework for the overall physical and mental development of children 0-6 years through non-formal preschool education (for children 3-6 years) and through the provision of nutritional and health education to their mothers.

It works under the Ministry of women and child development is to provide equal rights to women with men and child centered legislation, policies and programme. The main aim of the Ministry that the women live with self-esteem and contributing the equal rights in the development of the society and to give a platform to nourish the children in the path of growth and protective atmosphere. The funding work of the Ministry comes under the preview of UNICEF and World bank.

Keyword:AWWs (Anganwadi Workers), AWCs (Anganwadi Centers), ICDS, its role in HDI

Introduction: The Integrated Child Development Sevices Programme aims at providing services to pre-school children in an integrated manner so as to ensure proper growth and development of children in rural, tribal and slum areas. ICDS is a centrally sponsored scheme.An integrated child development service is an Indian government welfare programme which provides food, pre-school education and primary healthcare to children under 6years of age and their mothers. ICDS was launched on 2october 1975 and it works under the ministry of women and child development, it provides its services through Anganwari centers established in rural areas. In order to fight malnutrition and ill health, the programme is also intended to combat gender inequality by providing similar resources as boys.

India's Integrated Child Development Services (ICDS) is one of the world's largest child .It is a centrally sponsored scheme that has been running under the Government of India's (GOI) flagship programme since 1975 to concentrate on the holistic needs of the child. The ICDS programme offers a comprehensive range of services that aim to improve the nutritional and health status of children under the age of 0-6 years, as well as pregnant and lactating women. More recently, a new initiative by the programme to cover adolescent girls. As well, ICDS lays the framework for the overall physical and mental development of children 0-6 years through non-formal preschool education (for children 3-6 years) and through the provision of nutritional and health education to their mothers.

Under the preview of Vedanta group, modern Anganwadi; Nandghar was invest on 24 June 2015, by the Union Minister of Women and Child Development, SMT Maneka Sanjay Gandhi and Mr. Anil Agarwal, Chairman, Vedanta. The Nand Ghar, a Public private partnership (PPP) model, in partnership with the government has budding to be a movement for a holistic approach towards child care and women empowerment.

Vedanta's first Nand Ghar offers an integrated education for children in the age group of 0 - 6 years, while providing nutrition and hygienic sanitation facilities. Safe drinking water, mobile health vans, nutritious meals, toilets and awareness on practices that promote a healthy atmosphere for mother and child are some of the many facilities of this modern Anganwadi, as the social indicators of educating children and eradicating malnutrition are the most effective way to mobilize the upliftment of communities on a national scale. The other benefits, is the infrastructure of Nand Ghar, which is designed to be fire resistant, damp resistant and earthquake resistant. The prefab structure has the convenience to be built in less than one and half month. Clean energy for a TV and other appliances is obtained from solar power panels that ensure the availability of electricity always. As independent research organizations have highlighted time and again; that the more a country empowers its women, the more economically and socially prospers it becomes Vedanta has incorporated facilities to empower women through skill development. Mr. Agarwal believes that vocationally skilled women will broaden India's base of economic development. Today Indian economy grew at over 7.5%. While, it is a healthy rate, Mr. Anil Agarwal is confident that it can achieve double-digit growth. Our billion plus population houses over 600 million women. 50% of its total population is between the ages of 0-25, which makes India one of the youngest nations globally. Such demographic wealth is unmatched. But it can only be tapped when women are empowered. It was established to empower women and also to eradicate malnutrition among the new born child. If our youthful children's are free from malnutrition and to provide, good health and also supplementary nutrition and regular health checkups. By all these basic services we form our healthy, qualified and skillful human recourses for our country to stand in global economy.

Objectives of the study:

- To analyze the working of ICDS programme. Its Anganwadi centers against given tasks and duties.
- To study about the awareness among the users and specially women and assess the education level of AWWs.
- To study the infrastructure of various AWCs.

Research Methodology: this Research paper is based on secondary data and theoretical only purpose of analysis of ICDS and its process of working. So we have used secondary data and used properly tools & technique.

Literature Review: we review the different types of research papers, national and international journal, annual reports of ICDS, conferences and different books; on the basis of all these provide some findings of the study:

1. AWCs are providing NFPSE (40%), nutrition and health education (100%), supplementary nutrition, immunization camps (60.71%). Health checkups are not conducted. More than 50% have required infrastructure, 55% of AWWs have maintained records properly; iron tablets and vitamin A syrup are not available with any AWC from last 7-8 months.

On the basis of their findings it has been seen that the most of the Anganwadi centers are not ventilated, electricity not proper, Anganwadi centers to be housed in rented buildings and provision of safe drinking water existed only in 53.21% Anganwadi.

The study reveal that iron and folic acid supplementation to pregnant women has a better result and responsibility also lies in the hands of health department and also improve the basic amenities of Anganwadi centers with the proper allocation of resources.

2. According to this paper, to evaluate ICDS program in terms of infrastructure of Anganwari centers, input, process, coverage and utilization of services and issues related to program operation they also find that the supplementary nutrition coverage was reported in 48.3% in children.

Interruption in supply of supplementary nutrition during last six months was reported in 61.7% Anganwari centers. Only 20% centers reported 100% preschool education coverage among children. Immunization of all children was recorded in only 10%. So by all these they derived the gaps in coverage of supplementary nutrition in children, its regular supply to the beneficiaries, in preschool activities coverage, recording of immunization and regular health check-up of beneficiaries and recommendation of sick children.

3. According to the conference, the major highlight is that the human capital is most essential for any country for becoming the international trade arena to stand in the streak of global economy and in order to develop various sectors of the economy, a country should introduced the manpower planning for the development of its human resource. Manpower planning indicates planning of human resource for meeting the development needs of the economy. If a country's human resource are technically known and physically fit to approach in the era of global economy. The conference suggest that not only the government ensure a good health and education to our human being but also the participation of private sector are required to improve and overcome the challenges in human capital formation.

Framework, Analysis &Results : The given study analysis the role of ICDS in human capital formation, if our future child are free from malnutrition and their mothers are aware about how to care a new born child then we in safe hands. But by the study we find still there are women who are suffering from domestic violence by which they not stand in front of men this prevailed mainly in rural area and also the prevalence of gender inequality. In our society if women are aware, educated, and economically strong then our forthcoming children are secure, healthy and strong. Also there should be proper implementation of AWCs for proper execution of their services like proper ventilation, safe drinking water, regular health checkups and pre-school activities.

"The children are the future of the nation". It is necessary that the young child should be healthy and educated so our future is secure in terms of earnings and employment and all the Anganwadi workers should be provided a proper training and re-training at proper intervals and for the properly implement the tasks and duties. The overall work done on ICDS have benefitted the children aged of 6years and to give medical, health care, pre-school education and immunization facilities and to fight the malnutrition among the pregnant women and to give employment opportunities to women in various Anganwadi centers in remote areas. Within the three decades of the ICDS various activities are fulfilled and also various AWCs are properly constructed but still now more than 50% are in a rented building. By the various literature review we find that that maximum number of workers 13 (43.33%) were in the age group of 26-35 years. About 11 (36.66%) of AWW were matriculation which is consistent with many other studies. Only 06 ((20%) AWWs were had an experience of more than 10 years. On the whole it was found that AWWs have best knowledge about the component of immunization (54.66%) while least about referral services (16.66%).These services are provided through different Anganwadi centers were mainly in rural areas and also it has its operational office in urban area. The funding of the service come under the preview of World Bank and UNICEF, and its activity are regulated by Ministry of Women and Child Development

1. Proper training program should be drafted.
2. Education level should be increased from 12^{th} to graduation level.
3. Training should also be given to deal with unavoidable circumstances.
4. To make women aware to take help of these services.
5. Health ministry appointed employee who go for regular checkups in different AWWs.

SUGGESTIONS: The study shows that evidence of outcome and impact of ICDS on behavioral changes in targetgroups, nutritional status of children, morbidity and mortality is mixed— with

some states andpopulation groups showing positive results, while others do not. Impact studies of suchprogrammes require a more scientific sample design and much larger sample size to bring outconclusive results. In spite of such weak evidence of positive outcome/impact, there is no doubtthat ICDS is well conceived and well placed to address the major causes of child under nutritionin India. Findings of the study warrant that ICDS needs restructuring for realization ofits potential.

1. There are difficulties in pursuing the goal of univeresalization for several reasons:

(i) Huge infrastructure and resource requirement.

(ii) Dilution of focus on the really malnourished.

(iii) Possibility of leakage/wastage arising out of weak M&E and voluntary abstention by registered beneficiaries. The programme outcome is likely to be better if ICDS becomes a targeted intervention.

2. AWWs are overburdened, underpaid and mostly unskilled: They are vulnerable because of job insecurity. Their recruitment procedures and service conditions need restructuring.

3. AWCs lack adequate infrastructure to deliver the six designated services. An independent assessment of the infrastructural deficiency at AWC needs to be undertaken for necessary corrective actions. The results show that this deficiency has adversely affected the quality of delivery of services and hence, impact of ICDS.

4. Convergence of complementary services, which is essential for realization of ICDS goals, is a weak link. The coordination committees are ineffective. It is unrealistic to expect that AWW would accomplish this task. Since the role of health services is crucial in attaining ICDS goals, it is appropriate that the grassroots level health functionaries become an integral part of day-to-day management of AWC. A study may be undertaken to identify the steps that are required (including strengthening of infrastructure, human resources and incentive structure of health workers) to ensure that health functionaries become responsible and accountable partners not only for delivery of health related services, but also for realization of ICDS goals. This linkage among providers of health, nutrition/education services should not be merely functional, but organic too.

5. Wide divergence between official statistics on nutritional status, registered beneficiaries, number (norms) of days food/SN served on one hand and grassroots reality with regard to these indicators on the other has been observed in this study as well as in others (e.g. Evaluation of ICDS in Madhya Pradesh by SANKET, 2009). The existing monitoring system of ICDS needs to be strengthened and revamped. The responsibility of data generation at source (i.e. at AWC) should not be with the staff of DWCD, primarily because some aspects like, classification of children according to standard grades of malnourishment, growth monitoring, assessing types of medical interventions required, use of weighing machines etc. warrant involvement of trained/technical personnel.

Conclusion:ICDS was launched to fight the malnutrition among new born child and also to empower to the women of our society, there are six basic services which ICDS deals namely Malnutrition, Supplementary nutrition, immunization, pre-school education and regular health checkups of pregnant women and children. These services are provided through different Anganwadi centers were mainly in rural areas and also it has its operational office in urban area. The funding of the service come under the preview of World Bank and UNICEF, and its activity are regulated by Ministry of Women and Child Development. From various review work it has been noticed that the most of the AWW are not trained according to the working manual of the service and not qualified to understand to solve the problems. There are some solutions by which these problems can be solved:

Bibliography

1. T. Sanjeevkumar (28, May 2017) Conference info. 3rd international conference on Research trends in Engineering, Applied Science and Management "Human Capital Formation: Challenges & Opportunities in India"/ ISBN -978-81-934083-1-5
2. RAJESH K CHUDASAMA, AM KADRI, PRAMOD B VERMA, UMED V PATEL, NIRAV JOSHI, DIPESH ZALAVADIYA AND CHIRAG BHOLA (SEPTEMBER 15,2014) "Evaluation of Integrated Child Development Services Program in Gujarat"/ VOL. 51 (Google Scholar)
3. Kural Sarbjit Singh (September2014) "International journal of Humanities and Social Science Invention", A Study on Anganwadi Workers in Rural ICDS Blocks of Punjab/ ISSN NO. (Online): 2319-7722 / Vol. 3, Issue 9
4. http://www.planningcommission.nic.in/reports/peoreport/peoevalu/peo_icds_v1.pdf

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

प्रागैतिहासिक चित्रकला

रंजिता वैष्णव
शोध छात्रा, इतिहास विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

''यथा सुमेरू प्रवरो नगनां
यथान्द्रजानां गरूणः प्रधाः
यथा नराणां प्रवरः क्षितीशः
तथा कला नामिट चित्रकल्पः।।''

जैसे पर्वतों में सुमेरू, पक्षियों में गुरूड़ व्यक्तियों में राजा श्रेष्ठ है, वैसे ही कलाओं में ''चित्रकला'' श्रेष्ठ मानी गई है।[1]

मानव के प्रगति इतिहास के साथ ही चित्रकला का इतिहास आरंभ होता है। चित्रण की प्रवृत्ति मनुष्य में उस समय से है जब वह वनौकस था।[2] आदिम मनुष्य ने पहली बार अपने भावों को प्रकट करने की चेष्टाएँ की होगी और भाषा के अभाव में जो कार्य किया होगा वह कला के अंतर्गत आता ह। अपनी ललित भावनाओं के वशीभूत हो उसने अनगढ़ पत्थरों के औजारों तथा तूलिका की टेढ़ी–मेढ़ी रेखाकृतियों के द्वारा गुफाओं और चट्टानों की भित्तियों पर अपनी भावनाओं को अंकित किया। आदिमानव की कलाकृतियों में उनके जीवन की कोमलत भावनाएँ एवं संघर्षमय जीवन की झलक मिलती है।[3]

चित्रकला का जन्म कब और कैसे हुआ, यह एक अत्यंत विवादास्पद प्रश्न है, किन्तु प्रागैतिहासिक मानव ने किस प्रकार अपनी संस्कृति, सभ्यता और अपने भाव–विचारों का विकास किया, सौभाग्यवश इसके बहुत से तथ्य आज प्रकाश में आ चुके हैं। आदि मानव द्वारा चित्रित गुफाओं को प्रकाश में लाने का कार्य सर्वप्रथम आर्चिबाल्ड कार्लाइल तथा जॉन काकबर्न ने किया।[4]

भारत के प्रागैतिहासिक आलेखनों एवं चित्रों का अनुशीलन करने वाले विद्वानों में एलन हाटन व्राड्रिक, स्टुअर्ट पिगाट, डी.एच. गोर्डन, प्रो. जुनेर, लियोनार्ड एडम, श्री एफ.आर. आल्विन तथा श्रीमति अल्विन, सी.ए. सिल्वे लाड, पंचानन मित्र

और मनोरंजन घोष का नाम प्रमुख है। ब्राड्रिक महोदय ने संसार के प्रागैतिहासिक चित्रों की प्राचीनता का विश्लेषण करते हुए, भारत में उपलब्ध चित्रों को अमेरिका और यूरोप के बाद रखा है। ये चित्र म.प्र. के आदमगढ़, रायगढ़, बिहार के चक्रधरपुर, सिंघनपुर, होशंगाबाद और मिर्जापुर के लिखुनियाँ, कोहर तथा भल्डारिया आदि स्थानों से प्राप्त हुए है।

प्रागैतिहासिक काल के शैल चित्रों में दो प्रकार की मनोवृत्तियाँ पायी जाती हैं। अपने इर्द–गिर्द के जगत को स्मृति एवं उस पर अपनी विजय का इतिहास बनाए रखना। दूसरी अपनी अमूर्त भावना को मूर्त रूप प्रदान करना।[5] मूलत ये मनोवृत्तियाँ समूची मानव उन्नति की प्रेरक हैं। इन चित्रों में आदि मानव का जीवन परिलक्षित होता है।

प्रागैतिहासिक काल के ये चित्र लाल, काले या पीले और सफेद रंगों से बने हैं।

यह चित्र चट्टानों की दीवारों, गुफाओं के फर्शों भित्तियों या छतों पर बनाये गये हैं। चट्टानों की खुरदुरी दीवारों पर लाल (गेरू या हिरौंजी), काला (कोयला या कालिख) या सफेद खड़िया रंगों के पशु की चर्बी से मिलाकर यह चित्र बनाए गए हैं। यह चित्र रेखा चित्र की श्रेणी में आते हैं। इन चित्रों में विशेषतया रेंगते हुये कीड़ों, पशुओं, पक्षियों, मनुष्यों और असुरों तथा शिकार के चित्र प्राप्त होते है।[6] यद्यपि यह चित्र भद्दे असंगत और कठोर हैं, परंतु इनमें गति तथा सजीवता है और तुलिका को शक्ति इनकी प्रमुख विशेषता है। इन चित्रों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि आज की भाँति आदिम मानव भी सौंदर्य का उपासक था। कला और सौंदर्य की चोली–दामन का साथ है, एक–दूसरे के बिन ये अपूर्ण हैं। जो कुछ सुन्दर है, मनभावन है, वह कला है।[7]

भारतीय चित्रकला प्रमुख रूप से चार प्रकार की रही है– भित्ति, चित्र पट, चित्र फलक

व लघु चित्र। इन चित्रों को संभवतः विभिन्न प्रयोजनों हेतु चित्रित किया गया होगा। जिनमें

1. धार्मिक अभिव्यक्ति, पूजा–पाठ आदि।
2. ऐतिहासिक दृश्यों का संरक्षण।
3. जीवन की प्रमुख घटनाओं का संरक्षण।
4. मृत व्यक्तियों की आकृतियों का संरक्षण।

उन भरतमुनि के नाट्य शास्त्र में वर्णित प्रेक्षागृह रंगशाला की शैली में वर्णित प्रतीत होता है। प्रेक्षागृह के कलाकारों का आवास स्थान भी वहीं था, दुर्भाग्य से उक्त दुर्लभ चित्र की कुछ रेखाएँ ही शेष रह गयी हैं। छत्तीसगढ़ के विभिन्न स्थानों से प्राप्त शैलचित्रों का यहाँ विस्तार से अध्ययन प्रस्तावित है। दक्षिण कोसल से प्राप्त प्रागैतिहासिक शैलगुहाओं में भित्तिचित्र कला इतिहास की महत्वपूर्ण संपत्ति है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. रामकृष्ण दास, भारत की चित्रकला, इलाहाबाद, 1974, पृ. 1
2. गैरोला, वाचस्पति, भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, 1985, पृ. 24
3. चौहान, सुरेन्द्र सिंह, राजस्थानी चित्रकला, पृ. 11
4. गैरोला, वाचस्पति, भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, 1985, पृ. 24
5. रामकृष्ण दास, भारत की चित्रकला, इलाहाबाद, 1974, पृ. 1
6. गैरोला, वाचस्पति, भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, 1985, पृ. 24
7. गैरोला, वाचस्पति, भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, 1963, पृ. 25
8. मिश्र, रमानाथ, भारतीय मूर्तिकला, पृ. 21

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

प्रतिभाशाली बालकों का चारित्रिक एक परशीलन

गणेशन स्वामी
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा)एन.ई.एस.शिक्षा महाविद्यालयगोरखपुर जबलपुर (म.प्र.)

मनोवैज्ञानिक एवं शिक्षाविद् अभी तक प्रतिभाशाली बालक की परिभाषा पर एक मत नहीं है। इसका मुख्य कारण यह है कि प्रतिभा के सबध में सबकी अलग अलग विचार धारा है। प्रतिभा शब्द का उपयोग अब केवल शिक्षा–क्षेत्र में ही सीमित न होकर सर्वव्यापी हो गया है इसलिए भिन्न भिन्न क्षेत्रों में उसका अर्थ भी अलग रूप में लिया जाता है और यह सीमित न होकर सर्वव्यापी हो गया है। सामान्यतः प्रतिभाशाली बालक की पहचान बुद्धि परीक्षण से प्राप्त बुद्धिलब्धि के आकड़ों से की जाती है। विद्वानों के मतानुसार प्रतिभाशाली बालक की बुद्धिलब्धि 180,150,140 या कोई अन्य ऑकड़ा होना चाहिए। जैसे सूक्ष्म बुद्धिमान(Genious)उच्च प्रतिशाली(Highly Gifted)सामान्य प्रतिभाशाली (Moderately Gifted) गुणवान (Talented) आदि। इन सबकी बुद्धि–लब्धि के ऑकड़ों पर विद्वानों में भी मतभेद है।

प्रतिभाशाली बालक का तात्पर्य ऐसे बालकों से हैं जिसमें उच्च कोटि की मानसिक योग्यता हो अथवा किसी भी एक या एक से अधिक क्षेत्रों में विशेष योग्यता हो। जैसे कला, संगोत, विज्ञान, गणित,तकनीकी कार्य, खेल सामाजिक सम्बन्ध आदि।

प्रतिभाशाली बालक की बौद्धिक योग्यता उच्च कोटि की होती है। प्रतिभाशाली बालक का पालन पोषण उचित रीति से हो, उसे उचित वातारण प्राप्त हो और उसे अपनी अभिव्यक्ति प्रदर्शन का अवसर मिलें तो वह अपने क्षेत्र में अग्रणी या अपूर्व बुद्धि का हो सकता है।

प्रतिभाशाली बालक न केवल पढ़ाई में प्रतिभावान होते हैं बल्कि वे अन्य क्षेत्र जैसे संगीत खेल सृजनात्मक, सामाजिक कार्यो में भी प्रतिभावान होते हैं।

यदि हम प्रतिभा की एक सीमा निश्चित करें और उसे मापने की कोई एक विधि अपनायें तो हम प्रतिभा के एक भाग का ही माप सकेगें तथा दूसरी विधियों के उपयोग से बहुत से अत्यंत प्रतिभाशाली बालकों की प्रतिभा का सही मापन नहीं हो सकेगा प्रतिभा मापने में दूसरी कठिनाई उन कारकों की आवेगी जो बालक की आन्तरिक एवं बाह्य दशा पर प्रभाव डालते हैं, जैसे–मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक एवं शारीरिक कारकों का प्रभाव मनोदशा पर पड़ता है और विभिन्न

परिस्थितियों और अवसरों पर परीक्षणों के परिणाम में काफी अन्तर आने की सम्भावना रहती है। इसमें प्रतिभा का सही मापन नहीं किया जा सकता।

प्रतिभा एक जटिल शब्द है। इसके अन्गर्त कई गुणों का समावेश पाया जाता है। पालविटि ने उपयोगी सामाजिक कार्य को सदैव श्रेष्ठ विधि से सम्पन्न करने की कला को प्रतिभा माना है। प्रतिभाशाली बालक जन्मजात कुछ श्रेष्ठ गुणों से पाया जाता है। उसकी तीक्ष्य बुद्धि, अन्तर्दृष्टि तीक्ष्ण, ज्ञान शक्ति उच्चकोटि की तथा कार्य में दक्षता अगल से पायी जाती है, उसके मौलिक विचार, वाक पटुता, उच्चकोटि, तर्क, योग्यता, मौलिकता रचनात्मक एवं सृजन योग्यता होती है। वह शीघ्र ही अपने विचारों, व्यवहार और कार्य प्रणाली से दूसरों को प्रभावित कर लेता है। उसमें सदैव नवीन कार्य करने की उत्सुकता और ज्ञानार्जन की इच्छा होती है।

गेटजल्स और जेक्सन ने अपने एक अध्ययन में पाया कि प्रतिभाशाली बालकों में उच्च कोटि का सामाजिक सामयोजन एवं नैतिक साहस होता है। स्पिट्ज महोदय का मत है कि केवल बुद्धि नम्य और परिवर्तित करने योग्य होतो है। बाल्यावस्था में माता से या सामाजिक परस्पर सम्बन्ध के अभाव में किसी भी बालक का शारीरिक या मानसिक विकास रूक जाता है। हण्ट ने अपने अध्ययन ये प्रमाणित किया है कि योजनाबद्ध अधिगमन के अनुभव और मार्गदर्शन से स्वभावतः पर्यावरण में आये हुए बालकों की अपेक्षा बद्धि का विकास अधिक होता है। आगे वे कहते हैं कि केवल बुद्धि योग्यता के आधार पर ही किसी बालक को प्रतिभाशाली मानलेना भूल करना है। जिस प्रकार बुद्धि विकास के लिये उपयुक्त पर्यावरण की आवश्यकता होती है। ठीक उसी प्रकार प्रतिभा के विकास के लिए भी उपयुक्त पर्यावरण, प्रशिक्षक एवं मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।

शिक्षा विद् वुडरों महोदय ने अपने अध्ययन में पाया कि प्रतिभाशाली बालकों में मंद और समान्य बुद्धि वाले बालकों की अपेक्षा शीघ्र सीखने की योग्यता होती है। वे कम समय में दूसरों की तुलना में अधिक सीख जाते हं।

विलयम्य का कथन है कि प्रतिभाशाली बालक–बालिकाओं की स्मरण शक्ति दूसरे बालकों की अपेक्षा अ्च्छी होती है। उन्हें विस्मरण भी देर से होता है।

हिल्डरेथ ने 200 प्रतिभाशाली बालक और बालिकाओं का अध्ययन किया। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि वे दूसरे की तुलना में श्शारीरिक श्शक्ति में अधिक, हॅसी –मजाक पसन्द, स्फूर्तिवान, कठिनाई का सामना करने में तत्पर,स्वयं निश्चित और स्वतन्त्र विचारधारा वाले होते है।

रेमर्स ने अपने अध्ययन में प्रतिभाशाली बालक को परिश्रमी, अधीर, तत्पर, जिज्ञास् और नेतृत्व के गुण वाला पाया।

ब्लेयर ने केलिफोर्निया में 108 प्रतिभाशाली बालक के गुणों का अध्ययन किया। आपने प्रतिभाशाली बालकों को साफ स्वच्छ रहने वाला, कठिन कार्य लेने में सदैव तैयार , अपनी आयु से बड़ी आयु वालों के समान काम करने में तत्पर, दुस्साहसी समस्या को हल करने में उत्सुक और कभी न थकने वाला पाया।

श्रासमेन ने पॉच वर्ष तक की आयु वाले 76 प्रतिभाशाली बालक,बालिकाओं का अध्ययन किया। आपने अपने अध्ययन में पाया कि उनका शब्दकोष विशाल होता है, दैनिक वर्त्ता में भिन्नता होती है। रचननात्मक कार्यो में रूचि होती है। उनकी समझ अच्छी होती है। वे वस्तु ,स्थान और व्यक्ति को भूलते नहीं हैं। उनमें संग्रह, संग्रह, चित्रकला और वस्तु निर्णय की अभिक्षमता होती है। जिज्ञासा और निरीक्षण शक्ति तोव्र होती है।उनके मतानुसार पूत के पांव पालने में दिखाई देने लगते हैं।

प्रतिभाशाली बालकों के लक्षण

पाल टोरेन्स ने विभिन्न देशों के अध्यापकों से प्रतिभाशाली बालक के निम्ननिखित लक्षण संग्रहित कर प्रस्तुत किये हैं –

1. प्रिय लगने वाला
2. परिश्रमी
3. दूरदर्शी
4. अल्पभाषी
5. विचारवान
6. समय पर कार्यकरने वाला
7. तीव्र स्मरण शक्ति
8. आज्ञाकारी
9. विनम्र
10. विनोद प्रिय
11. निष्कपट
12. लज्जाशील
13. दृढ़ सकल्प
14. तत्पर
15. धैर्यवान
16. साहसी
17. मौलिक
18. स्वतन्त्र विचारधारा
19. मौलिक
20. कार्य में दृढ़
21. पूर्ण समायोजित,
22. दुस्साहसी
23. रचनात्मक प्रवृत्ति वाला
24. सहयोगी
25. आत्मविश्वासी
26. लगनशील

इस प्रकार प्रतिभाशाली बालकों का लक्षण माना गया है किन्तु गुजरात विश्वविद्यालय प्राध्यापक सी.एल. भट्ट ने अपने सर्वेक्षण के आधार पर प्रतिभाशाली बालक के कुछ और भी लक्षण बताये गये हैं–

व्यक्तिगत गुण –

1 सवेगों पर नियंत्रण
2 मृदुभाषी
3 सहनशीन
4 प्रत्येक कार्य को जिम्मेदारी से पूरा करने वाला
5 आत्मनिर्भर
6 परिश्रमी
7 हॅसमुख
8 शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता
9 जोखम से कार्य करने की लालसा

बौद्धिक गुण –

1. उच्चकोटि की बौद्धिक योग्यता
2. विषय वस्तु की श्शीघ्र समझने की क्षमता
3. नवीन बातों की जानने की जिज्ञासा
4. क्ला में अभिरूचि
5. जटिल प्रश्नों को हल करने की क्षमता
6. उच्चकोटि की तर्क योग्यता
7. अमूत बातें समझाने की क्षमता
8. तीव्र स्मरण शक्ति
9. तीव्र कल्पना श्शक्ति

10. वाक्य पटुता

शैक्षणिक गुण –

1. विद्यालय में नियमित उपस्थिति
2. सदैव गृहकार्य करना
3. पाठ को पूर्व में तैयार करके आने वाला
4. पाठ्यक्रम के अतिरिक्त सहायक पुस्तकों को पढ़ने में रूचि
5. समाचार पत्र, पत्रिकाएँ आदि में पढने की रूचि
6. अध्ययन में अपने धुन का पक्का

सामाजिक गुण –

1. समूह की सक्रिय सदस्य होना
2. बुद्धिमान बालकों से मित्रता
3. नेतृत्व का गुण
4. समूह से अच्चा व्यवहार
5. सदैव प्रसन्नचित रहना
6. महत्वाकांक्षी
7. खेलकूद और बाह्य कार्यों में रूचि
8. साहस पूर्ण कार्य के लिए सदैव तैयार
9. छोटे बड़ों से उपयुक्त व्यवहार करना
10. विपरीत लिंग वालों से अच्छा व्यवहार करना

निषकर्षतः यह कहना उचित होगा कि प्रतिभाशाली बालक की पहचान करना एक जटिल कार्य है किसी एक परीक्षण या विधि से किसी की गुण की सीमा का मापन किया जा सकता है परन्तु केवल एक ही गुण से सम्बंधित नहीं है। वह तो एक गुणों का समूह है। अतएव किसी ऐसे परीक्षण या विधि की आवश्यकता होती है जो सब गुणों को समान रूप से माप सके।

संदर्भित – आधार–ग्रंथ

1. शिक्षा का तुल्नामक अध्ययन
2. शिक्षा का समाजशास्त्रीय आधार
3. शिक्षा एवं मनोवैज्ञानिक स्वरूप
4. शिक्षा एवं तकनीकी
5. भारत में श्शैक्षणिक व्यवस्था का विकास
6. शिक्षा के परिदृश्य

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

वनवासी ग्रामीणों की सामाजिक संरचना
(संदर्भ:पन्ना राष्ट्रीय उद्यान)

शिवानी राय
शोधार्थी, समाजशास्त्र एवं समाजकार्यविभागडॉ. हरिसिंह विश्वविद्यालय सागर

आवश्यकता का आधार ही समाज का निर्माण करते हैं। मानव एक सामाजिक प्राणी है। इसकी पहली आवश्यकता एक दूसरा व्यक्ति या कुछ व्यक्ति हैं। और यही कुछ व्यक्ति मिलकर आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये सामाजिक संरचना का निर्माण करते हैं।

भारतीय ग्रामों की सामाजिक संरचना गांव में निवास करने वाले व्यक्तियों के आन्तरिक संबांधों एवं समुदायिक व्यवस्था पर निर्भर करती है। भारतीय समाज की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है। ग्रामीण भारतीय समाज में सांस्कृतिक विशेषताएं स्थान और संस्कृति के आधार पर सामाजिक संरचना जटिल एवं सरल होती है। भारतीय ग्रामीण सामाजिक संरचना का अर्थ विभिन्न समाजशास्त्रीयों ने किया है जिनमें मक्समूलर, लोवर्ड, रैडफील्ड, सिंगर,एम.एन. श्रीनिवास, डॉ. एल.सी. दुबे, डी.एन. मजूमदार और वी.आर. चौहान प्रमुख हैं। गांव में सामान्य जातियों एवं जनजातियों का निवास जनसंख्या की अधिकता एवं कमी, सांस्कृतिक जटिलता परस्पर लगाव, शहर से दूरी भौगोलिक बसावट आदि बिशिष्टताएँ सामाजिक संरचना को प्रभावित और परिवर्तित करती हैं।

सामाजिक विद्वानों में सामाजिक संरचना की अवधारणा का विभिन्न विद्वानों ने विस्तार उल्लेख किया हैं। इस संदर्भ में विभिन्न विद्वानों ने विचारों में मतभेद भी पाया जाता है।

सामाजिक से हमारा तात्पर्य व्यक्तियों के मध्य विद्वान वास्तविक संबंधो से हो अथवा प्रत्याशा की एक व्यवस्था से अथवा आदर्श नियमों के एक संगुज से इस बात से स्वीकारा जा सकता है कि सामाजिक संरचना का तात्पर्य उस स्थिति से है जो समाज में अविरल बनी हुई होती है। यदि एक अपरिचित व्यक्ति मार्ग में अन्य व्यक्ति से कोई जानकारी चाहता है तो अपरिचित व्यक्ति के साथ संबंध को सामाजिक संरचना के एक आयाम के रूप में संज्ञा नही दी जा सकती लेकिन हमारे माता–पिता, भाई–बहिन, चाचा, ताउ आदि के साथ संबंध सामाजिक संरचना के आयाम हैं तथा हमारा दायित्व अधिकार ओर कर्त्तव्य जो कि इस संबंध से संबंध हैं, वे भी इस आयाम के एक भाग के रूप में हैं। समाज में इन संबंधो की एक व्यवस्था का होना आवश्यक है। बगैर व्यवस्था के कोई सामाजिक संरचना अस्तित्व में नहीं रह सकती हैं।

सामाजिक संरचना का निर्माण समाज की विभिन्न इकाईयों जैसे परिवार व्यवस्था, विवाह प्रणाली, धर्म, जाति परम्परा, शिक्षा आदि।

सामाजिक संरचना के संबंध में पारसंस का कहना है कि ''सामाजिक संरचना परस्पर संबंधित संस्थाओं, एजेंसियों और सामाजिक प्रतिमानों तथा साथ ही समूह में प्रत्येक सदस्य द्वारा ग्रहण किये गये पदों तथा कार्यों में विशिष्ट कमबध्दता को कहते हैं''। सामाजिक संरचना के संबंध में रैडक्लिफ ब्राउन कहना है कि ''सामाजिक संरचना के अंग या भाग मनुष्य ही हैं और स्वयं संरचना द्वारा परिभाषित और नियमित संबंधों में लगे हुयें व्यक्तियों की एक कमबद्धता हैं।''

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने बुंदेलखण्ड में स्थिति पन्ना जिले के ग्रामीण परिवेश का अध्ययन किया है। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान पन्ना एंव छतरपुर जिले की सीमा के अंतर्गत बना हुआ हैं। शोधार्थी द्वारा चयनित अध्ययन क्षेत्र पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के ग्राम हें जो वर्तमान समय मं विभिन्न समस्यमूलक परिस्थियों के मध्य निवास कर रही हैं। शोधार्थी ने समस्याओं का समाजशास्त्रीय परिस्थितियों के मध्य निवास कर रही हैं। शोधार्थी ने समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन करने के लियें पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के ग्रामो का इतिहास सामाजिक व्यवस्था और स्थानीय परिस्थितियों का गहन अध्ययन किया हैं। समस्याओं के प्रति समझ विकसित करने में सामाजिक मूल्यों और प्रतिमानों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। डॉ.एस.सी. दुबे का विचार है कि ''प्रत्येक भारतीय गॉव का एक

इतिहास होता हैं। अतः प्रत्येक गांव को अन्तः ग्रामीण संरचना को समझने के लिए लघु स्तर पर अनेक हिस्सों में गॉवों का अध्ययन करके हम गॉवों के विभिन्न पक्षों एवं विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा उनके आधार पर भारतीय गॉवों के बारे में सामान्यीकरण प्रस्तुत कर सकते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के गॉवों की ग्रामीण सामाजिक संरचना को समझने के लिए निम्नलिखित बिन्दओं पर अध्ययन किया हैं –

1. ग्रामवासियों के मध्य परस्पर अन्तः संबंधों की स्थापना
2. सामाजिक व्यवस्था एवं विशिष्टताएँ
3. व्यक्ति एवं विचार मूलक विशिष्टताएँ
4. स्माजिक संस्तरण
5. परिवारिक विशिष्टताएँ
6. विवाह
7. शिक्षा का स्वरूप
8. सामाजिक प्रथाएँ
9. अन्य

(1) ग्रामवासियों के मध्य परस्पर सम्बन्धों की स्थापना

भारतीय गॉवों की सामाजिक संरचना के अध्ययन के लिए विभिन्न विद्वानों ने ग्रामवायिों की आवश्यकता, आवश्यकता पर आधारित एवं विभिन्न अन्तः सम्बन्धों की स्थापना का अध्ययन किया हैं। जिनसे ग्रामवासियों के मध्य परस्पर सम्बन्धों से संरचनाए और संस्थायें विकसित हुई हैं। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के अन्तर्गत बसे हुये चयनित ग्राम की ग्रामीण सामाजिक संरचना को समझने के लिए शोधार्थी ने परस्पर अन्तः संबंध में विभिन्न पक्षां एवं विशेषताओं को समझने का प्रयास किया है। ग्रामों मे निम्न सामाजिक स्थिति में विशेषताओं को समझने का प्रयास किया हैं। ग्रामों में निम्न सामाजिक स्थिति में सबसे पहले संस्तणीकरण व्यवस्था दूसरा स्थानीय आवश्यकता और संस्कृति के आधार पर निर्मित सामाजिक व्यवस्था का स्वरूप महत्वपूर्ण विशेषता हैं। गॉव में व्यक्ति से व्यक्ति के बीच में एवं एक जाति के व्यक्ति से दूसरे जाति के व्यक्ति के मध्य और एक गॉव से दूसरे गॉव के व्यक्ति के मध्य भी विभिन्न आवश्यकताओं को दृष्टि में रखते हुए परस्पर सामाजिक सम्बन्धों की स्थापनाएं हुई है।

सामान्यतः ग्रामीण वासियों के मध्य अपेक्षाकृत अधिक सरल और स्पष्ट अन्तः संबंध पायें जाते है। वे परस्पर एक दूसरे को संरक्षण और सुरक्षा प्रदान करते हैं।

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के अंतर्गत ग्रामीणवासियों में कुछ विशिष्ट आवश्यकता पूर्ति के साधन और स्थानीय संरचनायें विकसित हुई हैं। जो स्थानीय पर्यावरण और संसाधन पर आधारित हैं। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के अंतर्गत उपलब्ध समिति साधन आवागमन के साधनो का अभाव, व्यवसाय का अभाव, जंगली जानवरों से सुरक्षा आदि ऐसी विशेषताएँ है जिन्होंने अनेक प्रकार के परस्पर संबंध के विकास के लिये एक दूसरे को प्रेरित किया है ऐसे कई उदाहरण अध्ययन के दौरान शोधार्थी को मिलते है जिससे वे जिससे वे परस्पर वे एक दूसरे के लिये कार्य करते है। यथा साथ में जंगल जाना वनोंपज उत्पादनों का संग्रह करना, निकटस्थ बाजार जाने पर एक साथ कई परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करना परस्पर आवश्यकतानुसार एक दूसरे के घरों की रखवाली करना और किसी सामाजिक उत्सव या विपिदा की स्थिति में अपने दैनिक जीवन में एवं विकास के कार्यों को छोड़कर (यहॉ तक की मजदूरी भी छोड़कर एक दूसरे की मदद के लियें शामिल होते हैं) ये ग्रामवासी शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधा, पेयजल जैसी बुनियादी आवश्यकताओं के अभाव के बावजूद उपलब्ध स्थिति का उचित उपयोग कर अधिक से अधिक दोहन करते हैं। ग्रामवासियों ने आवश्यतानुसार शासन एवं जनता के प्रतिनिधि से समय–समय पर अपनी मॉगे प्रस्तुत की। इतना ही नहीं यह उल्लेखनीय है कि उन्होंने स्थानीय स्तर पर कुछ ऐसे मूल्य और प्रतिमान विकसित हुए है जिससे प्रभावित होकर ग्रामवायिों ने आपस में मिलकर शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में परस्पर महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिये पढ़े–लिखे नवयुवक द्वारा स्थानीय स्तर पर अशिक्षित प्रोढ़ों महिलाओं एवं बच्चों को शिक्षित करने का कार्य छोटे स्तर पर कई स्थानों में किया जाता हैं। इसी प्रकार अस्वस्थ्य होने पर स्थानीय स्तर पर देशी दवाओं की उपलब्धता और निकटस्थता स्वास्थ्य केन्द्र तक पहँचाने का सहयोग भी गामवासी द्वारा एक दूसरे के लिये किया जाता हैं। अध्ययन के दौरान बातचीत के समय शोधार्थी को इन बिन्दुओं पर उल्लेखनीय उदाहरण कई स्थानों पर प्राप्त हुए और ऐसा सब

कुछ इसलिए संभव हो सका क्योंकि इनके मध्य परस्पर सकारात्मक अन्तः संबंध प्रभावशाली रूप से बने रहें। वे एक दूसरे से हितों की पूर्ति हेतु स्वार्थ रहित भाव से कार्य करने के लिये हमेशा परस्पर रहते है।

(2) सामाजिक व्यवस्था एवं विशेषताएँ

ग्रामीण जीवन की सामाजिक व्यवस्था सामान्यतः से नगरीय व्यवस्था से विपरीत और स्थानीय समूदायिक संस्कृत पर आधारित व्यवस्था होती हैं। पन्ना राष्ट्रीस उद्यान के अंतर्गत ग्रामों की स्थिति समस्या मूलक विशेषताओं पर आधारित हैं। इसलिये यहाँ की व्यवस्था भी समाधान मूलकों पर आधारित हैं। अधिकांश ग्रामवासी गरीब एं अति गरीब की श्रेणी में आते हैं और विभिन्न विशिष्ट समस्या होने के कारण यथा पुर्नवास की पहल, अशिक्षा, अज्ञानता, असुरक्षा की भावना, आवश्यक साधनों का अभाव ऐसी सामाजिक संरचनाओं का विकास हुआ हैं जिससे समाज में समाधान मूलक सामाजिक व्यवस्था विकसित की जा सकें या इस दिशा में इस हेतु प्रयास सुनिश्चित किया जा सकें।

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के ग्रामों में सामाजिक व्यवस्था विकसित की जा सकें या इस दिशा में इस हेतु प्रयास सुनिश्चित किया जा सकें।

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के ग्रामों में सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत जिन विशिष्टताओं की जानकारी हुई वे निम्नलिखित हैं –

(1) पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के अंतर्गत स्थिति ग्रामवासी का प्रकृति से अति निकट का संबंध हैं। अपनी जीवन चर्या के लिये अत्यंत बड़ै पक्षा में प्रकृति पर निर्भर होता है। वह सूरज की रोशनी में उठना ही और सूरज की रोशनी खत्म होने से पूर्व ही वह अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर विश्राम के लिये चला जाता है। दिन भर वह जंगल के वृक्ष, पशु, मिट्टी, खेत, वनस्पति, जल, नदी, आकाश, वायु और प्रकृति प्रदत्त जलवायु के मध्य ही निवास करता है। ये अत्यंत गरीब हैं। सिंचाई के साधन के लिये भी ये प्राकृतिक प्रयासों पर ही आधारित होते हैं और वर्षा का जल ही वनों के लिये सिंचाई का एक मात्र साधन होता है।

(2) ग्रामवासी प्राकृतिक संपदा से अत्यधिक निकट होने के कारण उनकी जीवन पध्दति की विचारधारा में प्राकृतिक तत्वों का महत्वपूर्ण स्थान हो जाता हैं परिणामस्वरूप प्राकृति के अंग पशु पक्षी, नदी पहाड़, तलाब, भूमि आदि को देवता मानकर संस्कृति परम्पराओं का निर्माण होने लगता है।

ग्रामवासियों की सामाजिक व्यवस्था इन्हीं कारणों से धर्म प्रधान होती हैं।

(3) पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के अंतर्गत ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था समुदाय का आधार नगरीय एवं अन्य ग्रामीण साम्प्रदायिक आधारों की तुलना में अत्यंत छोटा होता हैं। ये ग्रामीणवासी छोटे–छोटे संख्या और आकार में निवास होते हैं। जिन्हें राबर्ट रेडफील्ड ने लघु समुदाय से संबोधित किया हैं। ग्रामीण समुदाय के संदर्भ में टी. लेनन स्मिथ ने लिखा है कि ''लघु संप्रदाय और ग्रामीण संप्रदाय एक दूसरे के पर्याय बन गय हैं।''

(4) यहाँ के ग्रामीणवसियों का मुख्य व्यवसाय कृषि हैं। जिसे वे परम्परागत रूप से करते हैं। ग्राम जीवन में कृषि और वनोपज का संग्रहण ही इनकी अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है। वर्गके मध्य निवास करने के कारण यहाँ ऑवला, बेल, तेंदू, हर्राबहेर्य, चिनौंजी गोंद, शहद, मूसती, सतावर, नागमूथा, महुआ एवं डोरी लघु वन उत्पाद अत्यधिक मात्रा में पाया जाता है। स्मिथ ने लिखा है कि कृषि एंव संगृह कार्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था के आधार हैं। ''कृषक एवं ग्रामीण प्रायः पर्यावाची हैं'' स्पष्ट होता हैं कि ग्रामीण ही कृषक है आर कृषक ही ग्रामीण हैं। गॉव में निवास करने वाले व्यक्ति और उनके परिवार के सदस्य कृषि जैसे परम्परागम व्यवस्था में समान रूप से सहयोग करते हैं और हाथ बटाते है। इस प्रकार व्यवसाय को आधार मानते हुए ग्रामीण परिवारों कें संदर्भ में नेल्सन ने उचित ही लिखा हैं कि कृषि एक पारिवारिक व्यवसाय है। अतः हम स्पष्टतः कह सकते हैं कि पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के अन्तर्गत स्थित सामाजिक व्यवस्था, कृषिकों की एक सामाजिक व्यवसाय है। जो कृषि पशुपालन और वनउत्पाद संग्रह पर आधारित हैं। ग्रामीण समुदाय अधिआत्मिक और परिवारात्मक हैं।

(5) पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के अंतर्गत स्थिति ग्रामों जनसंख्या का घनत्व कम अत्यंत कम हैं। इसी वजह से ग्रामीण समुदाय एक पृथ इकाई बन गया

है। यह पृथकता ही कारण है। जिसकी वजह से यहाँ स्कूल, कालेज, अस्पताल, बाजार आदि विभिन्न सुविधाओं का अभाव पाया जाता हैं। इन ग्रामों में परस्पर प्राथमिक संबंध पायें जाते है एवं कई क्षेत्रों में (व्यवसाय, जाति, शिक्षा) प्रायः समानता भी पाई जाती हैं। विशेषता यह भी है कि इनमें कार्य और व्यवसाय की अनेक विभिन्नताएँ भी पाई जाती है। (कुम्हार, बढ़ई, लोहार, चमार आदि) जिसमें उपजाति विभाजन के साथ–साथ कार्यो की विभिन्नता भी पाई जाती है।

(6) ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत यहाँ के ग्रामीण समाजों में गतिशीलता बहुत कम हैं। इसलिये परिवर्तन की गति भी अत्यधिक धीमी है। अस्थाई प्रवासिता (मजदूरी करने के लिये) पाई जाती हैं। यहाँ अत्यधिक सामाजिक एकता होती है। जो समय उद्देश्य और समय अनुभवों पर आधारित होते है।

इस प्रकार पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के अंतर्गत ग्रामों की सामाजिक व्यवस्था में उपर्युक्त विशिष्टताओं के साथ–साथ संयुक्तत परिवार प्रणाली, जजमानी प्रथा, धर्म को अधिक महत्व भाग्यवादिता, जैसी विशिष्टताएँ भी उपलब्ध हैं।

Refrense :

1. Parsuns Talcott-Essays in sociological Theory pp. 89-103
2. Brown R. – A frican system of Kinship and marriage, p. 82
3. Dube s.c. : Social structures and peasant Communitie,Rceral sociology in India: A.R. Desai P. 201-202

4. विद्यार्थी, एल.पी. एण्ड बी.के. राय	ट्राइबल कलचर आफ इंडिया,	कंसेप्ट पब्लिसिंग कंपनी : 1976 नई दिल्ली
5. सक्सेना के.बी.	ट्राइबल डेवलपमेंट इन बिहार	: टी.आर.आई. बुलेखि : 1983 रॉची
6. सुषमा प्रसाद	ट्राइबल वूमैन लेबटर्स असपेक्टस ऑफ फिजिकल एक्सप्लाएटेशन	: 1988 : कंसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली
7. सिंह, जें.पी.एम.एन. व्यास एण्ड आए.	ट्राइबल वोमेन एण्ड डिवलपमेन्ट, राजस्थान	टी.आर.आई. : 1985,एस. मान
8. उपध्याय विजय शंकर एवं पाण्डेय गया	''जनजातीय विकास''	2002 : हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल अंग्रेजी हिन्दी शब्द कोष 1988

A Study on Academic Achievement in relation to Intelligence of Higher Secondary Students

Dr. Pallabi Saikia

Abstract : The main purpose of the present study is to find out the relationship between intelligence and academic achievement of students of class-XII. Further the paper is also expected to study the levels of intelligence and academic achievement of students. Sample for the study consisted of 100 class- XII (arts stream) students of Sonitpur district of Assam. The sample were selected with the help of simple random sampling method. For collecting the data of level of intelligence, the investigator has used "Mixed type Group Test of Intelligence" developed by Dr. P.N.Mehrotra. For analysis the data percentage calculation and correlation techniques were used. The study found that there is a significant relationship between intelligence and academic achievement of students. The study also revealed that maximum students have the average level of intelligence and maximum students have the low level of academic achievement.

Key word : Intelligence, Academic Achievement.

Introduction : In general terms, intelligence means the manner with which an individual deals with facts and situations. Intelligence is the ability of an individual to cope with his environment. It is a general term referring to the ability or abilities involved in learning and in adaptive behavior. It may be thought out as a composite of an organization of activities to learn, to grasp broad and subtle facts especially abstract facts with alertness and accuracy to exercise mental control and to display flexibility in seeking the solutions of problems. Intelligence has minimum of two components- the ability to adapt to the environment and the ability to learn from previous experience.

Academic achievement occupies a very important place in education as well as in learning process. It is the level of performance in school subjects as exhibited by an individual. Test scores or marks assigned by teachers are indicators of this achievement. Besides many changes in the aims and practices of education it still stresses the significance of academic achievement. Quality of an educational institution mainly depends on the performance of students in academic and non-academic field.

Achievement is the end product of a learning experience. Academic achievement or performance is the outcome of education- the extent to which a student, teacher or institutions has achieved their educational goals. Attaining a high level of academic performance is what every parent or guardian as well as teacher wishes for their children, wards and students. Schools and teachers are generally graded qualitatively by achievement based on the performance of their students. Academic achievement is the criteria for assessing the learning outcome. It is the process of measuring the behavioral change of the students at the end of any instruction. This parameter categories the students as low, average and fast learners.

Literature Review :

A number of studies have already been conducted on intelligence and academic achievement. The investigator presented few studies as review below-

Chandra, R. and Azimmudin, S. (2013) carried a study on the influence of intelligence and gender on academic achievement of secondary school students of Lucknow city. The objectives of the study were to study the influence of gender on academic achievement of secondary school students and to study the influence of intelligence on academic achievement of secondary school students. The sample of the study consisted of 614 students (358 males and 256 females) from ninth and tenth class of fourteen schools of Lucknow city of Uttar Pradesh (India). Intelligence was measured by Dr. G.C.Ahuja"s Group test of Intelligence and socio-economic status was measured by socio-economic status scale by Dr. Meenakshi (2004).The findings of the study revealed that there is a significant influence of

intelligence on academic achievement. The child with high I.Q. has better academic achievement than the child with average I.Q. whereas gender has not significantly influenced the academic achievement.

Dua, S. (2013) examined on academic achievement in Economics and intelligence of students of senior secondary schools. The objectives of the study were to study the relationship of achievement in Economics with the cognitive variables, i.e. intelligence and to study the difference in the achievement in Economics due to high and low level of intelligence. The study was conducted on the 515 students of senior secondary stage (227 male and 238female) from five districts of Punjab State. The tools used in the study were Group Test of General Mental Ability by Tendon, 1971 and Achievement Test in Economics by Sharma, 2002. Mean, Standard Deviation and t-test were used for analyse the data. The study reported that there exists positive and significant relationship between academic achievement in Economics and intelligence. It was also revealed that there is significant difference in the achievement in Economics due to high and low level intelligence.

Mudasir, H. and Yatu, D. S. (2013) carried a comparative study of intelligence and academic achievement of Kashmiri and Pakhtoon students. The objectives of the study were to measure the intelligence of Kashmiri and Pakhtoon school going boys and girls, to measure the academic achievement of Kashmiri and Pakhtoon school going boys and girls, to compare the academic achievement and intelligence of boys and girls of Kashmiri and Pakhtoon school students. The sample of the study comprised of 120 Kashmiri and Pakhtoon students (both boys and girls) drawn from the government schools in the Kashmir valley. Mehrotras Mixed Type Group Test of Intelligence was used for data collection. For analysis the data mean, standard deviarion and t-test were used. The study reported that Kashmiri students are more intelligent than the Pakhtoon students. The girls of Kashmiri and Pakhtoon schools were more intelligent than the boys of the respective schools. The Kashmiri boys were more intelligent than the Pakhtoon boys. The Kashmiri girls were more intelligent than Pakhtoon girls. Kashmiri students showed better academic achievement than Pakhtoon students and Kashmiri boys showed better academic achievement than Pakhtoon boys. Kashmiri girls showed better academic achievement than the Pakhtoon girls. Boys and girls of Kashmiri schools showed similar academic achievement.

Objective of the study :

1. To find out the levels of intelligence of students of Class- XII. .
2. To study the academic achievement of students of Class-XII..
3. To find out the relationship between intelligence and academic achievement of students.

Hypothesis of the study :

Ho_1-There is no significant relationship between intelligence and academic achievement of students.

Method and Sampling Design

The study was conducted under the normative survey method. The population of the study comprises of all the Arts Stream students of Provincialized higher secondary schools of Sonitpur District of Assam. 100 students were selected as the sample with the help of simple random sampling method for the study.

Tool for Data Collection :

To study the levels of intelligence of students the investigator has used “Mixed type Group Test of Intelligence” developed by Dr. P.N.Mehrotra. In this test intelligence of students are classified into seven levels with the corresponding scores from low to high.

Academic achievement of the students are categorized into three levels as High, Average and Low according to their obtained average mark in the board examination. Those students who have obtained first division (Division-I, i.e. average marks 60 and above) are considered as high level

of academic achievement. Those students who have obtained second division (Division-II, i.e. average marks 45 to 59) are considered as average level of academic achievement and those students who have obtained third division (Division-III. i.e. average marks 30 to 44) are considered as low level of academic achievement.

Statistical Methods for Analysis of Data

The investigator has analyzed the data with the help of – Percentage and Pearson Product moment Coefficient of Correlation.

Results and Discussion

Objective-1

After getting the individual scores, the level of intelligence of the students are found on the basis of the norms given in the test manual. Accordingly scores are categorized into seven levels . The result is shown in the below Table - 1.

Table - 1
Levels of Intelligence of the Students.

Levels of Intelligence	No. of Students	Percentage
Very Inferior	0	0
Inferior	2	2
Dull Average	18	18
Average	53	53
Bright Average	15	15
Superior	12	12
Very Superior	0	0
Total	100	100

It is found that there is no student in the very inferior level of intelligence. Out of the total students, 2 percent is in the inferior level, 18 percent is in the dull average level, 53 percent is in the average level, 15 percent is in the bright average level, 12 percent is in the superior level and there is no student in the very superior level of intelligence.

Objective - 2

The collected data are classified into three categories as low, average and high. The numbers of students showing in each category having different levels of academic achievement are presented in the following table.

Table-2
Distribution of Students on the basis of Levels of Academic Achievement

Levels of Academic Achievement	No. of students	Percentage (%)
Low	53	53
Average	32	32
High	15	15
Total	100	100

It is observed that 53 percent of the students have the low level of academic achievement, 32 percent have the average level and 15 percent have achieved the high level of academic achievement.

Objective - 3

To find the relationship between intelligence and academic achievement of the students Pearson Product Moment correlation is applied. Here, correlation between total intelligence score and academic achievement of the students is found and shown in the table- 3.

Table- 3
Relationship between Intelligence and Academic Achievement.

Variables	No. of Students	r	Significance Level
Academic Achievement	100	.642**	.01
Intelligence	100		

It is observed that the coefficient of correlation between overall intelligence and academic achievement of the students is .642**, which is positive and also significant at .01 level. It indicates that there is a significant relationship between intelligence and academic achievement.

Major Findings

1. It is observed from the study that maximum students have the average level of intelligence.
2. It is observed that maximum students have the low level of academic achievement.
3. The study found that there is a significant relationship between intelligence and academic achievement of students.

Conclusion : Academic achievement occupies a very important place in education process. Academic achievement or performance is generally regarded as the display of knowledge attained or skills developed in the school subject. It is the level of performance in school subjects as exhibited by an individual. The findings of the present study have great implications for the parents, teachers and guardians on the process of identification and proper understanding of the student's home environment and their level of intelligence and guide them accordingly to achieve desirable academic achievement. The students studying in higher secondary level of education are of adolescence. A nation's destiny depends on this age group of people. Intelligence is one of the important factor which have significant influence on the academic achievement of students.

Referrences :

Ahuja Ram (2003): *Research Methods*. Second reprint, Joypur, New Delhi: Rewat Publications.

Asthana, Bipin (2007): *Measurement and Evaluation in Psychology and Education*. Agra: Vinod Pustak Mandir.

Baruah, Santanu Kaushik (2013): *Assam Year Book.* 6 th edition. Guwahati- 781001: Jyoti Prakashan, Panbajar.

Basu, B.D. (1989): *History of Education in India.* New Delhi: Cosmo Publishers

Best, J.W. (1983) :*Research in Education*. 7th edition. . New Delhi: Prentice Hall of India Pvt. Ltd.

Chandra, R. and Azimmudin, S. (2013): Influence of Intelligence and Gender on Academic Achievement of Secondary School Students of Lucknow City. *Journal ofHumanities and Social Sciences.*vol-7, issue-5, pp- 9-14.

Dua, S. (2013): Academic Achievement in Economics and Intelligence of students of Senior Secondary Schools. *Golden Research Thought Journal.* vol- 3, issue-6, pp-1-2.

Mudasin, H. and Yutu, D.S. (2013): A comparative study of Intelligence and Academic Achievement of Kashmiri and Pakhtoon Students. *Journal of Indian Research*.vol- 1, issue- 2, pp- 108-113.

A Role Of Co-operative Bank In Financial Inclusion In Rural Area Of India

Mrs. Bhawna Ujjaliya
(Scholar) School of Studies in Economics, Vikram University Ujjain

Abstract : The Co-operative banks are a most important or most powerful factor in order to financial inclusion it is plays a vital role in the development of financial inclusion of a country like an India. Because An Indian economy is an agricultural and rural economy and co-operative bank in essential to ensure that a range of financial services is available to every individual.

Keyword:Co-operative system, Development, Financial inclusion, Indian economy, Financial, service, Rural Area, Poverty, Disadvantages, etc.

Introduction: The Co-operative bank is an important tool of financial inclusion and reduce of financial exclusion in Indian economy in order to uplift rural areas .it has been acknowledged that the development of a healthy national financial is an important goal of financial inclusion and development of Indian economy. Where co-operative banks service is very good .it is help the villagers ,the poor in them habit of saving it helps them to raise income, be self dependent built up assets and have a better life and better standard of living.

Meaning ofFinancial Inclusion: financial inclusion is the delivery of financial services at affordable cost to vast section of disadvantaged and low income groups.

Why financial inclusion in India is important :The policy maker has been focusing on financial inclusion of Indian rural and semi- rural areas primarily for three most important processing needs:-

1) Creating a platform for inculcating the habit of save money.
2) Providing formal credit avenues.
3) plug gaps and leak in public subsidies and welfare programs .

Objective of the study : To study a role of co-operative banks in financial inclusion and development of co-operative credit structure in rural areas in India .

Table-1

Credit flow to agriculture by the co-operative banks

Year	Target	Achievement
2010-2011	3750	4683
2011-2012	4750	5110
2012-2013	5750	6074
2013-2014	7000	7116
2014-2015	8000	8406

Source: NABARD Report

It is being manifested table no. 1credit flow to agricultural by theco-operative banks 2010-2011 in 3750 crore ,2013-2014 in7000 crore, and 2014-2015 in 8000 crore, it is being increased to year to year.

Table-2

Year	Disbursement of Credit	Growth in %
2006-2007	42480	-------
2007-2008	48258	13.60
2008-2009	46192	4.28
2009-2010	63497	37.46

Source:-NABARD Report

It is being manifested table 2, disbursement of agricultural credit by co-operative bank 2006-2007 in 42480 Crore, 2008-2009 in 63497 crore and 2009-2010 in 63497 crore it is being too increased to year to year.

Conclusion: The co-operative banks and primary credit societies are supply to the agriculture sector in rural area co-operative banks are providing more than 60% credit to the agro purpose in the rural areas, co-operative banks should be increased the credit supply to agricultural sector .financial health of the co-operative credit institution particularly the rural co-operative has been found to be poor by several committees.

Indian co-operative structure are one of the largest such networks in the world with more than 200 millions members. It has about 67% penetration in villages and found 46% of the total distribution of rural fertilizers and 28% of rural fair price shops. Financial inclusion is taken in Indian economy by virtue of co-operative banks.

Reference:

- Annual report of Nabard bank 2005-2015
- "Agricultural credit, sources problems and issues", Balwinder singh,published by deep publication pvt.ltd.
- Jha mithilesh kumar. (2012) "Micro Finance And Rural Development "
- www.co-operative bank Ltd.
- www.NABARD.org.

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

Development of Buddhism during Kushans

IQRA MAJID MIR

RANI DURGAVATI UNIVERSITY JABALPUR

ABSTRACT : This paper brings light on the nature, appearance, chronological version to clarify the progress of Buddhism in Kashmir. This paper also highlighted the spirit and development of Mahayanism. The significance of Kashmir to Buddhism is very immense. A rightly said by Yuan-chwang that "Kashmir is one of the most important lands in the spread and development of Buddhism."This paper evaluates historical background of it and its philosophy which was once practiced in Kashmir. kushan dynasty also tried enough to patronize Buddhism as well as to develop this faith.

KEYWORDS : Buddhism, kanishka, Mahayanism, Buddha.

Introduction : With the coming of the Kushans, Buddhism received a fabulous support. There is no denying in the fact that during the rule, the Buddhism enjoyed Royal Patronage. Kushans made a vital contribution to the art and religion of the India. Kushan dynasty occupies a imperative position in the cultural history of India. [1]

Nilamatpurana mentions Huska, Juska, Kanishka as Kushan kings of Kashmir.[2]Kalhan's Rajtarangnimentions Kanishka as a ruler of Kashmir and also mentions that helaid the foundation of a town Kanishkapur.[3] According to Nilamatpurana Kings Huska, Juska , and Kanishka constructed various Viharas, Mathas, and Chaityas. [4]According to Rajtarangni Juska is said to have built a Vihara at Juskapura, a village to the north of Srinagar and also was the founder of Jayasvamipura.[5] Huska has been mentioned to have built a vihara at Huskapura, mentioned as Hu-se-kia by Hiuen tsang. Presently known as Ushkar now is situated near Baramulla, Kashmir.[6]

Kashmir wasincorporated in the extensive dominions of the grand Kushan dynasty is a fact sufficiently attested bythe combined evidence of the Buddhist records and the coin, copperpieces of Kanishka and Huvishka being found in profusion at many of the old sites in Kashmir.[7]

According to the Budddhist tradition, Kanishka held the Third Budddhist Council in Kashmir and Hieun tsang on his visit to the Valley found still the memory of that ruler fully alive in the Kingdom. The esteem and the supremacy enjoyed by Buddhism in Kashmir, under the bend of Turkish Kings, as observed by Kalhana,is historically correct.[8] It is fact that Buddhism witnessed Golden age in Kashmir in the time of the Kushans who ruled in the first and second centuries of the Christian era. During this period Buddhism attained great reputation and Buddhists has a master hand in the administration. The Kushan rulers covered the valley with monasteries and other revered foundations.[9]

As Nilamatpuranamentions construction of many Viharas during the rule of Kushan Kings.[10] Also mentioned by Kalhana in his Rajtarangni the construction of many Viharas in Kashmir. It appears that at Harwan and Ushkar Viharas came intobeing during the Kushan period for these sites have capitulatemany relic of Kushanaffiliation.[11]Fortunately,itsduring Kanishka's rule that fourth Buddhist Council was held at Kundalwan in Kashmir [12]. It is said that Council sat for six months and made arduous efforts to bring into order the scattered sayings, theories and dictums of various doctors of the law. The texts of the Tripitika were composed and the Council "composed 100,000 stanzas of upadesh-sastras explanatory of the story of the vinaya, and 100,000 stanzas of Abhidharma vibhasa sastra, explanatory of the Abhidharma vibhasa sastra, explanatory of the Abhidharma. For the exposition of Tripitika all the learning from remote antiquity was thoroughly examined; the

general sense and the terse language was again and again made clea and distinct and learning was widely diffused for the safe guiding of the disciples."

Kanishka, there upon ,got the text of the discourses carved on sheets made of red copper, which after having been sealed in stone boxes were stored in a Stupa to be guarded by the yakshas.[13] This Council was attended by 500 Arhats, 500 Boddhisattvas, and 500 pandittas.The holding of this council was big occasion in the history of Buddhism and conferred great regard on the valley as a seat of Buddhist learning. [14] The main aim was to collect Manuscripts and to write commentaries on them. Vasumitra acted as the president of the Council while the famous author Asvaghosh was appointed vice president. Asvaghosh the celebrated author Buddhacarita,theSaundrananda, and the Sariputra- prakarana, attended this council.

The most marvelous result of Kashmir council was to give an individual authority to all the warring schools. But this decision of the council was criticized by Sir Charles Eliot, by saying that the decision was political rather than logical. But there is no doubt in it Fourth Buddhist Council gives new direction to the Buddhism and due to this council Kashmir also got significance.In this council Buddhism was divided into two sects -the Hinayana and Mahayana.[16]

During the reign of Kanishka Mahayana Buddhism gained superiority The followers of this faith began to worship Buddha as a God and they even made his idols for worship. The Mahayanists adopted Sanskrit and sermonized in it. The followers of this faith began to worship the 'Bodhistavas' along with Buddha. The Bodhistavas werethose blessed Buddhists who had not yet get Nirvana like Buddha but who were going on rapidly towards it.[17]

The story of wonderful role played by Kashmir in the expansion of Mahayana and its spread in Central Asia, Tibet, China.This new faith attracted scholarsand pilgrims from far-flung lands who studied the Buddhist texts at the feet of the learned pundits of theValley.[18] Mahayanism achieved much name and fame in all lands and reached at the utmost point.[19]

Kashmir enjoyed the esteem of being the holy pilgrimage-spot, of Mahayana Buddhism.The Mahayana Buddhism hadultimate features that attracted the attention of followers from far-flung countries.It became popular to such a extent that it even converted masses from Hindu sects. Mahayanism made ultimate progress during their reign.[20] According to YuanChuang," Almost 500 Saints and Sages visited Kashmir during Kanishka's rule." [21] According to Chinese travelers and of Paramartha, refers during the Kushan period many Scholars, Teachers, Writers live in Kashmir namely Asvaghosha, Katyaniputra,Vasubandhu, Vasumitra, Dharmatrata, Sanghabhadra, Visudhasimha, Jina bandhu, Sugatamitra, Suryadeva, Jinatrata, etc.[22]

According to Kalhana the powerful reign of these Kushan Kings the land of Kashmir was in the possession of the Bauddhas, who by practicing the law of religious mendicancy (pravrajya) had acquired great eminence. Kalhana alsomentionsduring Kushans reign a Bodhisattva lived in this country named Nagarjuna who resided at Sadarhadvana.[23]

Conclusion : During Kushan rule Buddhism made immense development in Kashmir. No doubt in it that Kanishka is remembered in the history of Buddhism like thegreat King Ashoka. Like Ashoka he also tried to extent the boundaries farand wide. Kushans did everything for development of this faith.Its really worthsome that Kushans held the Foutrh Buddhist Council in Kashmir. Kanishka did their best efforts for spreading this faith not only in India but abroad also. The Kanishka's Missionaries did ultimate efforts for spreading their new outlook of Buddhism in the form of Mahaynism. Role of Kashmiri monks in spreading this new faith of Buddhism not only in India but also in abroad is superb. Kanishka gave enough patronage to Buddhism. Some Kushan sites still exists like Ushkar, Harwan Kanishkapora. Kanishkapora presently known as kanispora colony located in Baramulla. So in nutshell Kushans did faboulous job for development of this faith.

References :

1. Dr. K.L Khurana, Ancient India, p- 200.
2. Dr. Ved Kumari, Nilamatpurana, p- 179.
3. Kalhan's Rajtarangni, trans. by Stein, vol. 1, First book , p- 30, vs – 168.
4. Dr. Ved Kumari, Nilamatpurana, p- 179.
5. Kalhan's Rajtarangni, trans. by Stein , vol.1, First book, p- 30, vs – 169.
6. S.R Bhakshi, Kashmir through Ages, vol. 1, p- 148.
7. Kalhan's Rajtarangni, trans. by Stein, vol. 1, p- 76, vs - 74.
8. Kalhan's Rajtarangni, trans. By Stein, vol.1 , p- 76, vs-74.
9. Fida Mohd Khan Hassnain, Kashmir (The history of Himalayan Valley), p- 109.
10. Dr. Ved Kumari, Nilamatpurana, vol. 1, p- 179.
11. Kalhan's Rajtarangni, trans. By Stein, vol. 1, p- 30- 31.
    Yasar Mohd Baba, My land and my people (Kashmir in Perspective), p- 140.
12. G.M Khawaja, The Journal of Kashmiri studies, vol. vi , no. 1, 2012.
13. Yasar Mohd Baba, My land and my people (Kashmir in perspective), p- 140.
14. G.L Kaul, Kashmir through the Ages, p- 26.
15. N.K Singh, Buddhism in Kashmir, p- 193- 194.
16. Kundra Bawa, World History, p- 196.
17. N.K Singh, Buddhism in Kashmir, p- 200.
18. The eastern Buddhist (A annual magazine devoted to the study of Mahayana Buddhism) vol. vi (1936- 1939), p-227- 229.
19. Dr.Shu Hikosaka, Dr.G.John Samuel, Buddhist themes in modern Indian literature, p- 84.
20. N.K Singh, Buddhism in Kashmir, p- 204.
21. Nilinaksha Dutt, Mahayana Buddhism, p- 22.
22. Kalhan's Rajtarangni, trans by stein, vol. 1, First book, p- 31, v.s 171- 173 .

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

म.प्र. में शासकीय नीतियों के कियान्वयन में जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्रों की भूमिका – एक अध्ययन

पंकज नेमा

सहा. प्रा. (वाणिज्य विभाग) महात्मा गांधी महा., करेली

औद्योगीकरण, आर्थिक विकास का मूल आधार है। औद्योगीकरण के बिना कोई भी राष्ट्र न तो अपने देशवासियों को जीवन के लिए आवश्यक साधन प्रदान कर सकता है और ना ही ऐसे देश वैश्वीकरण के दौर में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी कोई छवि बना सकता है। इसी कारण आज प्रत्येक देश अपने प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों को औद्योगिक विकास हेतु समुचित रूप से प्रयोग मे ला रहे हैं। वास्तव में औद्योगीकरण की प्रकिया में केवल निर्माता का ही विकास नहीं होता वरन् देश का आर्थिक सामजिक एवं सांस्कृतिक विकास होता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय देश में औद्योगिक विकास की दर ही अत्यंत कम थी चूँकि भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है परंतु तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकताओं को केवल कृषि क्षेत्र से पूर्ण करना संभव नहीं है। जनमानस की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने कर दायित्व शासन का होता है। शासन देश के औद्योगिक विकास के लिए विभिन्न योजनाये एवं नितियॉ बनाता है। शासन द्वारा औद्योगीकरण को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न उद्योगों की स्थापना की गई है परतुं केवल शासन उद्योग स्थापित करके आर्थिक विकास नहीं कर सकता इस लिये जन साधारण का आद्योगिक विकास में प्रत्यक्ष सहयोग एवं सहभागिता आवश्यक होती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सरकार के द्वारा एक सुनियोजित आर्थिक विकास का शंखनाद किया गया। पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा सरकार के प्रयास रहे के देश की जनता को उनकी योग्यता के अनुरूप रोजगार उपलब्द हो सके ताकि उच्च जीवन स्तर व प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि से अर्थवयवस्था का स्वरूप उन्नत हो सक लेकिन उच्च स्तरीय सरकारी प्रयासों के बावजूद जनसंख्या के आधिक्य शिक्षा के अभाव कृषि आधारित पिछड़ी अर्थव्यवस्था मूलभूत सुविधाओं का अभाव एवं भाग्य आधारित सोच अभी तक रोजगाार उपलब्ध कराने में बाधक रही। अतः सरकार तथा नीति–निर्धारकों द्वारा अनुभव किया गया कि देश के तीव्र आर्थिक विकास और रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए उद्यमिता का विकास आवश्यक है।

इसी कम में 1977 में जनता पार्टी की सरकर में गठन के बाद लघु एवं कुटीर उद्योगों के तेजी से विकास के लिए "नई औद्योगिक नीती 1977" में जिला स्तर पर एक सरकारी शीर्ष, केन्द्रीय एवं समन्वयकारी संस्था "जिला उद्योग केन्द्र" की स्थापना देश के प्रत्येक जिले में की गयी। जिला उद्योग केन्द्र जिला स्तर की केंन्द्रीय संस्था है। यह केन्द्र अपने जिले के सभी उद्यमियों को वित, साख, तकनीकी परामर्श, विपणन सुविधाएँ एवं विभिन्न सरकारी सुविधाएं उपलब्द करते हैं। कुछ वर्षों के बाद "जिला उद्योग केंद्र" के स्थान पर इनका नाम बदल कर जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र पर दिया गया।

जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र कार्यकम एवं राज्य सरकार के मध्य समन्वय का मूर्त रूप है। "इस कार्यकम को एक वातायन की विचारधारा के नाम से भी पुकारा जाता है क्योंकि जिला उद्योग केन्द्रो की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य नये एवं ग्रामिण उद्यमियों को संबंधित समस्त अपेक्षित एवं घोषित सुविधायें एक ही छत के नीचे उपलब्ध कराना था ताकि उद्यमी अपने धंधो की स्थापना सरलता एवं सुविधाजनक तरीके से कर सके"।

लघु उद्योग के संगठन से जुड़े व्यक्तियों द्वारा जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र की व्याख्या करते हुए इसे "जिला स्तर पर उद्यमियों को लघु और ग्रामीण उद्योग स्थापित करनें के बारे में एक ही स्थान पर समस्त सेवायें और सुविधायें उपलध कराने वाली संस्था कहा गया।"

जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र का उद्योग निदेशालय, वित निगम, औद्योगिक एवं विनियोग निगम, लघु उद्योग निगम, खादी एवं ग्रामोद्योग मंडल आदि से संबंध स्थापित किया गया है।

ताकि उद्यमियों को इन संस्थाओं से मिलने वाली समस्त सुविधाये इन केंद्र के माध्यम से सुलभ करायी जा सके। जिला उद्योग एवं व्यापार केंद्र किसी भी जिले में उद्योग स्थापना की धुरी है। जिले में होने वाली समस्त औद्यौगिक गतिविधियॉ संबंधित जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र के समन्वय से ही संचालित होती है। उद्योग अथवा स्वरोजगार स्थापना के इच्छुक व्यक्तियों के लाभार्थ शासन द्वारा जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र स्थापित किये गये हैं। इनके पास जिले से संबंधित समस्त जानकारियां होती हैं, जो नये उद्यमी के लिये मार्गदर्शन का कार्य कर सकती है। इसके साथ–साथ विभिन्न उद्योंगों की परियोजना रूपरेखा भी इन केन्द्रों में उपलब्ध रहतो है।

संपूर्ण जिलें के औद्योगीक विकास की जिम्मेदारी जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र को होती है। इन केन्द्रो के माध्यम से ग्रामीण औद्यागीकरण की कांति चल रही है। इस औद्योगिक कांति का लक्ष्य न्यूनतम पूंजी से औद्योगिक इकाईयों की स्थापना क्षेत्रीय संसाधनों एवं उपलब्ध कच्चे माल का परिपूर्ण दोहन कर औद्योगिक उत्पादन में अभिवृध्दि, करना इसके अतिरिक्त इन केन्द्रो के द्वारा उद्योगों के विकास हेतु आर्थिक अन्वेषण, ऋण विपणन, कच्चा माल, मशीनरी उपकरण, अनुसंधान विस्तार व प्रशिक्षण आदि भी उद्यमियों को उपलब्ध कराते हैं जिससे औद्योगिक विकास को पर्याप्त गति मिली है।

जिला व्यापार एवं केंद्रों की संरचना शासन द्वारा इस प्रकार तैयार की गई है जिसमें नये उद्यमियों को उद्योंगों की स्थापना के लिये सभी प्रकार की सुविधायें एवं सहायता प्राप्त हो सके। जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र के प्रमुख अधिकारी (महाप्रबंधक) का यह सतत् प्रयास होता है कि उसके अधिकार क्षेत्र के जिले का अधिक से अधिक औद्योगिक विकास हो विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में सूक्ष्म एवं लघु उद्योगों की स्थापना हो। योजना के स्वरूप के अंतर्गत यह निर्धारित किया गया है कि प्रत्येक ग्राम में उद्योंगों की स्थापना की जाये तथा उद्यमियों की समस्याओं का पूर्णतः हल किया जाये तथा इन केन्द्रों के द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रम की नियंत्रण एवं निगरानी उद्योग संचालनालय प्रदेश शासन के द्वारा की जाये।

उद्योगों को अपेक्षित सुविधायें प्रदान करने के लिये जिला स्तर पर स्थापित जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र ने विविध स्तरीय संगठनों के चकव्यूह से उद्यमी को बाहर निकाला है साथ ही शहरों से गांव तक उद्योगों के विकास से उल्लेखनीय सफलता अर्जित की है। ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में औद्योगिक इकाईयों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य गामवासियों की आवश्यकता की पूर्ति में क्षैत्रीय उद्योगों की भागीदारी बढ़ाना था ताकि गांवों में उत्पादित माल की आपूर्ति गांव में ही की जा सके तथा कम पूंजी में उद्योग स्थापित हो सके एवं इन उद्योगों से अन्य व्यक्तियों को भो रोजगार प्राप्त हो। इसी अवधारणा से ये केन्द्र जिलों का विकास कर रहे हैं।

जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र की विशेषतायं

जिलाव्यापार एवं उद्योग केन्द्र की निम्न विशेषतायें हैं :

1. समन्वयक संस्था :–जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र औद्योगिक विकास में कार्यरत विभिन्न संस्थाओं के कार्यों में समन्वय स्थापित करने का कार्य तथा उद्यमियों को उद्योगों की स्थापना व विकास से सम्बंधित सहायता प्रदान करते हैं।

2. केन्द्रीय सस्था :–जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र राज्य सरकार द्वारा स्थापित एक केन्द्रीय सस्था है। इन केन्द्रों में एक ही स्थान पर विभिन्न विभाग व संस्थायें कार्यरत रहती हैं।

3. परिवर्तनकारी संस्था :–केन्द्र तथा राज्य सरकार इन केन्द्रों के माध्यम से कृषि को औद्योगिक क्षेत्र में परिवर्तित करने का कार्य कर ही है। अतः यह एक परिवर्तनकारी संस्था है। यह सामाजिक मूल्यों की स्थापना व नये साहसियों में आशा का संचार करने का कार्य भी करती है।

4.जिला स्तरीय शीर्श संस्था :–जिला उद्योग एवं व्यापार केन्द्र उद्योगों को सहायता प्रदान करने वाली जिला स्तरीय शीर्ष संस्था है। इसका मुख्य कार्य अपने जिले के औद्योगिक विकास के लिये उद्यमियों को आवश्यक सहायता व प्रोत्साहन देना है।

5. केन्द्र व राज्य सरकार का उत्तरदायित्व :–जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्रों की स्थापना केन्द्र सरकार की औद्योगिक नीति 1977 के अंतर्गत की गई है। इन केन्द्रों के कुशल संचालन एवं वित्तीय उपलब्धता का उत्तरदायित्व केन्द्र एवं

राज्य सरकार का होता है। केन्द्र तथा राज्य सरकार विभिन्न योजनायें तैयार करती है एवं अपने बजट में इन योजनाओं के वित पोषण के लिये प्रावधान करती है। इन केन्द्रों की स्थापना के पश्चात् इनके सफल संचालन एवं प्रशासनिक नियंत्रण का उत्तरदायित्व राज्य शासन का होता है।

6. एकल खिड़की प्रणाली पर आधारित :–जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द की कार्यप्रणाली एकल खिड़की प्रणाली पर आधारित है। इस प्रणाली में नये उद्यमियों को विभिन्न कार्यों एवं अनुमतियों के लिये अलग–अलग विभागों में या संस्थाओं में जाने की अपेक्षा उद्योगों की स्थापना एएवं विकास से सम्बन्धित विभिन्न सुविधाएं व परामर्श एक ही छत के नीचे प्रदान किया जाता है।

7. शासकीय योजनाओं का कियान्वयन :–बेरोजगारी की समस्या हो हल करने के लिये केन्द्र एवं राज्य सरकार विभिन्न योजनायें बनाते हैं जैंसे प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना, रानी दुर्गावती स्वरोजगार योजना, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना आदि का कियान्वयन का प्रत्यक्षतः दायित्व जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्रों का ही होता है।

जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्रों की उद्योग स्थापना में भूमिका :–किसी भी अर्थव्यवस्था के सुचारू रूप से संचालन में अने संस्थाओं की भूमिका निश्चित होती है। दनमें औद्योगिक विकास, वित एवं आधारभूत सुविधाओं को प्रदान करने वाली संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। आर्थिक कियाओं का प्रभाव मानव समाज पर पड़ता है। अतः आर्थिक कियाओं के प्रभावों का न्यायिक रूप बंटवारा हो तथा सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग को इन आर्थिक कियाओं का समाज के अंग के रूप में समान लाभ एवं अवसर मिले, इस हेतु कानूनी प्रावधानों एवं प्रतिबन्धात्मक प्रषासन के लिये सरकारी संगठन के रूप में जिला व्यापार एवं उद्योग के केन्द्र की भूमिका अन्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

भारत जैसे देश में जहां जनसंख्यां के एक बड़े भाग का प्रतिनिधित्व पिछड़ी जातियों, आदिवासियों तथा अल्पसंख्यकों द्वारा किया जाता है, इनके आर्थिक हितों की रक्षा के लिये आर्थिक संगठन के रूप में जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र कार्यरत् हैं। इनकी भूमिका इस वर्ग के लोगों में उद्यमिता का विकास करने, उन्हें प्रशिक्षण देने, समुचित पूंजी, संसाधन प्रदान करने तथा उपकम की स्थापना में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग प्रदान करने में होता है।

भारत में उद्यमिता प्रोत्साहन हेतु प्रशिक्षण देने के आवश्यक कार्य योजनाओं के निर्माण हेतु तथा उद्योगों की स्थापना स जुड़ी समस्याओं के निदान हेतु केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार के अधीन जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र प्रत्यक्ष एवां अप्रत्यक्ष रूप से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करते हैं। यह केन्द्र विशिष्ट क्षेत्र में प्रथक–प्रथक उद्यमों की स्थापना में तकनीकी एवं आर्थिक तथा प्रशासनिक सहयोग प्रदान कर रहे हैं। इन केन्द्रों की भूमिका नियामक (कंट्रोलिंग) के रूप में भी है।

औद्योगिक विकास देश एवं प्रदेश के स्थापित नियमों से बंधा होता है जिससे कि औद्योगिक विकास के साथ–साथ राष्ट्रीय हितों, सामाजिक हितों अथवा जन स्वास्थ्य का विकास भी हो सके।

जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्रों के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर लघु एवं कुटीर उद्योगों, मध्यम स्तरीय उद्योगों एवं बड़े उद्योगों की स्थापना को प्रोत्साहान देने हेतु उद्यामियों को उद्योगों से जुड़ी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा समस्याओं का निदान, शासकीय योजनाओं का लाभ, बैंकों के माध्यम से आवश्यक वित उपलब्ध कराना एवं प्रशिक्षण आदि सभी सुविधायें एक ही स्थान पर उपलब्ध कराई जाही है। इन केन्द्रों के माध्यम से बेरोजगारी की समस्य दुर की जाती है तथा लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थापना अधिक से अधिक को जाती है। इस प्रकार इन केन्द्रों के द्वारा उद्योगों की स्थापना में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन किया जाता है।

जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र की स्थापना का उद्देश्य :–देश के आर्थिक एवं संतुलित विकास के लिये जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्रों की स्थापना की गई है, इन केन्द्रों की स्थापना के मूल उद्देश्य निम्न है :

1. संसाधनों की उपलब्धता :– जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्रों का मुख्य उद्देश्य जिले में उद्योग स्थापित करने वाले नये उद्यमियों को औद्योगिक संसाधन उपलब्ध कराना है। इन केन्द्रों के माध्यम से उद्यमियों को कच्चा माल, आवश्यक मशीनरी, नई तकनीक उपलब्ध कराई जाती है। जिले में पाये जाने वाले संसाधनों को भी उद्यमियों को उपलब्ध कराया जाता है ताकि संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग किया जा सके।

2. रोजगार योजनाओं का कियान्वयन :– केन्द्र तथा राज्य शासन के द्वारा बेरोजगारी दूर करने के उद्देश्य से अनेक रोजगार उन्मुखी योजनायें चलाई जाती हैं। इन योजनाओं में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यकम, दीनदयाल रोजगार योजना, रानी दुर्गावती स्वरोजगार योजना, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना आदि सभी योजनाओं का कियान्वयन जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र क माध्यम से ही किया जाता है।

3. लघु एवं कुटीर उद्योगों का समन्वित विकास :– इन केन्द्रों का यह उद्देश्य भी है कि जिले की सीमा में स्थित गांवों एवं पिछड़े क्षेत्रों में लघु एवं कुटरी उद्योग को बढ़ावा दिया जाये तथा इन उद्योगों के कुशल संचालन, आर्थिक एवं समन्वित विकास पर अधिक से अधिक ध्यान दिया जाये। इनका उद्देश्य इन उद्योगों की स्थापना करना तथा उन्हें निरन्तर विकासशील बनाना होता है।

4. निर्धारित लक्ष्य :– जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र का उद्देश्य जिले के औद्योगिक विकास को बढ़ाना होता है इसके लिये इन केन्द्रों के द्वारा जा योजनायें चलाई जाती है या जो कार्य किये जाते है उनके लिये लक्ष्यों का पूर्व निर्धारण किया जाता है तथा कार्य या योजना का संचालन करने के लिये लक्ष्यों को निर्धारित किया जाता है। केन्द्रों की वार्षिक कार्य योजना के इन लक्ष्यों को निर्धारित करके कार्य किये जाते हैं।

5. उद्यमी प्रशिक्षण :– जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र का उद्देश्य उद्यमियों को प्रशिक्षण देना भी होता है। नये उद्यमियों को प्रोत्साहन के साथ–साथ उत्पादन कार्य तकनीकि प्रशिक्षण भी दिया जाता है। तथा नई प्रौद्योगिकी एवं उत्पादन की नई तकनीकों एवं विधियों को भी जानकारी प्रशिक्षण कार्यकमों के अन्तर्गत दी जाती है। इन केन्द्रों के द्वारा समय समय पर नये उद्यमियों को प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

6. जिले का औद्योगिक विकास :– इन केन्द्रों का मुख्य उद्देश्य जिले के सम्पूर्ण क्षेत्र का औद्योगिक विकास करना होता है इन केन्द्रों के द्वारा जिले में पाये जाने वाले खनिज एवं अन्य औद्योगिक उत्पादन में सहायक संसाधनों को उचित रूप से प्रयोग करते हुए क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप उद्योग स्थापित कराये जाते हैं। सूक्ष्म एवं कुटीर उद्योग का विकास भी इनका उद्देश्य है।

7. एकल खिड़की प्रणाली :– जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र का उद्देश्य व्यवस्थाओं को और बेहतर बनाना भी होता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये उद्यमियों को उद्योग से संबंधित जानकारी एवं सूचनाएं एक ही छत के नीचे उपलब्ध कराई जाती है। इसे सिंगल विंडो सिस्टम या एकल खिड़की प्रणाली कहा जाता है। इसका उद्देश्य उद्यमियों को उद्योग की स्थापना के लिये अन्य संस्थाओं से मिलने वाले सुविधाओं, सहायताओं, अनुदान एवं अनुमतियों के लिये विभिन्न कार्यालयों में न भटकना पड़े तथा सभी कार्य कम समय में एक ही स्थान पर पूर्ण हो सके।

इस प्रकार जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्रों की स्थापना का उद्देश्य लघु एवं कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देना, स्थापित कराना एवं कुशल संचालन कराना है। इस कार्य के माध्यम से उद्यमियों को सभी सुविधाएं एक ही स्थान पर उपलब्ध हो रही है। यह केन्द्र उद्यमियों को उद्योग संबंधित सलाह, तकनीकी परामर्श वित्तीय, विपणन, कच्चा माल, प्रशिक्षण आदि की सुविधाएं प्रदान करता हुआ अपनी स्थापना के उद्देश्यों को पूर्ण कर रहा है।

शासकीय योजनाओं का कियान्वयन :–जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र जिले के औद्योगिक विकास का मुख्य केन्द्र बिन्दु है। जिले में होने वाली समस्त औद्योगिक गतिविधियों का संचालन जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्रों के द्वारा किया जाता है। शासन के द्वारा जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्रों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य अधिक

से अधिक व्यक्तियों को स्वरोजगार एवं उद्योग स्थापित करने हेतु प्रेरित एवं सहायता करना था। स्वरोजगार एवं उद्योगों की स्थापना के लिये सरकार के द्वारा विभिन्न रोजगार उन्मुखी योजनायें बनाई गई इन योजनाओं का वास्तविक उद्देश्य पूर्ण हो सके तथा सम्पूर्ण देश में इन रोजगार उन्मुखी योजनाओं का कियान्वयन हो सके इसके लिये जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्रों को इन योजनाओं के कियान्वयन का उत्तरदायित्व दिया गया। वर्तमान में इन केन्द्रों के द्वारा प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यकम, रानी दुर्गावती स्वरोजगार योजना, दीनदयाल रोजगार योजना आदि का सफल कियान्वयन किया जा रहा है। इन योजनाओं का कियान्वयन निम्न प्रकार होता है –

1. सर्वप्रथम केन्द्र तथा राज्य सरकार के द्वारा बनाई गई विभिन्न रोजगार उन्मुखी योजनाओं का जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्रों के द्वारा प्रचार–प्रसार किया जाता है। प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यकम, रानी दुर्गावती अनुसूचित जाति, जनजाति स्वरोजगार योजना, दीनदयाल स्वरोजगार योजना आदि योजनाओं के नियम एवं निर्देशों को पंपलेट, ब्रोशर के फोल्डर के रूप में बांटा जाता है। इन योजनाओं के बड़े फ्लेक्स लगाकर भी इनकी जानकारी सभी लोगों को दी जाती है।

2. सरकार के द्वारा प्रत्येक योजना के कियान्वयन के लिये भौतिक लक्ष्य एवं मार्जिन मनी के आवंटन का लक्ष्य निर्धारित किया जाता है। जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द योजनाओं का कियान्वयन इन्हीं लक्ष्यों के आधार पर करते हैं।

3. नये उद्यमी को इन केन्द्रों के द्वारा जिले में उपलब्ध संसाधनों एवं जिले में स्थापित किये जा सकने वाले उद्योगों तथा विभिन्न रोजगार योजनाओं की जानकारी दी जाती है।

4. नये उद्यमी को जिस भी योजना के अंतर्गत ऋण चाहिये होता है उसका निर्धारित आवेदन फार्म संपूर्ण प्रपत्रों के साथ भरवाया जाता है। आवेदन की जांच के उपरांत एक सामान्य बैठक में सभी आवेदनों पर परिचर्चा की जाती है। इसके लिये एक समिति बनाई जाती है। समिति के द्वारा चुने हुये आवेदन पत्रों को ऋण प्रकरण हेतु भेजा जाता है।

5. जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्रों के द्वारा योजनाओं के भौतिक लक्ष्य एवं मार्जिन मनी के आवंटन के लक्ष्य के अनुसार विभिन्न राष्ट्रीय कृत बैंकों के पास इन आवदन पत्रों को ऋण प्रकरण के रूप में भेजा जाता है।

6. आवेदन पत्रों की चांज पड़ताल के उपरांत राष्ट्रीयकृत बैंकों के द्वारा इन ऋण प्रकरणों को स्वीकार करके नये उद्यमी को व्यवसाय शुरू करने हेतु ऋण प्रदान कर दिया जाता है।

7. ऋण प्राप्ति के पश्चात् इन केन्द्रों के द्वारा उद्यमियों को समय–समय पर प्रशिक्षण भी दिया जाता है। साथ–ही–साथ समय–समय पर इन व्यवसायों का औचक निरीक्षण किया जाता है ताकि यह केन्द्र निरंतर गतिशील रहे।

इस प्रकार जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्रों विभिन्न शासकीय योजनाओं का सफल कियान्वयन किया जा रहा है। योजनाओं का कियान्वयन करने के लिये समय–समय पर इन केन्द्रों के द्वारा रोजगार मेला तथा प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया जाता है।

प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यकम :–ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में कृषि आधारित उद्योग सहित सभी प्रकार के सूक्ष्म या कुटीर एवं लघु उद्योग की स्थापना के माध्यम से रोजगार के अवसरों के सृजन के उद्देश्य से भारत सरकार ने 31 मार्च 2008 तक परिचालन में रही दो योजनाओं "प्रधानमंत्री रोजगार योजना" तथा "ग्रामीण सृजन कायकम" को एकीकृत करते हुये "प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यकम" नाम एक नई ऋण–सहबद्ध अनुदान योजना का अनुमोदन किया है।

"प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यकम" केन्द्रीय क्षेत्र की योजना है जिसका कियान्वयन उद्योग (सूक्ष्म, लघु और मध्यम) मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में राष्ट्रीय स्तर पर एकमात्र नोडल अभिकरण के रूप में खादी और ग्रामोद्योग आयोग करता है। राज्य स्तर पर योजना का कार्यान्वयन राज्य खादी और ग्रामोद्योग बोड़,

जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र और बैंक करते हैं।

योजना के अंतर्गत सरकारी सब्सिडी खादी ग्रामोद्योग आयोग द्वारा राष्ट्रीयकृत बैंकों के माध्यम से चुने हुये लाभार्थियों, उद्यमियों को उनके खातों में वितरित करने के लिये दी जाती है। कार्यान्वयी अभिकरण अर्थात खादी ग्रामोद्योग आयोग, खादी ग्रामोद्योग बोर्ड और जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र योजना के कियान्वयन में विशेष रूप से लाभार्थियों के चयन, क्षेत्र विशिष्ट लाभप्रद परियोजनाओं की पहचान और उद्यमिता विकास प्रशिक्षण गैर सरकारी संगठनों, प्रतिष्ठित स्वायत्त संस्थाओं स्वयं सहायता समूहों, राष्ट्रीय लघु उद्योग निगमों, राजीव गांधी उद्यमी मित्र योजना के अंतर्गत सूचीबद्ध उद्यमी मित्रों, पंचायती राज संस्थाओं और अन्य संबंधित निकायों का अपने साथ संबंध करेंगे।

विभिन्न शासकीय योजनाओं के कियान्वयन का तुलनात्मक अध्ययन :–जबलपुर संभाग के सभी जिलों में जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्रों द्वारा कियान्वित योजनाओं का तुलनात्मक प्रस्तुतीकरण निम्न तालिका द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

तालिका

जबलपुर संभाग में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यकम का जिलेवार तुलनात्मक अध्ययन

जिले का नाम	भौतिक लक्ष्य	वास्तविक पूर्ति	प्रतिशत	मार्जिन मनी के आवंटन का लक्ष्य	वास्तविक आवंटन	प्रतिशत
जबलपुर	302	172	57%	399.95	444.32	111%
कटनी	175	168	96%	210.85	185.62	88%
सिवनी	119	83	70%	298.80	251.11	84%
नरसिंहपुर	187	149	80%	271.70	219.39	81%
मंडला	115	60	52%	168.45	121.99	73%
छिन्दवाड़ा	138	138	100%	175.87	837.91	476%
बालाघाट	105	83	79%	179.60	149.99	84%
डिण्डोरी	148	76	52%	185.93	111.49	60%
योग	1289	929	72%	1891.15	2321.82	122. 77%

स्त्रोत : जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र, संभाग जबलपुर

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 2008–09 में शुरू की गई प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यकम योजना के अंतर्गत वर्ष 2008 से 2011–13 तक ही अवधी में सबसे अधिक भौतिक लक्ष्य 302 इकाइयां जबलपुर जिल के लिये निर्धारित किये गये। जबकि सबसे कम भौतिक लक्ष्य बालाघाट जिले के लिये केवल 105 इकाईयां निर्धारित की गईं। इसके अतिरिक्त नरसिंहपुर (187), कटनी (175), डिण्डोरी (148), छिन्दवाड़ा (138), सिवनी (119) एवं मंडला जिले में (115) इकाईयों के भौतिक लक्ष्य निर्धारित किये गये। इस योजना के अंतर्गत निर्धारित किया गए लक्ष्यों की वास्तविक पूर्ति सवसे अधिक जबलपुर जिले में हुई जहां निर्धारित 302 लक्ष्यों में से 172 इकाईयां वास्तविक पूर्ति की गई। जो कुल लक्ष्य का 57 प्रतिशत थी। जबकि सबसे कम वास्तविक पूर्ति मंडला जिले में 115 लक्ष्य में से केवल 60 लक्ष्यों की वास्तविक पूर्ति की गई। जो कुल लक्ष्य का 52 प्रतिशत थी। वही छिन्दवाड़ा जिले में 138 लक्ष्यों की शत–प्रतिशत पूर्ति की गई। इसके अतिरिक्त कटनी 168 (लक्ष्य का 96 प्रतिशत), नरसिंहपुर 149 (लक्ष्य का 80 प्रतिशत), बालाघाट 83 (लक्ष्य का 79 प्रतिशत), सिवनी 83 (लक्ष्य का 70 प्रतिशत), तथा डिण्डोरी 76 (लक्ष्य का 82 प्रतिशत) वास्तविक भौतिक पूर्ति की गई।

निष्कर्ष :–जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र शासकीय योजनाओं का कियान्वयन करने में एक समन्वयक की भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र लघु एवं कुटीर उद्योगों के क्षेत्र में संतोषप्रद कार्य कर रहा है कुछ अतिरिक्त प्रयासों से यह इन शासकीय नीतियों के उद्देश्यों को पूरा करते हुए वृहद एवं मध्यम उद्योगों की स्थापना एवं नये उद्यमियों को स्वरोजगार स्थापित करने हेतु एक सकारात्मक एवं प्रभावपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेंगे। वर्तमान में पुनर्मूल्यांकन के माध्यम से इनकी भूमिकाओं पर दृष्टि डालना भी आवश्यक है।

शोध प्रबंध

1. धगट, डॉ. शुभांगी "जिला उद्योग केन्द्रों की भूमिका एक आर्थिक विवेचना" (जबलपुर जिले के विशेष संदर्भ में) वाणिज्य विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर।

2. मुंझे, संजय कुमार "मध्यप्रदेश के औद्योगिकीकरण में जिला उद्योग केन्दों का योगदान" (छिन्दवाड़ा जिले के विशेष संदर्भमें) वाणिज्य विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.	मामोरिय, डॉ. चतुर्भुज एवं जैन, डॉ. एस.सी.	"भारतीय अर्थशास्त्र"	वर्ष 2007, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा
2.	शुक्ला, डॉ. एस.एम. एवं मिश्रा, डॉ. जे.पी.	"अर्थशास्त्र"	वर्ष 2010, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा
3.	शुक्ल, डॉ. एस.एम. एवं सहाय, डॉ. शिवपूजन	"उच्च सांख्यकीय विश्लेषण"	2010, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा
4.	पाटीदार, युवराज	"मध्यप्रदेश समग्र अध्ययन"	2010, उपकार प्रकाशन, आगरा
5.	अग्रवाली, आर.सी. एवं अग्रवाल संजय	"उद्यमिता"	2009, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा
6.	मंगल, डॉ. रमेश एवं तिवारी, डॉ. अशोक	"आधार पाठ्यक्रम"	वर्ष 2010, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा
7.	वार्षिक प्रतिवेदन	"जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र"	जिला जबलपुर, नरसिंहपुर, मंडला, कटनी, डिण्डोरी, छिन्दवाड़ा, बालाघाट, सिवनी, 2001 से 2011 तक।

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

Migration Expectancy among the Schedule Tribes in Eastern Uttar Pradesh

Saurabh Kumar Pandey* & Shruti**
*Department of Statistics, Banaras Hindu University,Varanasi,Uttar Pradesh,India
** Assistant Professor, in Statistics,UPRTOU,Allahabad, Uttar Pradesh,India

ABSTRACT : In the present study, we have tried to find out the nature and pattern of migration expectancy characterized by age and sex among the schedule tribe population in eastern Uttar Pradesh. In spite of lot of research work in last few years, not much information still in our knowledge about migration among the schedule tribes. Expectancy table procedure gives the expectancy of various demographic events. Expectancy tables of migration gives information on the expected number of moves a person may make during his remaining life time. This study based on primary data taken from a survey entitled “A study of Socio-Economic and Demographic characteristics of Schedule Tribe population in Eastern Uttar Pradesh” conducted in rural area of Eastern Uttar Pradesh.

Key words: Migration, Migration Expectancy, Primary Data, Rural area, Schedule Tribes

Introduction : In the present study, we have tried to find out the nature and pattern of migration expectancy characterized by age and sex among the schedule tribe population in eastern Uttar Pradesh. In spite of lot of research work in last few years, not much information still in our knowledge about migration among the schedule tribes.Uttar Pradesh is the rainbow land where the multi-hued Indian Culture has blossomed from times immemorial. Blessed with a variety of geographical land .

Uttar Pradesh is surrounded by Bihar in the East, Madhya Pradesh in the South, Rajasthan, Delhi, Himachal Pradesh and Haryana in the west and Uttaranchal in the north and Nepal touch the northern borders of Uttar Pradesh, it assumes strategic importance for Indian defence. Its area of 2,36,286 sq kms. lies between latitude 24 deg to 31 deg and longitude 77 deg to 84 deg East. Area wise it is the fourth largest State of India. In sheer magnitude it is half of the area of France, three times of Portugal, four times of Ireland, seven times of Switzerland, ten times of Belgium and a little bigger than England.

The term 'Scheduled Tribes' first appeared in the Constitution of India. Article 366 (25) defined scheduled tribes as "such tribes or tribal communities or parts of or groups within such tribes or tribal communities as are deemed under Article 342 to be Scheduled Tribes for the purposes of this constitution". The criterion followed for specification of a community, as scheduled tribes are indications of primitive traits, distinctive culture, geographical isolation, shyness of contact with the community at large, and backwardness. This criterion is not spelt out in the Constitution but has become well established.

Migration is a complex phenomenon involving a number of social, economic, cultural, political and behavioral factors. One of this information is the idea on the moves a person might be expected to make during his life time. Initially Jaffe (1960) explained the expectancy table procedure to find out the expectancy of various demographic events such as to determine the probable life time earnings of a person in a given industry or in a given occupation.

So many studies have been done in recent past to explain the expectancy tables such as the expectancy of a person being marrying or remaining single (Grabill, 1945), the expectancy of a person being admitted to a mental hospital (Ogburn and Winston, 1928-29), the expectancy table for school going population with dropout rates (Stockwell and Nam, 1963). Long (1970) had measured the volume of geographical mobility within countries in a way that would permit comparisons between countries using the data of

United States Census. Welfbein (1949) showed the expected number of years a person can expect to be part of the work force with the help of working force life tables. One important example of an expectancy table is net reproduction rates, which shows the probability of a birth occurring to a female of a given age and the average number of births to be expected during the life time of a female cohort. Thus, the expected number of occurrences of some event to be experienced by a cohort during its life time can be shown by expectancy table. The oldest type of expectancy table is life table. It shows the probability of dying and surviving at a given age as well as the expected number of years of life remaining at the beginning of a specific age.

An expectancy table may be handled with two kinds of events. First, there are events which can occur but once and are non-reversible. Death happens only once in a life time of a person and we can calculate the probability of person dying. The life table yield expectancies for the first kind of event. Secondly, there are some events which may occur more than once in a life time of a person and therefore may be reversible and recurrent. Migration, morbidity, marriage, unemployment, etc., are such kind of events. For example, morbidity may be completely reversible if a person makes a complete recovery and recurrent if illness strikes again.

In recent past migration had attracted the attention of policy makers, planners, social scientists and researchers as having special significance in the context of rural development. Expectancy tables of migration gives information on the expected number of moves a person may make during his remaining life time. Wilber (1963) and Long (1973) have constructed the migration expectancy tables for the united states using the census data for the year 1958 under the assumption that (1) a maximum of one move per person per time period and (2) non-migration for persons reporting the same address at both the beginning and end of the period involved. Both assumptions include some degree of error since undoubtedly some move more than once and others have returned to their original place at the time of interview.

Expectancy tables are able to an idea about, what are the chances of a person moving during his remaining life time? And how many times will he move during his remaining life time?

Expected future mobility behavior data may be useful in projecting migration trends as well as gaining additional insights into policy measures that might control population movement. If the population redistribution is assessed in relation to different levels of socio-economic and demographic developments, Migration as a tool in the development process will be better achieved.

In the present study, we have tried to find out the nature and pattern of migration expectancy characterized by age and sex among the schedule tribe population in eastern Uttar Pradesh living in rural area.

Data and Methodology:

This study based on primary data taken from a survey entitled “A study of Socio-Economic and Demographic characteristics of Schedule Tribe population in Eastern Uttar Pradesh” conducted in rural area of Eastern Uttar Pradesh. The sampling design used was multistage sampling procedure. The ultimate sampling unit for the sample selection was a household. For this study districts Mirzapur , Chandauli , Sonbhadra, Varanasi , Jaunpur and Azamgarh of Eastern Uttar Pradesh are selected. Using the above methodology 600 households of the selected districts was selected.

Calculation of migration expectancy:

Procedure for calculation of migration expectancy is a straightforward operation involving a few simple steps. It may be calculated by following the same routine from Jaffe’s illustration (1960, p.50) of calculating the average number of admissions to a mental hospital for the survivors of a cohort during the course of their life time. For completeness, the procedure of migration expectancy is given below:

I. In table age interval has been given in column one (1). Since migration is a rare event and it is difficult to obtain one year migration rate for a small area, data has been taken in five year age interval. Fortunately, the data for the number of migrants during (2010-2015) have been collected. Column two (2) gives the number of migrants during last five years. Dividing it by 5 we get the number of migrants for one year. Column three (3) gives the total number of male and female population in the respective age-interval in table (1.1)and table (1.2). The migration rate in column four (4) has been achieved by dividing the number of migrants by corresponding population by each age group.

II. Life tables are generally made for a larger geographical area like state or country as a whole and therefore the reliable life tables for smaller units like district are not available. Since the computations require the knowledge of the life table for some larger unit such as that of the state (here Uttar Pradesh) or the appropriate model life table, consistent with the mortality conditions of the area. Here we have taken Coale and Demeny's (1966) 'Model Life Table' to represent the mortality conditions of the area.

The rate of increase, the birth rate and death rates of the area and the model stable population decides the appropriate model life table. Here in our case, it was found that the level 17 of the "South Model" was most appropriate and hence it is taken to be the appropriate life table for the area.

The figures in column five(5) and six(6) i.e. lx and Lx were taken directly from 'Model Life Table'. The lx values in column five(5) shows survivors, the number of persons alive at the beginning of an age interval out of 100,000 born alive. Lx values is the number of years lived in the aggregate by the cohort of l_0 persons between age x and (x+1). The values of Lx at ages 60, 65, 70, 75 and 80 are 290291, 247608, 192283, 126701 and 89992 for male and 327927,291603,238214,167628,137286 for female respectively. Thus, we can obtain the values of Lx at age 60 and above by adding all the above five values.

III. In a specified age period, the expected number of moves may be obtained by multiplying the migration rate in column four(4) by the stationary population in column six(6) for the appropriate age interval. These values are given in column seven (7).

IV. The expected number of moves in the given age group and all older ages in column eight (8) are directly comparable to the T_x column of an ordinary life table. By accumulating figures in column eight (8), from highest to the lowest ages, we may get these expected moves.

V. To find out the expected number of moves per person in a specified age group and for all later ages given in column nine (9) is obtain by the cumulative moves in column eight (8) are divided by the survivors given in column five (5). Migration expectancy is same to life expectancy as far as computation and interpretation are concerned.

Computation of migration expectancy may be symbolized as

$$ {}_xM_{x+n} = \sum_{L=x}^{L=x+n} \frac{(P_x)({}_xL_{x+n})}{l_x} $$

Where ${}_xM_{x+n}$ is the average number of moves during the remaining lifetime of a person at age x or the moves between age x and x + n years.

P_x is the migration rate for the population at age x.

${}_xL_{x+n}$ is the stationary population between age x to x + n years.

l_x is the number of survivors at age x.

$\sum_{L=x}^{L=x+n}$ refers to the summation of the product of P_x and ${}_xL_{x+n}$ from x to x+n years.

It is well known that in India rural to urban migration is mainly male dominant. Male migration is mainly motivated by better job opportunities at destination to improve and

maintain economic condition. Better education and health facilities at urban areas may be another important pull factors to motivate rural to urban migration. Female migration is mainly due to marriage and better job opportunities at destination to improve socio – economic status.\Since the data discussed here deal with the life time migrants , migration rate are consistently higher among females than males for almost all ages This may be due to movement of females from her place of birth to another place due to marriage..However, migration rates among males are always higher than females if reason of migration is for work (singh et al.,1984). Using primary data migration expectancy is calculated for male and female separately for different age groups and whole schedule tribe population of Eastern Uttar Pradesh. A high rate rate of migration at beginning of the age group in (0-9) is due to accompanied children with parents. Obviously, migration rates for both males and females are found higher between age groups (15-19) to (25-29). These high rates are commutative effects of both marriage and job reasons. Age wise migration expectancy tables for male and female are presented by tables (1.1) and (1.2) respectively and for the whole schedule tribe population in eastern Uttar Pradesh in Table (1.3). In general, the expected number of moves made by female was found higher than males among the schedule tribe in Eastern Uttar Pradesh.

The migration expectancy at birth for males and females was found 3 moves and 4 moves respectively. Marriage migration among females ,as said earlier, may be one of the factor s for the higher average number of moves made by females. Moreover, a higher number of moves (0.50) was observed among females than males (0.43) even after the age 60 years. The age wise expected number of moves at birth for both males and females as well as for the whole schedule tribe population in eastern Uttar Pradesh shown by figure (1.1).The age wise migration expectancy for both males and females as well for the whole schedule tribe population in eastern Uttar Pradesh shown by figure (1.2).

Table 1.1Migration Expectancy for male belongs to Schedule tribe in the Eastern Uttar Pradesh

Age Group (1)	Male migration (in 5 Year) (2)	Male Population in 2013 (3)	1 year migration rate (4) =(2)/((3)*5)	lx (5)	Lx (6)	Expected no of moves		Expected no of moves at birth and all older ages (9) =(8)/(5)
						In the age interval (7) =(4)*(6)	In the age interval and all older ages (8)	
0-4	45	201	0.045	100000	437632	19595	316689	**3.17**
5-9	48	183	0.052	84725	421244	22098	297093	3.51
10-14	50	169	0.059	83772	417349	24695	274995	3.28
15-19	60	143	**0.084**	83167	413593	34707	250300	3.01
20-24	72	149	**0.097**	82270	408003	39431	215593	2.62
25-29	66	160	**0.083**	80931	401335	33110	176162	2.18
30-34	60	153	0.078	79603	394163	30915	143052	1.80
35-39	50	153	0.065	78062	385964	25226	112137	1.44
40-44	40	149	0.054	76323	375980	20187	86910	1.14
45-49	35	132	0.053	74068	363067	19254	66724	0.90

50-54	20	120	0.033	71158	345797	11527	47470	0.67
55-59	15	105	0.029	67160	322287	9208	35943	0.54
60 +	12	85	0.028	61755	946875	26735	26735	**0.43**

Source: For columns 2and 3 primary data .For columns 5 and 6, Coale and Demeny's (1966) Model Life Table.

Table 1.2 Migration Expectancy for female belongs to Schedule tribe in the Eastern Uttar Pradesh

Age Group (1)	Female migration (in 5 Year) (2)	Female Population in 2013 (3)	1 year migration rate (4) =(2)/((3)*5)	lx (5)	Lx (6)	Expected no of moves		Expected no of moves at birth and all older ages (9)=(8)/(5)
						In the age interval (7) =(4)*(6)	In the age interval and all older ages (8)	
0-4	46	199	0.0462	100000	443424	20500	393579	**3.94**
5-9	50	179	0.0559	86029	427993	23910	373079	4.34
10-14	52	168	0.0619	85168	424459	26276	349169	4.10
15-19	85	130	**0.1308**	84615	421044	55060	322893	3.82
20-24	80	139	**0.1151**	83802	416359	47926	267833	3.20
25-29	75	153	**0.0980**	82741	410711	40266	219907	2.66
30-34	65	149	0.0872	81543	404522	35294	179641	2.20
35-39	60	151	0.0795	80265	397738	31608	144348	1.80
40-44	50	148	0.0676	78830	389909	26345	112739	1.43
45-49	45	130	0.0692	77134	380595	26349	86394	1.12
50-54	25	124	0.0403	75104	368546	14861	60045	0.80
55-59	18	119	0.0303	72314	352044	10650	45184	0.62
60 +	15	101	0.0297	68503	1162658	34534	34534	**0.50**

Source: For columns 2and 3 primary data .For columns 5 and 6, Coale and Demeny's (1966) Model Life Table.

Table 1.3 Migration Expectancy for Schedule tribe population in the Eastern Uttar Pradesh

Age Group (1)	Migration (in 5 Year) (2)	Population in 2013 (3)	1 year migration rate (4) =(2)/((3)*5)	lx (5)	Lx (6)	Expected no of moves		Expected no of moves at birth and all older ages (9) =(8)/(5)
						In the age interval (7) =(4)*(6)	In the age interval and all older ages (8)	
0-4	91	400	0.046	100000	437632	19912	346405	**3.46**

5-9	98	362	0.054	84725	421244	22808	326492	3.85
10-14	102	337	0.061	83772	417349	25264	303685	3.63
15-19	145	273	**0.106**	83167	413593	43935	278421	3.35
20-24	152	288	**0.106**	82270	408003	43067	234486	2.85
25-29	141	313	**0.090**	80931	401335	36159	191419	2.37
30-34	125	302	0.083	79603	394163	32629	155260	1.95
35-39	110	304	0.072	78062	385964	27932	122631	1.57
40-44	90	297	0.061	76323	375980	22787	94699	1.24
45-49	80	262	0.061	74068	363067	22172	71913	0.97
50-54	45	244	0.037	71158	345797	12755	49741	0.70
55-59	33	224	0.029	67160	322287	9496	36986	0.55
60 +	27	186	0.029	61755	946875	27490	27490	**0.45**

Source: For columns 2and 3 primary data .For columns 5 and 6, Coale and Demeny's (1966) Model Life

Table.Figure 1.1 Age–sex wise migration rate for male and female as well for the whole schedule tribe population in eastern Uttar Pradesh.

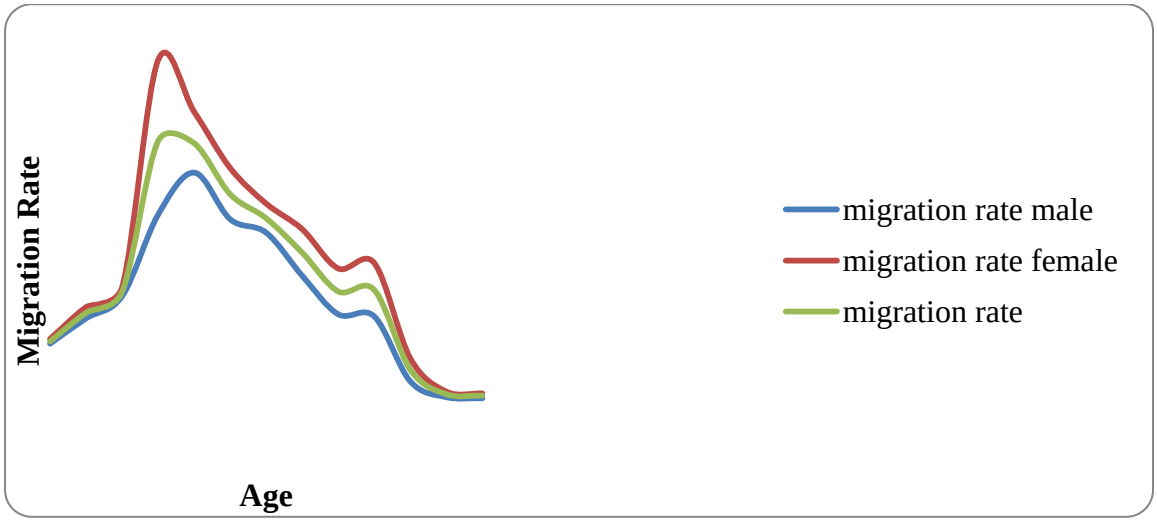

Figure 1.2 Age–sex wise migration Expectancy for male and female as well for the whole schedule tribe population in eastern Uttar Pradesh

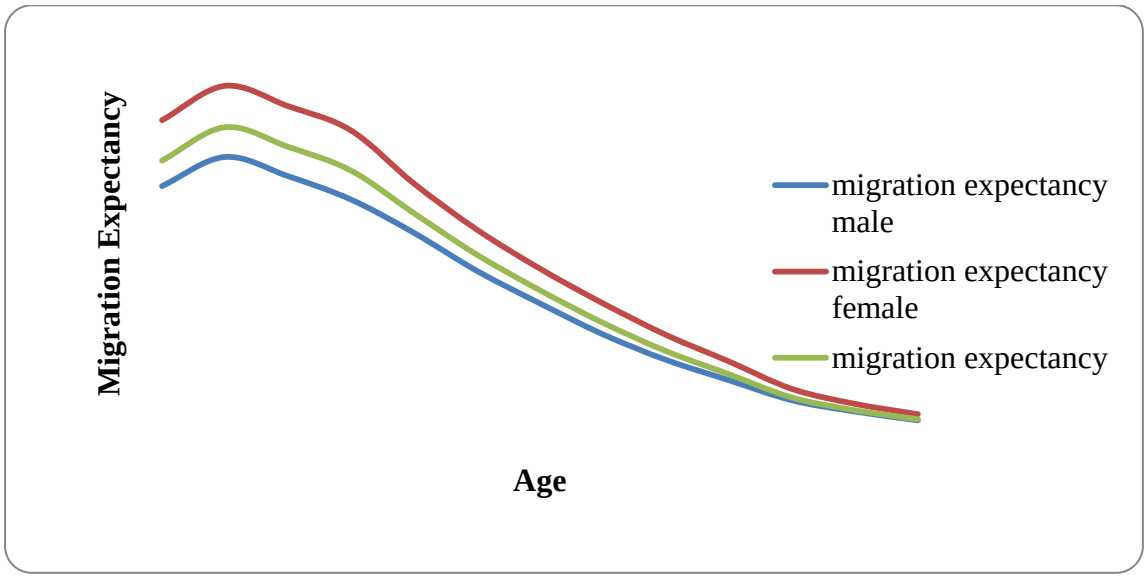

Conclusion: Since a migration expectancy table gives the expected number of moves per person during his remaining lifetime, we can do comparisons between the expected moves of persons at a given age at different point in time, and between persons at the same point in time who have different characteristics (Wilber, 1963). In addition to comparisons by age and sex, we may find out the expectancy by rough distance categories, employment status, marital status and occupation status too. Wherever we have an appropriate life table and accessible migration data, we can make an expectancy table.

Table shows the expected number of moves at birth and at older ages. The results reveal that with the increase in age, migration expectancy decreases. Highest migration expectancy is seen in the age interval 5 to 19 and then it starts to decrease.

This paper discussed the nature, trend and pattern of the expected number of moves among the schedule tribe population in eastern Uttar Pradesh according to sex. The migration expectancy at birth for males and females was found 3 moves and 4 moves respectively. The expected number of moves made by female was found higher than males among the schedule tribe in Eastern Uttar Pradesh.

References:

Coale, A. J. and Demeny, P. (1966): "Regional Model Life Tables and Stable Population," Princeton University Press, Princeton, New Jersey.

District Census Handbook of Azamgarh,Chandauli,Jaunpur, Mirzapur, Sonbhadra,Varanasi,2011

Jaffe, A. J. (1960): "Handbook of Statistical Methods for Demographers," (Preliminary Edition-Third Printing) Washington, D. C.: U. S. Government Printing Office.

Grabill, W. H. (1945): "Attrition Life Tables for the Single Population," Journal of the American Statistical association, 40, 364-75.

Long, Larry, H. (1970): "On Measuring Geographical Mobility," Journal of the American Statistical Association, 65, 1195-1203.

Long, Larry, H. (1973): “New Estimates of Migration Expectancy in the United States," Journal of the American Statistical association, 68, 37-43.

Ogburn, W. F. and Winston, E. (1928-29): "The Frequency and Probability of Insanity," American Journal of Sociology, 34, 822-7.

Singh, S.N., Yadava, K.N.S(1984): “Migration expectancy in rural areas of Eastern Uttar Pradesh,” The Indian Journal of social works,45(2),155-166.

Stockwell, E. G. and Nem Charles, B. (1963): "Illustrative Tables of School Life," Journal of the American Statistical Association, 58, 1113-1124.

Wilber, G. L. (1963): "Migration Expectancy in the United States," Journal of American Statistical Association. 58, 444-453.

Wolfbein, S. L. (1949): "The Length of Working Life." Population Studies, 3, 286-294.

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

जेल में सृजनात्मक कार्यक्रम का संरचनात्मक प्रकार्यात्मक पक्ष : एक समाजशास्त्री अध्ययन केन्द्रीय जेल जबलपुर के संबंध में

रीना वासनिक
पी–एच.डी. (समाज शास्त्र एंव समाज कार्य विभाग)
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

भूमिका :– जेल प्रशासन की बढ़ती हुई संवेदनशीलता एंव जेल सम्वासियों के प्रति सुधारवादी दृष्टिकोण का अभ्युदय तथा सामाजिक दृष्टिकोण में उनकी सहभागिता के संरचनात्मक उपयोग के लिये सामाजिक पुर्नवास की विचारधारायें जेल प्रशासन को जहां एक तरफ मानवीय गुणों एवं सामाजिक मूल्यों के अनुसार जेल में परिरूद मानव शक्ति को तैयार करने की प्रेरणा दे रही है, वही दूसरी ओर सामाजिक धरातल में समतल रूप से प्रवाहित होने वाले सरस विचारों का सजृन करना भी आवश्यक हो गया है। बदलते हुए परिवेश में जेल प्रशासन ने अपने में आमूलचूल परिवर्तन कर मानवीय गणों से युक्त वैधानिक व्यवस्था के अंतर्गत जेलों को पुर्नस्थापित करना प्रारंभ कर दिया है।

किसी भी व्यवस्था में नये सिरे से परिवर्तन ले आने के लिए न केवल उनको अपनाना वरन् निर्धारित लक्ष्य के अनुसार अधिकारियों, कर्मचारियों सेवावासियो उनके परिवारजनों एवं जेल कर्मियों की सकारात्मक पहल एंव भूमिका एवं आवश्यक आयाम है। जेल में बंद बंदी भाईयों की तथा जेल वातावरण से संबंद्ध मानव समूह की मानसिकता में परिवर्तन ले आने के लिए इनमें खेलकूद, पी.टी., योगा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, साहित्यिक गतिविधियां, मानसिक उपचार, शारीरिक संरक्षण एंव हिफाजत ऐसे बिन्दु है, जिनके माध्यम से सभी घटको को एक–दूसरे के नजदीक ले आना, आपसी सामंजस्य एवं विश्वास उत्पन्न करने का प्रयास करना, जागरूकता एवं समर्पण की भावना का विकास करना, जेल संगठन से जुड़े कर्मियों और बंदियों के जीवन में गतिशीलता ले आने के लिए विभिन्न प्रकार के विचार और बदले हुए दृष्टिकोण में एक–दूसरे से विचार विमर्श करके नया सृजनकरना होगा। जेल एक ऐसी संवेदनशील संस्था है जहां पूरे परिवेश को बदलने की आवश्यकता है।

जेल में सृजनशीलता के उद्देश्य :–

- बंदियों को व्यस्त रखना।
- बंदियो को प्रशिक्षित करना।
- बंदियों का सुधार करना।
- बंदियों को अनुशासन और नियंत्रण में रखना।
- बंदियों में सामाजिक जीवन के प्रति रूचि उत्पन्न करना।
- बंदियों के सामाजिक पुर्नवास में सहायक होना।

निदर्शन :– जबलपुर केन्द्रीय कारागार में वर्तमान में 2403 कैदी है इनमें से पुरूष एंव महिलाओं का 12 प्रतिशत निदर्शन के रूप में अर्थात् लगभग 300 कैदी, जिसमें 280 पुरूष और 20 महिला कैदी को लिया गया है। इसके साथ ही जेल में विभिन्न प्रशासनिक पदों पर 197 कर्मचारी कार्यरत है, जिसका 10 प्रतिशत निर्यात 20 कर्मचारी या चयन दैव निदर्शन विधि के द्वार विषय से संबंधित तथ्यों का संकलन किया गया।

सृजनात्मक कार्यक्रम एक दृष्टि में :–

अ. परिवेश में सुधार

ब. काउंसिलिंग कार्यक्रम

स. नियमों का उचित ज्ञान कराना

द. बंदियों के लिए सृजनात्मक कार्यक्रम

अ. परिवेश में सुधार :–

- जेल परिसर का परिवेश :– परिसर का सुधार, भवन का सुधार, प्राकृतिक दृश्य व वातावरण बागवानी, गार्डन का लगाना, हिफाजत करना।

- जेल व्यवस्था का परिवेश :– अमले की समयबद्ध उपस्थिति, आत्मअनुशासन का विकास, कार्यालय संधारण पर ध्यान, संचार विहीनता को देर करना गुणात्मक निष्पादन को प्रोत्साहन देना, कार्य की समीक्षा करना।
- जेल के बंदियों का परिवेश :–बंदी समस्या को चिन्हित करना, स्वैच्छिक संगठन को जोड़ना, शासकीय/अद्धशासकीय संदर्शनों को जोड़ना, भम्रण एवं पारदर्शिता को बढ़ाना।

ब. काउंसिलिंग कार्यक्रम :– अधिकार, कर्त्तव्य, दायित्व सुविधा का ज्ञान करना, अनुशासन नियंत्रण, पुरस्कार, दण्ड की जानकारी देना, भोजन, वस्त्र, आवास, संचार, विधिक सहायता उपचार बावत् बताना, सुधार से संबंधित कार्यक्रमों की जानकारी देना।

स. नियमों का उचित ज्ञान करना :–जेल नियमावली के अंतर्गत मिलने वाली सभी सुविधाएं प्रदान कराना। नियमो का पालन कराना।

द. बंदियो के लिए सृजनात्मक कार्यक्रम :–

- शैक्षणिक कार्यक्रम :– सम्पूर्ण साक्षरता, उत्तर साक्षरता, प्राथमिक प्रौढ़ शिक्षा, राष्ट्र भाषा परीक्षा, स्कूल शिक्षा, महाविधालयीन शिक्षा।
- मानसिक शारिरीक कार्यक्रम :– खेलकूद, पी. टी., योगा, विपश्यना रैकी, आर्ट ऑफ लिविंग, खुशबू परियोजना, साथी कार्यक्रम, आस्था कार्यक्रम, चुनूगुन कार्यक्रम, ममता तथा प्रत्यक्ष कार्यक्रम।
- धार्मिक तथा आध्यात्मिक कार्यक्रम :– प्रार्थना, भागवत, पूजा पाठ, वीडियो, सतसंग, धार्मिक प्रवचन और उपदेश।
- सांस्कृतिक कार्यक्रम :– गीत संगीत, नृत्य, ड्रामा, लेखन, गायन, पेन्टिंग, मूर्तिकला।
- औघोगिक प्रशिक्षण :– कम्प्यूटर टायपिंग, सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, कसीदकारी, प्रिटिंग, लाहारी, बढ़ईगिरी, साबुन निर्माण, भवन निर्माण एंव भवन सामग्री निर्माण कार्य, स्किल डेवलपमेंट पोग्राम, कृषि, बागवानी, गोपालयन एंव अन्य जीवनोपयोगी प्रशिक्षण ।
- महिला बंदियों के लिए विशिष्ट सृजनात्मक कार्यक्रम :– मोमबत्ती, अगरबत्ती, बरी, आचार, पापड प्रशिक्षण, सिलाई, बुनाई, ब्यूटी पार्लर, गुडिया बनाना या हस्तकला का प्रशिक्षण आदि।

बंदियो के विचार जेल की कार्यप्रणाली को रूचिकर बनाने के तरीके बावत्

तालिका क्रं.–1

क्रं.	बंदियों का विचार जेल की कार्यप्रणाली को रूचिकर बनाने के तरीके बावत्	बंदियों का विवरण				योग	
		पुरूष बंदी		महिला बंदी			
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7	8
1	खेल के माध्यम से	02	25.00	00	00	02	22.22
2	योग के माध्यम से	01	12.50	00	00	01	11.11
3	आध्यात्मिक कार्यक्रम द्वारा	01	12.50	00	00	01	11.11
4	सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा	04	50.00	01	100	05	55.56
	योग–	08	100	01	100	09	100

जेल की कार्यप्रणाली को रूचिकर बनाने के तरीके में सांस्कृतिक कार्यक्रम का विचार 09 पुरूष बंदी में से 05 (55.56) प्रतिशत ने कहा हैय 20 (22.22) प्रतिशत ने कहा कि खेल के माध्यम से भी कुछ हद तक कार्यप्रणाली में परिवर्तन ला कर कुछ रूचिकर बनाया जा सकता है बाकि 02 (22.22) प्रतिशत ने कहा है कि योग ध्यान के माध्यम से तथा आध्यात्मिक कार्यक्रम द्वारा भी कुछ रूचि जेल कार्यप्रणाली के प्रति पैदा की जा सकती है। 50.00 प्रतिशत पुरूष बंदी सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा ही रूचिकर बनाने की बात कर रहे है। महिला बंदियों ने तो 100.00 प्रतिशत ने सांस्कृतिक कार्यक्रम को प्रमुख्यता दी है।

वर्ष 2015–2016 में विभिन्न व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्य में लगे बंदी

क्रं.	ट्रेड का नाम	प्रशिक्षण कार्य में लगे हुए बंदी	प्रतिशत
1	कृषि एवं बागवानी	293	07.60
2	बुनाई	2468	61.50
3	ट्रेलरिंग	360	09.20
4	लोहारी	84	02.10
5	कारपेन्टरी	240	06.20
6	प्रिंटिंग	198	05.30
7	साबुन बनाना	96	02.40
8	मोटर वांइडिंग	114	02.80
9	योग	3853	100

सृजनात्मक कार्यक्रम के परिणाम :– बंदियों की मानसिकता में परिवर्तन आया और उनमे आत्मविश्वास की मात्रा की वृद्धि हुई। वह जेल की संवेदनशीलता को समझने लगे। संस्था में आयोजित क्रीड़ाओं से जहां एक और बंदियों के शारीरिक विकास दूर हुए वहो दूसरी ओर योगा, विपश्यना, रैकी, आर्ट ऑफ लिविंग के माध्यम से मनोविकार दूर करने का सफलतम प्रयास किया गया। व्यवहारिक परिवर्तन ले आने हेतु आध्यात्मिक कार्यक्रम के माध्यम से बंदियों के आचार–विचारों में परिस्मरण परिलक्षित हुआ है। बंदियों को प्राबेटेशन पैरोल एवं आपात रिहाई तथा विभिन्न अवसरों पर परिहार का लाभ प्रदान कर उन्हें समाज में पुनर्वासित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

उक्त सभी कार्यक्रम से जहां एक ओर बंदी का जेल से मुक्ति उपरांत समाज में पुर्नवास होगा वही दूसरी ओर समाज में अपराधिक सोचपूर्ण कुकृत्यों में कमी आयेगी एवं समाज को अपना दिग्भ्रमित व्यक्ति, अच्छा नागरिक बनकर प्राप्त होगा।

सुधार कार्यक्रमों व जेल के सृजनात्मक पक्ष से जुडकर बंदियों ने केवल अपने में कार्यकुशलता का विकास किया बल्कि जेल में अच्छा कार्य कर जेल में माफी प्राप्त कर अपनी सजा को भी कम करने मं सफल हुए।

<u>निष्कर्ष</u> :– सृजनात्मक कार्यक्रम से बंदी विश्वास में वृद्धि हुई है। उनके सोच व विचार धारा में यह परिवर्तन आया कि वह अपराधी प्रवृत्ति छोड़कर समाज में अपने को पुनः स्थापित कर सकता है। उसे लगने लगा कि जेल अधिकारी उनके जीवन निर्माण हेतु कार्य करते है। बंदी जेल में रहकर भी कुछ अनुशासनहीनता करते थे तथा नियमो का उल्लंघन भी करते थे। उनके सुधार एवं प्रशिक्षण कार्य से आत्मज्ञान उत्पन्न हुआ है। जेल संगठन संरचनात्मक रूप से सृदृढ़ हुआ है, जेल दण्डस्थल न होकर सुधारस्थल और सुजनात्मक की कार्यशाला के रूप में प्रतीत होता है।

संदर्भ :–

- विभागीय प्रशासनिक प्रतिवेदन केन्द्रीय जेल जबलपुर, (2015–2016)
- अपराध शास्त्र (विधि एवं न्यायिक विज्ञान) डॉ. राजू टंडन, साहित्य सेवा सदन सागर, (2010)
- अपराध शास्त्र डॉ. सतीशचन्द्र भटनागर सुविधा लॉ हाऊस भोपाल (2000)
- जेल में अभिनव कार्यक्रम डॉ. लाल जी, (प्रकाशक – जेल प्रशासन, 2006)
- जेल की दशा और दुर्दशा डॉ. लाल जी मिश्र, जेल विभाग (2002)

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लवकुश महाकाव्य का वात्सल्य वर्णन

डॉ. राजेश पाठक
अतिथि विद्वान, शासकीय महाविद्यालय पृथ्वीपुर, जिला टीकमगढ़ (म.प्र.)

यावत स्थास्यन्ति गिरिय : सरितष्च महीतले।
तावत रामायण कथा लोकेशु प्रचीरस्यते।।

अर्थात् जब तक पृथ्वी पर पर्वत और नदियॉ विद्यमान है तब तक लोक में रामायण कथा गाई जायेगी यादि महाभारत भारत वर्ष की शक्ति, उसकी मेधा और उसका मस्तिश्क है तो रामायण उसका हृदय। महाभारत का सृजन पट वेदव्यास के तप : सिद्ध ध्यान में, प्रज्ञा के प्रकाश में उसका प्रत्येक चरण मानो एक–एक ऋदक हो। वाणविद्ध क्रोंच मिथुन के शोक से जब वाल्मीकि का हृदय व्यथित हुआ तब रामायण की सृष्टि हुई जिसका प्रत्येक चरण मानो कवि हृदय के रक्तशाणिमा से लिखा गया हो। रामायण ओर महाभारत भारत वर्ष के भाव मण्डल के दो गोलार्द्ध हैं। जो राम है वही कृष्ण है। महाभारत कहता है कि भगवान है, किन्तु रामायण कहती है कि भगवान न केवल हम लोगों के मध्य आते है बल्कि हम लोगों जैसे बनकर प्रेम करते हैं। विश्व साहित्य में अनेक भाषाओं में रामकथा का वर्णन किया गया है। महाकवि रामाशंकर मिश्र द्वारा रचित लवकुश महाकाव्य भवभूति के उत्तर रामचरित के रहते हुए भी जिस प्रबंध पटुता के साथ अपनी प्रतिभा में काव्योत्कर्श उत्पन्न किया है वह अनूठा है। महाकवि ने प्रतिभा के सदाश्रय से आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों की पारंपरिक कथावस्तु को एक नये वाक्य क्लेवर में प्रस्तुत किया है जिसमें लवकुश की बाल क्रोड़ाओं का वर्णन वात्सल्य की भाव भूमि पर नवीनता का परिचायक है। प्राचीन स्रोतों से प्राप्त आधुनिक कवियों ने सीता निर्वासन और लवकुश के प्रसंगो को लेकर नये सामाजिक सरोकारों से जोड़ने का प्रयास किया है किन्तु लवकुश महाकाव्य की कथावस्तु बिना अतिक्रमण किये आधुनिकता के नाम पर विद्रोह और असंतोश की विकृतियों में न उलझकर नारी के सतीत्व आर वात्सल्य का सटीक चित्रण किया है। मानवता का हित ही लवकुश महाकाव्य का ध्रुव ध्येय है और ऋषि संस्कृति से समन्वित नैतिक जीवन मूल्यों का संरक्षण ही महाकाव्य का केन्द्र है। वात्सल्य भाव वर्णन करते समय महाकवि ने बालोचित वेश–भूषा, चेष्टाओं, क्रोड़ाओं, बालमनोभवो एवं अंतः प्रकृति का चित्रण अत्यंत सूक्ष्मता के साथ किया है –

खिला सुखद वात्सल्य – सुतरू था।

लव–कुश जिसके सुरभित फूल।।

वैदेही–पातिव्रत–गंगा के थे सत्य शील दो कूल।

वयस रच रही दिवस – निषा से पक्ष – मास
मासों से वर्ष ।

नन्हें – नन्हें अंग खिल रहे , पुश्कर खिलता यथा सहर्ष ।।

लवकुश की विजय वनाश्रय की विजय है, प्रभुसत्ता एवं यश विचार मूलक लोकतंत्र पर अभिनव, उदार, कला एवं सौन्दर्यपरक युवा पीढ़ी के अस्तित्व संघर्ष का विजय नाद है। पुरूष पर नारी करूणा का उत्र्सग निनाद है। राजा पर प्रजा और राजनीति पर ऋषि कविता की विषय वस्तु महाकाव्य में मधुर मनोज्ञ एवं अंतः अनुभूतियों के साथ इस प्रकार अभिव्यक्त हुई है जिस पर रामकथा रसज्ञों को गौरव की प्रबल अनुभूति होगी। पति द्वारा निर्वासित महारानी सीता की करूण दशा के लिए उत्तरदायी विधि के विधान पर कवि को प्रश्न चिन्ह लगाती हुई वाणी इस प्रकार मुखरित हुई है –

निश्छल पवित्र जीवन में कष्टों का कैसा नाता

सुकुमार सुअन के आगे असहाय हुई है माता

भाव काव्य का यदि सूक्ष्म सौन्दर्य है तो कला उसका वाह्य आकर्षण और दोनों का समन्वित रूप काव्य को पूर्णता प्रदान करता है। उक्त दृष्टि से रामकथा पर आधारित लवकुश महाकाव्य राम के धरोहर की गौरव गाथा है। भारतीय नारी की नियति और उसके आंतरिक स्वरूप की प्रस्तुति देखने को मिलती है –

नारी सुरसरि देवी है ।

मानवता सुख सेवी है ।

नारी कष्टो की भाषा .....

उक्त विचारो के माध्यम से कवि ने सीता के उदात्त चरित्र का वर्णन एक प्रतीक के रूप में किया है जिसमें सम्पूर्ण नारी जाति की पीड़ा का अनुभव होता है। लवकुश महाकाव्य में जहॉ एक ओर सीता का निर्बल असहाय रूप देखने को मिलता है तो वही दूसरी ओर निश्छल पति प्रेम और संतान के प्रति वात्सल्य का आदर्श रूप परिलक्षित होता है। प्राचीन काल से पौराणिक पात्रों की बाल्यावस्था कवियों के लिए वात्सल्य रस की विषय वस्तु रही है जिसमें लव–कुश की बालक्रोड़ाओं का कवि ने सांगोपांग वर्णन किया है जो रामकथा रसिकों के लिए नवीन भाव भूमि निर्मित कर पुरातन और नूतन का मिश्रण कर वात्सल्य की अनूठी झांकी प्रस्तुत करना लवकुश महाकाव्य का प्रमुख लक्ष्य है जो समूची मानव जाति के लिए प्रेरणास्पद है ।

संदर्भ सूची :–

01. लवकुश भूमिका – डॉ. चंद्रिका प्रसाद दीक्षित।
02. लवकुश पृष्ठ संख्या 83 – रमाशंकर मिश्र।
03. लवकुश पृष्ठ संख्या 95 – रमाशंकर मिश्र।
04. लवकुश पृष्ठ संख्या 63 – रमाशंकर मिश्र।

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

समाज में सामाजिक सुरक्षा का अर्थ एवं महत्व

राजेन्द्र गिरि
चौरई जिला छिंदवाड़ा (म.प्र.)

प्रस्तावना : सामाजिक सुरक्षा की विचारधारा उतनी ही पुरानी है जितना कि समाज। परंतु व्यक्तियों की सामाजिक चेतना के साथ साथ उसके दृष्टिकोण तथा क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ है। गंभीरतापूर्वक मनन करने पर यह प्रतीत होता है कि सम्मिलित परिवार तथा व्यक्तिगत दान योजना तथा असहाय व दरिद्र व्यक्तियों को सहायता करने की प्रवृति, आदि सभी में सामाजिक सुरक्षा की भावना निहित है। आद्योगिक क्रांति के पूर्व सम्मिलित परिवारों, धार्मिक मठों मंदिरों आदि ने अपने सदस्यों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान की परंतु कालांतर में उसे अपर्याप्त समझा गया। दूसरे औद्योगिक क्रांति के उपरांत समाज में पूंजीवाद का बोलबाला होने से श्रमिक वर्ग का शोषणश्शुरु हो गया। औद्योगीकरण के प्रारंभ में प्रायः सभी देशों में श्रमजीवी को बहुत कम मजदूरी दी जाती थी तथा मजदूरी के भुगतान में अनियमितता व कटोती आदि के कारण उन्हें आय की असुरक्षा का सामना करना पड़ा। रोजगार की अनिश्चितता ने जले पर नमक छिड़कने का कार्य किया। काम करने की दूषित दशाओं तथा मशीन आदि में सुरक्षा का पर्याप्त प्रबंध न होने से श्रमिक विभिन्न प्रकार की औद्योगिक दुर्घटनाओं तथा बीमारी के शिकार हुए। संयुक्त परिवार तथा ग्रामीण संगठन का ह्रास, बीमारी, बेकारी, दुर्घटना, वृद्धावस्था की कठिनाईयों आदि ने सामाजिक सुरक्षा के महत्व पर बल दिया। परिणामतः विभिन्न औद्योगिक देशों में मजदूरी भुगतान अधिनियम मातृत्व तथा दुर्घटना लाभ अधिनियम, सामाजिक बीमा संबंधी अधिनियम स्वीकार किए गय। इस प्रकार सामाजिक सुरक्षा की विचारधारा का सूत्रपात हुआ तथा शनैःशनैः इसकी लोकप्रियता बढ़ती गई।

परिभाषा – सामाजिक सुरक्षा की कोई स्वीकृति परिभाषा नहीं है ओर विभिन्न देशों में इसका भिन्न भिन्न अर्थ लगाया जाता है। कुछ देशों मे इसका आशय आय सुरक्षा, स्वास्थ एवं कल्याण सुरक्षा का संपूर्ण क्षेत्र सम्मिलित है ओर कुछ देशों में तो आवास व्यवस्था भीश्शामिल की जाती है। सामाजिक सुरक्षा की अवधारणा को भली प्रकार समझने के लिए निम्न परिभाषाओं पर चिंतन करना आवश्यक हैं :–

सर विलियम बेवरिज के मतानुसार ''सामाजिक सुरक्षा का आशय एक ऐसी पद्धति युक्त योजना से है जिसके द्वारा आवश्यकता, बीमारी, अज्ञानता, फिजूलखर्ची ओर बेकारी इन पांचों दानवों पर विजय मिले।''

विवेचना :

अ. आवश्यकता के विरुद्ध सुरक्षा का अभिप्राय है कि प्रत्यैक नागरिक को उसकी सेवाओं के बदले इतनी पर्याप्त आय दिलाई जाए जोकि प्रत्येक नागरिक के आश्रितों के जीवन निर्वाह के लिए जबकि वह काम कर रहा है या नहीं दोनो ही समय पर्याप्त हो।

ब. अज्ञानता के विरुद्ध सुरक्षा से आशय समाज के सभी सदस्यों को अधिकाधिक शिक्षा संबंधी सुविधाएं उपलब्ध करने का है।

स. बीमारी से सुरक्षा का आशय है कि बीमारी के समय प्रत्यैक नागरिक को चिकित्सा संबंधी सुविधाएं दिलाना तथा स्वास्थ का यथोचित स्तर बनाए रखने में उनकी सहायता करना।

द. बेकारी क विरुद्ध सुरक्षा के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक उत्पादक सेवकों को उनकी सेवाओं के बदले यथोचित आय का समुचित अवसर प्रदान करना सम्मिलित किया जाना है।

ई. फिजूलखर्ची के विरुद्ध सुरक्षा से आशय उन दोशों को रोकना है जो कि नगरों की अनियोजित वद्धि से उत्पन्न होते है। अर्थात् उद्योग एवं जनसंख्या का अधिक श्रेष्ठ विकास एवं आवास व्यवस्था में सुधार करना इस प्रकार की सुरक्षा के अतंर्गत आता है।

सन् 1942 में अपनी सामाजिक सुरक्षा की योजना को प्रस्तुत करते समय बेवरिज ने कहा था कि सामाजिक व आर्थिक पुनर्निमाण के मार्ग पर ये पांच दानव सबसे प्रमुख बाधाएं है। अतः

ऐसा संगठन जो इन पांच दानवों पर आक्रमण करने के उद्वेश्य से आयोजित किया जाए सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने वाला संगठन कहलाएगा।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन :– सामाजिक सुरक्षा वह सुरक्षा है जो कि समाज उपयुक्त संगठन द्वारा अपने सदस्यों के जीवन में आने वाले विभिन्न संकटों में प्रदान करता है। सुरक्षा एक मानसिक स्थिति है तथा एक वास्तविक व्यवस्था भी है। सुरक्षा प्राप्त होने से आशय यह है कि मनुष्य को इस बात का विश्वास हो जाए कि आवश्यकता पड़ने पर उसे निश्चित सुरक्षा प्राप्त होगी।

आई.एल.ओ. के मतानुसार सामाजिक सुरक्षा एक मानसिक तथा भौतिक दोनों ही प्रकार की अवधारणा है।

न्युजीलैंड की सामाजिक सुरक्षा पद्धति –न्युजीलैड में इसबात पर बल दिया गया है कि ''सभी नागरिकों के लिए कठिनाईयां होते हुए भी एक न्युनतम जीवन स्तर सुलभ किया जाए तथा उसके स्वास्थ की रक्षा की जाए।

मरिस स्टेक – सामाजिक सुरक्षा से तात्पर्य समाज द्वारा प्रदान की गई उस सुरक्षा से है जो कि आधुनिक जीवन में उत्पन्न होने वाली आकस्मिक विपित्तियों जैसे– बीमारी, बेकारी, वृद्धावस्था, औद्योगिक दुर्घटनाओं तथा अपंगता के विरुद्ध प्रदान की जाती हैं क्योंकि स्वय को तथा अपने परिवार को अपनी क्षमता या दूरदर्शिता के आधार पर रक्षा करने की आशा एक व्यक्ति से नहीं की जा सकती।

संक्षेप में सामाजिक सुरक्षा किसी देश के नागरिकों का वह मानवीय अधिकार है जिसके परिणामस्वरुप प्रत्यैक व्यक्ति को सामाजिक जोखिमों तथा अन्य आकस्मिक दुर्घटनाओं से सुरक्षा प्राप्त होती है।

विशेषताएं :

सामाजिक सुरक्षा की विभिन्न परिभाषाओं के अध्ययन से इसकी निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएं प्रकट होती हैः–

1. सामाजिक सुरक्षा समाज के लोगों के द्वारा समाज के लोगों की असुरक्षा हेतु किया जाने वाला सामूहिक प्रयास है।
2. समाज के लोगों द्वारा यह प्रयास किसी संस्था या संगठन या सरकारके माध्यम से किया जा सकता है। सामान्यतः सभी देशों में सरकार के माध्यम से ही सामाजिक सुरक्षा के कार्य किए जाते है।
3. सामाजिक सुरक्षा समाज के लोगों की कुछ विशेष जोखिमों, आपत्तियों या दुर्घटनाओं के विरुद्ध सुरक्षा है।
4. सामाजिक सुरक्षा समाज के उन लोगों को प्रदान की जाती है जो स्वयं अपने निजी साधनों अथवा अपने साथियों के सहयोग से भी जोखिमों का सामना करने असमर्थ होते है।
5. सामाजिक सुरक्षा की विचारधारा सामाजिक न्याय तथा मानवीय प्रतिष्ठा के सिद्धान्त पर आधारित है।
6. सामाजिक सुरक्षा कोई दान नहीं है। बल्कि श्रमिकों द्वारा समाज की गई या की जाने वाली सेवाओं के बदले प्रतिफल है।
7. सामाजिक सुरक्षा का उद्वेश्य आपत्तियों या दुर्घटनाओं की स्थिति में भी एक न्यूनतम जीवन स्तर उपलब्ध कराना है।
8. वर्तमान युग में सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना सरकार का महत्वपूर्ण दायित्व है।
9. सामाजिक सुरक्षा का उद्वेश्य आपत्तियों या दुर्घटनाओं की स्थिति में भी एक न्यूनतम जीवन स्तर उपलब्ध कराना है।
10. सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम एक विसतृत कार्यक्रम है जिसमें सामजिक सहायता सामाजिक बीमा सम्मिलित है।

सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता और महत्व

सामाजिक सुरक्षा आधुनिक औद्योगिक युग की आवश्यकता बन गई हैं। वर्तमान औद्योगिक युग की आवश्यकता बन गई है। वर्तमान औद्योगिकी युग में संयुक्त परिवार प्रथा के टूट जाने पारिवारिक इकाईयों के छोटा हो जाने, ओद्योगिक बीमारियों तथा दुर्घटनाओं के बढ़ते जाने से सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई ही जा रही है। गरीबी, अज्ञानता, बीमारी, अभाव आदि की बढ़ती हुई समस्यां ने समाज के अल्प साधनों वालें लोगों को झकझोर दिया है। ऐसे में अल्प साधनों वाले नागरिकों की सुरक्षा के लिए उपाय करना प्रत्यैक

देश की कल्याणकारी सरकार तथा समृद्ध समाज का उत्तरदायित्व हो जाता है।

जी.डी.एच. कोल के शब्दों में ''समाज का प्रतिनिधित्व करने वाली सरकार का अपने समस्त नागरिकों के लिए न्युनतम जीवन स्तर उपलब्ध करने का उत्तरदायित्व है।

भारत जैसे अनेक राष्टों में सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का महत्व ओर भी अधिक है। महात्मा गांधी ने एक बार कहा था कि ''जनता की आंखों से आंसू पोंछने के लिए भारत में सामाजिक सुरक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है।'' वास्तव में भारत जैसे विकासशील राष्ट में जहां श्रमिकों का जीवन स्तर अत्यंत निम्न है। बैरोजगारी की विकाराल समस्या है प्रति व्यक्ति आय अत्यंत कम है, वहां सामाजिक सुरक्षा की बहुत अधिक आवश्यकता है। जब श्रमिक अपने सामान्य दैनिक जीवन में ही न्युनतम जीवन स्तर को बनाए रखने में कठिनाई अनुभव करते हें तों संकटों एवं दुर्घटनाओं के समय सामान्य जीवन स्तर बनाए रखने की बात तो सोची ही नहीं जा सकती है। अतः श्रमिकों को संकटकालीन अवस्थाओं में आवश्यक सुरक्षा उपलब्ध करना अनिवार्य हो जाता है। प्रो. बी. पी. अदारकर ने इस संबंध में ठीक ही कहा है कि ''आपकों भारत में सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता को जानने के लिए बहुत अधिक प्रयास नहीं करना पड़ेगा। भारत की दरिद्रतापूर्ण दशा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की पुकार–पुकार कर मांग कर रही है।

सामाजिक सुरक्षा को सरकार एवं सेवा योजकों का दायित्व तथा श्रमिक का अधिकार समझा जाने लगा है। मानव अधिकारों के घोषणा पत्र में इस बात को स्वीकार करते हुए यह लिखा गया है कि समाज के सदस्य के रुप में प्रत्यैक व्यक्ति सामाजिक सुरक्षा प्राप्त करने का अधिकारी है। वह राष्टीय एवं अन्तर्राष्टीय सहयोग से अपनी गरिमा के अनुकूल तथा व्यक्तित्व के स्वतंत्र विकास के लिए यह सुरक्षा प्राप्त करने का अधिकारी है।

सामाजिक सुरक्षा का महत्व

सामाजिक सुरक्षा अन्य कई दृष्टिकोणों से भी आवश्यक है। इसका महत्व दिन प्रतिदिन अनेक कारणों से बढ़ता जा रहा है। हम संक्षेप में निम्न कुछ बिंदुओं में इसके महत्व को स्पष्ट कर रहे है।

1. कल्याणकारी सरकार के दायित्व की पूर्तिः– आधुनिक युग में प्रत्येक देश की कल्याणकारी सरकार का यह दायित्व है कि वह अपने देश के नागरिकों को सामजिक सुरक्षा प्रदान करे। देश में संपन्नता एवं विपन्नता की खायी को भरना प्रत्यैक कल्याणकारी सरकार का उत्तरदायित्व होता है। समाज के अल्प साधनों वालें लोगों को संकटों से बचाना ऐसी सरकार का महत्वपूर्ण दायित्व होता है। अन्तर्राष्टीय श्रम संगठन ने लिखा है कि यह प्रत्यैक राज्य सरकार का कर्त्तव्य है कि वह समाज के प्रत्यैक सदस्य को उचित सामाजिक स्तर की गारण्टी दे। वास्तव में यह आधुनिक राज्य का मूल कर्त्तव्य एवं आवश्यक कार्य है। अतः सरकार को अपने इस दायित्व की पूर्ति करने के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का संचालन करना चाहिए।
2. जीवन में स्थिरता– सामाजिक सुरक्षा योजनाएं लोगों के जीवन में स्थिरता लाती है। ये संकटों एवं तनावों से मुक्ति प्रदान करती है। राष्टोय श्रम आयोग ने लिखा है कि सामाजिक सुरक्षा योजनाएं आधुनिक जीवन के कष्टों एवं तनावों में स्थिरता एवं सुरक्षा प्रदान करती है। सामाजिक सुरक्षा योजनाएं श्रमिकों को दुर्घटनाओं, बीमारियों वृद्वावस्था आश्रितों के भविष्य की चिंताओं से मुक्त करती है जिससे लोगां को स्थिरता एवं शांति का जीवन जीने का अवसर मिलता है।
3. आकस्मिक संकटों में राहत प्रदान करनाः– सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता का एक महत्वपूर्ण कारण यह है कि ये श्रमिक/कर्मचारियों को आकस्मिक संकटों की दशा में राहत पहुंचाती है। श्रमिक के जीवन में ऐसे कई आकस्मिक संकट आ जाते हैं जैसे औद्योगिक दुर्घटनाओं, बीमारी आदि। ऐसे समय में उसकी आय का स्त्रोत बंद हो जाता है। और वह तथा उसके परिवार के सदस्य आर्थिक संकट में पड़ जाते है। किंतु सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के

द्वारा उसे ऐसे संकटों के समय राहत पहुंचाई जा सकतो है।

4. वृद्धावस्था की चिंता से मुक्त करनाः– सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता वृद्धावस्था की चिंताओं से मुक्त करने के लिए भी होती है। वृद्धावस्था में कार्य करने की श्शक्ति क्षीण हो जाती है। अतः उसकी आय कम या बिल्कुल समाप्त हो सकती है। ऐसे समय में उसे अपने जीवन के निर्वाह के लिए आर्थिक सहायता की आवश्यकता होती है। पेंशन, राज्य बीमा, ग्रेच्युटी आदि की सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के द्वारा वृद्धावस्था में कर्मचारियों श्रमिकों की सहायता की जा सकती है।
5. स्वास्थ की रक्षा के लिएः– सामाजिक सुरक्षा श्रमिकों/कर्मचारियों के स्वास्थ की रक्षा क लिए भी महत्वपूर्ण है। श्रमिकों को कई सामान्य बीमारियां हो सकती है। इन बीमारियों से छुटकारा दिलाने तथा स्वास्थ की रक्षा करने के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का संचालन किया जाता है। महिला श्रमिकों की प्रसुति काल में स्वास्थ्य की रक्षा के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की बहुत अधिक आवश्यकता होती है। भारत में कर्मचारी राज्य बीमा अधिकनियम के अंतर्गत पुरुष एवं महिला श्रमिकों/कर्मचारियों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए अनेक व्यवस्थाएं की गई है। मातृत्व लाभ अधिकनियम महिला श्रमिकों को प्रसुतिकाल में आराम देने के लिए बनाया गया है।
6. बेरोजगारी से सुरक्षाः– सामाजिक सुरक्षा योजनाएं बेरोजगार व्यक्तियों के लिए भी आवश्यक है। कुछ व्यक्तियों को प्रारंभ से ही कोई कार्य नहीं मिलता है। कुछ व्यक्ति जो पहले रोजगार में थे, किंतु कारखानों में छटनी करने या जबरन छुट्टी के कारण अब बेकार हा जाते हो सकते है। बेरोजगारी भत्ते की व्यवस्था करके उन्हें सामाजिक सुरक्षा प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त छंटनी तथा जबरन छुट्टी के समय कुछ मजदूरी का भुगतान करके भी उन्हैं सुरक्षा प्रदान की जाती है। इस प्रकार सामाजिक सुरक्षा की योजनाएं बेरोजगार व्यक्तियों को भी सुरक्षा प्रदान करती है।
7. आश्रितों की सुरक्षाः– सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का महत्व इसलिए भी है। कि ये श्रमिकों/कर्मचारियों के आश्रितों को सुरक्षित रखती है। यदि किसी कर्मचारी/श्रमिक की अकाल मृत्यु हो जाती है तो उसके आश्रितों का जीवन अनिश्चित हो सकता है। उनक जीवन में कुछ स्थायत्वि लाने के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाएं बहुत बड़ी सीमा तक सहायता कर सकती है। सामाजिक बीमा, अन्य बीमा योजनाओं के द्वारा कर्मचारियों/ श्रमिकों के आश्रितों को सुरक्षा प्रदान कह जा सकती है। भारत में मृत्यु राहत कोष की भी स्थापना की गई है। जिससे से श्रमिकों की मृत्यु की दशा में आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। जमा संबंध बीमा योजना के अंतर्गत भी श्रमिकों के आश्रितों को सुरक्षा प्रदान की जाती है।
8. सामाजिक बुराईयों से सुरक्षा :– सामाजिक सुरक्षा कार्यकम से अनेक सामाजिक बुराईयों को दूर किया जा सकता है। तथा इनसे श्रमिकों को सुरक्षित किया जा सकता है। अत्यधिक निर्धनता से समाज में वेश्यावृति भिक्षावृति चोरी, डकेती जैसी बुराइयों का जन्म होता है। समाज के लोगों को पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा प्रदान करके उन्हें इन बुराईयों से बचाया जा सकता है।
9. कुशल श्रमिकों की निरंतर उपलब्धिः– भारत के भूतपूर्व राष्टपति वी.वी. गिरि ने लिखा है कि ''सामाजिक सुरक्षा के अभाव में स्थायी एवं कुशल श्रमिकों का बड़ा महत्व है। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के द्वारा सभी कर्मचारियों/श्रमिकों को संस्था के प्रति स्थायी रुप से आकर्षित किया जा सकता है।
10. सुदृढ़ श्रम संबंधों का निर्माण :– सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के कियान्वयन से संस्था में अच्छे सुदृढ़ श्रम संबंधों का निर्माण किया जा सकता है। संस्था के कर्मचारी जब सुरक्षित अनुभव करते है। तथा उन्हें संकट के समय सुरक्षा प्रदान की जाती है तो वे

संस्था को अपनत्व के भाव से देखते हैं। परिणामस्वरुप श्रमिकों एवं सेवायोजकों के बीच अच्छे संबंधों का निर्माण होता है।

11. औद्योगिक शांति :– सामाजिक सुरक्षा योजनाओं तथा ग्रेच्युटी राज्य बीमा पेंशन आदि को लागू करके अनावश्यक श्रम विवादों को रोका जा सकता है। इसस देश में औद्योगिक श्शांति बनी रहती है।
12. कार्यकुशलता में वृद्धि :– वी. वी. गिरी के अनुसार ''सामाजिक सुरक्षा के कार्य श्रमिकों को अधिक कुशल बनाने में योगदान देते है। जीवन में आने वाले संकटों से निश्चिन्त हो जाने पर सभी अपने कार्य को मन लगाकर कर सकते है। इससे उनकी कार्यकुशलता में वद्धि होती है।

राष्टीय श्रम आयोग ने लिखा है कि ''सामाजिक सुरक्षा विकास के लिए प्रेरणा है तथा श्रमिकों की कार्यकुशलता में सुधार की प्रकिया में भय को समाप्त करने की आशा प्रदान करती है।

सामाजिक सुरक्षा का क्षेत्र

सामाजिक सुरक्षा की अवधारणा अत्यंत विस्तृत है। इसमें वे सभी प्रकार के कार्य सम्मिलित किए जाते है। जिनके द्वारा समाज के लोगों को आकस्मिक दुर्घटनाओं या संकटों से सुरक्षा प्रदान की जाती है। सामान्यतः सामाजिक सुरक्षा में दो महत्वपूर्ण कार्य सम्मिलित किए जाते है –

अ. सामाजिक सहायता तथा

ब. सामाजिक बीमा।

अ. सामाजिक सहायता

सामाजिक सहायता वह सहायता है जो सरकार द्वारा अपने साधनों में से अभावग्रस्त व्यक्तियों या अल्पसाधनों वाले व्यक्तियों को न्युनतम जीवन स्तर बनाए रखने के लिए उपलब्ध की जाती है। सरकार यह सहायता कोई दान–स्वरुप नही देती है बल्कि इसे प्राप्त करना लोगों का अधिकार होता है। सामाजिक सहायता का अधिकार बनने के लिए किसी भी व्यक्ति को अपना अंशदान भी नहीं करना पड़ता है बल्कि सरकार ही अपने कोष से यह सहायता उपलब्ध करती है। सरकार इस प्रकार की सहायता देने के लिए सामान्य बजट मं व्यवस्था करती है। जिसे करों या अन्य आय से प्राप्त किया जाता है।

राष्ट्रीय श्रम आयोग ने सामाजिक सहायता की परिभाषा देते हुए लिखा है कि ''सामाजिक सहायता न्युनतम जीवन स्तर के लिए अधिकारपूर्वक लाभ प्रदान करती है तथा कार्यरोपड़ द्वारा इस योजना की वित्त व्यवस्था की जाती है। भारत में सामाजिक सहायता की अनेक योजनाएं हैं, यथा मृत्यु सहायता कोष' 'वृद्धावस्था पेंशन योजना आदि। इन सब योजनाओं से कर्मचारियों को सहायता उपलब्ध हो सकती है, किंतु कर्मचारियों को कुछ भी देना नहीं पड़ता।

सामाजिक सहायता की विशेषताए

सामाजिक सहायता की कुछ प्रमुख विशषताएं निम्नानुसार है

1. सामाजिक सहायता कार्यकम सरकार द्वारा संचालित कार्यकम होता है।
2. इस कार्यकम के माध्यम से सरकार आर्थिक रुप से कमजोर या आर्थिक संकटों से घिरे हुए व्यक्तियों को राहत प्रदान करने अथवा उनकों संकट से मुक्ति दिलाने का प्रयास करती है।
3. इस सहायता के प्राप्त करने वाले को कोई अंशदान नही देना पड़ता है।
4. इस सहायता का उद्वेश्य लोगों के न्युनतम जीवन स्तर के अधिकार को सुनिश्चित करना है।
5. सामाजिक सहायता का उद्वेश्य लोगों के न्युनतम जीवन स्तर अधिकार को सुनिश्चत करना है।

ब. सामाजिक बीमा

सामाजिक बीमा वह व्यवस्था है जिसमें श्रमिकों, सेवायोजकों तथा सरकार सहयोग से बेरोजगारी, बीमारी दुर्घटनाओं मृत्यु आदि अनेक जोखिमों का बीमा करवाया जाता है ताकि उन जोखिमों में भी उसका तथा उसके परिवार का जीवन स्तर बनाये रखा जा सकता है।

सर विलियम बेवरिज के अनुसार अंशदान के बदले व्यक्तियों को अधिकार के रुप में निर्वाह

स्तर तक सुविधाएं देना ही सामाजिक बीमा है ताकि वे निश्चित होकर जीवन यापन कर सकें।

राष्ट्रीय श्रम आयोग ने सामाजिक बीमा की परिभाषा करते हुए लिखा है कि ''सामाजिक बीमा वह योजना है जो अल्प आय वर्ग के लोंगों को अधिकारपूर्वक वह राशि लाभ के रुप में प्रदान करती है जो बीमित, सेवायोजक तथा सरकार के अंशदान से एकत्रित होती है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता हे कि सामाजिक बीमा एक ऐसी युक्ति है जिसके द्वारा बीमित की बेराजगारी बीमारी या आकस्मिक दुर्घटनाओं के समय जीवन स्तर को बनाए रखने के उद्वेश्य से एक सामान्य कोष में से सुविधाएं प्रदान की जाती है। यह सामान्य कोष श्रमिकों, सेवायों तथा सरकार के त्रिपक्षीय अंशदान से बनाया जाता है। सामाजिक बीमा में अनेक प्रकार के बीमा सम्मिलित होत है। जैसे बीमारी बीमा मृत्यु बीमा, असमर्थता/अयोग्यता बीमा, बेरोजगारी बीमा, वृद्धावस्था बीमा आदि। हमारे देश में बेरोजगारी बीमा को छोड़कर सभी प्रकार की सामजिक बीमा योजनाएं चलाई जा रही है।

सामाजिक बीमा की विशेषताएं

सामाजिक बीमा की कुछ प्रमुख विशेषताएं निम्नानुसार है

1. सामाजिक बीमा अंशदान देकर करवाया जाता है।
2. यह अंशदान सामान्यतः सेवायोजक कर्मगचारियों तथा सरकार तीनों ही पक्षकारों द्वारा दिया जाता है।

प्रतिदर्श सदस्यों की विशेषताएं

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत सर्वेक्षण हेतु प्रतिदर्श के रुप में कुल मिलाकर 4210 सदस्यों का चयन किया गया। सदस्यों का पदकम के या श्रेणी अनुसार विवरण अग्रांकित सारणी एवं आगामी पृष्ट में रेखाचित्र में प्रस्तुत हैः–

सारणी कंमांक 1

प्रतिदर्श सदस्यों का पदश्रेणी के अनुसार

क्र.	श्रेणी	संख्या	प्रतिशत
1.	प्रथम श्रेणी	00	00
2.	द्वितीय श्रेणी	309	7.5
3.	तृतीय श्रेणी	3901	92.5
	योग	4210	100

स्त्रोतः– सर्वेक्षण द्वारा संगृहित प्राथमिक समंक

व्यक्तिगत सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार में यह पाया गया है कि प्रस्तुत शोध क्षेत्र के अंतर्गत स्थापति संगठनों के कर्मचारी जो क. रा. बी. योजना के सदस्य है ओर जिन्हें प्रतिदर्श रुप में चयनित किया गया उनमें सर्वाधिक संख्या चतुर्थ एवं तुतीय श्रेणी कामगार है जो कुल मिलाकर प्रतिदर्श सदस्यों का 92.5 प्रतिशत है। द्वितीय श्रेणी कर्मचारियों की संख्या 309 है जो कुल मिलाकर प्रतिदर्श सदस्यों का 7.5 प्रतिशत है जबकि प्रथम श्रेणी कर्मचारी इन योजनाओं के सदस्य नहीं पाये गये।

प्रतिदर्श सदस्यों का विभाजन कार्यविधि के अनुसार भी किया गया हैं। कार्य की प्रकृति को ध्यान में रखकर प्रतिदर्श सदस्यों को निम्नानुसार विभाजित किया गया है।

1. निर्माण या उत्पादन के आधार पर
2. व्यापार या कय विकय के आधार पर एवं
3. सेवाकार्य के रुप में।

सारणी कं 2

प्रतिदर्श सदस्यों का कार्यविधि अनुसार विवरण

क्र.	कार्यविधि	संख्या	पतिशत
1.	निमार्ण/उत्पादन	1781	42.3
2.	व्यापार विपणन	1419	33.7
3.	सेवा क्षेत्र शिक्षा सहित	1010	24.0
	योग	4210	100

स्त्रोतः– सर्वेक्षण द्वारा संगृहित प्राथमिक समंक

उपरोक्त सारणी एवं अग्र रेखाचित्र में कार्यविधि अनुसार चयनित प्रतिदर्श सदस्यों की संख्या प्रस्तुत है। स्पष्ट है कि चयनित सदस्यों में से 1781 सदस्य अर्थात 42.3 प्रतिशत निर्माण

उद्योग से संबंधित है जबकि व्यापारिक कियाओं ओर सेवा कार्यों में संलग्न प्रतिष्ठानों के सदस्य कमशः 33.7 प्रतिशत एवं 24 प्रतिशत है। निष्कर्ष सर्वाधिक प्रतिशत सदस्य निर्माण कियाओं में संलग्न है जबकि सबसे कम सदस्य व्यापारिक कियाओं के पश्चात सेवा क्षेत्र में संलग्न प्रतिष्ठानों के कर्मचारी है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

1. प्रो. ज्ञानेन्द्र उपाध्याय – व्यवसाय, समाज और सरकार – रमेश बुक डिपो, जयपुर – 2002
2. प्रो. जे. के. अग्रवाल– शोध प्रणाली एवं सांख्यिकी विधियां – रमेश बुक डिपो, जयपुर –2002
3. प्रो. जे. के. अग्रवाल– शोध प्रणाली एवं सांख्यिकी प्रविधियां – रमेश बुक डिपो, जयपुर –2002
4. डॉ. जी.डी. शर्मा, के.के. शर्मा व जी.सी. सुराणा – मानव संसाधन प्रबंध – रमेश बंक डिपो, जयपुर – 2003
5. डॉ. जी.डी. शर्मा, व जी.सी. सुराणा – सेवावर्गीय प्रबंध – रमेश बंक डिपो, जयपुर – 2003
6. डॉ. आर. एस.त्रिवेदी एवं डॉ. डी. पी. शुक्ला – रिसर्च मैथडोलॉजी – साहित्य भवन पब्लि. एण्ड डिस्ट्री. आगरा– 2001

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

अपराध प्रवृति का बालक

श्रीमति शशि झरोलिया
Asst. Pro. Nes Education Collage Jabalpur

प्रस्तावना :–किशोरावस्था में जो बालक एवं बालिकाएं समाज या राज्य के सामान्य नियमों की अवहेलना करते हैं तथा कानूनों को तोड़ते हैं वे किशोर अपराध प्रवृति बालक–बालिकाएं कहे जाते हैं। किशोर के असामाजिक कार्य इतने गंभीर होते हैं कि उन्हें न्यायालयों से दण्ड मिलता हैं। प्रारंभिक अवस्था में जो समस्यामूलक बालक होते है। बड़े होने पर वे अपराधी बालक हो जाते है।

प्रत्येक बालक को अपने परिवार ओर समाज के अनुरुप व्यहार करना पड़ता है। उसके नैतिक गुण सामाजिक व्यवहार ओर आदर्श समाज ओर परिवार के अनुरुप विकसित होते हैं। जब कभी बालक परिवार और आदर्श समाज ओर परिवार के अनुरुप विकसित होते है। जब कभी बालक परिवार और समाज के सिद्धान्तों से विपरीत व्यवहार करता है। तबवह समस्यात्मक बालक माना जाता है। और जबवह समाज के मानदण्डों क विपरीत कार्य करने लगता है तब वह अपराधी कहा जाता है।

बालक में अपराध प्रवृति के बढ़नें के संबंध में शिक्षाविद् ओर मनोवैज्ञानिक चिन्हित रहते है। वे उन कारणों का अध्ययन कर जिस कारण बालक में अपराध प्रवृति बड़ती है। उसके सुधार के लिए कार्यकम आयोजित करते है।

मनोवैज्ञानिकों के मतानुसार – अपराधी बालक वे होते हैं जो असामाजिक कार्यों में लिप्त रहते हैं और समाज के लिए खतरा उत्पन्न करते हैं। संभवत उनका यह असामाजिक व्यवहार उनके आनन्द के लिए हो या उनकी आत्म संतुष्टि के लिए परंतु नुकसान समाज को उठाना पड़ता है। जैसे– जनता की सामग्री को नुकसान पहुंचाना, तोड़–फोड़ करना, चोरी करना, सेक्स संबंधी अपराध आदि।

विद्वानों ने किशोर अपराधी की निम्नलिखित परिभाषाएं दी हैं:–

न्यु मेयरः– ''एक किशोर अपराधी कम आयु वाला वह व्यक्ति हैं जो समाज विरोधी कार्य करने का दोषी है, और जिसका दुराचरण कानून का उल्लंघन है।''

अपराध प्रवृति का बालक

हीली :– ''जो बालक समाज द्वारा स्वीकृत आचरण नहीं करता, वह अपराधी बालक कहलाता है।''

गुडः– ''कोई बालक, जिसका व्यवहार सामान्य सामाजिक व्यवहार से इतना भिन्न हो जाये कि उसे समाज विरोधी कहा जा सके, बाल अपराधी है।''

किशोर अपराध के उदाहरण

1. चोरी करना।
2. दूसरों से मार पीट कर उन्हें शारीरिक आघात पहुंचाना।
3. निर्बलों को शारीरिक एवं मानसिक कष्ट पहुंचाना।
4. तोड़फोड़ करना, सार्वजनिक वस्तुओं को हानि पहुंचाना।
5. सामाजिक ओर राज्य के नियमों का उल्लंघन करना।
6. अपराधियों ओर राज्य के नियमों का उल्लंघन करना।
7. आवारागर्दी, छेड़छाड़ आदि करना।
8. जुआ, शराब, सट्टा, जेबकटी आदि कार्य करना।
9. संस्थानों के नियमों का उल्लंघन कर अनुशासनहीन कार्य करना।
10. यौन संबंधी कार्य– सम या विषम लिंगीय वालों के साथ जबरदस्ती मैथुन जैसे व्यभिचार के कार्य करना।

किशोर अपराध प्रवृति बालक के लक्षण

1. शरीर गठा और हष्ठपुष्ट होता है।
2. साहसी और निडर होता है।

3. क्रूर, इर्ष्यालु ओर नीच स्वभाव का होता है।
4. संवेगों की स्थिरता नहीं रहती।
5. मंद बुद्धि का होता है।
6. विनाशकारी या ध्वंसात्मक कार्यों में आगे रहता है।
7. अपराधों की योजना बनाने में कुशल होता है।
8. मानसिक कार्य जैसे– लिखना, पढ़ना या चित्त की एकाग्रता में असफल रहता है।
9. जिद्दी ओर स्वार्थी होता है।
10. यौन संबंधी कार्यों में अधिक रुचि रखता है।

अपराधी प्रवृति के कारण

1. अनुवांशिक कारण :– लोम्ब्रोसो का मत है कि कुछ बालक जन्म से ही अपराधी मनोवृति का होना है। इसका कारण उनके माता पिता का अपराधी मनोवृति का होना है। अपराधी माता पिता की संतान अपराधी स्वभाव की होते हैं। बर्ट, ग्लूएक ओर अन्य मनोवैज्ञानिकों का मत है कि मंद बुद्धि के माता पिता की संतान मंद बुद्धि की होती है ओर मंद बुद्धि के कारण वे शीघ्र अपराधी मनोवृति के हो जाते है। इसी प्रकार अस्थिर संवेगों वाले माता पिता की संतान भी अस्थिर संवेगों वाली होती है। अपने एक अध्ययन में व्याभिचार में लिप्त माता पिता की संतानों में भी व्यभिचार की तीव्र मनोवृति पाई।
2. शारीरिक कारण :– अंग भंग या अन्य शारीरिक न्यूवता दोष के कारण बालक का परिवार ओर समाज में तिरस्कार होता है। इससे उसके आत्म सम्मान को ठेस पहुंचती है। फलस्वरुप उसमें बदला लेने की प्रवृति जागृत हो जाती है। अवसर आने पर वह बदले की भावना से प्रेरित होकर अपराधपूर्ण कार्यों में लग जाता है।
3. परिवारिक कारण :– पारिवारिक कलह, माता पिता के आपसी झगड़े सदैव हतोत्साहित करने वाली बातें बड़ो का उपेक्षापूर्ण व्यवहार, दूसरों से तुलना कर नीचा दिखाने की भावना मानसिक ओर शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति न होना, तथा अभाव में पला बालक अपराधी मनोवृति का हो जाता है।

कोल महादय का कथन है कि जिस परिवार में बालकों को स्नेह, सहानुभूति और प्रोत्साहन नहीं मिलता जहां सदैव असुरक्षा और भय का पर्यावरण बना रहता है, ऐसे परिवार के बालकों में अपराध की मनोवृति विकसित हो जाती है। बर्ट का मत है कि अधिक रुढ़िवादी, सख्त अनुशासन प्रिय ओर बालक बालिकाओं को जरा भी स्वतंत्रता न देने वाले माता पिता की संताने अपराध मनोवृति वाली हो जाती है।

लेमाक ने अपने अध्ययन में पाया कि बड़े परिवार मे से एक या दो बालक अपराध मनोवृति के हो जाते हैं। इसी प्रकार माता पिता का निम्न श्रेणी का व्यवसाय भी बालक बालिकाओं में अपराधी मनोवृति विकसित करने का कारण होता है।

ऐलिस ने अशिक्षित माता पिता की संतानो को अपराधी मनोवृति वाला पाया।

4. व्यक्तिगत अनुभव :– कुछ बालकों को समाज में अच्छे ओर बुरे व्यक्तिगत अनुभव होते है जैसे – बीड़ी, सिगरेट, शराब के पीने का प्रारंभिक अनुभव बड़ा सुखद होता है। साथियो की प्रेरणा और प्रोत्साहन से शोक बढ़ता जाता है। प्रारंभ में चोरी, जुआं सट्टा ओर लिंगीय कार्यों में बड़ा आनन्द आता है। धीरे धीरे बालकों की आदतें पड़ जाती है। स्वाभाविक रुप से एसी इच्छाएं पूरी करता है। लोम्ब्रोसी ने व्यभिचार के मूल कारणों में प्रारंभिक यौन सुख का अनुभव प्राप्त करना पाया। समाज द्वारा मिले बुरे व्यक्तिगत अनुभव जैसे तिरस्कार, दण्ड, अपमान, द्वेष, ईर्ष्या, सताया जाना, अभाव आदि का भी बालक के मतिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है। समय आने पर वह बदले की भावना से निरीह , कमजोर ओर असहाय लोगों को सताता हैं ओर धीरे धीरे अपराधी मनोवृति का हो जाता है।

5. संगति :– बाल अपराधियों की संख्या बढ़ने कर मुख्य कारण उनकी बुरी संगति है। किशोरावस्था में अधिकांश बालक

बालिकाएं घर के बाहर मित्र मण्डली मं स्वच्छदं जीवन व्यतीत करना पसंद करते है। यदि उनके मित्र बुरे आचरण वाले हो तो उसका प्रभाव नय लड़के लड़कियों पर भी पड़ता है। इस आयु में मित्रों का प्रभाव इतना अधिक होता है। कि उन्हैं बड़ों की बात या शिक्षा अच्छी नहीं लगती। समवय समूह में ही बालक बुरे कार्य ओर अपराध करना सीख जाते है। ग्लूएक के एक अध्ययन के अनुसार 500 अपराधी बालकों में से 95 प्रतिशत शराबियों, यौन, अपराधों ओर गुण्डों की संगति में ही अपराध करना सीखते हैं।

6. गंदी बस्तियां :–अधिकांश बाल अपराधी गंदी बस्तियों में रहते है। गंदी बस्तियों में निर्धनों ओर अपराध मनोवृति वाले मनुष्य अधिक रहते हे। वहां का सामाजिक वातावरण वैसा ही होता है। सब स्त्री पुरुष, शराब, जुंआ, जेबकटी, सट्ठा, चोरी, व्यभिचार, मारपीठ हत्याएं आदि में लगे रहते है। ऐसे वातावरण में पलने वाले लड़के– लड़कियां में ये सब दुर्गण बचपन से ही आ जाते है। बड़े होने पर वे अपने बड़ों का अनुकरण करते है। बड़े लोग ही उन्हें बुरे कार्यो का प्रशिक्षण और प्रोत्साहन देते है।

7. मानसिक रोग :–कुछ बालक अविकसित मस्तिष्क तनावों के कारण अपराध करने लगते है। मन्द बुद्धि के कारण अच्छे और बुरे का उन्हें ज्ञान नहीं होता इसलिए वे शीर्घ संवेग खो देते है। और बदला लेने की भावना से अपराध कर बैठते है। कुछ बालकों को सदैव मानसिक तनाव और अन्तर्द्धन्द्व बना रहता है। इस तनाव के कारण उसमें अपराध के कारण उसमें अपराध की मनावृति आ जाती है। कुछ बालकों की इच्छाएं पूरी नहीं होती तो वे निराश हो जाते है। निराश व्यक्ति अपनी अचफलता का बदला अपराध करके लेता है। जैसे असफल छात्र या असफल प्रेमी अपनी असफलता का बदला अध्यापक या सफल प्रेमी या प्रेमिका से लेता है। कुछ बालको में तीव्र आन्तरिक संवेगों के कारण ''अपराध प्रवृत्ति'' विकसित हो जाती है। इस प्रवृत्ति के वशीभूत होकर वे अपराध करते है। उन्हें बिना अपराध किये चैन नहीं पड़ता। अपराध उनका एक साधारण पर आवश्यक दैनिक कार्य हो जाता है।

Reference :

Heck, A.O .–education of Exceptional Children, N.Y. McGraw, 1940.

Kirk S.A. –Education of Exceptional Children, Oxford and IBU Publishing Co. New Delhi, 1970.

Martnese E.H. -Teaching Problems of Gifted Children] Pamphlet No.45,Washington, 1933.

Shankar U. - Problem Children, Atmaram & Sons Delhi, 1990.

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

Eco-friendly Management of Sootymold Disease on Butea monosperma (Palash) at Jabalpur

Rolli Mishra and A.K. Pandey
Department of Biological Sciences, Rani Durgavati University, Jabalpur (M.P.)

ABSTRACT : Fungal Disease of Buteamonosperma a important medicinal plant clearly indicates that the plant is attacked by many fungi including sootymold disease severe incidence of sootymold was recorded at all the sampling site given in the paper. A total 15 fungi were recorded. Among these Trichoderma viride FCNBM#15 Imposed maximum inhibition to the growth the growth of the all fungi of the sootymold complex. Culture filtrate toxicity of Trichoderma viride FCNBM#15 was found significant on in-vitro growth of sootymold fungi. So Trichoderma viride FCNBM#15 was the most effective antagonist against the test sootymold fungi.

Keywords : Buteamonosperma, Trichoderma viride ,fungi, Culture Filtrate Toxicity

INTRODUCTION : Butea Monosperma, popularly called as Palas is one of the important forest plant of high economic important forest plant of high economic values. It is considered a home of several Gods. More or less all the part of plant is used as medicines, insecticides and for dyes values in tribal areas. These are used for the production of cheap leaf plates and cups for rural feast. Leaves are also used in wrapping of tobacco to makes biddies. The plant is attacked by several fungi disease including sooty mold. The name itself descriptive as sooty mold is a black, powdery coating on commonly given to a condition that is not truly a disease, but a black coating on leaves branches and fruit made up of fungal growth. A black velvety coating made up of fungal growth. A black velvety coating made up of fungal strand is formed on the surface of leaves twigs and fruit. Sooty mold comprises a mixture of many fungi growing on sugary honey dew, secreted by aphids, scales of whitefly and other insects which suck sap from their host plant. They are saprophytic fungus associated only on surface of leaves. it is normally considered to be a cosmetic or aesthetic problem. However, it is reduce the economic values of the leaves and also hampered photosynthetic areas. The disease occur mainly in January, the plant disease impact negatively through economic loss. (Rivera et al., 2002)

MATERIAL & METHOD

(1) Survey & Collection of Plant samples

Thorough systematic and periodical survey Will be at in and around of Jabalpur. Diseased samples of the target plant were collected different location of Jabalpur viz. Dumna, Sitapahadi, Pachpedi, Barela, Vehicle factory, and brought to the laboratory for further processing.

(2) Preservation of Samples

For proper drying, diseased plants samples collected during survey were kept between two sheets of blotting paper and placed on a flat surface and kept pressed with light weight material paper was changed regularly after every 24hrs till complete dryness.

(3) Recovery of the Pathogens and other Non-pathogens

The samples brought from the field were further analysed for the isolation of fungi. For quantitative estimation and comparing the fungal flora of different diseased samples "Pour plate" method were followed (Walksman, 1922; Brierly et al., 1927). Serial dilutions of the samples was prepared. 10gms of each sample was over dried and grinded in vortere mixer. There sample was placed in 125ml Erlenmeyer flask containing 100mlsterile distilled water. The flask containing the suspension was shaken well with the help of rotary shaker (Yorko's) for 30mins. at medium speed and normal temperature. This was kept undisturbed for one hour and then 10ml. of clear

suspension was transferred to another flask containing 90ml of sterile distilled water. It was repeated to obtain further dilutions (Cook, 1954).

Each dilution, 1ml. of suspension was transferred aseptically into pre-sterilized petriplates and approximately 10 - 15ml. of potato - dextrose - agar medium.

(4) Identification of Fungi

The identification was done after studying the morphological and cultural characteristics with the help of manuals, monographs and paper of various workers (Barnett and Hunter, 1972; Ellis, 1971, 1976, Subramanium, 1971; and Sutton, 1980).

(5) Preparation and Maintenance of Culture:

Fungi isolated were aseptically transferred to agar slants and by repeated sub-culturing pure cultures of different isolates were obtained. The stock culture of the micro-organisms were maintained on the PDA slants and stored at a low temperature in the refrigerator. The other slants were kept in the incubator (BOD) at 28 ± 1°C and were routinely transferred into the fresh slants for experimental purposes.

(6) Distribution of Fungi

Study the distribution of fungi isolated earlier from the various samples the percentage frequency and the abundance of various species were detected. Frequency as introducted Raunkier (1934) indicates the number of sampling units in which a given species occurred and thus expresses the distribution or dispersion of various species in a community. From this, percentage frequency is calculated as follows.

$$\text{Percentage frequency} = \frac{\text{Number of sampling units in which the species occurred}}{\text{Total number of units studied}} \times 100$$

$$\text{Percentage abundance} = \frac{\text{Total Number of colonies of a species in all abservations}}{\text{Total number of colonies}} \times 100$$

(7) Culture Filtrate Toxicity

The culture of each isolated strain was inoculated separately in presterilized plate containing medium. After six days, two agar blocks (5mm diameter) of fungi, cut with the help of sterilized cork borer from actively growing cultures were separately transferred into 150ml Erlenmeyer flask containing 50ml autoclaved CDY broth. Each experiment was done in triplicate. Flasks were incubated in KUMAR's BOD incubator for 15 days at 28 ± 2^0C. Each flask was shaken every alternate day to maintain homogenous growth in liquid medium. After incubation, the cultures were filtered through Seitz filter paper to remove all the bacterial and all other contamination.

"Poisoned food technique" suggested by Sharvell, (1956) and Neely, (1971) was followed to test the toxicity of the culture filtrates. Two concentrationi.e. 2ml and 4ml in 20ml of autoclaved, cooled CDYA medium was poured separately into presterilized petriplates. CDYA plate devoid of culture filtrate served as control. Each plate after solidification were inoculated with the test pathogen (5mm disc from seven days old culture) and kept for incubation at 28 ± 2^0C in BOD incubator. The percentage growth inhibition was calculated by Vincent formula as discussed earlier.

Culture filtrate of each antagonist (2ml and 4ml were also added in Erlenmeyer flask containing autoclaved, cooled 50ml CDY broth separately. These flasks were seeded with 5mm agar blocks of test pathogen separated from seven days old cultures grown on PDA medium, CDY broth devoid of culture filtrate served as control. After incubation period of seven days, cultures were filtered through Whatman filter paper no 42 and oven dried at 60°C. Inhibition in dry weight

was calculated.Composition of Ciapek - Dox - Yeast - Extract agar medium

$NaNO_3$	-2.0gm.
K_2HPO_4	-1.0gm.
$MgSO_4 . 7H_2O$	-0.5gm.
HCl	-0.5gm.
Sucrose	-30gm.
Ferrous sulphate	- 0.01gm.
Yeast extract	-1.0gm.
Agar – Agar	-20gm.
Distilled Water	- 1000ml.

RESULT & DISCOUSTION

(a) Distribution of fungi

During survey of the field at in and around of Jabalpur, it was noticed that sootymold and other disease were more prevelant during January to March in Butea monosperma trees. A servere incidence of sootymold was recorded at all the sampling sites. A total of 15 fungi were recorded from six different sampling sites **Table 1** Maximum number of fungi were recorded from the sample collected from Pariyat, which was followed by Dumna. Minimum number of fungi were recorded at the Barela sampling site. It may be due to physiochemical conditions at Pariyat, site was found to be highly conducible for fungal growth and colonization. Aspergillus niger FCNBM#07 showed maximum frequency in all the selected sampling sites. It was followed by A. flavus FCNBM#06, Trichoderma viride FCNBM#15, Absidia corymbifera FCNBM#01.

Many well known sooty mold fungi viz. Capnodendron trichomericolaFCNBM#04, Acremonium persinium FCNBM#02,Alternaria alternate FCNBM#03, Cephalosporium sp. FCNBM#09, and Phoma sp. FCNBM#08 were also frequently-encountered in the samples. Amongst these Alternaria alternata FCNBM#03, Curvularia lunata FCNBM#1l, Fusarium oxysporum FCNBM#12 and Penicillium nigricans FCNBM#14 are well known plant pathogens.Similar observation regarding variation in composition sootymold disease have also been reported by (Cooke, 1976). Occurrence of very high fungal populations in samples might be because of availability of nutrients and required elements.

Culture Filtrate Toxicity

Inhibition of in-vitro growth of sootymold were also determined by Poisoned Food Technique. It is evident from the data decorded in **Table 2** clarly indicate that a varying degree of inhibition in cell-free culture filtrate obtained from fermented of Trichoderma viride FCNBM#15 had significant impact on in-vitro growth of sootymold fungi. It was varied grately with different fungi.

Cell free culture filtrate of T. viride FCNBM#15 imposed maximum inhibition on the growth of Curvularia lunata FCNBM#11 which was followed by Capnodendron trichomericala FCNBM#04 at higher canceatration. Inhibition was also significant incase of Fusarium oxyaporum FCNBM#12, Mucor racemoium FCNBM#13, Phoma sp. FCNBM#08, Aspergillus fumigates FCNBM#05. More or less similar observation were also recorded at lower concentration. Similar obseration have also recorded by many earlier workers. Dennis and Webster (1971a) reported that the extent of growth inhibition depends on the concentration of the culture filtrate used. Production of the anti-fungal metabolite might be the main inhibitory factor in the culture filtrates (Pandey et al., 1993; Chet et al.,1981; Dubey and Dwivedi, 1988). Similar observations also recorded with different fungi studied by them.

Conclusion : On the basis of above observation it can be concluded that the strain i.e. Trichoderma viride FCNBM#15have been very high bio-potential against the sootymold disease of Palash (Butea monosperma). We can be developed for the management of this disease.

Table (i). Distribution of fungi associated with sootymold of Butea monosperm.

S. No	Name of the fungi	No. of fungus	% Growth inhibition Average ± SE	
			C_1	C_2
1	Absidia corymbifera	FCNBM#01	25.24±0.41	40.16±0.24
2	Acremonium persinium	FCNBM#02	20.16±0.12	45.20±0.16
3	Alternaria alternate	FCNBM#03	39.80±0.74	69.93±0.52
4	Capnodendron trichomericola	FCNBM#04	27.23±0.16	53.40±0.57
5	Aspergillus fumigates	FCNBM#05	25.24±0.42	38.24±0.12
6	Aspergillus flavus	FCNBM#06	30.56±0.34	59.40±0.30
7	Aspergillus niger	FCNBM#07	43.29±0.44	71.33±0.67
8	Phoma sp.	FCNBM#08	39.33±0.32	63.86±0.75
9	Cephalosporium sp.	FCNBM#09	24.76±1.18	51.10±0.28
10	Chaetomium globosum	FCNBM#10	50.32±0.40	65.63±0.75
11	Curvularia lunata	FCNBM#11	35.80±0.12	54.66±1.12
12	Fusarium oxysporum	FCNBM#12	39.60±0.25	59.26±0.28
13	Mucor racemoium	FCNBM#13	30.56±0.14	50.32±0.18

Table (ii). Effect of culture filtrate of T. viride FGCCBM#15 on radial growth of sootymold fungi

S. No	Name of the fungi	No. of fungus	Frequency (%)						
			A	B	C	D	E	F	G
1	Absidia corymbifera	FCNBM#01	22.22	30.56	16.67	11.11	05.56	00.00	03.24
2	Acremonium persinium	FCNBM#02	11.11	16.67	00.00	00.00	05.56	00.00	00.00
3	Alternaria alternate	FCNBM#03	25.00	05.56	11.11	00.00	05.56	00.00	07.78
4	Capnodendron trichomericola	FCNBM#04	16.67	05.56	2.78	00.00	11.11	5.56	00.00
5	Aspergillus fumigates	FCNBM#05	77.78	50.00	30.56	27.78	44.44	33.33	58.11
6	Aspergillus flavus	FCNBM#06	68.11	50.00	55.56	00.00	00.00	00.00	22.22
7	Aspergillus niger	FCNBM#07	98.00	93.00	85.11	86.20	81.00	80.00	74.52
8	Phoma sp.	FCNBM#08	33.33	22.22	11.11	27.78	19.56	00.00	03.24
9	Cephalosporium sp.	FCNBM#09	11.11	22.22	00.00	11.11	00.00	05.56	00.00
10	Chaetomium globosum	FCNBM#10	68.11	30.56	00.00	00.00	27.78	05.56	00.00
11	Curvularia lunata	FCNBM#11	80.56	16.67	11.11	27.78	33.33	16.67	13.89
12	Fusarium oxysporum	FCNBM#12	72.22	63.89	36.11	44.44	33.33	02.78	30.56
13	Mucor racemoium	FCNBM#13	33.33	19.44	05.56	00.00	00.00	00.00	03.24
14	Penicillium nigricans	FCNBM#14	38.89	11.11	00.00	16.67	00.00	00.00	00.00
15	Trichoderma viride	FCNBM#15	22.22	11.11	05.56	02.78	05.56	11.11	05.56

A. Pariyat E. Bhedaghat
B. Pariyat E. Bhedaghat
C. Dumna F. Sitapahadi
D. Kalpi G. Pachpedi
E. Gwarighat

FCNBM.Fungal Culture Number Butea monosperma.

References :

Agrawal, G.P. and Hasija, S.K. (1986). Micro-organism in the laboratory in: A laboratory guide for mycology, microbiology and plant pathology. Print House (India), lukhnow, pp.155

Brierley, W.B., Jewson, S.T. and Brierely, M. (1927). The quantitative Study of soil Fungi. Proc. and Papers, 1st Intnl.Congo of Soil Science, **3**:48.

Barnett, H.L. and Hunter, B.B. (1972).Illustrated Genera of Imperfect fungi.Burgess Publishing Co. pp. 241.

Cook, W.B. (1954). Fungi in polluted water and sewage III.Fungi in a small polluted stream.Sewage Industrial Wastes, **26**(6): 790-794.

Ellis, M.B. (1971). Dematiaceous hypomycetes.CAB International Mycological Institute, Kew, England.

Ellis, M.B. (1976). More Dematiaceous hypomycetes.CAB International Mycological Institute, Kew, England.

Ellis, M.B. (1976). More Dematiaceous hypomycetes.CAB International Mycological Institute, Kew, England.

Subramanian, C.V. (1971). Hyphomycetes.Indian Counc. Agric. Res., Publications, New Delhi.

Sutton B.C. (1980). The coelomycetes : Fungi Imperfecfi with Pycnidia, Acervuli and Stromata, common wealth. Mycological Institute, New Surry, England.696 pp.

Sharvelle, E.G. and Pelletier (1956).A modified paper disk method of laboratory fugicide bioassay.Phytopath. 46:26

Neely, D. (1971).Deposition and tenacity of foliage protectant fungicides.Plant Dis. Reptr. **55**: 898-902.

Waksman, S.A. (1922). A tentative outline of plant method for determining the number of microorganisms in soil.Soil Sci.**14**: 27-28.

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में बहुजन समाज पार्टी का दृष्टिकोण

सुभाष कुमार सोनी
शोध छात्र, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

भारत जो कि विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। उनमें पांच प्रमुख दलों में बहुजन समाज पार्टी एक है। बहुजन समाज पार्टी की विचारधारा है बहुजन समाज का सामाजिक रूपान्तरण या आर्थिक निस्तारण बहुजन समाज के मुख्य अंग अनुसूचित जाति/जनजाति पिछड़ा वर्ग व अल्प संख्यक हैं जिसे सिक्ख बौद्ध पारसी मुस्लिम आदि जो कि भारत की जनसंख्या का 85 प्रतिशत है। इन वर्गो के लोग मनुवादी प्रथा के शिकार हैं। इस प्रथा ने इन वर्गो के जीवन को प्रभावित किया है। अन्य शब्दों मे ये वर्ग के लोग मानव अधिकार से वंचित हैं। जो कि हिन्दुओं की उच्च जाति वर्ग को प्राप्त है जो कि प्राचीन भारतीय मनुवादी प्रथा का हिस्सा है। वे सभी महापुरूष बहुजन समाज से संबंध रखते हैं इस मनुवादी प्रथा का विरोध करते हुये साहसिक लड़ाई लड़ी यह प्रथा अमानवीय एवं पशुवृत थी जो कि निम्न वर्ग पर थोपी जा रही थी इन महापुरूषों न मनुवादी प्रथा को हटाने के साथ निम्न वर्गो को सम्मान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कि जो सम्मान अभी तक उच्च वर्ग को प्राप्त था।

बाबा भीमराव अंबेडकर ने सामाजिक राजनीतिक जागरूकता लाने के लिये आंदोलन चलाया जो कि प्रभावशाली सिद्ध हुआ इस संबधं मे अनेक महापुरूषों ने प्रयास किये जिनमें मुख्य थे छत्रपति साहू जी महाराज नारायण गुरू पेरियार ई.वी. रामास्वामी महात्मा ज्योतिवा फुले इन्होंने मनुवादी प्रथा के विरोध मे आवाज उठाई इस संघर्ष मे बाबा भीमराव अंबेडकर तथा माननीय कांशीराम ने जो आंदोलन खड़ा किया उसका परिणाम दूरगामी हुआ। मनुवादी सामाजिक प्रथा के विरूद्ध कांशीराम जी ने जो आवाज उठाई वह सिर्फ अनुसूचित जाति जनजाति के लिये ही नहीं बल्कि समाज के सभी पिछड़े वर्ग के लिये जो इस मनुवादी प्रथा से प्रताणित थे इस कारण माननीय कांशीराम ने बहुजन समाज की अवधारणा स्थापित की । उनकी तीव्र इच्छा थी कि बहुजन समाज उन सामाजिक क्रियाओं और अधिकारों का लाभ उठा सके जो कि हमारे संविधान मे निहित हैं और एक ऐसा प्लेटफार्म स्थापित हो जो उन्हें राजनीतिक गतिविधियों मे भी जागरूक बनाये और यही बहुजन समाज पार्टी की स्थापना का मुख्य उद्देश्य था। केन्द्र एवं राज्य में बहुजन समाज के लोगों को उचित स्थान प्राप्त हो तथा संविधान मे उल्लिखित अधिकारों को प्राप्त कर समाज मे सम्मान से जी सकें यही बसपा का उद्देश्य है। सिर्फ एक ऐसी सरकार जो बहुजन समाज द्वारा स्थापित हो वही भारत मे बहुजन समाज के लोगों को उनके अधिकार प्रदान कर सकती हैं तथा बहुजन समाज के लोगों को आत्म सम्मान से जीने के लिये प्रेरित करती है।

बहुजन समाज को बनाने मे बहुजन समाज पार्टी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है बहुजन समाज की राजनीति तथा नीतियों पर विस्तार से जानकारी देना जरूरी है जिस से बहुजन समाज राजनीतिक क्षेत्र मे सही फैसला ले सके यह नीतियां ही बहुजन समाज को उपर उठा सकती है तथा इसी से देश का विकास संभव है।

बहुजन समाज की राजनीति जिस तेज गति से और तीव्रता के साथ आगे बढ़नी चाहिये थी उस तेज गति से आगे नही बढ़ रही ह। जब की आबादी के हिसाब से बहुजन समाज का देश की राजनीति मे वर्चस्व होना चाहिये था लेकिन बी.एस.पी.की स्थापना से पहले बाबा साहेब डा0 अंबेडकर के देहान्त के बाद लम्बे अर्से तक इन लोगों को इनकी इस ताकत का एहसास कराने वाला सही राजनीतिक नेतृत्व न मिलने के कारण ये लोग राजनीतिक क्षेत्र में बहुत पीछे रह गये और मुठठी भर आबादी रखने वाले मनुवादी समाज के लोग काफी आगे बढ़ गये हालांकि इसका मूल कारण इस देश की मनुवादी व्यवस्था ही है जिसने साम दाम दण्ड भेद के आधार पर अपने मनुवादी समाज को सदैव राजनीतिक क्षेत्र मे आगे रखा है और राजनीतिक सत्ता की मास्टर चाबी के माध्यम से अपने समाज के हितों के लिये ही कार्य किया है तथा बहुजन समाज की हर क्षेत्र मे उपेक्षा की हैं।

इस मनुवादी व्यवस्था ने समुचे बहुजन समाज को शूद्र वर्ण मे शामिल करके एक सोची

समझी राजनीतिक साजिश के तहत इनको जिंदगी के हर पहलू में जीने मरने के हर मामले में गुलाम व लाचार बनाकर रखा है और इनके लिये ऐसे नियम बनाकर इस बहुजन समाज पर थोप दिये गये हैं कि ये लोग कभी भी अपने पैरों पर खड़े ही न हो सकें।

इसके तहत ही मनुवादियों के बुजुर्गो ने सबसे खतरनाक नियम बनाया है कि उन्होंने जाति वाद वर्ण व्यवस्था के आधार पर बहुजन समाज में अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति व अन्य पिछड़ा वर्ग के लोगों को कई हजार जातियों में बाट कर इनमें छोटे बड़े की खाई पैदा करके इन्हें विभाजित कर दिया है। अर्थात इन्हे बहुजन समाज से अल्पजन बना दिया है। जिससे यह लोग कदापि न तो अपना सिर उठा सकें और न ही इस देश की राजनीति करने के बारे मे सोच भी सकें इसके लिये उन्होने समय समय पर किसी न किसी रूप मे सामाजिक आधार का ही सहारा लिया है जिसको बहुजन मे जन्मे अनेक महापुरूषों ने गम्भीरता से लिया है। बहुजन समाज की राजनीति को कामयाब बनाने के लिये यहां के सामाजिक दृष्टिकोण को ही ध्यान मे ही रखकर बहुजन समाज को तैयार करना जरूरी समझा अन्यथा यह समाज राजनीतिक क्षेत्र में कभी भी सफलता हासिल नहीं कर सकता है इस कार्य के लिये महात्मा ज्योतिवा फुले छत्रपति साहु जी महाराज बाबा डॉ. अंबेडकर नारायण गुरू व पेरियार रामास्वामी का सराहनीय व उल्लेखनीय योगदान रहा है।

इन महापुरूषों में से सर्वप्रथम क्रांतिकारी समाज सुधारक महात्मा ज्योतिवा फुले थे जिनमें मनुवादी कट्टर पंथियों से लोहा लेने का अद्भुत साहस व उत्साह था। अविश्रान्त परिश्रम करने की शक्ति थी ओर अपने कार्यो के प्रति लगन व निष्ठा थी समाज के दलित पतित पीड़ित व शोषित वर्गों के लिए उनके हृदय में अपार करूणा थी और मानवता के प्रति हार्दिक प्रेम ऐसे प्रथम महापुरूष समाज सुधारक महात्मा ज्योतिवा फुले का जन्म 20 फरवरी 1827 को महाराष्ट्र एक माली परिवार में हुआ जिसको मनुवादी लोग उस समय शूद्र जाति मानते थे जो आज की पिछड़ी जाति मे से एक है।

महाराष्ट्र मे नारी शिक्षा आंदोलन अस्पृश्यता निवारक आंदोलन किसान मजदूर आंदोलन और ब्राहाणेत्तर आंदोलन इन सब के सर्वप्रथम संचालक महात्मा ज्योतिवा फुले थे यह समतावादी महात्मा ज्योतिवा फुले 28 नवम्बर 1890 मे चल बसे। बाबा साहेब डा अंबेडकर ने भी महात्मा ज्योतिवा फुले को अपनी पुस्तक शूद्र कौन थे अर्पण करके अपनी श्रद्वांजली अर्पित की है। महात्मा ज्योतिवा फुले का जीवन बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर के लिये प्रेरणा दायक रहा है।

बड़ोदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ जो कि कुर्मी जाति (अन्य पिछड़ा वर्ग) के थे उन्होंने डॉ. अंबेडकर की प्रतिभा को जानकर उन्हें अमेरिका मे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये हर प्रकार से सहयोग दिया जो कि उस काल मे मनुवादी व्यवस्था के लिये चुनौति थी इसी कुर्मी जाति में 26 जुलाई 1874 को जन्मे कोल्हापुर रियासत के नरेश छत्रपति शिवाजी के वंशज छत्रपति साहू जी महाराज का सत्ता मे रहकर समतावादी समाज के निर्माण मे अद्वितीय योगदान रहा है।

साथ ही आनेवाले समय में बहुजन समाज की सरकारों को चलाने के लिये अनुकरणीय रास्ता आज से लगभग पहले ही बना दिया गया था उस समय ब्राम्हणों का मुकाबला करना कोई आसान काम नहीं था। ब्राम्हण पण्डे पुजारियों एंव पुरूहितों के भाव इतने उंचे थे कि इन लोगों ने नदी स्नान करते समय एंव राज्य अभिषेख के समय साहू जी महाराज को शूद्र घोषित कर दिया था। यही नहीं बल्कि सवर्ण राजाओं के मध्य उन्हे अपमानित भी किया गया परन्तु साहू जी महाराज कभी विचलित नहीं हुये और सत्ता के सामने मनुवादी लोगों को झुकना ही पड़ा।

छत्रपति साहू जी महाराज भारत के प्रथम शासक थे जिन्हांने सत्ता के माध्यम से सामाजिक न्याय एंव समतावादी समाज की नींव डाली अपने राज्य मे कानूनन दलितों पिछड़ो के लिये सन् 1902 में 50 प्रतिशत आरक्षण लागू किया छत्रपति साहू जी की प्रबल आकांक्षा थी की कथित शूद्र एंव पिछड़ी जातियों को शासन व्यवसाय एंव स्थानीय निकायों मे अधिक से अधिक हिस्सा मिले और जिसका एक मात्र साधन है उस वर्ग के लिये नौकरियों एंव शिक्षा संस्थाओं मे आरक्षण की व्यवस्था होनी चाहिये उनका यह भी कहना था कि सामाजिक सुधारोंके पहले राजनीतिक अधिकार दिये जायें और राजनीतिक आजादी का उपयोग समाज के दलितों एव शोषितो के उद्धार मे करें।

छत्रपति साहू जी महाराज ने भ्रष्टाचारी शंकराचार्यो की सम्पत्ति जप्त करके उनके स्थान पर दलित वर्ग के प्रशासको की नियुक्ति की, साथ ही मठों मंदिरो घाटों धर्मो तीर्थ स्थानों से पंडित पुजारी एंव पुरोहितों का आरक्षण समाप्त कर उनके स्थान पर शिक्षा दिलाकर पिछड़े तथा दलित वर्ग के पुजारियों की नियुक्ति की। अपने राज्यभवन मे कोई ब्राम्हण पुरोहित नही रखा इसके विरोध में ब्राम्हण अधिकारियों एंव कर्मचारियों ने सामुहिक इस्तीफे दे दिये साहू जी ने इन सब के इस्तीफे मंजूर कर उनके स्थान पर पिछड़े दलित एंव मुसलमानों को भर्ती कर लिया मुसलमानों के लिये भी पाठशालाएं छात्रावास खोले शाहपुरी मे मस्जिद निर्माण के लिये प्रचुर मात्रा मे धन दिया । दलित वर्ग से जबरिया मजदूरी करने पर रोक लगा दी जोगियों देवदासियों एंव शूद्रो की अबैध संतानों के लिये सम्पत्ति का उत्तराधिकारी लागू किया उसी दौरान हिन्दू धर्म की पैदा की हुई कठिनाईयां अन्याय अत्याचारों अमानवीय व्यवहार की कठोर यादों तथा पीड़ाओं का बोझ लिये 14 अप्रेल सन 1891 को जन्मे बाबा साहेब अपने शैक्षणिक जीवन मे महाराजा बड़ोदा की सहायता तथा उनकी भावनाओं को मूर्त रूप देकर शिक्षा क्षेत्र मे ब्राम्हणों की मस्तिष्क विशिष्टता को रौंदते हुये अमेरिका मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर सन 1916 में भारत लौटे उस समय अछूतों के हित संरक्षक छत्रपति साहू जी महाराज जब दलितों एंव पिछड़ों के लिये मान और सम्मान के आदोलन का कारवां तेजी से आगे बढ़ा रहे थे तभी उनकी भेंट विलक्षण प्रतिभा के धनी नवयुवक भीमराव अंबेडकर से हुई।

महात्मा ज्योतिवा फुले की सामाजिक क्रान्ति से प्रभावित युवा भीमराव अंबेडकर की शिक्षा एंव ज्ञान प्राप्त करने की लगन से साहू जी महाराज बहुत ही प्रभावित हुये तथा यह अनुमान करके कि यह युवक पढ़ लिख कर सामाजिक क्रान्ति के कारवां को अवश्य ही आगे बढ़ायेगा इसी उद्देश्य से भीमराव अंबेडकर की प्रतिभा को निखारने के लिये साहू जी ने अधिक से अधिक आर्थिक सहायता देकर उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये लंदन भेजा। यही नहीं बल्कि दुखियों की आवाज बुलंद करने के लिये भीमराव अंबेडकर को साहित्य प्रकाशन के लिये वांछित धनराशि भी दी। सन् 1920 में मानगांव की विशाल सभा में साहू जी महाराज ने भीमराव अंबेडकर का हाथ उठाते हुये कहा था कि आपने अंबेडकर के रूप मे अपना संरक्षक पा लिया है भीमराव अंबेडकर ने फरवरी 1921 मे लंदन से एक पत्र साहू जी महाराज के लिये लिखा था कि मुझे व्यक्तिगत ऐश्वर्य की कोई कामना नहीं है मैं चाहता हूं कि आपके संरक्षण में और अधिक जनसेवा योग्य बन सकूं परन्तु कुछ समय के बाद साहू जी महाराज की मृत्यु हो गई और मृत्यु की खबर सुनते ही शोक विहवल होकर डॉ अंबेडकर ने लंदन से ही इनकी मृत्यु पर शोक संवेदना मे यह लिखा था कि मेरा महान उपकारी संरक्षक एंव दलितो का मसीहा चला गया है।

लेकिन उनकी मृत्यु के लगभग दो साल पूर्व बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर की देख रेख मे सन् 1920 मे नागपुर में अखिल भारतीय बहिष्कृत परिषद की सभा हुई जिसकी अध्यक्षता साहू जी महाराज कर रहे थे उसमे साहू जी ने यह कहा था कि अछुतों की उन्नति मे बाधा डालने वाले किसी भी व्यक्ति का चाहे वह अछूत समाज का ही हो उसका तीव्र विरोध करना चाहिये और अछूतों को अपनी उन्नति के लिये अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये।

इस प्रकार महात्मा ज्योतिवा फुले व छत्रपति साहू जी महाराज ने अपने अपने तरीके से मनुवाद के खिलाफ जबरदस्त संघर्ष किया और बहुजन समाज को मनुवाद के बारे में जागरूक बनाकर उसके खिलाफ संघर्ष करने के लिये उन्हे काफी हद तक तैयार भी किया परन्तु बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर के ऊपर तो इन दोनों सामाजिक क्रान्ति के मसीहाओं का पूरा प्रभाव उनकी विचारधारा पर समाहित हो गया था जिसके कारण वे हिन्दू समाज मे प्रचलित मनुवाद के घोर विरोधक थे हिन्दू समाज के वैदिक काल से लेकर आज तक के इतिहास के आधार पर बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर मनुवाद के विरोधक बने हुये थे परन्तु यह सत्य है कि महाराष्ट्र के विशिष्ट इतिहास ने तथा मनुवाद के फलस्वरूप जीवन के अपमान जनक अनुभवों ने डॉ. अंबेडकर के मनुवाद विरोधी विचारों मे उग्रता तथा तीक्ष्णता पैदा की थी और इसके लिये बाबा साहेब अंबेडकर को कतई दोष नहीं दिया जा सकता है।

इसके अलावा उन्होंने मनुवाद के खिलाफ संघर्ष करने के साथ साथ बहुजन समाज का

स्वाभिमान की जिंदगी बसर करने के लिये कानूनी अधिकार भी दिलवाये ऐसे महान पुरूष बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर के बारे मे जितना भी लिखा जाये महसूस किया जाये उतना ही कम होगा। अनुभव बताता है कि सवर्ण कुल में पैदा होने वाले समाज सुधारक ने केवल उदारता दिखाई है परन्तु वे समाज मे समतावादी सिद्धांत को कायम करने मे असफल रहे हैं क्योंकि उनमें समाज को विशाक्त करने वाले हिन्दुओं के धार्मिक ग्रंथों एवं मनुस्मृति को जलाने का साहस नहीं था इस संदर्भ में मनुवाद के कट्टर विरोधी माने जाने वाले और मनुवादियों को मुहतोड़ जबाव देने वाले महापुरूष पेरियार रामास्वामी ने भी जिनका जन्म 17 सितम्बर सन् 1879 को हुआ था उन्होने सन् 1922 में कांग्रेस अधिवेशन में यह कहा था कि सर्वप्रथम समाज सुधारकों को मनुस्मृति और रामायण को जलाने के लिये तैयार होना चाहिये ।

सवर्ण वर्ग के लोग समाज सुधारक इसलिए बने क्योकि उन्होंने अपनी बहन–बेटियों का बाल–विधवा बनना अपनी विधवा माताओ का तिरस्कार, निरादर,अपमान पति के मरने के बाद बाल मुड़वाना उनके पति के साथ जलना जबरन जलाना उन्हें अभागिन कुल कलंकनी कहना उन्हे शिक्षा व सम्पत्ति के अधिकार से शूद्रो की भॉति वंचित करना आदि देखा। इन कुरीतियों से उनके स्वयं के परिवार प्रभावित एवं ग्रसित थे जो उनकी व्यक्तिगत एवं पारिवारिक समस्यायें थी जिनको दूर करना मानवता की दृष्टि से भी आवश्यक था।परन्तु आज के सवर्ण लोग अपने को सम्पूर्ण समाज का समाज सुधारक बताकर चतुर्थ वर्ण दलित तथा पिछड़ी जाति को भ्रमित कर उनसे वोट प्राप्त करने व उनका सम्मान पाने का असफल प्रयास करते रहते हैं उन्हे बहुजन समाज के जयचन्द्र एवं विभीषण अधिक दिन तक नही बचा पायेंगे क्योकि वे भी अपनी क्षणिक सुविधा के लिए डूबती हुई नाव में बैठे हैं। इसके अतिरिक्त बाबा साहेब डॉ0 अम्वेडकर को जब भारतीय संविधान बनाने का मौका मिला तो तब उन्होंने बहुजन समाज के हितों का पूरा–पूरा ध्यान रखा। हालॉकि यह मौका उन्हे कोई आसानी से नहीं मिला था इसके लिए उन्हें मनुवादियों से काफी बड़ा और कड़ा संघर्ष करना पड़ा था।इसमे कोई संदेह नहीं है कि बाबा साहेब डॉ0अम्बेडकर ने भारतीय संविधान के तहत कमजोर तबके के लोगों को जो कानूनी हक और अधिकार दिलाये हैं उन्हें दिलाने के लिए इनको कांग्रेस व मनुवादियों से कदम–कदम पर काफी संघर्ष करना पड़ा था। उदाहरण के तौर पर ब्रिटिश पार्लियामेंट के निर्णयानुसार स्वतंत्र भारत ने अपना संविधान बनान का जब निर्णय किया था तो उस समय कांग्रेस पार्टी के लोगों ने पूरे देश में यह पूरी–पूरी कोशिश की थी कि बाबा साहेब डॉ0अम्बेडकर किसी भी तरह भारतीय संविधान को बनाने में सम्मिलित न हो सके। इस संविधान को बनाने के लिए एक संविधान सभा का गठन हुआ जिसके सदस्यो का चुनाव विभिन्न प्रान्तों की विधान सभाओं द्वारा चुने गये सदस्यों में से होना था। भारत में उस समय बंगाल,पंजाब और सीमा प्रान्तों को छोड़कर सभी प्रान्तो में कांग्रेस का शासन था इनमें अछूतो के भी सदस्य थे किन्तु उनका तन व मन मनुवादी कांगस के कब्जे में था। बाबा साहेब डॉ0 अम्बेडकर बहुत दुःखी थे और दुःखी हो कर जब वे दिल्ली से बम्बई जा रहे थे तो बंबई जाने से पूर्व वे कलकत्ता गये थे। कलकत्ता में गरीब तबके के लोग बाबा साहेब अम्बेडकर से मिले और उन्होने अपने हित में उन्हे संविधान सभा मं जाने के लिए अपील की।

तब बाबा साहेब डॉ0अम्बेडकर ने अपनी मुश्किलो को लोगो के सामने रखा। इसके बाद बाबा साहेब अम्बेडकर की मुश्किलो को ध्यान में रखते हुए बंगाल में मुस्लिम लीग के सहयोग से सन् 1946 में बंगाली अछूत सदस्यों ने जयसोर और खुलना की सीट से उन्हे चुनकर भेजने का निर्णय लिया। बाबा साहेब अम्बेडकर को हराने के हराने के लिए कांग्रेस के महारथियो ने हर प्रकार का प्रयास किया था ताकि वे चुनकर संविधान सभा में न पहुॅच सकें किन्तु सदा की भॉति इस बार भी कांग्रेसियों के हथकण्डे फेल हो गये और बाबा साहेब डॉ0 अम्वेडकर संविधान सभा में चुनकर चले गये। बाबा साहेब डॉ0अम्बेडकर की इस विजय से एक बार फिर अछूतो का सितारा चमका। बंगाल की विधानसभा ने यह जो सराहनीय कार्य किया इससे पूरे देश के बहुजन समाज के लोग उनके कृतज्ञ रहेंगे। अगर बाबा साहेब अम्बेडकर भारतीय सविधान सभा में न होते तो इस देश का संविधान दूसरा ही होता उसमे भी मनुवाद का ही हर प्रकार से बोलबाला दिखाई देता। इस संविधान सभा में बाबा साहेब डॉ0 अम्बेडकर के साथ–साथ बंगाल के मूल निवासी श्री जोगेन्द्रनाथ मण्डल जो अछूत (चण्डाल)

समाज से ताल्लुक रखत थे भी बंगाल से चुनकर गये थे । अंग्रेजो की शर्तो से मजबूर होकर कांग्रेस पार्टी ने बाबा साहेब डॉ0 अम्बेडकर को पूना बैरिस्टर जयकर की सीट खाली कराकर 9 जुलाई 1947 को भारत की संविधान सथा के लिए चुनकर भेजा। इसके बाद देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने उनकी काबिलियत के सामने झुककर उनसे (बाबा साहेबडॉ0अम्बेडकर से) यह पूछा क्या आप स्वतंत्र भारत के प्रथम कानून मंत्री बनना स्वीकार करेंगे? बाबा साहेब डॉ0 अम्बेडकर ने अपने समाज के हित को ध्यान में रखकर इस नयी जिम्मेदारी को स्वीकार कर लिया। कांग्रेस के मंत्रिमंडल में बाबा साहेब डॉ0 अम्बेडकर के प्रवेश करने पर उनके अनुयायियों में गहरी चिन्ता पैदा हो गयी। इस चिन्ता को दूर करते हुए बाबा साहेब डॉ0 अम्बेडकर ने सिद्धार्थ कालेज मुंबई में अपने अनुयायियों को सितम्बर 1947 में कहा था की समुद्र में जब भी तूफान आता है तब जहाज का कप्तान जहाज के सवारियों को बचाने के लिए जहाज को सुरक्षित स्थान में ले जाता है लंगर डालकर समुद्र में शान्ति होने की प्रतीक्षा करता है जब तूफान दूर चला जाता है तब कप्तान जहाज को लेकर फिर चल पड़ता है आज मनुवादियों अर्थात कांग्रेसियो के हाथों सत्ता आ जाने से कमजोर तबको के भविष्य का सितारा बादलों से घिरा हुआ है कमजोर तबकों के समस्या रूपी जहाज को मनुवादियो की कुटिलतापूर्ण चालो से बचने के लिए मैं कांग्रेस मंत्रीमण्डल में शामिल हुआ हूँ। जैसे ही वह तूफान शांत होगा मैं इस मंत्रीमण्डल से अलग हो जाऊंगा। इसलिए कोई भी कमजोर तबके का आदमी जो मेरे नेतृत्व में विश्वास करते हैं कांग्रेस में शामिल न हों और मेरे आदेशों की शांति से प्रतिक्षा करें । इस बारे में डॉ0 अम्बेडकर ने लखनऊ में भी 17 अप्रैल 1948 को अखिल भारतीय शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन के अधिवेशन में बोलते हुए कहा था जैसे पत्थर पानी की गहराई में पड़ा रहने पर भी सड़ता या गलता नहीं है उसी तरह मैं भी चाहे कांग्रेस के मंत्रीमण्डल में रंहू या किसी और पार्टी कें मंत्री मंण्डल में अपने उद्देश्य से कभी विचलित नही हो सकता पत्थर की भांती सदा ही में सुदृढ रहूंगा।

उन्होंने अपने अनुयायियों से कहा आप लोग भी अपने आचरण को पत्थर जैसा बनाये ताकि मनुवादियों की चालें उससे टक्कर खा कर नेस्तानाबूद हो जाये बाबा साहेब डॉ0 अम्बेडकर ने विश्वास दिलाया मैं कांग्रेस मंत्री मण्डल में देश और पिछडे वर्गो की भलाई करने के लिए शामिल हुआ हूँ मैं कांग्रेस का चार आने वाला सदस्य भी नही बना हूँ। कांग्रेस संस्था और केन्द्रीय मंत्रीमण्डल यें दोनो विभिन्न संस्थाये है कांग्रेस एक जलता हुआ घर है उसमें आग लग चुकी है इसलिए जलते घर में पवेश करने का कोई साहस न करे, परन्तु इससे पहले 15 अगस्त 1947 को जब पाकिस्तान और भारत दोनों स्वतंत्र हुए तो 29 अगस्त 1947 को भारतीय संविधान का मसविदा बनाने के लिए एक समिति बनी जिनके अध्यक्ष बाबा साहेब अम्बेडकर बनाये गये थे। इस समिति में कहने को तो 6 सदस्य थे किन्तु एक की मृत्यु हो गई थी दूसरे अमेरिका चले गये थे तीसरे सियासी कामो में उलझे हुये थे दो सदस्य दिल्ली से दूर रहते थे इसलिए संविधान लिखने का सारा काम बाबा साहेब डॉ0 अम्बेडकर को अकेले ही करना पड़ा। बाबा साहेब अम्बेडकर ने संविधान का मसविदा तैयार करके 4 नवम्बर 1948 को संविधान निर्माण सभा मे पेश कर दिया सदस्यों ने उनकी विद्वता और परिश्रम की मुक्त कंठ से प्रशंसा की किन्तु संविधान सभा के सदस्यों को छोड़कर मनुवादियों द्वारा लगभग कई महिनों तक आलोचना होती रही तब बाबा साहेब डॉ अंबेडकर ने उस पर एक लम्बा वक्त दिया जिसका सारांश इस पकार है। अध्यक्ष महोदय एंव सदस्यों मैं संविधान सभा मे केवल इस भावना से आया था कि मैं अछूत वर्ग के हितों की रक्षा कर सकूं मुझे नहीं मालूम था यहां मुझे इतनी बड़ी जिम्मेदारी सौपी जायेगी जब मैं संविधान की मसविदा कमेटी मैं नियुक्त किया गया तो मुझे आश्चर्य हुआ और मसविदा समिति ने जब मुझे अपना अध्यक्ष चुना तो मेरे हृदय में धक्का लगा मैं असमंजस मे पड़ गया कि इतनी बड़ी जिम्मेदारी मुझ पर क्यों डाली जा रही है। फिर मुझे हर्ष भी हुआ कि मुझे अपने देश की सेवा करने का यह अवसर मिल रहा है। महानुभावो संविधान कितना ही अच्छा हो यदि उस पर अमल करने वाले अच्छे न हां तो उससे जनहित न होगा और यदि अमल करने वाले अच्छे हों बुरा विधान भी हितकारी हो सकता है। यह नहीं कहा जा सकता है कि इस संविधान मे अमल करने वाले कैसे होगें 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू करके देश स्वतंत्र होगा किसी समय यह देश स्वतंत्र था

परन्तु अपने ही लोगों के विश्वास घात से हम स्वतंत्रता से वंचित हुये क्या इतिहास अपने को दोहरायेगा इस विचार से मेरा मन चिंतित है। क्या भारत की जनता अपने मत मजहब या स्वार्थ की अपेक्षा देश को अधिक महत्व देगी। मेरी भावना है अपने रक्त की अंतिम बूंद तक देकर हमे अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करनी चाहिये यदि हम लोकतंत्र को सुदृढ करना चाहते हैं तो हमं अपने सामाजिक और आर्थिक लक्ष्य वैध – मार्ग से प्राप्त करने चाहिये हिन्सात्मक और कूटनीतिक उपायों से नहीं इस देश में जितनी भक्ति जितनी वीर पूजा आर जितना अंधविश्वास है उतना किसी अन्य देश में नहीं है। धर्म में भक्ति तथा वीर पूजा मुक्ति का साधन भले ही हो सकती है परन्तु राजनीति में भक्ति तथा वीर पूजा अधोगति में ले जाने वाला अधिनायकवाद हो जाता है। स्वतंत्रता, समता और बन्धुत्वभाव के आधार पर अधिष्ठित सामाजिक जीवन ही लोकतंत्र कहलाता है। स्वतंत्रता तो हमें मिली किन्तु भारत में समता का अभाव है यहॉ के सामाजिक और आर्थिक जीवन में विषमता का बोलबाला है। इस विषमता को शीघ्र मिटा देना होगा अन्यथा बड़े परिश्रम से निर्मित हुआ यह लोकतंत्र का मंदिर मिट्टी में मिल जायेगा। हम एक राष्ट्र हैं ऐसा मानना आत्मवंचना है। हजारों जातियों में बॅटे हुए लोग एक राष्ट्र कैसे हो सकते हैं। यह जातियॉ और वर्ण राष्ट्र–विरोध इन बाधाओं पर विजय पाने से ही हम एक राष्ट्र हो सकेंगे जिस संविधान में जनता के लिए जनता का और जनता द्वारा तत्व निहित किये हैं वह दीर्घकाल तक बना रहे यदि हम ऐसा चाहते हैं तो हमें सामने उपस्थित संकटो को समझने और उन्हें दूर करने में देर नहीं करना चाहिए। देश की सच्ची सेवा का यही मार्ग है। बाबा साहेब डॉ0 अम्बेडकर के इस सुन्दर अमृतोपम प्रवचन की सभी ने प्रशंसा की दूसरे दिन संविधान सभा में मसविदा बिल पास किया गया सभा के अध्यक्ष डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद जो बाद में भारत के पहले राष्ट्रपति बने ने बाबा साहब डॉ0 अंबेडकर की योग्यता निष्ठा और उत्साह की प्रशंसा की लोगों ने बाबा साहेब डा0 अंबेडकर को आधुनिक मनु और 20 सदी का स्मृतिकार कहा। कैसा आश्चर्य मनु स्मृति को जलाने वाला अछूतों का नेता स्वतंत्र भारत का स्मृतिकार बन गया बाबा साहेब डा0अबेंडकर के इस कार्य से प्रसन्न होकर मुम्बई के शेडयूल्स फेडरेशन ने सोने के आवरण में संविधान की एक प्रति बाबा साहेब को भेंट करके उनका सम्मान किया और इसके कुछ समय बाद अमेरिका की कोलम्बिया यूनिर्वसिटी ने भी 5 जून 1952 को संसार के सर्वोत्तम संविधान के निर्माता बाबा साहेब डा0 भीमराव अंबेडकर को एल0एल0डी0 की डिग्री देकर सम्मानित किया।

इस प्रकार बाबा साहेब डा0 अंबेडकर ने अपने जीवन में जो उतार चढाव देखे इनमें सबकी सीख लेकर इन्होने राजनीतिक सत्ता का एहसास किया और राजनीतिक सत्ता के बारे में इन्होंने ये कहा था कि राजनीतिक सत्ता वो मास्टर चाबी है जिस चाबी के माध्यम से हर प्रकार के ताले खोले जा सकते है। अर्थात यदि बहुजन समाज के लोग अपने आप को तयार करके राजनीतिक सत्ता रूपी मास्टर चाबी अपने हाथों में ले लेते हैं तो फिर ये लोग जिंदगी के हर पहलू में आगे बढ़ने के लिये हर प्रकार के स्वयं खोल सकते है इन सब महामानवो के उद्देश्यों ने बहुजन समाज के उत्थान के लिये अथक प्रयास किये जिससे आज बहुजन समाज पार्टी देश मे पूरी शक्ति से खडी है। इसको गिराना आज किसी के लिये भी असम्भव है। दलितों को सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिये इनके युग पुरूषों ने जो आंदोलन चलाये उनको ध्यान में रखकर ही बसपा का निर्माण किया ये आंदोलन उनकी नीतियों में जीवित हैं।

बहुजन समाज के सामाजिक आर्थिक विकास के लिये राजनीतिक शक्ति का होना आवाश्यक है। इसलिये एक दल का गठन आवश्यक था जो सिर्फ बहुजन समाज के लोगों द्वारा चलाये जाये 15 दिसम्बर 2001 को माननीय कांशीराम जी ने लक्ष्मण मेला ग्राउण्ड लखनऊ में एक सभा में बहुजन समाज को सम्बोधित करते हुये कु0 मायावती जी को पार्टी का उपाध्यक्ष तथा पार्टी का राजनीतिक उत्तराधिकारी घोषित किया यह कार्य माननीय कांशीराम जी ने तब किया जब उनका शारीरिक स्वास्थ्य बिगड़ रहा था।

15 सितम्बर 2003 को माननीय कांशीराम जी के स्वास्थ्य मे अचानक गिरावट आ गई जिससे दल की सारी जिम्मेदारियां बहन सुश्री मायावती के कंधो पर आ पड़ी और 18 सितम्बर 2003 को पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष होने के नाते कु0 मायावती ने एक सम्बोधन में सबको सुनिश्चित किया कि मेरे जीवन काल में मै चाहूंगी की

बहुजन समाज के लोग न सिर्फ सामाजिक आर्थिक प्रगति करें बल्कि वे सभी गरीब लोग जो कि हिन्दू समाज की उच्च जाति से सम्बंध रखते हैं छोटे किसान व्यापारी और वे लोग छोटे और मसाले व्यवसाय मे संलग्न हैं विकास करें । परंतु मनुवादी विचारधारा के लोग जो कि बहुजन समाज हिंदु समाज के दबे कुचले लोगों के विरूद्व षडयंत्र रच रहे हैं जिससे वे उन्नति न कर पायें बहुजन समाज पार्टी की छवि को धूमिल करने के प्रयास में भी ये मनुवादी लोग संलग्न हैं परंतु इन सब आधारों पर हम यह कह सकते हैं कि यह झूठ आधारहीन तथ्यो का पुलिंदा है।

बहुजन समाज पार्टी का मुख्य उद्देश्य नीतियां और विचारधारा स्पष्ट और साफ है। वह है सम्पूर्ण राष्ट्र वृहद जनसंख्या का कल्याण बहुजन समाज पार्टी की विचारधारा के अनुसार मनुवादी विचारधारा जो वर्ण आधारित है को समाप्त करना होगा बहुजन समाज पार्टी का उद्देश्य कठोर एंव ईमानदार मानवीय सामाजिक प्रथा की स्थापना करना है जो कि आधारित है सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक न्याय एंव समानता में जो कि भारत के संविधान की प्रस्तावना मे निहित है। बाबा साहेब डा0 भीमराव अंबेडकर के विचारो से प्रभावित होकर माननीय कांशीराम जी ने बहुजन समाज पार्टी की स्थापना 14 अप्रेल 1984 को की ।

बहुजन समाज पार्टी की स्थापना के बाद से वह लगातार अपना जनाधार बढ़ाने मे सफल रही आज बहुजन समाज पार्टी की नीतियों ने तथा बहुजन ने अपने उत्थान के लिये ब0स0पा0 को सभी राजनीतिक दल की अग्रिम पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया है। बहुजन समाज ने आज समाज में प्रतिष्ठित स्थान बना लिया अछूत की भावना समाप्त होने लगी है। दलित वर्ग अपने उपर होने वाले अत्याचार व शोषण के विरूद्व अब संघर्ष के लिये तैयार है। उनके उपर शोषण न हो इसके लिये अनेक कानून भी हैं। दलितों के उत्कर्ष के पीछे बहुजन समाज पार्टी का हाथ है। जिसने भारतीय राजनीति मे प्रवेश कर एक नए राजनीतिक समीकरण का सूत्रपात किया है। बसपा के कारण बहुजन समाज राजनीतिक क्षेत्र के साथ शैक्षणिक प्रगति भी कर रहा है इस शैक्षणिक प्रगति के कारण यह वर्ग उन्नति की ओर उन्मुख है बहुजन समाज पार्टी की नीतियो ने भारतीय जनता के सभी वगा मे अपना स्थान बना कर रखा है बहुजन समाज इन नीतियों से विकास कर सकती है साथ ही पूरा देश भी विकास के पद पर अग्रसर हो सकता है शोषित दलितों ही नही बल्कि गरीबों को ध्यान मे रखकर बसपा की नीतियां बनी हुई है। पार्टी के संविधान का मुख्य उद्देश्य सामाजिक आर्थिक क्षेत्र मे क्रांन्तिकारी परिवर्तन लाना है। इसका उद्देश्य है न्याय स्वतत्रता समानता भाईचारा और यही हमारे भारत के संविधान का मुख्य अंग है बहुजन समाज पार्टी के अनुसार यही संपूर्ण राष्ट्र और सभी श्रेणी के उत्थान के लिये अतिआवश्यक है वे सभी लोग जो मनुवादी विचारधारा के हैं वे बहुजन समाज और बहुजन समाज पार्टी के साथ हाथ मिलाते हैं तो यह अपनत्व सम्मान और प्रसन्नता की बात होगी उन सभी लोगों को पार्टी मे उचित पद दिया जायेगा। ये पद उनकी क्षमता एंव समर्पण के आधार पर निश्चित किये जायेंगे और उनके तथा बहुजन समाज के मध्य अंतर नही किया जायेगा उन्हें पार्टी में उचित स्थान देने के अतिरिक्त सरकार निर्माण और राज्यसभा और लोकसभा में भी भागीदारी दी जाएगी ये सारी बाते केवल खोखली नहीं है। परन्तु पूर्व की बहुजन समाज पार्टी सरकार के द्वारा अपने वादों को निभाया भी गया है। उत्तर प्रदेश मे मायावती जी के नेतृत्व मे चार बार बहुजन समाज पार्टी की सरकार बनी है और उसमे उच्च जातिवर्ग के लोगो को भी उचित स्थान प्राप्त हुआ है यही नही एक उच्च जाति के व्यक्ति को महाअधिवक्ता जैसा उच्च पद भी प्रदान किया गया है उन्हें लोकसभा तथा राज्यसभा और विधान परिषद तथा विधानसभा के चुनाव मे नामित भी किया बहुजन समाज पार्टी केवल दलितों की पार्टी नही बल्कि सम्पूर्ण समाज की पार्टी है। उसने केवल एक क्षेत्र के बारे मे नहीं सोचा बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र के उत्थान एंव विकास के लिये कार्य किया है।

बहुजन समाज पाटी की नीतियां तथा कांग्रेस कोई अमूल्य परिवर्तन वादी पार्टी नही है। कांग्रेस को क्रांतिकारी संगठन होने का गौरव तो प्राप्त है निश्चित ही कांग्रेस को यह गौरव उस आंदोलन ने दिलाया है जो उसने कभी छेड़ा था कि हम पूर्ण स्वराज लेंगे अंग्रेजों के खिलाफ सिविल नाफरमानी करेगें और लगान नहीं देंगे लेकिन लोग यह भूल जाते है कि यह जरूरी नही कि कोई क्रांतिकारी पार्टी आमूल परिवर्तन पार्टी भी हो कोई क्रांतिकारी पार्टी अमूल

परिवर्तन वादी पार्टी भी है या नहीं निश्चय ही यह उन सामाजिक तथा भावनात्मक वास्तविकताओं पर निर्भर करता ह जो कांति की प्रेरणा देती है।

सामाजिक तथा आर्थिक पुनः निर्माण के अमूल परिवर्तनवादी कार्यकम के बिना अस्पृश्य दलित कभी भी अपनी दशा में सुधार नहीं कर सकते चूंकि कांग्रेस अमूल परिवर्तनवादी नहीं है उस पर विश्वास नही किया जा सकता कि वह ऐसा कोई कार्यकम हाथ मे लेगी अस्पृश्यों के लिये ऐसी पार्टी मे शामिल होना बेकार और बेमानी है कांग्रेस उनके लिये कुछ भी नहीं करेगी उल्टे वह पहले की भांति दुरूपयोग करेगी।

कांग्रेस मे शामिल होने से अस्पृश्यों को नुकसान हुये हैं वे केवल नुकसान ही नहीं है बल्कि उन्हे दुष्परिणाम भी सहने पड़े हैं समूची सामाजिक गतिविधि ठप्प हो गई है। समुचे राजनीतिक अधिकार छिन गये हैं। यह कहना पर्याप्त नहीं होगा कि नये संविधान के अधीन अस्पृश्य प्रगति नहीं कर रहे हैं वस्तुतः उन्हें जंजीरो से जकड़ दिया गया है। बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर की उक्तियों से यह बात स्वच्छ पानी की तरह स्पष्ट है कि कांग्रेस जैसी मनुवादी पार्टियो से बहुजन समाज का कभी भी भला नही हो सकता है सैकड़ो ऐसे उदाहरण है यह साबित करने के लिये कि कांग्रेस हमेशा से मनुवादी प्रवृत्ती वाली तथा वर्ण व्यवस्था को कायम रखने वाली पार्टी रही है तथा उससे सामाजिक परिवर्तन की उम्मीद करना प्यास बुझाने के लिये रेगिस्तान मे पानी तलाश करने जैसा है। बहुजन समाज के लोग कब तक इस बात का रोना रोते रहेंगे कि सभी पार्टीयां मनुवादी प्रवृत्ती की होने के कारण सामाजिक परिवर्तन की सदा से विरोधी रही है। ये सारी पार्टियां सामाजिक न्याय की बात तो करती हैं ताकि बहुजन समाज को हमेशा की तरह बरगलाये रखा जाये लेकिन सामाजिक परिवर्तन करके समाज मे समानता एंव मानवता लायी जाये इसके लिये प्रयास करना तो दूर इस संबंध मे ये पार्टियां बात तक नहीं करती क्योकि इनकी सोच मे ही खोट हैं युग निर्माता बाबा साहेब डॉ अंबेडकर की यह बात याद आती है कि मनुवादियों को कोई अधिकार नही है कि वे दलितों का नेतृत्व करें क्योकि वे दलितों का कभी भला नहीं कर सकते समाजवादी रचना को सही दिशा तो समाज के उसी वर्ग का व्यक्ति दे सकता है जिसने खुद निरादर एंव दरिद्रता का अनुभव किया हो आखिरकार इस सोच ने दलित शोषित पिछड़ों एंव मजहबी अल्पसंख्यकों बहुजन समाज में जन्मे व्यक्तिओं को अपने एक अलग राजनीतिक पार्टी बहुजन समाज पार्टी बनाने को मजबूर किया।

14 अप्रेल 1984 को जब बहुजन समाज पार्टी अर्थात बीएसपी का गठन किया गया तो मान्यवर कांशीराम जी की उम्र 50 साल की तथा मायावती की उम्र मात्र 28 वर्ष थी । बीसपी कोई एक दिन की सोच की उपज नही थी बल्कि वर्षो की दिनरात की अथक मेहनत का नतीजा थी जो बामसेफ अर्थात बैंक बर्ड (एस सी एस टी ओबीसी)एंण्ड माइनॉरिटी कम्यूनीटीज इम्पलाइज फेडरेशन दलित शोषित समाज संघर्ष समिति अर्थात डीएस–4 के माध्यम से देश भर में की गयी थी बीसपी को एक राजनीतिक दल के रूप मे अस्तित्व मे लाया गया ताकि सत्ता की मास्टर चाबी अपने हाथ में लेकर बहुजन समाज को स्वयं अपनी तकदीर का मालिक बनाया जा सके क्योकि अभी तक वह मनुवाद का गुलाम है मनुवाद के षडयंत्र के शिकार है तथा वर्णवाद से घोर पीड़ित है। मनुवादी जाति पण्डागिरि सारी जातियां व वर्णो को नियंत्रित करती है। यह सभी वर्ग जातियां कुठिल जाति परम्पराओं के बंधन मे जकडी हुई है और यह सभी जातियां स्वयं को एक दूसरे से ऊंचा सिद्ध करने का झूठा प्रयास करती है वर्तमान मे 6 हजार जातियां शूद्र कहलाती है शूद्र नीचे की ओर जाने वाली ब्राह्मण क्षत्रिय एंव वैश्यों के पश्चात चौंथी सीढ़ी है। यह सिद्धांत पूर्णतः असमानता पर आधारित है। हम अन्याय पूर्ण सामाजिक परम्पराओं का परिवर्तन वास्तव मे समानता के सिंद्वातों पर करना चाहते हैं सामाजिक रूप से सभी को समान होना चाहिये एक प्रश्न के उत्तर मे कि क्या ब्रहाणों पिछडी जातियों का शोषक है क्या आप सोचते हैं कि आधुनिक संसार मे ब्राह्मणों का भी उत्पीडन एंव शोषण हो सकता है समाजिक व्यवस्था के अतर्गत मनुवादी की देन के सदंर्भ मे कु0 मायावती ने उसे काफी समय पूर्व अपनी पुस्तक मे रेखाचित्र के माध्यम से विभिन्न जातियों की स्थिति को दर्शाया था । उनके अनुसार मनुवादी व्यवस्था से ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ये तीनों लाभान्वित थी जो कि कुल संख्या का 10 से 15 प्रतिशत है जबकि व्यवस्था से

पीड़ित जातियां 85 से 90 प्रतिशत हैं ये जातियां अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति पिछड़ी जाति तथा मध्यम जाति हैं। एक प्रकार से शायद जाति के रूप मे नहीं बल्कि निश्चय ही व्यक्ति के आधार पर देश के कुछ भागो मे अवश्य जैसे पंजाब मे ब्राह्मण शोषक नही है। स्वयं माननीय काशीराम जी पंजाब के निवासी थे जब तक वे पंजाब मे रहे उनको कभी नही लगा कि ब्राम्हण दलित वर्ग का शोषण करते हैं इस प्रकार यह अत्याचार लगभग सर्वव्यापी था पंजाब इसका अपवाद रहा है। जहां ब्राम्हण लोगों पर इस प्रकार के अपमान लाद पाने की स्थिति मे नहीं था कुछ क्षेत्रो जैसे कांगणा मे उन्हे दलित माना सकता है। ये सारे वाद भारत के लिये विदेशी है केवल मनुवाद जन्तजात भारतीय है इसलिये हमें भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल एक भिन्न प्रकार का वाद बनाना होगा यदि आप कोई अन्य वाद लाना चाहते हैं तो आपको भारतीय यथार्तता का ज्ञान होना चाहिये जैसा कि बहुजन समाज पार्टी ने करने की योजना बनाई है जो भी बहुजन समाज पार्टी की नीति है। वह एक दूसरे से गुथी हुई है ये नीतियां एक दूसरे से जुडी हुई हैं। आज बहुजन समाज पार्टी परिवर्तन चाहने वाली शक्तियों का प्रतिनिधित्व करने का प्रयास कर रही है कभी बहुजन समाज एक का भी प्रतिनिधत्व करने की स्थिति मे नही थे परन्तु आज परिवर्तन चाहने वाली शक्तियों का प्रतिनिधित्व करने के लिये अपने को तैयार करने का प्रयास कर रहे हैं यह चाहे सामाजिक हो आर्थिक या राजनीतिक हो बहुजन समाज क महापुरूषो और नेताओं ने भी बी.एस.पी. की स्थापना इसलिये की है कि वर्तमान सभी राजनीतिक दल यथा स्थिति अर्थात जैसी सामाजिक व्यवस्था सैकड़ों सालों से चली आ रही है उसको बनाये रखना चाहते हैं यहां तक कि बाम पंथी दल भी यथा स्थिति के हामी है कुछ मामलो मे वे बिल्कुल ही व्यर्थ हैं रिपब्लिकन पार्टी की असफलता से भी काफी कुछ सबक लिया गया है जिस समाज की गैर राजनीतिक जड़े मजबूत नहीं होती उस समाज की राजनीति कभी कामयाब नही होती इस तरह बामसेफ बनाकर दलित शोषित समाज के राजनीतिक आधार की बुनियाद को मजबूत किया गया राजनीति सत्ता के लिये होती है और सत्ता बिना संघर्ष के नहीं मिलती 15 प्रतिशत मनुवादी समुदाय 85 प्रतिशत पिछड़े समाज अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अन्य पिछड़ी जातियों पर शासन कर उनका शोषण कर रहा है। इस असमान व गैर बराबरी वाली सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष करने के लिये तथा जातिविहीन न बराबरी वाले समाज की संरचना के लिये 1981 में दलित शोषित समाज संघर्ष समिति बनाई गई शुरू मे तो डी. एस–4 को एक प्रकार के संघर्षात्मक आंदोलन के रूप मे विकसित किया गया डी. एस–4 के झण्डे के नीचे 6 दिसम्बर 1983 को एक आंदोलन की शुरूआत हुई इस आंदोलन का नाम समता और सम्मान के लिये रखा गया देश के पांच कोनों कन्याकुमारी कोहिमा कारगिल पुरी तथा पोरबंदर से दो दो दिन के अंतराल पर दिल्ली के लिये साईकिल मार्च शुरू किया गया 100 दिनो के भीतर 100000 किलोमीटर की दूरी तय करते हुये यह साईकिल मार्च दिल्ली पहुंचा उन 100 दिनों मे डी.एस–4 के 300000 कार्यकर्ताओं ने 7500 सार्वजनिक सभायें की तथा किसी सभा मे 20000 से कम लोग उपस्थित नहीं थे हम इतने कम समय मे 1000000 से ज्यादा लोगों तक समता और सम्मान की बात पहुंचा सके थे इस पूरे आंदोलन मे 1500000 रूपये से भी ज्यादा की धनराशि खर्च हुई जब हम इस गैर बराबरी वाले समाज को ध्वस्त कर एक नये समाज की स्थापना के लिये संघर्ष की बात करते हैं तो हमें विकल्प भी प्रस्तुत करना होगा और यह विकल्प राजनीतिक सत्ता को हासिल किये बगैर सम्भव नहीं है भारत की कुल आबादी का 85 प्रतिशत हिस्सा अनुसूचित जाति /जनजाति अन्य पिछडा वर्ग एंव धार्मिक अल्पसंख्यक समुदायों का है। इसलिये इसे बहुजन समाज कहा गया है बहुजन समाज की अपनी कोई राजनीतिक पार्टी हो इस जरूरत को महसूस करते हुये बहुजन समाज के लोगो ने मान्यवर कांशीराम जी के नेतृत्व मे बहुजन समाज के नाम पर बहुजन समाज पार्टी नामक राजनीतिक पार्टी का गठन किया यह पार्टी बहुजन समाज के लोगों को जिन्हे मनुवादी व्यवस्था के आधार पर कई हजार टुकड़ों मे बांट कर रखा गया है। जोड़ने मे दिलचस्पी रखती है और बहुजन समाज की अपनी हुकूमत बनाने व बाबा साहेब डॉ अंबेडकर के अधूरे मिशन को पूरा करने के लिये कृत्य संकल्प है। पिछड़े वर्ग के लोगों को जिन्हें अन्य पिछड़े वर्ग ओ.बी.सी. के नाम से भी जाना जाता है संविधान लागू होने के कई दशकों बाद भी न तो कोई मान्यता

मिली है और न ही कोई अधिकार प्राप्त हुआ है। हांलाकि संविधान की धारा 340 के अंतर्गत बाबा साहेब डा0 अंबेडकर ने उनके लिये विशेष प्रावधान किया था उसी प्रावधान के तहत ही प्रथमतः काका कालेलकर आयोग की नियुक्ति की गई थी जिसकी रपट भारत सरकार ने ठुकरा दी थी लेकिन उसके बाद 1978 मे पुनः जनता शासन द्वारा मंडल आयोग की नियुक्ति की गई विगत कई वर्षो से यह समाज अपेक्षा करते आया था कि कोई न कोई राजनीतिक दल या गैर राजनीतिक संगठन मंडल आयोग की रपट लागू करवाने के प्रश्न को गम्भीरता से लेकर अपने स्तर पर कुछ न कुछ करेगा परन्तु ऐसा नही हो पाया। अन्ततः बी.एस.पी. ने इसका बीड़ा उठाया मंडल आयोग के बारे मे सरकार व विरोधी दलो द्वारा अपनाये गये रवैये के मद्देनजर तथा विशेष रूप से 25 जुलाई सन् 1984 को सरकार द्वारा संसद मे दिये गये स्पष्टीकरण को देखते हुए बहुजन समाज पार्टी ने इस प्रश्न को केंद्र राज्य मंडल व जिला स्तर पर उठाने का निश्चय किया इस कार्यवाही के अंतर्गत संसद भवन के सामने पहली अगस्त से 14 अगस्त 1984 तक बी. एस.पी. की ओर से धरना प्रदर्शन किया गया तथा गिरफ्तारी दी गई ।

सरकारी आकड़ों के अनुसार जब अंग्रेज भारत छोड़ कर गये थे उस समय मुसलमान सरकारी नौकरियों में 33 प्रतिशत थे परन्तु आज मात्र एक या डेढ़ प्रतिशत रह गया है साम्प्रदायिक दंगों की आड़ मे भी मुस्लिम समाज को आर्थिक क्षेत्र मे कमजोर बनाया गया जिसके कारण ये अपने आपको सुरक्षित महसूस नहीं कर रहा है सरकारी नौकरी मे पूरा मौंका न मिलने के कारण उन्होने छोटे छोटे कुटीर उद्योग को शुरू किया परन्तु वहां भी साम्प्रदायिक दंगो की आड़ में उनके उद्योग को तबाह व बर्बाद कर दिया गया मेरठ जमशेदपुर सहारनपुर मुरादाबाद भिवन्डी भागलपुर तथा हैदराबाद आदि के हिन्दु मुस्लिम दंगे इस बात के गवाह हैं कि मनुवादियों ने षडयंत्र करके मुस्लिम समाज को आर्थिक तार पर कभी मजबूत नही होने दिया।

बी0एस0पी0 के उद्देश्य एव कार्य :–

पार्टी के मुख्य उद्देश्य एवं कार्य समाज मे क्रांतिकारी परिवर्तन लाना है। सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्र मे बहुजन समाज पार्टी का विकास तथा समाज मे दबे कुचले वर्ग के लोगों को शोषण से मुक्ति प्रदान करने के लिये बहुजन समाज पार्टी कृतसंकलित है। पार्टी के मुख्य उद्देश्य हैं –

(1) भारत के सम्पूर्ण नागरिक कानून की दृष्टि में एक बराबर हैं। सब के साथ हर प्रकार से समान व्यवहार किया जाये। दलिता को समानता के अधिकार से वंचित न किया जाये

(2) ऐसे व्यक्ति जो दबे कुचले हैं वे स्वतत्र रूप से अपने अधिकारों का प्रयोग कर सकें इस आधार की नीव बहुजन समाज पार्टी द्वारा रखी गई है।

(3) वे सभी अधिकार जो भारतीय नागरिकों को भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त हैं को किसी कीमत एंव परिस्थिति में कठोरता से लागू करना।

(4) संविधान मे निहित राज्य एवं केंद्र सरकारों की विशेष देखभाल एवं सामाजिक आर्थिक सुरक्षा उन लोगों को प्रदान करना जो कि समाज के पिछड़े वर्ग के हैं और सदियां से समाज के हर क्षेत्र से वचिंत रहे हैं।

(5) समाज मे अमीर गरीब के मध्य खाई को समाप्त करना और पार्टी का मुख्य राजनैतिक सिद्धांत है। ''एक व्यक्ति एक वोट एक मूल्य '' जो हमारे गणतंत्र का आधार है।

(6) जब तक सामाजिक आर्थिक रूप से दबे कुचले लोगों को राजनैतिक शक्ति नहीं मिल पायेगी तब तक इनका उत्थान कठिन है अतः दलितों को राजनैतिक भागीदारी प्रदान करना।

(7) बाबा साहेब डा0 अंबेडकर के मिशन को मंजिल तक पहुंचाना।

(8) समाज मे व्याप्त आर्थिक सांस्कृतिक सामाजिक एव राजनैतिक विषमताओं को मिटाना।

(9) बहुजन समाज जिसे इस देश की मनुवादी व्यवस्था में कई हजार टुकडों में तोडा है उन्हें आपस मे संगठित कर आपसी भाइचारा पैदा

करना तथा एक राजनीतिक दल के रूप मे राजनीतिक सत्ता प्रदान करना ताकि ये समाज अपनी हर प्रकार की समस्याओं का समाधान मनुवादी समाज से करवाने के वजह स्वयं राजनीतिक सत्ता हासिल करके उसके माध्यम से हल कर सकं।

(1) अनुसूचित जाति/जनजाति पिछड़े वर्ग अल्प संख्यक वर्ग देश के सबसे शोषित वर्ग हैं यह वर्ग भारत का बहुजन समाज है।

पार्टी बहुजन समाज वर्ग के लिये कार्य करेगी–

(क) पिछड़ापन की समाप्ति

(ख) शोषण एवं उत्पीड़न के विरूद्व संर्घष

(ग) समाज एवं सार्वजनिक रूप से इनके जीवन का कल्याण

(घ) दैनिक जीवन में इनके जीवन स्तर का बेहतर करना

(2) भारतीय समाज जो कि जातिगत असमानता पर आधारित है। उसके विरूद्व एक आंदोलन करना और सामाजिक प्रथा का पुनः निर्माण करना जिसका आधार समानता एवं मानवीय मूल्य हैं वे सभी लोग जो कि पार्टी के साथ सम्मिलित होते हैं और सामाजिक आंदोलन मे भाग लेते हैं वे पार्टी मे सम्मानित होंगे बहुजन समाज पार्टी इन आधारों पर उन लोगां से आपील करती है समतावादी नीतियों के क्रियान्वयन के लिये इसके सदस्य बनें इसके पीछे उनके तर्क हैं।

1. बी.एस.पी दलित शोषित पिछडा वर्ग तथा अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व करती है
2. इन वर्गो को सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक शोषण से मुक्ति मिल सके
3. इन वर्गो के स्वाभिमान एवं मौलिक अधिकारो की रक्षा हो सके।
4. न्याय स्वतत्रंता समता तथा भ्रातृत्व पर आधारित समाज की स्थापना की जा सके ।
5.तथा देश में सही अर्थो मे प्रजातंत्र की स्थापना को जा सके।

ब.स.पा. के मुख्य उद्देश्य और लक्ष्य भारतीय समाज और आर्थिक जगत में एक कांतिकारी परिवर्तन के साथ केवल बहुजन समाज ही नहीं बल्कि समस्त देश वासियों के हित को ध्यान मे रखकर निर्मित किये गये हैं सबको समानता का अधिकार और न्याय मिले ऐसी अवधारणा के साथ बहुजन समाज पार्टी का गठन हुआ संविधानिक अधिकारों का प्रयोग तथा न्याय समानता स्वतंत्रता आदि मौलिक अधिकारों के प्रयोग का हनन न हो इस नीति के साथ बहुजन समाज पार्टी भी अपने मूल्य उद्देश्य के साथ अडिग है राज्य सरकारो एंव केंद्र सरकार को उनके कर्तव्यो की याद दिलाना तथा ब.स. पा. के सरकार बनने पर स्वयं इन कर्तव्यो का पालन करना बसपा की नीति मे सम्मलित है।

सन्दर्भग्रंथ :

1.कु0 मायावती मेरे संघर्षमय जीवन एंव बहुजन मुवमेंट का सफरनामा बसपा केन्द्रीय कार्यालय नई दिल्ली पृ0 429

2.कमलाकांत– ज्योतिराव फुले राजा पाकेट बुक्स नई दिल्ली 2006 पृ0 8

3.कु0 मायावती मेरे संघर्षमय जीवन एवं बहुजन मुवमेंट का सफरनामा ब.स.पा. केन्द्रीय कार्यालय नई दिल्ली पृ0 430

4.कमलाकांत– ज्योतिराव फुले राजा पाकेट बुक्स नई दिल्ली 2006 पृ0 10

5.कमलाकांत– डा0 भीमराव अंबेडकर राजा पाकेट बुक्स नई दिल्ली 2006 पृ0 81

6.कु0 मायावती – बहुजन समाज और उसकी राजनीति बसपा केन्द्रीय कार्यालय नई दिल्ली 2000 पृ 151

7.अभिलोष दास – संसार के महापुरूष कबीर पारख संस्थान इलाहाबाद पृ0 157

8.अभिलोष दास – संसार के महापुरूष कबीर पारख संस्थान इलाहाबाद पृ0 157–58

9.अभिलोष दास – संसार के महापुरूष कबीर पारख संस्थान इलाहाबाद पृ0 159

10. इस संदर्भ मे अशोक वाजपेयी जी ने दैनिक जागरण इलाहाबाद से एक लेख भी प्रस्तुत किया है जिसमें भारतीय शौषित समाज को उत्थान के लिये उपाय के संबंध मे उल्लेखनीय तर्क है।

11.ए0आर0कडवे– भारतीय राजनीति मे दलितों की भूमिका पुणे 1998 पृ0 103

12. शीलप्रिय बौद्व – बाबा साहेब नई दिल्ली पृ0 26

13. स्वरूप चंद बौद्व – डा0अंबेडकर और पिछडा वर्ग सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली पृ0 78

14. रिजवान अहमद द्वारा भारतीय समाज और दलित नामक संगोष्ठी मे प्रस्तुत शोध पत्र नागपुर 1988

15.कु0 मायावती मेरे संघर्षमय जीवन एंव बहुजन मुवमेट का सफरनामा पृ0 438

16. शीलप्रिय बौद्व – बाबा साहेब नई दिल्ली पृ0 27

17.ए0आर0कडवे– भारतीय राजनीति मे दलितो की भूमिका पृ0 114

18. शीलप्रिय बौद्व – बाबा साहेब पृ0 31

19. दिल्ली विश्वविद्यालय मे आयोजितशोध संगोष्टी मे प्रस्तुत शोधपत्र बाबा साहेब की दलित राजनीति 1998 प्रोसीडिंग बाबा भीमराव अंबेडकर का भारत के विकास मे योगदान

20. शीलप्रिय बौद्व – बाबा साहेब पृ0 41

21. शीलप्रिय बौद्व – बाबा साहेब पृ0 42

22. स्वरूप चंद बौद्व – डा0अंबेडकर और पिछडा वर्ग सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली पृ0 81

23. स्वरूप चंद बौद्व – डा0अंबेडकर और पिछडा वर्ग सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली पृ0 82

24. शीलप्रिय बौद्व – बाबा साहेब पृ0 42–43

25. शीलप्रिय बौद्व – बाबा साहेब पृ0 78

26. शीलप्रिय बौद्व – बाबा साहेब पृ0 79

27.कु0 मायावती – बहुजन समाज और उसकी राजनीति बसपा केन्द्रीय कार्यालय नई दिल्ली 2000 पृ 228

28. डा अंबेडकर – शूद्रो की खोज दिल्ली पृ0 23

29.कु0 मायावती मेरे संघर्षमय जीवन एव बहुजन मुवमेट का सफरनामा पृ0 291

30.कु0 मायावती मेरे संघर्षमय जीवन एव बहुजन मुवमेट का सफरनामा पृ0 291

31.कु0 मायावती मेरे संघर्षमय जीवन एंव बहुजन मुवमेट का सफरनामा पृ0 293

32.कु0 मायावती – बसपा राजनीति में बहुजन समाज का योगदान पृ0 5–6

33.कु0 मायावती – बहुजन समाज पार्टी का उत्तरप्रदेश दलित उत्थान के लिये अभियान पृ 20

34.कु0 मायावती – बहुजन समाज पार्टी का उत्तरप्रदेश दलित उत्थान के लिये अभियान पृ 18

35.कु0 मायावती – बहुजन समाज पार्टी का उत्तरप्रदेश दलित उत्थान के लिये अभियान पृ 18

36.बसपा और उसके उददेश्य – पार्टी द्वारा जारी पुस्तक लखनउ

37.बसपा और उसके उददेश्य – पार्टी द्वारा जारी पुस्तक लखनउ

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

भारतीय ग्राम जीवन के सांस्कृतिक आयाम

भगवत प्रसाद झारिया

सांस्कृतिक आयाम

'संस्कृति' अन्त जगत की वस्तु है। इसका सीधा संबंध मनुष्य के संस्कारों से है। व्यक्तिगत और समाज जातिगत दो प्रकार के संस्कार होते है। समाज या जातिगत संस्कारों को ही संस्कृति कहते हैं।

संस्कृति क्या है ?

हमारे रीति रिवाज ही हमारी संस्कृति है मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण समाज से बधा रहता है। समाज के रीति रिवाज मानने को वह बाध्य हो जाता है। बाद में जब यही रीति रिवाज पूर्णतया संस्कृत अथवा शुद्ध हो जाते है। तब इनका विशुद्ध रुप संस्कृति कहलाता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार

''मनुष्य की सर्वोत्तम साधनाओं की परिणति का नाम ही संस्कृति है।''

सभ्यता बाह्य जगत की वस्तु है, जबकि संस्कृति सूक्ष्म है। डॉ. रामधारी सिंह दिनकर के श्शब्दों में –

''संस्कृति इसमें उसी तरह व्याप्त है जैसे दूध में मक्खन अथवा फूलों में सुगंध।''

लोक विश्वास

समाज की परंपराएं सदैव विद्यमान रहती है, उनमें विखराव नहीं आता कई बार देश की विद्या से अधिक शक्तिशाली उनकी परंपराएं हो जाती है। जब कोई व्यक्ति या वर्ग उन्हें तोड़ने का प्रयास करता है तो पूरे समाज एकत्र होकर उसका विरोध करते हैं जैसे – समय का बदलाव होता गया। नई नई परंपराएं भी बनती गई पुरानी परंपराओं को व्यक्ति छोड़कर नई परंपराओं की और आकर्षित हुआ क्योंकि नई परंपराएं समाज के लिए ज्यादा उपयोगी सिद्ध हुआ। अतः वे समस्त परंपराएं और जन विश्वास जो समय की गति के साथ पग मिलाकर नहीं चल पाते रुढ़ियों अथवा अंधविश्वास कहलाते है। ये रुढ़िया या अंधविश्वास जब समाज में प्रचलित रहते है। तो समाज का विकास अवरुद्ध हो जाता है। समाज के विकास में ये बाधक सिद्ध होती है।

ग्रामीण लोग सहज एवं सरल और हम दर्द होने के कारण अशिक्षित होते है। गामीण अपने रीतियों एवं परंपराओं के प्रति सहयोगी होते है। कभी कभी इन्हें धर्म से जोड़ने का प्रयास भी करते है। शहरी परिवेश से अछूते रहने के कारण भी उन्हें रीति रिवाजों का आश्रय लेना पड़ता है।

''ग्रामीण प्राय अंधविश्वासी होते है। स्त्री पुरुष दोनों रुढ़ियों को मानते हैं इनमें साधारण या सामान्य वर्ग ही नहीं बल्कि गांव जगत के उच्च मध्यम वर्गीय भी मानते है।''

नजर लगना

छोटे छोटे अंधविश्वास हमारी प्रगति को किस प्रकार रोकते है। प्रेमचंद ने इस तरह के अंधविश्वासों का अत्यधिक भयंकर परिणाम दिखाकर उसके प्रति अनास्था व्यक्त की है। इस अंधविश्वास का परिणाम उपन्यासों में वे दिखा चुके है। वरदान निर्मला उपन्यास में भी सुधा के लड़के के अस्वस्थ होते ही निर्मला की मां बोल पड़ी।

''नजर कोई लगता नहीं बेटी किसी किसी आदमी की पीठ बुरी होती है। आप ही लग जाती है। कभी कभी मां बाप की नजर भी लग जाती है।''

''नजर लगना'' गांव की औरतों को अपने बच्चों के प्रति इसका भय बना रहता है। बच्चे जरा अवस्थ्य हुए कि नजर उतारना प्रारंभ कर दिया जाता है। गांव के पढ़े लिखे भी इस बात को स्वीकार करते है।

भूत–प्रेत

भूत प्रेत की कथाएं पहले कथा साहित्य में सस्ते मनोरंजन और रोमांच के लिए ग्रहित थी किंतु स्वतंत्रयोत्तर कथा साहित्य में उन्हें नयी

प्रतिष्ठा मिली है। उनका चित्रांकन किसी अन्य उद्वेश्य से नहीं अपितु तटस्थ मिली है। उनका चित्रांकन किसी अन्य उद्वेश्य से नहीं अपित् तटस्थ चित्रण के ही उद्वेश्य से हुआ है।

परती परिकथा में रेणु ने पूर्णिमा अंचल के एक विकसित गांव को लिया परंतु विकास और नयी समस्वरता के होते भी गांव भूतभांवर और अंधविश्वासों की गहरी परतों में दबा है। संस्कृति के नाम पर विकृति है। लोगों की धारणा है कि हवेली के पिछवाड़े वाले ताडवृक्ष पर ब्रह्मपिशाच का राज्य रहता है। विशाल परती पर डेढ़ सौ एकड़ की पांच परिधियों पर इस ब्रह्मपिशाच का राज्य था प्रत्यैक वर्ष श्शरद की चांदनी में वह इन पांच चकों में अपना रुपया पसार कर सूखने देता था।

हिमांशु श्रीवास्तव की पुस्तक नदी फिर वह चली में एक ब्राहमण का मारा गया लड़का जामुन के पेड़ पर ब्रह पिशाच होकर निवास करता है और लोगों को सपने देकर विधिवत अपना चबूतरा बनवाकर पूजा लेता है। भूत प्रेत में आस्था रखने वाली जातियां अपेक्षाकृत कम विकसित अशिक्षित तथा असभ्य है प्रत्यैक देश के समाज में इनके संबंध में भिन्न भिन्न तथा स्थानीय रंगों में भरपूर लोक कथा प्रचलित है। अधिकांश ग्रामीण जन जीवन में इस अंधविश्वास का प्रसार अधिक पाया जाता है। महोब के देहातो में जाकर इन अंधविश्वासों को देखकर अपनी कृतियों में इनका उल्लेख भी मुंशी जी ने किया है। वरदान कथा की नायिका मझगवां से कमला के नाम पत्र लिखती है–

हमारे घर के पिछवाड़े एक गड्डा है। यहां किवंदती है कि गडढे में चुड़ेल नहाने आया करती हैं और रवे अकारण राह चलने से छेड़छाड़ करती है। इसी तरह दरवाजे पर पीपल का एक पेड़ वह भूतों का अड्डा है।

जादू टोना

एक दूसरे का अहित करना टोटका कहलाता हैं। यह अंधविश्वास ग्रामों में बहुत समय से चला आया है। जादू टोने टोटके का प्रभावकारी ग्रामों में बहुत समय से चला आया है। जादू टोने टोटके का प्रभावकारी शक्तियों में समाज के अपेक्षाकृत निम्न वर्ग में अधिक आस्था के साथ विश्वास पाये जाते है। प्रेमचंद्र ने अपनी औपन्यासिक कृतियों में जन जीवन के इस अंधविश्वास का भी उल्लेख किया हैं जैसे गोदान का होरी घर में आने वाली गाय के बांधने के प्रबंध में साचत हैं।

लेकिन चौमासे में उसके लिए कोई दूसरी जगह ठीक करनी होगी बाहर लोग इनजर लगा देते है। कभी–कभी टोना टोटका कर देते हैकि गाय का दूध ही सूख जाता है।''

इसी प्रकार गाय के टोने टोटके से बचाने के लिए धनिया कहती है –

''सहुआइन की दुकान से थोड़ा सा काला डोरा मंगवा लो, गाय को नजर बहुत लगती है।''

''रंगभूमि में ताहिर अली की सौतेली मां जेनेव बेगम, अहीरन जमुनी को भय बताते हुए कहती है –

''मगर तुझसे कह देती हूं कि तू कल से घर में न बैठने पायेगी। पुलिस की रपठ तो साहब के हाथ में है, पर हमें भी खुदा ने ऐसा इलम दिया है कि जहां एक नक्श लिखाकर दम किया कि जिन्नात अपना काम करने लगे।''

जड़ी बूटियों का प्रयोग

प्राचीन युग में जंगलों से प्राप्त जड़ी बूटियों को बीमारी के निदान हेतु इनका उपयोग होता है। शहरी सुख – सुविधाओं का अभाव होने क कारण चिकित्सा के लिए गांव में जड़ी – बूटियों का प्रयोग होता है। गांव के असभ्य दवाईयों में विश्वास नहीं करते वैसे भी गांव में अस्पताल जैसी सुविधाएं नहीं है। जड़ी – बूटी का प्रयोग ही ज्यादा होता है।

''गोदान में मालती के सिर में दर्द होने पर पहाड़ी युवती द्वारा जड़ी बूटी लाकर देने का प्रयास है –

''वहीं काली युवती हाथ में एक झाड़ लिए हुए समीप आकर मेहता को कही जाने को तैयार देखकर बोली में यह जड़ी खोज लायी अभी घिसकर लगाती हूं।''

इसी प्रकार मिस्टर खन्ना को देहाती, जड़ी – बूटी के बारे में बतलाया है –

''देहाती ने अपना औषधालय खोलकर दिखलाया मामूली चीजें भी जगल से आदमी उखड़कर ले जाते है और शहरों में अन्तारों के हाथ दो वार आने में बेच आते है जैसे मकोय, केमी, सहदेइया, मुकरौधे, धतूरे के बीच मदार के फूल करंजे घुमची आदि। हर एक चीज दिखाता था और रटे हुए शब्दों में उसके गुण की बयान करता जाता था। यह मकोप है सरकार। ताप हो मंदाकिन हो तिल्ली हो, धड़कन हो, शूल हो खासी हो एक ही खुराक से आराम हो जाता है।''

लोकाचार

लोक विविध प्रकार के कार्य करता है। उसके कुछ नियम होते है जिनका पालन करना होता है। प्रत्येक समाज अपने रीति–रिवाज रिवाजों को माने को बाध्य है। समाज से पृथक मनुष्य को कोई आस्तित्व नहीं है, और वह इनके बीच में रहता है, पृथाओं लोकाचारों को सहज ही स्वीकार करता है। इनमें से कुछ तो सामाजिक के संस्कारों के गहराई तक बसे होने के कारण युगों तक निभायी जाती है। और कुछ समय के साथ साथ परिवर्तित होकर नये रुप में सामने आती है। जैसे

पुत्र जन्म पर आंदोत्सव वैसे तो समाज में पुत्र पुत्रियों के जन्म पर उत्सव मनाया जाता है। श्शहर में और गांवों में भी यह प्रथा है, किंतु रुढ़ समाज में सिर्फ पुत्र का जन्म श्शुभ माना जाता था पुत्रियों को हेय दृष्टि से देखा गया है।

कर्मभूमि में अमरकांत जब पत्नि सुखदा की प्रसव वेदना बढ़ जाने के कारण रात में डॉक्टर बुलाकर वापिस आता है तो कुछ दूर हृदय आनंद से फूल उठा।

लाला समरकांत डॉ. से कहते हैं कृपोते ने जन्म लिया है।''

बच्चे के जन्म पर सोहर गाना – पुत्र पुत्रियों के जन्म पर उत्तर भारत में मांगलिक गीत गाये जाते है। सोहर गाने की प्रथा समाज में प्रचलित ह। गोदान में धनिया अनाज की टोकरी घर में रखकर अपनी दोनों लड़कियों के साथ पोते के जन्मोत्सव में गला फाड़कर सोहर गा रही थी जिससे सारा गांव सुन ले। आज यह पहला मौका था कि ऐसे श्शुभ अवसर पर विरादरी की कोई औरत न थी अगर विरादरी को उसकी परवा नहीं है तो वह भी विरादरी की परवा नहीं करती।

बच्चे के जन्म के अन्य के संस्कारों में एक संस्कार है छटी मनाना। सेवासदन में सदन के यहां पुत्र जन्म की सूचना लेकर पदमसिंह जब अपने बड़े भाई के यहां पुत्र जन्म की सूचना लेकर पदमसिंह जब अपने बड़े भाई के यहां जाता ह तो बड़ भााई का कहना है कि छटी तक पहुंच जायेंगे, छटी धूमधाम से मनायेंगे।

शादी में कन्या द्वारा पीली साड़ी पहनना कंगन बाधना

दुल्हन को लाल साड़ी के स्थान पर पीले रंग की साड़ी पहनाई जाती है जिसे कहीं कहीं पियरी भी कहा जाता है। वैवाहिकी रिवाजों को पूर्ण करने में कंगन भी वर एवं कन्या को पहनाया जात है। वरदान में प्रेमचन्द लिखते हैं– विवाह को केवल पांच दिन रह गये नातेदार और संबंधी लोग दूर तथा समीप से आने लगे। आंगन में सुंदर मण्डप छा गया। हाथ में कंगन बांध गये। यह कच्चे धागे का कंगन पवित्र धर्म की हथकड़ी है जो कभी हाथ से न निकलेगी।

मेले

भारत वर्ष में मेले का जैसे सांस्कृतिक महत्व है और ग्रामीण जन समुदाय उसमें जैसी रुचि प्रदर्शित करता है। उसे देखने के लिए कथा साहित्य में उसका प्रतिफलन दृष्टव्य है। इधर नगरों में ग्रामवासियों के आगमन की सुविधाओं और अवसरों में अभिवृद्धि हुई है जिससे मेला रुचि का अवमूल्यन हुआ है। द्वितीय महायुद्ध काल में सुरक्षा दृष्टि से मेलों पर नियंत्रण भी हुआ था। फिर भी प्रयाग गढ़मुक्तेश्वर हरिद्वार और सोनपुर आदि के मेले की जापकीर्ण महा सागरोपय हिल्लोलित विशालता के आलेखन के सामान्तर ग्रामांचलों में समय समय पर आयोजित मेलों और उसके परिप्रेक्ष्य में उमड़ते जीवन का अंकन अपेक्षित था।

प्रेमचंद ने वरदान में मेलों का वर्णन किया है, माघ का महीना था। प्रयाग में कुंभ का मेला लगा हुआ था। बड़े बड़े साधु महात्मा जिनके दर्शन की इच्छा लोंगों को हिमालय की अंधेरी गुफाओं में खीच ले जाती थी उस समय गंगा जी की पवित्र तंरगों से मिलने के लिए आये हुए थे।

लोकगीत

गीत जीवन में आत्मिक उल्लास लाते है। हमारे यहां के संस्कारों में गीत संस्कार प्रमुख है। ग्रामीण जीवन जन जीवन में इनका ज्यादा से ज्यादा महत्व है। होली के समय फाग गायी जाती हैं विवाह के समय गारी का प्रचलन है। कहीं कहीं गांवों में भजन मंडली भी मिल जाती है।

विवाह गीत

विवाह के समय गीतादि का प्रचलन गांवों में है। गांव की महिला मण्डप के नीचे गारी गाती है। वरदान में लोकगीत का उल्लेख प्रेमचंद ने किया है–

''तुम तो श्याम बड़े बेखबर हो।

तुम तो श्याम पियो दूध के कुल्हड़,

मेरी तो पानी पै गुजर, पानी पे गुजर हो तुम तो श्याम।''

ईश्वर गीत / धार्मिक गीत

लोकगीतों के अलावा धार्मिक गीत भी होते है। गांवो में मंदिरों में चौपालों में भजन मंडली अपना गीत प्रारंभ करती है। नवरात्रि में ग्रामीण लोग ज्वारे बोते हैं। और उसमें भक्तों की गीत चलती है। पांडेपुर बस्ती में रंगभूमि सूरदास और उसके साथी बैठकर गीत गाते है। प्रेमचंद लिखते है–

सूरदास की सुरीली तान आकाश मंडप में यो नत्य करती हुई मालूम होती थी जैसे प्रकाश ज्योति जल के अन्तः स्थल में नृत्य रती है।

झीनी झीनी बीनी चंदरिया

काहे के ताना काहे के भरनी, कौन तार से बीनी चंदरिया। दास कबीर जतन में आढ़ी, ज्यौं की त्यौं धर दीनी चंदरिया।

वरदान में बाला जी प्रताप के आने पर लोग स्वागत गीत गाते है–

बालाजी तेरा आना मुबारक होवे।

धनि धनि भाग्य है इस नगरी के धनि धनि भाग्य हमारे।

पर्व

हिंदु समाज में बहुत से पर्व उत्सव है हर समुदाय का व्यक्ति इन्हें स्वीकार करता है। इन पर्वों को मनाने की प्रथा संस्कृति पुरानी से चली आ रही है। इसलिए आज के समाज भी इन पर्वों को मनाते है।

हर समाज में अपने त्यौहार होते है। जैसे ईसाइ में किसमस मुसलमानें मे ईद, मोहर्रम, सिक्खों में लोहड़ी आदि।

प्रेमचंद ने उत्तर भारत के हिंदु समाज के पर्वो का उल्लेख किया है। दीपावली, होली, जन्माष्टमी हमारे यहां के पर्व है।

होली

होली का पर्व किसी रुप में विश्व के लगभग सभी देशों में मनाया जाता है। भारत में होली के अवसर रंगों की धूम तथ्झा मस्ती के वातावरण के बीच होली मनाने की प्रथा है। होली के अवसर पर फाग गायी जाती है। मुंशी जी ने अपने उपन्यासों में इसका चित्रण किया है।

प्रेमाश्रम क लाल प्रभाशंकर धूमधाम से होली मनाया करते थे। उसी प्रथा के कारण सेवासदन की सुमन को यह चिंता हो रही थी कि होली के लिए कपड़ों का कैसे प्रबंध करें? गजाधर को इधर एक महीने से सेठ जी ने जवाब दे दिया था।

गोदान में प्रेमचंद लिखते हैं– ''देहातों में साल के छः महीने किसी न किसी उत्सव में ढोल मजीरा बजता रहता है। होली के एक महीने पहले से एक महीना बाद तक फाग उड़ती है, आषाढ़ लगते ही आल्हा श्शुरु हो जाता है और सावन भादों में कजलिया होती है।

''लेकिन अबकी गोबर में गांव के सारे नवयुवकों को अपने द्वार पर खींच लिया हैं गोबर के हार पर मंत्र छूट रही है, जन के बीड़े लगा रहे है, रंग घोला जा रहा है, फर्श बिछा हुआ है गाना हो रहा है।

गांव के भूखे नंगे लंगोटी में फाग सबै आनंद मनावे रंग उड़ावे और मैं अभागिनी अपनी चारपाई पर सफेद साड़ी पहने पड़ी रहूं। परसों सायंकाल से ही गांव में चहल पहल मचने लगी।

नवयुवकों का एक छल हाय में डस लिये, अश्लील श्शब्द बकते द्वार द्वार फेरी लगने लगे।

ग्रामीण आदिवासी लोग फाग में महुये के श्शराब का नशा भी करते है। एक दूसरे के घर जाकर तिलक लगाकर साथ मैं बेठकर महुए की श्शराब पीकर एक त्यौहार को मनाते है।

जन्माष्टमी

भादों माह में जन्माष्अमी सब जगह मनाई जाती है। गायत्री देवी को गोरखपुर बुलाने का सही समय ज्ञानशंकर की दृष्टि से जन्माष्टमी उत्सव का था। इसका वर्णन करते हुए प्रेमचंद प्रेमाश्रय में लिखते है–

''भादों का महीना था। जन्माष्टमी आ रही थी। शहर में उत्सव मनाने की तैयारी हो रही थी। कई वर्षो से गायत्री के यहां का उत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया जाता दूर दूर से गवैये आते थे रासलीला की मंडलिया बुलायी जाती थी, रइसों और हाकियों को दावत दी जाती थी।

रामलीला

ग्रामीणों के सांस्कृतिक मनोरंजन रामलीला का हिंदी कथा साहित्य में साहित्य में सर्वाधिक 'शैलेष मटियानी के आंचलिक साहित्य में चित्रित होना एक विशेष अर्थ रखता है। मटियानी ने पहाड़ी गांवों का चित्रण किया है। जहां आधुनिकता का बुद्धिवादी प्रसार अपेक्षाकृत बहुत न्यून है। गांव में रामलीला कमेटी है जो उपयुक्त लोगों का चयन करती है। सर्व सहमति से होता है। पंचायत आदि चुनावों का गांव की एकता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

लोक नाटय परंपरा में उत्तर भारत की रामलीला का बड़ा महत्व है। गांवों में रामलीला का बहुत महत्व है। गांवो में रामलीला का बहुत प्रचलन है। गांव के लोग श्रद्धा एवं भक्ति से रामलीला देखते है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों मे नाटय मंडली की चर्चा की है। गोदान में होली में गोबर की चौपाल तथा जैठ के दशहरे पर धनुष यज्ञ भी बड़ी जोरो से तैयारिया हो रही है। कहीं रंगमंच बन रहा था कहीं मंडप कही मेहमानों का अतिथि गृह।

वे अपनी कृतिया में रामलीला का जो उल्लेख किया है संभवत इसके पीछे अपनी बाल स्मृतियों की रामलला रही होगी–

इधर एक मुद्दत से रामलीला देखने नहीं गया। बंदरों के भददे चेहरे लगाये आधी टांगो का पजाम और काले रंग का उंचा कुर्ता पहने आमदियों को दौड़ाते हूं हूं करते देखकर अब हंसी आती है लेकिन एक जमाना वह था जब मझे भी रामलीला में आनंद आता था।

लोकनृत्य

नृत्य हमारे समाज का एक संस्कार हैं। मनोरंजन के लिए जहां श्शहरों में अन्य साधन है। वहां गांवों में नृत्य आदि के माध्यम से अपना मनोरंजन ग्रामों के निवासी करते है। भारत के प्रायः सभी गांवों म नृत्य का अपना अलग अलग प्रचलन है। हर जाति की अपनी निजी विशेषतया है, नृत्य का अलग ढंग है। करमा नृत्य, शैला नृत्य, होली नृत्य, वर्षा नृत्य।

लोकगीतों के माध्यम से लोक नृत्य प्रचलित होता है। कर्मभूमि में गंगा के किनारे गांव में अमरकांत है तो वहां वह दखता हैं।

युवको और युवतियों के जोड़े बंधे हुए है। हरेक जोड़ दस पंद्रह मिनट तक थिरककर चला जाता है। नाचने में कितना उन्माद कितना आनंद है अमर ने न समझा था। एक युवती घूंघट बढ़ाये हुए रंगभूमि में आती हैं। युवती के अंगों में इतनी लचक है, उसक अंग विलास में भावों की ऐसी व्यंजना है कि लोग मुग्ध हुए जाते है। इस जोड़ के बाद दूसरा जोड़ आता है। दोनों कभी हाथ में हाथ मिलाकर कभी कमर पर हाथ रखकर कभी कूल्हों को तान से मटकाकर नाचने में उन्मुक्त हो रहे है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. श्रीलाल शुक्ल – सुरक्षा तथा अन्य कहानियों – प्रकाशन समाचार दिल्ली – 1992
2. महेश दर्पण – बीसवीं शताब्दी की हिन्दी कहानियों (ग्यारह–बारह)
3. मालती जोशी – बोल री कठपुतली – किताब घर, दिल्ली – 1992

4. पिया पीर न जानी – परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली 2001
5. मोरी रंग दे चुनारियां – विकास पेपर बैक्स, दिल्ली – 1992
6. उदय प्रकाश – तिरछी तथा अन्य कहानियां – वाणी प्रकाशन, दिल्ली – 1989
7. पार गोमरा का स्कूटर – राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1997
8. अब्दुल बिसमिल्ला–अतिथि देवा भव – राजकमल प्रकाशन, दिल्ली – 1989
9. पंकज विष्ट – बच्चे गवाह नहीं हो सकते – राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1986
10. काशीनाथ सिंह – सदी का सबसे बड़ा आदमी – राजकमल प्रकाशन, दिल्ली – 1989

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

Tara and Lata: The Two Passionate Protagonists in Passion: A Driving Force in Dramatic Characters *Brajangana Kavya and Do the Needful*

Payal Mukherjee, English, R.D.V.V. Jabalpur

Abstract : Passion, the unique decider of multiple courses of events in human history has been shared by man and woman alike and consequently has been reflected in literature in various colours. This unique chemistry of human mind has been regarded as a genuine factor operating in a large scale in manipulation of sequence of events as well as in being instrumental in fixing climaxes and anti-climaxes. How and where did these passions originate from and how does it perform in creating great turbulence in human relationship is still a matter to be solved. The study needs a deep psychological enquiry into the eternal human mind and contemporary social structure to come up with satisfactory answer.

It is true that human life is short and youth is shorter. It happens sometimes that last gets the better of human knowledge and reason and attempts to cross the boundary of social bondage. It happens in all ages and all times. If we analyze two female minds-products of thoroughly different set and settings – we will find that passion is something that makes existence really deplorable for a sophisticated mind in bondage and prepares the doom for the person. Let us take examples from Michael Madhusudan Dutt's *Brajangana Kavya* and Mahesh Dattani's *Do the Needful*.

Michael reconstructed an epical character from *Mahabharata* and made Tara's appearance as bold, fearless yet mild and submissive and thereby fusing it with an undercurrent of oncoming culture of women emancipation. During the renaissance in Bengal in last part of the ninetieth century and first part of the twentieth century, Dutt appeared with an in-genuine talent and undeniable literal spirit. Especially in the world of drama, he went on creating female characters in such a massive scale and with such a classic spell that seemed to stupefy the orthodox Bengali society and shook the roots of conservatism. Such a brilliant fusion of tradition and modernity can hardly be seen in any contemporary writer of that genre. Michael pursued an epical route that worked towards paving a way for liberated women of next century. His selection of language was inevitably classical to match with the esteemed character of the celebrated epic. But the spirit was absolutely new, presentation was unique and the unbridled current of mind was deciphered with a startling perfection.

On the other hand, Dattani's treatment of Lata's character in *Do the Needful,* enjoys a free flow of modern language, wit and humour following a decisive mind of today's woman. Dattani's background is notably modern and he is a product of enlightened upper middle class of post independent India. Mahesh perceives the trends in this society and attempts to find out as well as to expose the necessity to know the reasons and the factors responsible for these trends. His perception is clear, his persuasion is easy and systematic and his treatment is logical and convincing. If we discuss the female characters of Lata and Tara as they appear respectively in *Do the Needful* and *Brajangana kavya*-we may happen to see the far sight of the dramatists and appreciate the dramatic value of these characters as a matter of study and passion.

Dutt's protagonist Tara, wife of Guru Augustya falls in love with Chandradeva (The Moon God) and sends him an emotional confession with a suggestion to meet in a stipulated place and openly fixes a meeting with him to satisfy her passionate love .This is rarely seen in any other esteemed character of her time. The unprecedented physical appeal of this God casts a magical spell upon her and her love increases by leaps and bounds. She deciphers

these emotional outbursts in her remarks where she crosses all her boundaries and leaves the explanation of the hitherto unthought-of emotion. She unfolds the secrets of the unexpected boons that Chandra enjoyed during his probationary period in his Guru's ashram. These she explained to be her offerings to her beloved. She states that her mind is ready to make up the gap between them any time he wants to do the same. Practically, it is a taboo that she dares to break. The wife of guru is regarded as a Mother. This great deviation from social and religious hierarchy is of course a great instance of boundless love that we witness in case of Troy and Helen and Antony and Cleopatra. Tara acknowledges that she may be subjected to severe punishment as she holds her action totally against all ritual sanctions. She even expresses her deep scorn for Chandra's dearest wife Rohini. Tara's offer exhibits the overthrow of all limits over a woman's mind as well as the victory of female aggressiveness to satisfy her passion even at the cost of committing a sacrilege.

Lata, on the other hand, steps in as an enlightened woman of modern age. Although born in a traditional Hindu Gowda family, she entertains no such attachments to the traditional racial values. A total nonconformist, she seems to be genuine individual who has decided to follow her own suit. Lata is given to a relationship with a Muslim boy and this is branded as cardinal pleasure by her parents. Lata is not a rebel. She is stuck with her parents while at the same time not at all ready to call off her affair. She does not consider it to be a clandestine one and seeks a compromise between the parent's demands and her own zeal. She grabs it the moment she catches her would be husband with the gardener boy in a gay relationship. Lata makes maximum use of the event and continues with her reckless life after her marriage with a person of same mentality who finds enough reason to satisfy the voluptuousness of both.

How did the characters crack the targets is not the matter to discuss here. The focus here is on the playwright's treatment of the energy, attitude and unblinking persuasion of a definite goal in the lady. She does not suffer from any guilt. She is determined in her thoughts and knew what she wanted. But with a calm and calculative planning she stepped in her future step.

Of course Dutt was times ahead of his contemporaries. He does not enjoy the post - Indian liberal mood of higher middleclass Indian society in Metros. Although these people are modern in their outer dealings, but they are rigid when their fundamental social relationships are concerned. Dutt has to share a society where the existence of social hypocrisy is not less, but the avenues are decidedly different. And again Dutt draws the line from past to present and suffers from an obvious limitation where as Dattani has the full fledge liberty to draw the events and enjoys the freedom of escaping the factor of impracticability. Dutt has to work within the challenges of time, place and action. His framework is totally imaginative with only bare outlines as indicators. He has to present a character keeping the ethical values and guilt feelings intact, yet steering the characters towards the ultimate righteousness to choose their own way.

Both of them characters, Lata and Tara, are determined in nature. They execute their last ferociously ignoring the bondages of the society. With unflinching straight forwardness, they express their relentless perusal of love. Lata is delighted that the shift to Mumbai will offer her promiscuity a new lease of life. Likewise Tara is thrilled at the prospect of her meeting with Chandradev. Both do not consider anything in the realization of their purpose.

Again, both of the dramatists keep a dethatched outlook so far as the approval and disapproval of their character's moral status. They are noticeably silent on the possible repercussion of their decisions. Where Dattani armours his character with wit, humour and glamourous cunningness, Dutt adorns his heroine with outright innocence, honesty and purely sensuous appeal .Both Lata and Tara suffer from passionate love and both of them are far from regrets of their actions. Another similarity between these two

characters is their enlightened background. As Lata's background is English education, Tara comes from a hermitage. Lata's connection with her lover is a scandalous affair for her parents and Tara's position is all the more critical as it calls for a name of sacrilege as she is cast in the role of a mother for her husband's students. Both of them command a clear knowledge of their blasphemy and approach their target with an incisive sharpness.

The only difference between the two lies in their own assessment of their mindset. Lata has no guilt feelings and feels confident enough to throw away the inhibitions in order to get maximum lenience in her quest. On the other hand, Tara's stand is more difficult. Born, brought up and married amidst a typical vedic framework, it is impossible for her to give her own actions a clean chit. She accepts her guilt but calls it an inevitable turn of events for which she ultimately charges her fate. If we look at the accountability of a dramatist to the society, especially in the context of classic dramas, with a revolutionary hue, then we have to admit that these two characters have made a sincere attempt to raise the claims of women to attain their success in the field of romance. If polygamy or marriages with more than one woman has been allowed in case of male members then why and how does this kind of restriction holds good for women in a civilized society, be it Vedic or be it modern? In the final analysis, Tara's love is more painful, incomplete and torturous then that of Lata. Tara shows that the man- made laws has never allowed freedom to a women and her true passion. The abnormal relationship with an aged and indifferent husband committed to the pursuit of knowledge is enough excuse for an attractive young woman to fall in love with an extremely handsome young man and provide enough explanation to ignore a social taboo that considers a relationship with master's wife celibacy.

Brijangana is a dramatic monologue. It is an expression of a woman in the form of a letter to her beloved. But, it satisfies all the demands of a drama and the address is quite dramatic with all emotions entangled together. This is not a full drama like *Do the Needful*, where we can draw a conclusion from development of events and from comments made by other characters. Reading these two heroines reveals how much a writer can enjoy liberty at the time of choosing his medium of creation. Attitude of a dramatist has always been supported by emotions and truthfulness while sharing extremely different background, both for the creator and the created, a singularly striking similarity can be found in these two legendary dramatists in so far as they have treated these characters with a sublime ethical support while retaining a wise silence on their individual involvement.

Women, a basically subaltern section of total human race, have occasionally crossed the no man's land and have reached the area where they can be considered as equal to men. This needs courage and honesty and paradoxically enough, society has misinterpreted this genuine driving force of passion in case of women and has sympathetically treated those of men's by calling them tragical blunder.

This analysis focuses to show that keeping a so called morality apart, these two dramatist have gone to the extreme to uphold the banner of freedom of woman leaving the concept of gender as an unnecessary one in deciding the claim of woman over passionate love as much as it is enjoyed by man.

As a race we are progressing every moment, scientifically, commercially and technically. But, there is a greater and more important area to be looked after and that is our social structure. To acknowledge the basic human needs and to manipulate them in order to stop a great turbulence in society and secure maximum social balance for general good and thereby curving the possibility of crimes and disasters arising out of them is a great challenge in front of literature. Here again, a same action cannot be treated differently for man and woman. Whereas Tara suffers from a sense of guilt, Lata is free from it. But, the central matter is the same that is extra marital affairs. This suggests that according to the

changes in the social environment, women have adopted different emotional appeals to strive for victory and to avoid self pity. Sadness, discomfort, hesitation do not stop them. On the other hand, thrill, adventure and freedom do not make them forget their social limitations.

It is for the others to decide whether the claims to passion should be the same for man and woman both and whether society should remodel the traditional outlook in this area to keep pace with ever increasing modernism. Hypocrisy and comical situations can be avoided and level of honesty and acceptance can be raised.

Works Cited :

Dattani, Mahesh. *Collected Plays*. New Delhi: Penguin Books, 2000. Print
Dutt, Michael Madhusudan. Madhusudan Rahnavali. Kolkata: Sahistyam, 2005. Print

Multani, Angelie. *Mahesh Dattani's Plays: Critical Perspectives*. Delhi: Pencraft International, 2007. Print.

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

स्वर प्रकृति के कण–कण में विद्यमान

Mradula Chourasiya, Research Scholar RDVV Jabalpur (M.P)

शब्द के झोने आवरण से आनन्द का जो मधुर कोश नाद रूप में प्रकाशित है, वहीं से संगीत के स्वरों का विकास माना गया है। प्रकृति में भोर होते ही पक्षियों का कलरव, वायु की सनसनाहट, झरने की कलकल ध्वनि सभी में सांगीतिक स्वरों का आभास होता है। समाज में निर्बोध शिश् की हँसी तथा रूदन से लेकर रणभूमि में युद्ध कर रहे वीरों तक में सांगीतिक स्वरों के प्रभाव को महसूस किया जा सकता है। यह सभी आनन्द युक्त नाद की विभिन्न अभिव्यक्तियां हैं, जो कि प्राचीन काल से आज तक स्वर तथा ताल में निबद्ध होकर संगीत के विभिन्न रूप में हमें झकृत कर रही है।

मनुष्य ने कीट, पतंगों, तथा पशु–पक्षियों को भावाव्यक्ति के लिये विभिन्न ध्वनियों का प्रयोग करते देखा, और यही से उसने प्रकृति से प्रेरणा प्राप्त कर अपने मनोभाव व्यक्त करने के लिये ध्वनि का प्रयोग किया। मानव ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो बुद्धिकौशल से अपने स्वर यंत्र के प्रयोग द्वारा एक नहीं वरन् कई तरह की ध्वनियां उत्पन्न करने में सफल हो पाया।

नाद :– विकास तथा परिवर्तन के विभिन्न काल खण्डों से प्रभावित होकर मनुष्य ने इन्हीं ध्वनियों को 'नाद' नामक संज्ञा प्रदान की। यही नाद संगीत का मूल उपकण है। भारतोय ग्रंथों में नाद की व्याख्या अनेक रूपों में की गई है। नद् धातु से उत्पन्न शब्द 'नाद' का अर्थ अव्यक्त ध्वनि है। नाद, परमब्रह्म की प्राप्ति का साधन माना गया। योगिशिखोपनिषद् में कहा गया है। नाद् से बड़ी कोई पूजा नहीं है।[1]

नास्ति नादात्परो मंन्त्रो न देव स्वात्मनः परः।

नानुसन्धे परा पूजा, नहि तृपते परं सुखम।।[2]

यह संगीत में प्रयुक्त होने वाली ध्वनि है जो कि कोलाहल से पृथक है। यही आहत नाद स्वरों का रूप लेकर संगीतोपयोगी सिद्ध होती है।

श्रुति :– संगीतज्ञों द्वारा ध्वनी की विशालतम इकाई नाद में से कुछ सीमित कर्णप्रिय ध्वनियों को पृथक–पृथक अनुभव किया गया। और इन्हें श्रुति संज्ञा से सम्बोधित किया। "श्रूयते इति श्रुति" अर्थात् कानों से सुनि जा सकने वाली सूक्ष्म ध्वनि। वे ध्वनियां जो परस्पर पृथक–पृथक पहचानी जा सके। तथा स्पष्ट एवं स्थिर हों श्रुति कहलाती है। श्रुति के विषय में प्राचीन ग्रंथों में वर्णित हैं :–

निव्य गीतोपयोगित्वमाभिज्ञोय त्वमप्युत।

लइवे प्रोक्तं सुर्प्याप्तं संगीत–श्रुति–लक्षणम।।[3]

अर्थात् वह ध्वनि, जो गीत में प्रयोग की जा सके और एक दूसरे से अलग एवं स्पष्ट पहचानी जा सके, उसे श्रुति कहते हैं। श्रुतियां असंख्य है परन्तु संगीत में केवल 22 श्रुतियां ही मान्य हैं। सर्वप्रथम आचार्य भरत ने सारणा चतुष्ठयी विधि द्वारा 22 श्रुतियों को पृथक–पृथक रूप में समझा तथा अपने ग्रंथ नाट्यशास्त्र में वर्णित किया। यही श्रुतियां सामुहिक रूप मं विभिन्न स्वरों का निर्माण करती हैं।

स्वर :– 'स्वर' शब्द को तीन स्थानों पर अलग–अलग अर्थों में समझा गया है यथा –

(प) व्याकरण के विषय में 'स्वर' वह वर्ण है जो कि बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता लिए ही उच्चारण हो सके जैसे – अ, आ, इ, ई, आदि।

(पप) प्राचोन कालीन उदात्तादि के रूप में स्वर का आशय पदो ंके अर्थ से है।

(पपप) संगीत में स्वर वह नाद अर्थात् ध्वनि है जो स्वयं विराजमान है तथा समस्त प्रकृति, समाज, विश्व को अपनी रसात्मकता से प्रभावित कर रही है। कहा भी गया है –

"स्वतः रंजयति इति स्वरः।"[4]

[1] भारतीय संगीत का इतिहास, डॉ. ठाकुर जयदेव सिंह
[2] भारतीय संगीत का इतिहास, रामावतार वीर
[3] संगीत एवं मनोविज्ञान, डॉ. किरण तिवारी, कनिश्क पब्लिके ान्स, 2008, पृश्ठ सं. 46

अतः जो स्वयं प्रकाशमान होकर रंजकता उत्पन्न करे वह स्वर है।

राघव आर मेनन के अनुसार :– "'स्वर' स्वयं तथा 'र' से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है स्वयं को प्रस्तुत करना।"

सिंह भूपाल के अनुसार :– "प्रथम आघात से सूक्ष्म ध्वनि आकाश में उत्पन्न हो, वह श्रुति, और वही नाद जब पूर्ण दशा को प्राप्त होकर स्थिर हो जाए तब स्वर हो जाती है।"

(अ) स्वरों का विकास :– जिन स्वरों को आज हम संगीत के अंतर्गत श्रवण करते हैं, वे उन स्वरों से भिन्न हैं जो कि आरंभिक संगीत में प्रयोग किये जाते थे। आरंभ में मानव अपने हृदयावेगों का प्रदर्शन शारीरिक अंगों के संकेत से किया करता था। धीरे–धीरे वह विचारों का आदान–प्रदान अपने मुख की विशेष ध्वनियों के माध्यम से करने लगा। विचारों को व्यक्त करने की प्रारंभिक ध्वनियां आ ..... ई ..... ओ ..... आदि थी। इसके पश्चात् यही मूल ध्वनियां स्वरों में परिवर्तित कर ली गई। अनेक ऋषियों, विद्वानों तथा संगीत साधकों के अथक प्रयासों से हमें संगीत के स्वर प्राप्त हुए। भिन्न–भिन्न कालों में अनेकानेक महान विद्वानों ने स्वरों की उत्पत्ति तथा विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सांगीतिक स्वर रचनाओं क विकास को हमने इस अध्याय में मुख्यतः चार काल खण्डों में विभक्त किया है।

(1) वैदिक स्वर – संगीत का प्राचीन काल मुख्यतः वैदिक युग से माना जाता है। वेद मंत्रों का उच्चारण करने के लिए ऋषि–मुनियों ने श्रुति तथा स्वरों की ध्वनियों का उच्चारण किया। प्रारंभ में उन्होंने संगीत प्रदर्शन के लिए एक स्वर का निर्माण किया, ऐसा हमें अनेक वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन द्वारा पता चलता है। इस एक स्वर का नाम तान स्वर रखा। तान स्वर दो भागों में विभाजित किया गया। (अ) तान (ब) प्रवचन।

(अ) तान :– तान स्वर का अर्थ होता है ध्वनि की आलापकारी या ध्वनि को फैलाना तथा बढ़ाना। प्राचीन ऋषियों ने आलापकारी का अभ्यास प्राणायाम के समय किया जब कि वे प्राण वायु को अन्दर लेते, यथाशकित रोकते और फिर बाहर फेंकते थे। श्वास लेते और निकालते समय ऋषि लोग इच्छा तथा स्वभावनुरूप ओ ..... उ ..... म् का उच्चारण करते थे। इसी का नाम ओंकार अथवा तान् स्वर है। ओउम् सर्वव्यापक तथा सर्वशक्तिमान परमेश्वर का प्रतीक माना गया। इसलिये वे अपने प्रवचन अथवा वेद अंगों का उच्चारण ईश्वर स्तुति और उससे आर्शीवाद प्राप्त करने के लिए करते थे।

(ब) प्रवचन :– प्रवचन स्वर, तान स्वर से भिन्न होते थे। प्रवचन स्वरों में शब्दों का उच्चारण नियमित ढंग से होता था एवं इसमें तीन श्रुतियां प्रयोग की जाती थी जबकि तान स्वर में ध्वनि का अधिक उतार चढ़ाव नहीं किया जाता था।

दो स्वर :– एक स्वर का गायन लम्बे तक किया जाता रहा। ज्ञान तथा बुद्धि के विकास और नये प्रयोगों के परिणाम से प्राचीन ऋषियों ने और प्रभावशाली प्रदर्शन के लिए दो स्वरों का प्रयोग आरंभ किया। इनको उदात्त तथा अनुदात्त के नाम से सम्बोधित किया गया। पहला स्वर ऊँची ध्वनि में और दूसरा स्वर नीची ध्वनि में गाया जाता था।

इन दो स्वरों का काफी लम्बे समय तक प्रचार हुआ परन्तु अनुभवी विद्वानों को उदात्त और अनुदात्त के मध्य अंतर जानने में कठिनाई मालूम पड़ी और दोनों के मध्य अंतर स्पष्ट करना उचित समझा। ऐसा करने के लिए उन्होंने तार सप्तक स्वर (नचचमत वबजपअम दवजम) अर्थात् उदात्त, मंद्र सप्तक स्वर (सवूमत वबजपअम दवजम) अर्थात् अनुदात्त के बीच मध्य सप्तक स्वर (उमकपनउ वबजपअम दवजम) को जोड़ दिया जिसका नाम स्वरित रखा गया।

इस प्रकार वैदिक काल में मुख्य रूप से तीन स्वरों का प्रयोग सर्वप्रथम किया गया। जो कि उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित हुए।

संगीत में विकास तथा प्रयोगों के फलस्वरूप इस काल में सात स्वरों का प्रयोग होने लगा। जिन्हें कृष्ठ, प्रथमा, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र और अतिस्वर कहा जाता था। परन्तु इसका क्रम संदिग्ध है। इस का अथर्ववेदीय माण्डूकीय शिक्षा ही एक मात्र ऐसा वैदिक साहित्य है, जिसमे सर्वप्रथम सर्वजनविदित सप्त स्वरों पर ही सामगान गाये जाने का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

[4] भारतीय संगीत का इतिहास, डॉ. ठाकुर जयदेव सिंह

जैसा कि ग्रंथों द्वारा ज्ञात होता है कि वैदिक गान पहले चार स्वरों तक ही सीमित था। परन्तु सामगान के उत्तरकाल में सात स्वरों का प्रयोग होने लगा उन स्वरों की सामवेदीय संज्ञा निम्नानुसार दी गई।

क्रुष्ट	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	मन्द्र	अतिस्वर
मं	गं	रें	सां	नि	ध	प

विद्वानों का मत है कि सामवेद के स्वरों को ही भरत और शारंग देव ने भी अपने षडज ग्राम के शुद्ध स्वर माने हैं। आज भी सामवेद प्राचीन पद्धति से ही अर्थात् भरत के स्वरों से ही गाया जाता है। भरत और उनके बाद के शास्त्रकार शारंगदेव ने सामवेद के स्वरों को ही शद्ध स्वर माना है।

(2) प्राचीन स्वर – संगीत के क्षेत्र में प्राचीन काल आचार्य भरत के समय से माना जाता है। उनके द्वारा लिखित नाट्य शास्त्र ग्रंथ संगीत के लिए महत्वपूर्ण ग्रंथ है। नाट्यशास्त्र के अट्ठाइसवें अध्याय में गान्धर्व संग्रह का संक्षिप्त निर्देश करने के बाद सात स्वरो की गणना प्रस्तुत की है। नाट्य शास्त्र कालीन सप्त स्वरों के नाम निम्नानुसार है :–

षडजश्च, ऋषभश्चैव, गान्धारो, मध्यमस्तथा।

पंचमों धैवतश्णैव निषादः सप्त च स्वरः।।[5]

अर्थात् षडज्, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, तथा निषाद यह सात स्वर हैं।

भरत काल में स्वरों के साथ ही ग्राम संज्ञा प्राप्त होती है। ग्राम का अर्थ स्वरों के समूह से है। जिसमें स्वर निश्चित श्रुतियों के अनुसार विशेष अंतराल पर स्थापित रहते है। इस काल में षडज तथा मध्यम दो ग्रामों के अंतर्गत स्वरों का उल्लेख मिलता है। तृतीय ग्राम जो कि गंधार ग्राम है। उसके स्वर्गस्थ होने का उल्लेख किया गया है। संभव है कि नाट्यशास्त्र की रचनाकाल तक इस ग्राम का लोप हो गया हो। यहाँ पर षडज् ग्राम तथा मध्यम ग्राम की श्रुतियों का विभाजन क्रम दिया जा रहा है –

षड्ज ग्राम	मध्यम ग्राम
षड्ज – चतुःश्रुतिक	मध्यम – चतुःश्रुतिक
ऋषभ – त्रिश्रुतिक	पंचम – त्रिश्रुतिक
गांधार – द्विश्रुतिक	धैवत – चतुःश्रुतिक
मध्यम – चतुःश्रुतिक	निषाद – द्विश्रुतिक
पंचम – चतुःश्रुतिक	षड्ज् – चतुःश्रुतिक
धैवत – त्रिःश्रुतिक	ऋषभ – त्रिश्रुतिक
निषाद – द्विःश्रुतिक	गांधार – द्विश्रुतिक

इस प्रकार भरत के नाट्यशास्त्र अनुसार श्रुति दर्शन विधान के अन्तर्गत यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि षड्ज तथा मध्यम दोनों ग्रामों में केवल बाईस श्रुतियाँ हैं तथा इन 22 श्रुतियों में सात शुद्ध स्वर स्थापित हैं।

भरत संगीत के आदि आचार्य माने जाते हैं। परन्तु संगीत में नारद का विशिष्ट स्थान है। वह गायन तथा वादन दानों ही विधाओं में पारंगत थे। इस काल में नारद के नाम से तीन ग्रंथ प्रचलित है।[6]

(प) नारदीय शिक्षा

(पप) संगीत मकरंद

(पपप) पंचम सार संहिता

इनमें से सबसे अधिक प्राचीन ग्रंथ नारदीय शिक्षा है। नारदीय शिक्षा ग्रंथ सामवेद से संबंधित है। इसमें वैदिक संगीत का विस्तृत वर्णन है। इसके अनुसार सामवेद का केवल सस्वर पाठ ही नहीं अपितु गान भी होता था। नारद ने स्वरोच्चार के तीन मुख्य स्थान माने हैं – प्रातः समय में वक्ष स्थान अर्थात् मंद्र के स्वर, मध्यान्ह में कण्ठ स्थान अर्थात् मध्यम स्वर और सायंकाल

[5] प्राचीन भारत में संगीत (वैदिक काल से गुप्त काल तक), डॉ. धर्मावती श्रीवास्तव

[6] प्राचीन एवं मध्यकाल के भाास्त्रकारों का संगीत में योगदान, भोध प्रबंध, श्रीमति सिम्मी वर्मा, इलाहाबाद वि वविद्यालय, 2001, पृश्ठ 70

में शिरस्थान अर्थात् तार स्वरों का गान करना चाहिए।

इसी काल में मतंग तथा जयदेव भी ऐसे श्रेष्ठ शास्त्रकार संगीतज्ञ हुए जिनका संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मतंग का काल हर्षवर्धन युग कहलाता है। मतंग के अनुसार सप्तस्वर, मूर्च्छनाऐं द्वादश मूर्च्छनाऐं कहलायी। मूर्च्छनाओं का निर्देश तीनों स्थानों की प्राप्ति तथा मंद्र, तार की सिद्धि के लिए है। मतंग ने देशी रागों को ग्रामों में वर्गीकृत किया है।

इस काल के उत्तरार्द्ध में पं. शारंगदेव महान संगीतज्ञ शास्त्रकार हुए। आपके द्वारा लिखे ग्रंथ 'संगीत रत्नाकर' की रचना 13वीं शताब्दी में हुई।

आपने स्वरों के चार प्रकार बताए, अर्थात वादी, संवादी, विवादी और अनुवादी। स्वर के यह प्रकार वर्तमान में भी मान्य है। संगीत रत्नाकर ग्रंथ में स्वर, राग, श्रुति, ग्राम, मूर्च्छना आदि सांगीतिक सामग्री का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। इसमें 264 रागों का वर्णन है। मूर्च्छनाओं की स्थापना, विकृत स्वरों की कल्पना, मध्यम ग्राम का लोप आदि बातें इस ग्रंथ की मौलिकता का प्रमाण है।

उपरोक्त प्राचीन काल के शास्त्रकारों संगीतकारों के मतानुसार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इस काल में 22 श्रुतियाँ तथा सप्त शुद्ध स्वर एवं पांच विकृत स्वर, कुल मिलाकर बारह स्वरों का प्रयोग भारतीय संगीत में किया जाने लगा था।

(3) मध्यकालीन स्वर – प्राचीन काल के संगीत शास्त्रों का अनुसरण करते हुए, मध्यकाल के शास्त्रकारों ने सांगीतिक क्षेत्र में योगदान प्रदान किया। इनमें मुख्यतः लोचन, भावभट्ट, रामामात्य, दामोदर मिश्र, पं. सोमनाथ, हृदय नारायण देव, पं. व्यंकटमुखी, श्रीनिवास आदि हुऐ।

इन समस्त ग्रंथों में श्रुति, ग्राम मूर्च्छना, स्वर स्थापना प्रकरण, राग वर्गीकरण, थाठ प्रकरण आदि महत्वपूर्ण तत्व उल्लेखित हैं। यहाँ पर इन सभी ग्रंथों में उपलब्ध सांगीतिक सामग्रियों को संक्षिप्त रूप में स्पष्ट किया जा रहा हैं –

1. लोचन पंडित – लोचन पंडित कृत राग तरंगिणी में लोचन ने गीत के निबद्ध और अनिबद्ध गान के साथ ही सात स्वरों में श्रुति विभाजन चतुश्चतुश्चतुश्चैव षड्ज मध्यम पंचमः के ही आधार पर वर्णित किया है, तथा स्वर भी अंतिम श्रुति पर दर्षाया है। बारह थाठ तथा 75 रागों का भी वर्णन प्राप्त होता है।

2. भावभट्ट – भावभट्ट कृत अनूप संगीत विलास में सभी अध्याय शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर के अनुरूप है। संगीत रत्नाकर में वर्णित संगीत सिद्धांतों का अनुसरण भावभट्ट द्वारा किया गया है। श्रुति विभाजन गात्रज और यंत्रज दोनों भागों में किया है। साथ ही नाद की उत्पत्ति, बाईस श्रुतियां तथा उसमें स्थापना, ग्राम, मूर्च्छना,श्रुति, वर्ण आदि की परिभाषायें संगीत रत्नाकर और संगीत परिजात के आधार पर ही उद्धृत है।

3. रामामात्य – रामामात्य कृत ग्रंथ स्वरमेल कलानिधि में संगीत के अंतर्गत चौदह स्वरों को माना है। जिसमें सात शुद्ध तथा सात विकृत स्वर माने है। यह चौदह स्वर इस प्रकार है –

(1) शुद्ध षड्ज (2) शुद्ध ऋषभ (3) शुद्ध गांधार या पंचश्रुति ऋषभ (4) साधारण गांधार या षट्श्रुति ऋषभ (5) अंतर गांधार (6) च्युत मध्यम गांधार (7) शुद्ध मध्यम (8) च्युत पंचम मध्यम (9) शुद्ध पंचम (10) शुद्ध धैवत (11) शुद्ध निषाद या पंचश्रुति धैवत (12) कौशिक निषाद या षट्श्रुति धैवत (13) काकली निषाद् (14) च्युत षडज् निषाद।

स्वरों के पश्चात इस ग्रंथ में बीस थाठों का उल्लेख प्राप्त होता है तथा इन थाठों में 63 रागों का वर्गीकरण किया है।

(4) पंडित दामोदर मिश्र – पंडित दामोदर मिश्र द्वारा रचित गंथ संगीत दर्पण में उन्होंने संगीत को गीत, वाद्य तथा नृत्य इन तीनों विधाओं के समुदायवाचक के रूप में प्रस्तुत किया है। श्रुति 22 ही मानी है और इन्हीं पर सप्त स्वरों की स्थापना की है। अर्थात् शुद्ध एवं विकृत मिलाकर बारह स्वर ही मान्य किए गए।

वैदिक, प्राचोन एवं मध्यकालीन संगीताचार्यों का अनुसरण करते हुए आधुनिक काल के संगीतज्ञ एवं शास्त्रकार हुए हैं। इस काल

में मुख्य रूप से पंडित भातखण्डे, पंडित ओंकारनाथ ठाकुर, पंडित पलुस्कर, आचार्य कैलाशचंद देव बृहस्पति, पंडित लालमणि मिश्र आदि संगीतज्ञ शास्त्रकार हुए हैं। इन सभी महान शास्त्रकारों में पंडित भातखण्डे जी को आधुनिक काल के संगीत जगत का आधाराचार्य माना जाता है। वर्तमान में उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के मूलभूत नियमों का प्रतिपादन, अनुसरण पंडित भातखण्डे जी के ही सांगीतिक नियमों को ध्यान रखते हुए किया जाता है।

हम यहां पर पंडित भातखण्डे जी द्वारा प्रतिस्थापित सांगीतिक स्वर रचनाओं का अध्ययन करेंगे।

इस काल की गणना अठारहवीं शताब्दी से लेकर आज तक की जाती है। इस काल के संगीत सत्र के प्रकांड विद्वान होने का श्रेय पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे जी को जाता है। पंडित भातखण्डे जी ने भी 22 श्रुतियों को ही वैज्ञानिक माना। प्राचीनकाल श्रुति स्वर व्यवस्था में न्यूनतम परिवर्तन पंडित भातखण्डे जी का संगीत जगत को अमूल्य योगदान है। प्राचीन से लेकर आधुनिक काल के मध्य प्रमुख परिवर्तन यह है कि इससे पहले संगीताचार्य स्वरों की स्थापना उनकी अंतिम श्रुति पर मानते थे, परन्तु पं. भातखण्डे जी ने स्वरों की स्थापना उनकी प्रथम श्रुति पर की। इस प्रकार स्वरों के स्थान तथा सप्तक में किंचित परिवर्तन दृष्ट्व्य हुआ जो निम्नानुसार है –

आधुनिक कालीन स्वर स्थापना

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22

सा रे ग म म ध नी

प्राचीन तथा मध्यकालीन स्वर स्थापना निम्न प्रकार थी।

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22

सा रे ग म प घ नी

पं. भातखंडे जी द्वारा किए उपरोक्त परिवर्तन के कारण गंधार और निषाद शुद्ध हो गये। परन्तु यह परिवर्तन उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में ही मान्य हुआ। दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति में इस पद्धति का अनुसरण न कर पं. शारंगदेव की ही परंपरा का निर्वहन किया जा रहा है।

पं. ओंकारनाथ ठाकुर ने भी बाइस श्रुतियाँ तथा उसमें स्वरों की व्यवस्था को माना। आपके ग्रंथ प्रणव भारती में लिखा है कि सर्वप्रथम बाईस श्रुतियों में यथास्थान अपने सात शुद्ध और पांच विकृत स्वरों को स्थापित कर लिया जाए। इसके पश्चात् प्रत्येक स्वर को जो नाद है, उससे नीचे और ऊपर एक–एक प्रमाण श्रुति रखे जिसका गणतीय मान 81/80 है। बाईस श्रुतियां सम प्रमाण नहीं है।

इसलिए प्रत्येक स्वर के दोनों ओर प्रमाण श्रुति लगने से मूल बाईस श्रुतियों से भिन्न अन्य ध्वन्यान्तर भी प्राप्त होते हैं। पं. ओंकारनाथ जी द्वारा किया गया यह शोध कार्य संगीत जगत के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ। इसी सिद्धांत को दृष्टिगत रखते हुए आपने श्रुति अन्तर तीन प्रकार के माने हैं। (1) लीमा अंतर (2) लघु अंतर और (3) कोमा अंतर।

इसी तरह आचार्य कैलाशचन्द्र देव बृहस्पती ने भी 22 श्रुतियों को स्वीकार किया है। तथा सात शुद्ध एवं पाँच विकृत स्वरों की स्थापना की।

आधुनिक काल के संगीतज्ञों द्वारा श्रुतियों का विश्लेषण वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर किया है। इसी समय के डॉ. लालमणि मिश्र ने भी 22 श्रुतियों की स्थापना विधि को स्पष्ट करने के लिए एक वीणा पर प्रदर्शन किया जिसे श्रुति वीणा के नाम से संबोधित किया। आपने दक्षिणात्मक तंजौर वीणा जिसे उत्तर भारत में सरस्वती वीणा या रूद्र वीणा कहते हैं। इसमें ही कुछ परिवर्तन कर सारणी विधि का वर्णन किया और इसे श्रुति वीणा की संज्ञा दी।

इस प्रकार स्वरों की उत्पत्ति अनादि काल से हुई यह तथ्य स्वीकार कर वैदिक काल से आधुनिक काल तक स्वरों में विकास किए गए। स्वरों में परिवर्तन तथा विकास का कार्य संगीताचार्यों के बुद्धि कौशल तथा अथक प्रयासों से सम्भव हो पाया। यह संगीतसाधना अनन्त काल से जन रंजन तथा मनुश्य के मस्तिष्क को शांति पहुंचाने का कार्य करती चली आ रही है। संगीत के स्वर मनुष्य की विभिन्न संवेदनाओं को व्यक्त तथा महसूस कराने का सशक्त साधन है। इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है। सांगीतिक स्वर समस्त प्रकृति को हर पल हर क्षण प्रभावित करते आ रहे हैं। इस अध्याय के अगले चरण में हम सांगीतिक स्वरों के मानव मस्तिष्क पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन विभिन्न क्षेत्रों के अंतर्गत करेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

क्रमांक	लेखक का नाम	ग्रन्थ का नाम	प्रकाशक	वर्ष
1	रामनाथ शर्मा, रचना शर्मा	भारतीय मनोविज्ञान	एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली	2005
2	डॉ. श्रीमती प्रती वर्मा, डॉ. डी.एन. श्रीवास्तव	बाल मनोविज्ञानः बाल विकास	अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा	2011–2012
3	श्री कैलाशचंद्र देव वृहस्पति	भरत का संगीत सिद्धांत	प्रकाषन शाखा सूचना विभाग, उत्तरप्रदेश	1959
4	ठाकुर जयदेव सिंह	भारतीय संगीत का इतिहास	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	
5	किरण तिवारी	संगीत एवं मनोविज्ञान	कनिष्क पब्लिशर्स, दिल्ली	2008
6	डॉ. नीता मिश्रा	संगीत में नादरूप व ध्वनिपक्ष के विभिन्न आयाम	निर्मल पब्लिकेशन्स	1996
7	डॉ. नगेन्द्र	भारतीय सौंदर्य शास्त्र की भूमिका	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली	
8	नमिता बैनर्जी	मध्यकालीन संगीतज्ञ एवं उनका तत्कालीन समाज पर प्रभाव	राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली	1996
9	डॉ. धर्मावती श्रीवास्तव	प्राचीन भारत में संगीत (वैदिक काल से गुप्त काल तक)	भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी	1967
10	डॉ. शरदचन्द्र परांजपे	संगीत बोध	म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल	1992

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

भूमंडलीकरण और आधुनिक जीवन मूल्य

डॉ. देवेन्द्र विश्वकर्मा
MA (Eco. Rural development), MBA,MSW, Social Science and Management Association

भारतीय सन्दर्भों में भूमण्डलीकरण या वैश्वीकरण अमेरिकी बाजारवाद से आयातित शब्द है जो अंग्रेजी के Globalization का हिन्दी अनुवाद है। यूनेस्को (UNESCO) द्वारा भूमण्डलीकरण को इस प्रकार परिभाषित किया है–

"Globalization is a set of economic, social, technological, political, and cultural structures and processes, arising from the changing character of the production, consumption, and trade of goods and assets that comprise the base of the international political economy"

भूमण्डलीकरण का भारतीय शिक्षा पद्धति पर प्रभावः आज के युग में उच्च शिक्षा का बहुत महत्व है। विद्यालयी शिक्षा के पश्चात् उच्च शिक्षा प्रदान करने का मुख्य कारण यह है कि इससे व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है। इससे राष्ट्रीय स्तर तथा विश्व स्तर पर जागरूकता पैदा होती है। इससे मानव विकास तो होता ही है, साथ ही सम्पूर्ण विश्व को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हो जाती है। उच्च शिक्षा से राष्ट्रों को आर्थिक प्रगति होती है तथा यह व्यावसायिक दृष्टि से नागरिकों को निपुण करती है। उच्च शिक्षा विश्व स्तर पर स्वास्थ्य, औषधि, तकनीकी व इंजीनियरिंग से सम्बंधित मानव जाति को विकसित करती है।

वैश्वीकरण व उच्च शिक्षा के लक्ष्यः विश्व के परिवर्तित परिवेश के घटनाक्रम को देखते हुए आज विश्वस्तर पर विभिन्न परिवर्तन हो रहे है। आज विज्ञान, तकनीकी, आन्तरिक विज्ञान, कषि, वाणिज्य तथा स्वास्थ्य आदि अनेक क्षेत्रों में विशेषीकरण किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में आत्मनिर्भरता, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु विश्वस्तर पर उच्च शिक्षा के विशेष लक्ष्य बनाये जा रहे है। बीसवीं शताब्दी का इतिहास यदि लिखा जाय तो सभी प्रमुख घटनाओं में सर्वोपरी है भूमंडलीकरण की घटना। पूंजीवाद ने बड़े नाटकीय तरीके से विश्वभर की आय में इजाफा किया है। पिछले 10 वर्षो में पूंजी के बहाव में बेइंतहा इजाफा हुआ है। पूंजीवाद रोजमर्रा की जिन्दगी में काफी जड़ जमा चुका है। पूंजीवाद का सबसे बड़ा साईट है शॉपिग मॉल। वास्तव में इसकी सारी प्रेरणा व गति के पीछे उपभोक्तावादी मानसिकता जिम्मेदार है। भूमंडलीकरण में पूंजी के प्रभाव को ही उन्मुक्त नहीं किया बल्कि सांस्कृतिक सीमाओं को भी छिन्न–भिन्न कर दिया है। भूमंडलीकरण के कारण समाज मं जो बदलाव आया उसी यथार्थ को कहानिकारों ने अपनी कहानी के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। मध्यम वर्ग के उपभोक्तावादी समाज में रिश्तों की गर्माहट कम हुई है। रिश्तों में अनुभूतियों के स्थान को बाजार में उपलब्ध नित नये साधनो ने ले लिया है। वृद्धों की स्थिति को भूमंडलीकरण ने कई रूपों में प्रभावित किया है। परिवार में आर्थिक हैसियत से भी वृद्धों का महत्त्व कम होता गया है। पूंजीवाद की देन परिवार में बुजुर्गो का हाशियाकरण भी इस नई प्रवृत्ति से ही जन्मा है। वर्तमान युवा लेखक कुणाल सिंह की कहानी 'इतिगोंगेश पाल वृतान्त' सूचना क्रान्ति के पश्चात् अस्तित्व मे आये मनोरंजन उद्योग की क्रूर उपभोक्ता संस्कृति पर सूक्ष्म व्यंग्य है। संजय कुंदन पूंजीवादी संस्कृति में आइडेंटिटि क्राइसिस पहचान के संकट को अक्सर अपनी कहानियों का विषय बनाते है। उनकी कहानी 'बॉस की पार्टी' पूंजीवादी त्रासदी और व्यंग्य का मिश्रित आख्यान है।

आधुनिकीकरण तथा विश्वीकरण से सम्बन्धित उच्च शिक्षा के लक्ष्य निम्नलिखित हैः–

1. मानवीय मूल्यों व संस्कृति का विकास।
2. विश्व नागरिकता की भावना का विकास।
3. शिक्षा प्राप्ति के लिए अनंशासन कायम रखने हेतु नये–नये दृष्टिकोण अपनाना।
4. ज्ञान के नये–नये अवसर छात्र–छात्राओं को देना।

5. नई तकनीकी प्रयोग में लाकर उच्च शिक्षा देना।
6. सभी राष्ट्रों के विज्ञान, तकनीक तथा आर्थिक विकास के क्षेत्र से सम्बन्धित ज्ञान का विश्व स्तर पर आदान–प्रदान करना और एक–दूसरे के अनुभवों से लाभान्वित होना।

वैश्वीकरण तथा उच्च शिक्षा का पाठ्यक्रमः आज ज्ञान के उभरते क्षेत्रों से सम्बन्धित कोर्सो को पूर्व स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाता है। इन कोर्सो में शिक्षा स्वतन्त्र रूप से दी जानी चाहिए। इसके अन्तर्गत जो पाठ्यक्रम हम बनाते है, वह निम्न प्रकार से बनाया जाना चाहिएः–

1. ओप्टो इलेक्ट्रोनिक्स (Opto Electronics) तथा सूक्ष्म इलेक्ट्रोनिक्स (Micro Electronics) कोर्स रखें।
2. क्रियाशील तकनीकें व उपकरण लें (Workable Techniques and Equipments).
3. जीवन विज्ञान पर आधारित तकनीकें (Techniques Based Upon Life Science).
4. प्रबन्ध व संचार प्रणाली (Management System).
5. स्वास्थ्य व औषधि (Health & Medicines).
6. प्रसार व संचार प्रणाली (Extension and Communication System).
7. अन्तरिक्ष तकनीकें (Space Techniques).
8. वातावरण की दृष्टि से सृदृढ़ तकनीकें (Strong and Powerful Techniques From Environment Point of View) सामाजिक सांस्कृतिक, शैक्षणिक वातावरण में स्वस्थ सकारात्मक विचार तो आते ही हैं, साथ ही छात्र–छात्राओं की आवश्यकता की पूर्ति भी होती है।

शिक्षण विधियॉ :– उच्च शिक्षा व विश्वीकरणः उच्च शिक्षा तथा विश्वीकरण के अन्तर्गत जो शिक्षण विधियॉ निर्धारित की गई है, उन्हें प्रदान करना एक शिक्षक का मुख्य कर्तव्य होता है। उच्च शिक्षा प्रदान करने की शिक्षण विधियों में हम पारम्परिक विधियों का प्रयोग नहीं कर सकते है क्योंकि इनके द्वारा हम उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं कर सकते। आज का युग विज्ञान, तकनीकी तथा कम्प्यूटर के अतिरिक्त आधुनिकीकरण तथा विश्वीकरण का युग भी है। विश्व स्तर पर जिन कोर्सो को हम पढ़ाना चाहते हैं, उनकी शिक्षण विधियॉ भी विश्व स्तर के प्रयासों से खोजी हुई नवीनतम विधियॉ होती है। अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षकों को नई–नइ तकनीकियॉ सिखाने के लिए हमें भी तकनीकी का प्रयोग करना पड़ता है। ये नवीन विधियॉ शोध व नये–नये अनुसन्धानों पर निर्भर करती हैं। अधिक से अधिक प्रयोगात्मक, अवलोकन तथा निरीक्षण शक्तियों का प्रयाग करके ही शिक्षक छात्रों को विश्वनोय स्तर पर शिक्षा प्रदान कर सकते हैं। ये विधियॉ परिणाम उन्मुखी (Result Oriented) होनी चाहिए। विधियॉ ऐसी भी होनी चाहिए जो छात्रों की शंका का निवारण कर सकें।

अनुशासन, उच्च शिक्षा और वैश्वीकरण :– हम जब भी कोई कार्य सम्पन्न करते है, तो हमें एक बात का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक होता है, वह है – अनुशासन इस वैश्वीकरण की प्रक्रिया में अनुशासन से तात्पर्य है शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षकों व विद्यार्थियों के मध्य सही प्रकार का तालमेल होना, जिससे शिक्षकों के द्वारा छात्रों को सही प्रकार से ज्ञान प्रदान किया जा सके। शिक्षक चाहे सैद्धान्तिक रूप से किसी विषय विशेष या कोर्स विशेष के बारे में जानकारी दे रहा हो या फिर प्रयोगात्मक रूप से छात्र–छात्राओं को शिक्षण प्रक्रिया में भागीदार बनाकर सिखा रहा हो, शिक्षण प्रक्रिया की सफलता हेतु अनुशासन का होना आवश्यक है।

मूल्यांकन (Evaluation) :– एक अनुमान को हम आधार मान सकते है कि 1999 में 48 लाख लोगों के द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु प्रयत्न किये गये, जिसमें से 17 लाख एशिया में थे। इससे यह पता लगाया गया कि भविष्य में 159 लाख लोग विश्व स्तर पर तथा 87 लाख लोग एशिया में हो सकते है जो कि उच्च शिक्षा ग्रहण करना चाहते है। तीन मुख्य देश ऐसे है जो कि विश्व स्तर पर उच्च शिक्षा प्रदान करते है, ये देश यू.एस.ए., यू. के. तथा आस्ट्रेलिया हैं। विश्व के बहुत से विशेषज्ञों के अनुसार उच्च शिक्षा की व्यक्तिगत व राष्ट्र प्रणालियों की गुणवत्ता (Quality of Education) का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना चाहिए।

निरीक्षण (Observation) :- हम निरीक्षण करने के बाद ही किसी भी कार्य का मूल्यांकन कर सकते हैं। किसी भी संस्था की कार्यप्रणाली या संगठन

के कार्य करने की पद्धति का नियंत्रण ही सही मूल्यांकन करने में सहायक होता है। हम मूल्यांकन लक्ष्यों के आधार पर करते हैं। यदि इन लक्ष्यों की प्राप्ति में कोई कमी आये तो उसका सुधार करना अत्यन्त आवश्यक होता है ताकि वांछनीय लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सके। अतः निरीक्षण एक महत्वपूर्ण तथ्य है वैश्वीकरण का।

भूमंडलीकरण ने संस्कृति के नाम पर बाजार की संस्कृति को जन्म दिया है जो मानव को सदैव उपभोक्ता की दृष्टि से देखती है। उपभोक्ता को रिझाने एवं अपना माल बेचने के लिये महिलाओं को साधन के रूप में प्रयोग किया जा रहा हैं। नारी देह के बिना अब कोई रोमांच नहीं, कोई मजा नहीं यह दर्शन उपभोक्तावादी संस्कृति का दूसरा सिरा है। युवतियों के चेहरे बदलते रहे हैं पर भूमंडलीकृत बाजार का चरित्र कमोवेश वही रहता है। भूमंडलीकरण द्वारा समाज के वंचित वर्ग को निरन्तर ढकेला जा रहा है। 'टुंड्रा प्रदेश' पंकज विष्ट की अत्यंत समर्थ कहानी है। जिसमें बच्चों के छिनते बचपन को बिना किसी लिजलिजी भावुकता के साथ उजागर किया गया है।

निष्कर्षत, बीसवीं सदी का सबसे बड़ा दर्द यही है कि आरंम्भ में अखण्ड मानवता का बोध जन्मा था, उसी सदी के अंत मं उसे अखण्ड बाजार ने निगल लिया। समय व समाज की विकृतियों से भरा जीवन बाजार के बीच आ खड़ा हुआ है। यह बाजार अपसंस्कृति, तनाव, विस्मृति, अलगाव, शोर, नैतिक–पतन, भष्ट्राचार, आतंकवाद, हिंसा आदि परोस रहा है। आज सब कुछ पूंजी की अधीन है। पूंजी का वर्चस्व और उसका प्रतिफल दृष्टव्य है।

इक्कीसवीं सदी की कहानी जटिल जीवन के यथार्थ को बारीकी से व्यक्त करती है। आज कॉरपोरेट पूंजीवाद के कारण हमारा जीवन जटिल व उलझाऊ होता जा रहा है। नैतिकता, आदर्श, मूल्य, चरित्र सभी निरर्थक हो चुके हैं। रिश्ते छूटते जा रहे है। इंसान अकेला होता जा रहा है। परिवर्तनशील जीवन मूल्यों व परम्पराओं को आत्मसात कर नये विकसित होते जीवन मूल्यों को गढ़ती हुई कहानियॉ लिखी जा रही हैं।

भूमंडलीकरण के आधुनिक जीवन मूल्यों को जीने वाला मध्यम वर्ग सामाजिक सरोकारों से बिल्कुल कट गया है, वह घोर व्यक्तिवादी हो रहा है। जिसे अपने ऐशो–आराम की फिक्र है। वृद्धों की स्थिति आज अत्यंत दयनीय है। भूमंडलीकरण ने उनकी स्थिति को कई मामले में प्रभावित किया सबसे पहले यह मिथक टूटा कि बुजुर्ग ज्ञान का भण्डार है। इस शताब्दी में ऐसी दुनिया प्रकट हुई जिसमें तर्क व प्रमाण ही सब कुछ हैं। इस प्रकार बुजुर्ग के अध्यात्म का स्थान भौतिकता ने ले लिया है। अब परिवार में प्रत्येक सदस्यों के महत्त्व का आंकलन उसकी कमाई से होता है। इस प्रकार आज की कहानियाँ सशक्त व सार्थक बन गई है, क्योंकि उनमे नये विषयों या मुद्दों को उठाया गया है और उन्हें संतुलित दृष्टि से अभिव्यक्त भी किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. UNESCO. Globalization and Governance in the UN System. http://www.unesco.org/most/globalization/Introduction.htm.
2. भूमण्डलीकरण और हिन्दी उपन्यास साहित्य – रोशन कुमार, इन्टरनेश्नल जनरल ऑफ साइन्टिफिक रिसर्च, वॉल्यूम 4, इश्यू 8, अगस्त 2015
3. डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठिनो लहरी शतकम्, प्रेम नारायण द्विवेदी, आधुनिक संस्कृत साहित्य श्रीः, पृष्ठ–185
4. आधुनिक संस्कृत वाङ्मये, यदुनाथ प्रसाद दुबे, आधुनिक संस्कृत साहित्य श्रीः, पृष्ठ– 250
5. क्षत्रपतिचरितम् 1/39,19
6. सतना मिगौरवम्, डॉ. मिथिला प्रसाद त्रिपाठी 4/29
7. संस्कृत महाकाव्यानां साम्प्रति कत्वम्, रहस बिहारी द्विवेदी, आधुनिक संस्कृत साहित्य श्रीः, पृष्ठ–111
8. संस्कृत महाकाव्यानां साम्प्रति कत्वम्, रहस बिहारी द्विवेदी, आधुनिक संस्कृत साहित्य श्रीः, पृष्ठ–115

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

संस्कार : परिचय एवं प्रासंगिकता

डॉ0 नीता आर्या
असि.प्रो. , संस्कृत विभाग, डी.एस.बी. परिसर कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

प्रस्तावना : संस्कार शब्द की व्याख्या अनेक प्रकार से की जाती है। जैसे "संस्कारों नाम से यस्मिन् जाते पदार्थे भवति योग्यः कस्याचिर्शस्य" अर्थात् संस्कार उस प्रक्रिया को कहते है, जिसके किये जाने पर पदार्थ किसी कार्य के लिए उपयोगी बन जाता है।

"यौग्यतां चादधनाः क्रियाः संस्कारा इल्युच्यन्ते अशति"

किसी वस्तु में योग्यता का आधान कराने वाली क्रियाओं को संस्कार कहा जाता है।

"संस्कारों हि नाम गुणाधानेन वा स्याद् दोशपनपनने वा"

अर्थात जिस प्रक्रियाओं को करके व्यक्ति के गुणों को उजागर किया जाता है और दोाों को दूर किया जाता है। वे संस्कार है।

प्राचीन भारतीय जीवन का यह दृष्टिकोण था कि मनुष्य जब तक जीवित रहे सर्वांगीण उन्नति करें और मृत्यु के अन्तर भी स्वर्ग की प्राप्ति करें। जीवन के अंगों के विकास के लिए प्राचीन ऋषियों ने संस्कारों की योजना बनाई व संस्कारों के माध्यम से मानव जीवन के अंगों को गुणों से भरने एवं विकसित करने का यत्न किया। उन्होंने संस्कारों को धार्मिक रुप दिया जिससे प्रत्येक परिवार में बालकों के संस्कारों को सम्पन्न किया जाना अनिवार्य है। वेदों में संस्कारों का प्रायः विशेष उल्लेख नहीं है।

इनका सर्वप्रथम उल्लेख वैज्ञानिक विवेचन वृहदारण्यक उपनिशद् में मिलता है, जिसमें गर्भाधान संस्कार का उल्लेख किया गया है।

सूत्र ग्रन्थों और स्मृतियों में संस्कारों का पूर्ण ओर व्यवस्थित वर्णन है। आयु के अनुसार मानव विकास की अनेक अवस्थायें होती है। अतः आयु के अनुरुप संस्कारों की व्यवस्था की गई है। संस्कारों का प्रारम्भ शिशु के माता के गर्भ में आने के पश्चात् प्रारम्भ होता है। भारतीय विचारधारा के अनुसार बालक की शिक्षा का प्रारम्भ गर्भ से ही होने लगता है।

गृहसूत्रों के आधार पर निम्नलिखित सोलह संस्कारों का प्रचलन हिन्दू परिवारों में हुआ था।

1 :– गर्भधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकम्र, कर्णभेद, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ , सन्यास और अन्त्योष्टि। संस्कारों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता हैः–

क. जन्म से पूर्व के संस्कार

1ः– गर्भाधान 2ः–पुंसवन 3ः–सीमतोन्नयन
4ः– जातकर्म 5ः–नामकरण 6ः– निष्क्रमण
7ः– अन्नप्रासन 8ः– चूड़ाकर्म 9ः– कर्णभेद

ग. विद्याध्ययन से सम्बन्धित संस्कारः–

10ः– उपनयन 11ः– वेदाध्ययन 12ः– समावर्तन

घ. आश्रमों में प्रवेश करने के संस्कार

13ः– विवाह 14ः– वानप्रस्थ 15ः– सन्यास

ङ. मृत्यन्तर संस्कार :– 16 :– अन्त्येष्टि

1. गर्भाधान संस्कार :– गर्भाधान संस्कार के लिए मनुस्मृति में कहा गया हैः–

अमावस्यामश्टमी च पौर्णमासी चयुर्दशीम्।
बह्मचारी भवेन्तित्यमप्युतौ स्नातको द्विजः ।।
मनु0 4 । 928 ।।
अर्थात शस्त्रों के अनुसार गर्भाधान भाुभ नक्षत्र और तिथि में करना चाहिए। मनु याज्ञवल्कय ओर अन्य स्मृतिकारों के अनुसार कुछ विशिष्ट तिथियों में गर्भाधान नही करना चाहिए। मनु ने अष्टमी, चतुर्थी, अमावस्या और पूर्णिमा को गर्भाधान है, जिसका प्राणियों की शारीरिक अवस्था में प्रभाव पड़ता हैं।

1. पुंसवन संस्कार :– अश पुंसवनं पुरां स्यन्तत इति मासे द्वितीये तृतीय च।।
(पारस्कर ग्रह्मसूत्रा काण्ड। 17।।)

अर्थात यह संस्कार गर्भ के दूसरे अथवा तीसरे मास मे किया जाता है।

2. सीमन्तोन्नयन संस्कार :– चतुर्य मासे सीमन्तोन्नयनमापूर्यमासापक्षे यदा पुंसा नक्षत्रेणा चन्द्रमा– युक्तः स्यात आश्सामायन ग्रह्मसूत्र 1।। 14।।

अर्थात यह संस्कार प्रायः गर्भ के चौथे मास में किया जाता है।

3. जातकर्म संस्कार :– इस संस्कार को जन्म के पश्चात् किया जाता है और पिता बच्चे को दधि और घृत चटा कर निम्न श्लोक पढ़ता है।

मेधां : सविता देवी सरस्वती।

मेधां त्वे अश्विनौ देवाावधतं पुष्करस्रजौ।।

इसके इसके बाद वह शिशु से ओजस्वी भाषा में कहता है–

अश्मा भव परशुभर्व हिरण्यमस्तुतं भव।

वेदो वे पुत्रनामासि जीव शरदःश तमिति।

इन्द्र श्रेश्ठानि द्रविणानि धेह्मस्मे प्रयाान्धि मधवन्नृजीशन्।।

अर्थात हे शिशु ! तुम पत्थर के समान कठोर बनों, परशु के समान तीक्ष्ण बनो, तुम तेजस्वी बनो, ज्ञानवान् बनो, सौ वर्ष तक जीवित रहो। इन्द्र तुमको श्रेष्ठधन प्रदान करें।

4. नामकरण संस्कार :– नामकरण संस्कार जा" नामधेयं दशम्यां तु द्वादशम्यां वास्य कारयेत्।
पुण्य तिशौं मुहूर्तों वा नक्षत्रे वा गुणान्वितें।
मुनु0 2। 30।
अर्थात नामकरण संस्कार जनम से दसवें दिन अथवा बारहवें दिन भाुभ नक्षत्र और तिथि में करना चाहिए।

5. निष्क्रमण संस्कार :– निष्क्रमण संस्कार जो कि " चतुर्थे मासि कतैव्यं शिशोनिश्क्रमणां गृहात् ।। मनु0 2।34।।
अर्थात यह संस्कार जन्म के चौथे माह में किया जाता है।
इस समय बच्चा विश्व की विभूतियों – सूर्य, चन्द्र का दर्शन करता है।

6. अन्नसन संस्कार :– यह संस्कार जन्म के छठे मास में कराया जाता हैं। शास्त्रों में भी छठा मास निर्धारित किया गया है। मनुस्मृति 2। 34।। सुश्रुतसंहिता– भारीस्थान– 10164।।

7. चूड़कर्म संस्कार :– यह आठवा संस्कार है। मनुस्मृति के अनुसार–
"चूड़ाकर्म द्विजातीनां सर्वेशामेव धर्मतः
प्रशमेऽव्दे तृतीये वा कर्तव्य श्रू तिचोदनात् ।।
मुन 02135।।
जन्म से पहला या तीसरा वर्ष माना है।

8. कर्णवेध संस्कारः– रक्षाभूषणानिमितं बालस्य कर्णौं विध्येत।र्णवेध संस्कार क सुश्रुर्सहिता– शारीरस्थान 16 । 91 ।।
कर्णवेध संस्कार का समय तीसरा या पाँचवा है।

10. उपनयन संस्कार :– उपनयन का अर्थ है गुरु के समीप ले जाना मनु के अनुसार ब्रह्मण का आठवे वर्ष में , क्षत्रिय का ग्यारहवें वर्ष में वैश्य का बारहवें वश्र में उपनयन किया जाना चाहिए।

गर्भाश्टमेऽबेद कुर्वीतं ब्राह्मणास्योपनायनम्।

गर्भादेकादेश राज्ञो गर्भातु द्वादशे विर्शः !!

मनु0 1122136 ।।

अथर्व वेद मेंगया है कि उपनयन संस्कार के बाद उनको द्विज कहा जाता था जिसका अर्थ है, दो बार जन्म लेना, एक बार माँ के गर्भ से दूसरी बार उपनयन के पश्चात्गुरु के गर्भ से जन्म लेते है। विद्या प्राप्त करके उनका पर्न–जन्म होता है।
" आचार्यः उपनयमानौ कृणाते ब्रह्मचारिणं गर्भमन्तः "।।
अर्थववेद 11/5/3 ।।

11. वेदारम्भ संस्कार :– यह संस्कार उपनयन के साथ ही अथवा उसके एक दिन बाद हवन के बाद गायत्री का उपदेश देकर तदनन्तर ब्रह्मचारी नियामों के पालन करने की प्रतिज्ञा करके अध्ययन में संलग्न होता है

12. समार्वतन संस्कार :– गुरुकुलों में आचार्यों से विद्या प्रान्त कर जब ब्रह्मचारी स्नातक हो कर जब घर वापस जाता है। इसे दीक्षन्त भी कहा जाता है।
स्नातक के लिए मनु ने कहा है।
" क्लृप्तकैशनखरूमश्रुदांतः क्षसकशुक्ताम्बरः भाुचिः !
स्वाध्याये चैंवव युक्तः सयान्नित्यमात्महितेणा च ।।
मनु 4/ 25 ।।
स्नातक को बाल, नाखून और दाढ़ी–मूंछ कटवाने चाहिए, दमनशील होना चाहिए, उत्तम वस्त्र धारण करने चाहिए, पवित्र रहना चाहिए और स्वाध्याय में लगे रहना चाहिए।
" न पूर्व गंरुवें किदिुपकुर्वीत ध्मवित्।
स्नास्यस्तु गुरुणऽऽज्ञाप्तः शक्त्या गुर्वेथेमाहरेत् ।।
मनु ।। 2/245 ।।
विद्याध्ययन के समय विद्यार्थी को गुरु को कोई शुल्क नही देना पड़ता है। किन्तु स्नातक होने पर वह गुरु को अपनी भाक्ति के अनुसार कुछ भी लाकर देते है।

13. विवाह संस्कार :– स्नातक होने के बाद गृहस्थ आश्रम में प्रवेश का प्रावधान था, गृहस्थ आश्रम में प्रवेश विवाह करके होता था।

त्रिशदवर्शोद्वहेत्कन्यां हद्यां द्वाशवार्शिकीम्
त्रश्ष्टवर्शोऽश्टवर्षा वा धर्मे सीदति सत्वरः ।।
मनु 09। 94।

कामशस्त्र के अनुसार :– त्रिवर्णात्प्रभृति न्यूनवयसम् ।।
कामशास्त्र3/9/ 2 ।।

प्राचीन शास्त्रों में आठ प्रकार के विवाहों का विधान किया गया है:–

ब्राह्मे दैवस्तथैवार्शः प्राजापत्यस्तथासुरः।
गान्धर्वो राक्षस चैव पैशाच चाश्ट मौंऽधमः।
मनु0 13/ 29 ।

ब्राह्म विवाह , देव, आर्श प्राजापल्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पैशाच। मनुस्मृति में इन सब का वर्णन किया गया है।

14. वानप्रस्थ संस्कार :– भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं के अनुसार जब गृहथी पचास वर्ष कील हो जाती है तब उसे वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करना चाहिए।

मनुस्मृति के अनुसारः– 'गृहसस्तिु यदा प्श्येद वलीपलितमात्मनः।
और – अग्निहोत्रं समादाय गृहयं चाग्निपरिच्छदम्।
ग्रामादरण्यं निस्सृत्य निवसेन्नियतेन्द्रियः।।
मनु0 614 ।।

15. सन्यास संस्कारः– वानपंस्थ आश्रम वस्तुतः सन्यास आश्रम में प्रवेश करने एवं मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर होने की तैयारी मात्र था।

"वनेशु च विहित्यैवं तुतीय भगमायुशः।
चतुर्थेमायुशां भाग त्यकत्वा संगान्पतरिव्रजेत् ।।
मनु0 6। 33 ।।

दीर्घ काल तक वनों में तपस्या करते हुए, आयु के तीसरे भाग को बिता कर संसार के सभी बन्धनों से मुक्त होकर आयु के चौथे भाग में सन्यास ग्रहण करने का विधान किया गया था। वहीं भगवत्गीता में कहा गया है :–

"काम्यानौ कर्मणां न्यार्स सन्यास कवलयो विदुः।।
भगवदगीता 18 । 2 ।। पुरुष सभी कामनाओं का परित्याग करके एवं जीवन के प्रति आसक्ति को छोड़कर सन्यास आरश्रम में प्रवेश करता है। सन्यास शब्द को अर्थ त्याग करना है। सभी काम्य कर्मो का परित्याग करना सन्यास है।

16. अन्त्योष्टि संस्कारः–मुत्यु के अनन्तर मृत शरीर का जो संस्कार किया जाता है उसको अन्त्योष्टि नाम दिया गया है।

इस अवसर पर उच्चारण किये जाने मन्त्रों में शरीर के पंच महाभूतों से बने होने और पुनः उनमें मिल जाने का उल्लेख है। जगत के नियन्ता की इन मन्त्रों में स्तुति की जाती है और आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करतक हैं। इन मन्त्रों में निम्नलिखित मन्त्र मुख्य हैं :–

वायुरनिलमअमृतमदि1 भस्मान्तशरीरम्।
ऊँ क्रतों स्मर कृतस्मर क्रतो स्मर कृतस्मर ।।
यर्जोद।10/17 ।।

ये सोलह संस्कार आज भी हिन्दू परिवारों में व्यवहृत किये जाते हैं। कुछ संस्कार लुप्त हो गये हैं। और कुछ अब भी हमारे समाज में विद्यमान हैं। यदि हम इन संस्कारों अपने आने वाली युवा पीढ़ी को नही बतायेंगे तो यह भी लुप्त हो जायेंगे।

आज के वैज्ञानिक युग में भी संस्कारों का अपना महत्व है। आज की युवा पीढ़ी आज नशा व पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने में लगी है। वहीं वह भारतीय संस्कृति और संस्कारों से परे होती जा रही है। यदि हम यह मानते, कि यह एक व्यवस्थित जीवन के लिए संस्कारों के बारे में पढ़े और उनका पालन करें । आधुनिक युग में हमारे बच्चे क्रिसमस तो जानते है। और यदि संस्कारों की बात करें तो उन्हें पता ही नही आधुनिक युवा वर्ग अंग्रेज़ी माध्यम की ओर ज्यादा अग्रसर हैं पाश्चात्य पाठ्क्रम की ओर उनको बढ़ावा दिया जाता है और भारतीय संस्कृति और संस्कार पीछे छूट गये है। आधुनिक युग में लोग संस्कारों को केवल कमाई का माध्यम कह कर करना ही नही चाहते हैं। संस्कारों को करने से तन,मन, बुद्वि की शक्ति बढ़ती है और शरीर स्वस्थ्य रहता हैं आज कल युवा वर्ग भारतीय संस्कृति का पालन नही करते जिस कारण अपराध बढ़ रहे है। अल्प आयु को प्रात हो रहे है। जीवन का कोई मोल नही है। रिश्तों की समझ नही है। और इन सब के चलते ही तो विवाह का काई महत्व युवा वर्ग में नही है। तभी आज लिव – इन रिलेशनशिप भारत में प्रवेश कर गया है। भारतीय संस्कृति अन्तिम सांस ले रही है। इसे प्राण वायु प्रदान करें। फिर से हमें संस्कृति व संस्कारों का पालन करना होगा। आधुनिक युग को संस्कार रुपी प्राण वायु कौन देगा, जिससे आधुनिक युग में अपराध कम होंगे, व जीवन के महत्व को समझा पायेंगे। व्यक्ति दीर्घ आयु को प्राप्त करेंगे। इसीलिए आधुनिक युग में संस्कारों को जानने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची :–

1. मनुस्मृति
2. भारतीय संस्कृति के आधार तत्व।
3. भगवद्गीता।
4. यर्जुवेद।
5. अथर्ववेद

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

Recent Technology in Banking Sector

Dr. Songirkar Nitin Bhatu
Assistant Professor, SMRK.BK.AK.Mahila Mahavidyalaya, Nashik. (Maharashtra)

Abstract : A bank is a financial institution which deals with deposits and advances and other related services. It receives money from those who want to save in the form of deposits and it lends money to those who need it. A bank is financial intuition and financial intermediary that accepts deposits and channels those deposits into lending activities, either directly by loaning or indirectly through capital markets. A bank is the connection between customers that have capital deficits and customers with capital surpluses.

Banking is gradually changing its course. The use of computers or the fast developing information technology has started altering the destiny of banks. E-Banking or Online banking is a generic term for the delivery of banking services and products through the electronic channels such as the telephone, internet, cell phone etc. E-banking involves information technology based banking, under this I.T. system, the banking services are delivered by way of computer-controlled system. Introduction of computer and other electronic technologies in banks the importance of such new technology in banking i.e. Increase in Efficiency, Handling of Information, Cost Reduction, Accuracy, Customer Service, Easy Communication. And for effective, quick services, customers need and satisfaction banks used various services in new technology in banking i.e. Automatic Teller Machine (ATM), credit card, debit card, telebanking, mobile banking, net banking and swift. So, new technology play an important role in banking sector.

Keywords : E-Banking, ATM, Telebanking, SWIFT, Information Technology, Debit card, Credit Card, Internet Banking.

Introduction:

Banking:

All modern economics are money economies; they use money in all their economic activities. As a result in all modern economies, banks perform a variety of useful functions. In modern production, persons who save and persons who have plans of investment are not the same. It, therefore, becomes necessary for some agency to act as an intermediary between these two sets of people, and banks act as this type of agency. In fact, in every economic activities, like production, distribution, exchange and consumption, banks have an important role to play. Banks in modern times have a key role to play in the process of economic development by promoting saving, by encouraging and channeling investment by developing enterprises, and by inculcating managerial and business skills in men.

A bank is a financial institution which deals with deposits and advances and other related services. It receives money from those who want to save in the form of deposits and it lends money to those who need it .A bank is financial intuition and financial intermediary that accepts deposits and channels those deposits into lending activities, either directly by loaning or indirectly through capital markets. A bank is the connection between customers that have capital deficits and customers with capital surpluses.

H.L.Hart-"A Banker or Bank is a person or company carrying on the business of receiving money and collecting drafts for customers, subject to the obligation of honoring cheques drawn on him by the customers to the extent of the amounts available in their current accounts"

Objectives of Research :

1. To Know about the Banking, E-Banking and Banking Regulation Act 1949.

2. To Study the Importance of Technology in Banking.

3. To Find out the New or Recent Technology (E-Banking) in Banking.

Research Methodology :

Methodology used for the collection of data for research from to secondary data i.e. Books, Magazines, News papers, etc.

Banking Regulation Act,1949 :

After independence, it was clear that a sound banking system was one of the first pre-requisites for the development of the economy and for the attainment of several other objectives of economic policy. It was against this background that the Banking Regulation Act 1949, was passed. Its basic aim was to consolidate and amend the law relating to powers by persons controlling some of the banks safeguarding the interests of the depositors was another important objective, because unless people repose confidence in the banking system, the development of a sound banking system was not possible and in the absence of such a sound system, capital formation and a high rate of saving would have remained a far cry.

Section 2(1) of the Banking Regulation Act 1949 defines the term Banking Company, Any company which is engaged in the manufacture of goods or carries on any trade and which accepts deposits of money from the public merely for the purpose of financing its business as such manufacturer or trader shall not be deemed to transact the business of banking , within the meaning of this clause.

Section 5,clause (b) of the banking regulation Act 1949-

"Banking ,means the accepting, for the purpose of lending or investment, of deposits of money from the public, repayable on demand or otherwise, and withdraw able by Cheque, draft, order or otherwise."

"Banking company means any company which transacts the business of banking in India"

Technology of Banking (E-Banking) :

Banking is gradually changing its course. The use of computers or the fast developing information technology has started altering the destiny of banks. Previously Indian banks were keener to provide services by offering business by branch expansion, new schemes of low interest credit developmental banking. This later gave rise to great mass of information. How to interpret this mass of information into a meaningful analysis is another problem in which latest technology is coming to the help. Revolution in communications technology has sought to change the face of banking as it directly affects the speed of transfer of money .All this has made banking to be not only a money related business but also more as a business relating information on financial transactions.

The world is changing at a staggering rate and technology is considered to be the key driver for these changes around us. An analysis of technology and its uses show that it has permeated in almost every aspect of our life. Many activities are handled electronically due to the acceptance of information technology at home as well as at workplace. E-Banking or Online banking is a generic term for the delivery of banking services and products through the electronic channels such as the telephone, internet, cell phone etc. E-Banking is a result of the growing expectations of banks customers. E-banking involves information technology based banking,Under this I.T. system, the banking services are delivered by way of computer-controlled system. This system does involve direct interface with the customers. The customers do not have to visit the banks premises. As per the above information the importance of New Technology in banking sector as below-

Importance of Technology in Banking :

Bank consumer or customer need and satisfaction, introduce computer and other electronic technologies in banks has the following advantages which state the importance of such new technology in banking.

1. **Increase in Service Efficiency**: Efficient and quick service to customer can be provided with the help of modern technologies.
2. **Create Information**: Creation of up-to-date monitoring and information system and strengthening internal control and housekeeping and reporting functions are provided.

3. **Expenses or Cost Reduction**: There is reduction in cost including floor space because of the use of modern technology.
4. **Service Accuracy:** The clearing of cheques, pass book entries, inter-branch and inter-bank reconciliation and such other functions can now be carried out quickly, correctly and legibly with modern technology.
5. **Bank Customer Service:** With internet facility, the customers need not go to the bank office. All banking transactions and updating of accounts can be done while at home or in transit. Networking means sharing of information, giving messages and being in face to face contact even when apart. It is the meeting without moving.
6. **Easy Communication;** Internet connects thousands of computers which can work 24 hours a day throughout the year. There is no more the tyranny of working hours. the business of banks with customers, head office, other banks, branches is being fully computerized in western countries and India has also to move in that direction to service in international competition.

New or Recent Technology (E-Banking) in Banking:

As per the bank consumer needs, satisfaction, efficiency & accuracy in service, bank following services covered under recent technology in banking sector-

1. **Automatic Teller Machine(ATM**):
Automatic Teller Machine began to be introduced in the period 1969-1984 all over the world.ATM literally means electronic cash dispensing machine, which is open round the clock, and 365 days a year. The banks give an ATM card to the user and allot a separate and distinctive identification number for each customer. As customer has various demands, ATM provides them alternative with self service, convenience, quicker and hassle free banking .This is a very friendly machine and obviously is in great demand. Banks, essentially to give bank customers flexibility in their banking hours, issue ATM cards. In most areas, with an ATM card you can withdraw money, make deposits, transfer money between accounts, find out your balance, get a cash advance and even make loan payments, at all hours of the day or night. The growth of technology has changed the payment system world over during the past decades. The introduction of Automatic Teller Machines has given facility to the bank customers for banking beyond the banking hours.

2. **Credit Card**: In the process of evolution of money, after paper currency, several forms of bank money of credit money came into existence. the quality of these forms of money is the convenience in carrying and effecting the transaction. In this process of evolution, which, incidentally, is a continuous process, one latest form to enter into the Indian financial System is the Credit Card. It is an instrument devised by a bank to provide credit facilities to its holder for purchasing goods and services.

3. **Debit Card**: Debit cards combine the functions of ATM Cards and cheques. Debit cards are issued by banks but are used at stores, not at the banks themselves. When you pay with a debit card the money is automatically deducted from your account. Debit cards are also known as cheque cards. Debit cards look like credit cards or ATM cards but operate like cash or personal cheque. Debit cards are accepted at many locations including grocery stores, retail stores, gasoline stations and restaurants.

4. **Telebanking**: This is a secure, fast and convenient way to obtain a range of services by using a telephone without visiting the branch , information on

account, conduct of selected transactions, report loss of ATM Card ,order a cheque book, draft etc. Any individual customer of the branch, which is offering this facility, on application, can avail the facility subject to the Branch Managers discretion.

Services available under Telebanking-

a. Online balance inquiry.
b. Details of transactions.
c. Last five transactions details
d. Transactions from a recent date.
e. Request for Cheque book, Fund Transfer, Draft and account statement.

5. **Mobile Banking**: It is no different than telebanking except here the services of mobile are used. Credits, debits and balance are immediately conveyed to the customer through SMS. Mobile banking is a system that allows customers of a financial institution to conduct a number of financial transactions through a mobile device such as a mobile phone or personal digital assistant, Mobile banking differs from mobile payments, which involve the use of a mobile device to pay for goods or services either at the point of sale or remotely, analogously to the use of a debit or credit card to effect an EFTPOS payment.

6. **Net Banking**: Internet banking services introduced so far include the ability to monitor account balances, transfer funds between accounts, pay bills, and apply for loans. Only few banks will allow customers to make electronic trades through brokerage accounts. Within the near future many banks will offer home banking via an interactive website. Internet technology has invaded the portals of our banking institutions and as the cliché goes everything will just be a click away. No. doubt, innovations like Telebanking and automated teller machines have considerably put customers at ease in the recent past. But with net banking the customer will be able to transact with the help of a mouse and his visits to the neighborhood bank will become a thing of the past.Net banking makes it easy to transfer ones money from one branch in a particular city to any other branch in a city. One can open an FD account via the net. One needs to provide data regarding the amount and term of the deposit and also the branch in which the account is to be opened. One can order for an issue of a demand draft or a bankers cheque.

7. **SWIFT**: Electronic Transfer of Funds(EFT) began to appear in the international banking scenario since 1969 . We can see evolution of EFT in two stages from 1969-1984 and in later. In the first phase ATMs were introduced and private international fund transfer mechanism like SWIFT, was introduced. SWIFT (Society for Worldwide Interbank Financial Telecommunication) is the global financial community's foremost messaging infrastructure that is lowest risk and highest flexibility. SWIFTs mission is t become a worldwide community of financial institutions whose purpose is to be the leader in communications solutions enabling interoperability between its members, their market infrastructures and their end-user communities.

Conclusion : As per the above information, I conclude that, Banking, means the accepting, for the purpose of lending or investment, of deposits of money from the public, repayable on demand or otherwise, and withdraw able by Cheque, draft, order or otherwise. Banking is gradually changing its course. The use of computers or the fast developing information technology has started altering the destiny of banks. E-Banking or Online banking is a generic term for the delivery of banking services and products through the electronic channels such as the telephone, internet, cell phone etc. E-banking involves

information technology based banking, under this I.T. system, the banking services are delivered by way of computer-controlled system. Introduction of computer and other electronic technologies in banks the importance of such new technology in banking i.e. Increase in Efficiency, Handling of Information, Cost Reduction, Accuracy, Customer Service, Easy Communication. And for effective, quick services, customers need and satisfaction banks used various services in new technology in banking i.e. Automatic Teller Machine (ATM), credit card, debit card, telebanking, mobile banking, net banking and swift. So, new technology play an important role in banking sector.

References:

1. Mukund Mahajan,(2005),Indian Banking System,Nirali Prakashan, Pune
2. Mukund Mahajan,(2013),Fundamentals of Banking,Nirali Prakashan,Pune.
3. Babasaheb Sangale,T.N.Salve,D.R.Patade (2013)Fundamentals of Banking and Finance,Success Publications.
4. Mukund Mahajan(2015), Banking and Finance, Nirali Prakashan,Pune.

The Floristic Composition of Kanha-Amarkantak-Achanakmar corridor in Tropical deciduous forests of Madhya Pradesh-Chhattisgarh, India

Ruby Sharma and P.K.Singhal
15, Kundan Residency Tilhari, Mandla Road, Jabalpur
Department of Biological Sciences, Rani Durgavati University, Jabalpur

Introduction : Biological diversity of any region is the prime resource for the fulfillment of various necessities of the human population residing in that area. Tropical forests are the major repositories of the diversity of flora, fauna and microorganisms throughout the world supporting a large part of world populated countries. The last two decades have seen an enhanced shrinking of undisturbed natural forests. The various resources including timber and non-timber forest produce, wild animals have faced huge losses in terms of population reaching to local extinction of various species. The various destructive forces behind the loss of tropical and other forest resources are extensive slash and burn agriculture, timber extraction, fuel wood extraction, grazing, industrial development, mining operations, fishing, disruption of natural cycles, harvesting, etc. (Poti, 1993; Rawat and Panwar, 1990; Robinson, 1991). Biodiversity strategy summarized the broad causal factors as habitat loss, introduced species, overexploitation of natural resources, pollution, global climate change and land use change for industrialization, agriculture and forestry (WRI/IUCN/UNEP, 1992). Increased human population is the source of maximum causes behind forests loss and species decline. All the causal factors above are happening to fulfill the monumental increase in needs of human population.

There is a direct relationship between deforestation and species loss which ia a major consequence of habitat loss (Pearce *et. al.*, 1991a; Tolba, 1992). Habitat loss is directly linked with land use change (Tabarelli *et. al.*, 2004), which results in fragmented habitats or areas with higher edge effect are created further magnifying the problem(IUCN, 2000).

Fragmentation of habitats also leads to the increase of edge forests. Species present in the edge area are exposed to predation, natural extremities like wind and radiation (to shade tolerant species),human disturbances, interventions, etc. (Weaver and Kellman, 1981). The effect of increased edge area and reduced core interior area is also dependent on the composition ratio of shade-tolerant or mesic species (Levenson, 1981; Raven *et. al.*, 1981; Simberloff and Gotelii, 1984). A species threatened due to pests, disease or natural calamity faces further threat as it is unable to spread in new favorable to create a meta-population.Activities like mining, building of dams, roads, industries, etc. in and around wild areas has led to large-scale destruction and degradation. Through roads in forests are needed by forest managers and rangers to counter activities like illegal logging, poaching, forest fires, encroachment, slash and burn, etc., but it also provides an easy access into interior forest for exploitative activities (Becker *et. al.*, 1994) that further multiplies the threat. India being a tropical country covered by Tropical deciduous Forests is among the most vulnerable regions with regard to both being a mega diversity country as well as having a large population which is ever increasing.

India has an intricate network of protected natural areas which have been notified as part of for long term conservation measures as Biosphere Reserves, National Parks and Sanctuaries. These sites are further connected by forests belts that functions as corridors between PAs which function as safe passage for seed dispersal and animal movements. The recent surge in commercial demands of forest resources have led infiltration into deep undisturbed forests including this part of the country which has led to overexploitation of many species and creating disturbance at an alarming rates. The state of Madhya Pradesh has a geographical area of 3.082 M ha. The state has

continuous tracts of forest stretches in nearly 77,414 km^2 and has highest percentage of forest cover of 28%, that harbor the diversity including commercially important sources of non-timber forest produce among which medicinal plants form a significant part.

The floristic diversity of Madhya Pradesh (erstwhile) was studied in patches as it covers a large area with maximum forest cover. This central Indian State was floristically explored in parts by various workers and the Flora of Madhya Pradesh compiles the vast floristic wealth. It records 2481 species that includes 7 species of Gymnosperms, 102 species of Pteridophytes and 2372 species of Angiosperms, (Verma *et. al.*, 1993; Mudgal *et. al.*, 1997; Singh *et. al.* 2001; BRIS, 2007). It reports 14 species of Pteridophytes and 293 species of flowering plants as rare in families Ranunculaceae to Ceratophyllaceae.

The present study was carried out in one such corridor that stretches from Kanha National Park in Madhya Pradesh to Achanakmar sanctuary (Presently part of Achanakmar-Amarkantak Biosphere Reserve) in Chhattisgarh. This region has been inhabited by various tribal communities who have played a role in utilization and protection of forest resources.

Material and Methods : The region selected for the present study has been the major source of NTFP, where the dependency of tribal people on forests is high. The region is a continuous forest track, which forms an appropriate corridor for Protected Areas.

The seven study sites namely Kanha, Anjania, Mawai, Chada, Jagatpur, Amarkantak and Achanakmar are present in the southeastern district of Dindori, Mandla and Shahdol in Madhya Paradesh and Bilaspur in Chattisgarh. Two sites each, namely, Anjania and Mawai in Mandla district and Chada and Bajag in Dindori, while Amarkantak in Shahdol district and Achanakmar in Bilaspur district were taken as field sites. Two sites, *viz*., Kisli range in core area of Kanha Tiger Reserve in Mandla district and People's Protected Area in Jagatpur in Dindori district were taken as reference sites. Of the market sites, Achanakmar is a wildlife sanctuary, whereas all other sites were reserved forests. It has, according to the classification of Champion and Seth (1968), forests belonging to Moist Peninsular Sal forests (3C/C2) (a. High level Sal (3C/C2(i), b. Low level Sal (3C/C2(ii)), c. Valley Sal (3C/C2(iii)); Southern Tropical Moist Mixed Deciduous forest (3A/C2a); Southern Tropical Dry Deciduous forest (5A/C3); Southern dry mixed deciduous forests 5A/C3.; Southern Tropical dry deciduous Teak forests (5A/C3).

The vegetation study of each forest site was conducted by using square nested quadrats. At each market site maximum of 16 quadrats (40mX40m) and 5 plots of same size were laid in two protected sites were laid. Each quadrat of 40mX40m was subdivided into 5 sub plots of 10m X 10m for shrubs, climbers and saplings and 15 sub - plots of 1m X 1m were laid within 40m X 40m plot distributed randomly to enumerate herbaceous flora. The present communication enumerates the floristic diversity composition encountered in the sampled assessment. However, it does not include the species that were recorded outside the phytosociological studies.

The study was conducted by seasonal field surveys and assessments to cover the diversity of all major seasons. Collection of plants encountered in the quadrates and outside the quadrat, was done. The specimens collected were mostly in flowering or fruiting conditions except certain tree species. Herbarium of plant specimen was prepared using standard methods and identification was done with the help of Flora of Tamil Nadu (Henry, 1987, 1989), Flora of Tamil Nadu Carnatic (Mathew,1988), Flora of Bhopal (Oommachan, 1977), Flora of Bilaspur (Panigrahi and Murti, 1989), Flora of Jabalpur (Oommachan and Shrivastava, 1996) and Flora of M.P (Mudgal *et. al.*, 1997; Singh *et. al.,* 2001; Verma *et. al.*, 1993) and at the Herbarium of the State Forest Research Institute, Jabalpur. Few species of trees, shrubs and herbs remained unidentified Current nomenclature of the plants was confirmed from recent available literature (Bennet, 1986).

Results : A total of 372 species belonging to 248 genus and 83 families were recorded in vegetation assessment. Twenty two families recorded 5 or more species (Table 1) (Sharma, 2005). Whereas nearly 29 families recorded single genus and species in the quantitative assessment in all seven sites. Papilionaceae, Poaceae, Rubiaceae, Euphorbiaceae and Asteraceae recorded more than 15 species and therefore dominated the vegetation. There were 3 families belonging to pteridophytes, one family to gymnosperms, 10 families to monocotyledons and 69 dicotyledonous families recorded in the area under assessment. The diversity of species of trees, shrubs and herbs was found to be maximum in miscellaneous forests of Achanakmar and lowest in pure sal forests of Kanha which is protected area, however it represented mature old forests. The present communication does not include the unidentified plant species.

The study revealed 92 species of trees, 27 species of shrubs, 42 climbers, 2 climbing shrubs, 27 species of grasses, 8 of species of sedges and 182 species of herbs. Grasses recorded – species and has a possibility of addition due to existence of grasslands in more than one site (Table1)(Sharma, 2005).

Discussion : The frequency of villages and hamlets around Mawai and Amarkantak has been increasing along with other sites thus creating an overlapping impact of more than one village on surrounding forests. Amarkantak was an impacted site by anthropogenic and biotic pressures. The market site on the plateau revealed three uniformly important factors, mining, over harvesting and increased anthropogenic interference. However, the extensive plantations of *Bamboo, Acacia* and *Eucalyptus* had been done in the region, but being exotic these species alter the native diversity. **(Bhuyan, *et.al*., 2002)**

The anthropogenic interference has also allowed infestation by *Parthenium hysterophorus* and *Lantana camara* into the open areas and canopy gaps **(Rawat and Bhainsora 1999)** in Chada, Mawai and Amarkantak. Chada and Achanakmar closely followed Mawai, whereas Anjania recorded poor regeneration. Besides Sal, the four species that showed good regenerating capacity were *Syzygium cumini, Mallotus philippensis, Casearia graveolens and Diospyros melanoxylon, but these* were not present uniformly. Almost all sites are under immense biotic pressure. Livestock grazing exert cumulative effect on soil and vegetation.

Shrub layer was dominated by three species, *viz., Vernonia divergens, Colebrookea opposilifolia* and *Moghania semialata*. Except Kanha and Anjania, these three species were uniformly distributed in the sites. Achanakmar recorded more diversity of shrubs and climbers besides the three species, *Ventilago denticulata, Carissa carandas, Smilax zeylanica, Leea crispa and Embelia tsjeriam-cottam* were prominent among the shrubs in Achanakmar. Complimenting the high disturbance, herbs recorded higher values in Amarkantak along with Anjania, Chada and Mawai. Species like *Vernonia cinerea, Hyptis suaveolens, Bidens pilosa, Cassia tora* and *Rungia pectinata* dominated the herbs.

Chada recorded more climber species including *Dioscorea* sp., Lianas and Moghania sp. among others dominated the shrub layer at Achanakmar. Dense growth of *Lantana camara* indicated the past disturbances.

The herbaceous species composition showed a clear variation between the undisturbed sites taken as reference and the market sites that had open access and anthropogenic interferences as Chada recorded more herb species than Kanha both being pure sal forests. There were many species of medicinal importance and floristically indicator of healthy forest such as *Peucaedanum sp*. in Chada *Cryptolepis buchnanii* near Anjania and Kanha border, *Baliospermum montanum* in Mawai, *Smilax macrophylla, Leea macrophylla, Piper longum, Baliospermum montanum* in Achanakmar encountered during the study.

Sal forests dominate the vegetation at the study sites, except in Anjania and Achanakmar where a Teak dominated and mixed community, respectively, are dominant. The vegetation in

Achanakmar records a shift from Sal dominated to mixed community. The composition of vegetation and structure varied notably within sites and among the sites. The lower top canopy (small trees) included *Casearia graveolens*, *Cassia fistula, Miliusa tomentosa, Mallotus philippensis, Ixora arborea, Mitragyna parviflora* and *Ziziphus sp*. Species like *Schleicherea oleosa, Bridelia retusa, Dillenia pentagyna, Semecarpus anacardium* and *Mitragyna parviflora* present are characteristics of low disturbance (Pandey and Shukla, 2001).

Eilu and Obua (2005) reported 72 species belonging to 39 genera of trees and 39 families in an evergreen forest of Ghana while present study recorded nearly 79 genera in of trees in tropical moist, mixed and dry deciduous forests. Bhuyan et al., 2003 carried out study in undisturbed and different degree of disturbances reported 42 genera belonging to 28 families of trees in undisturbed areas whereas the disturbed regions recorded 36 and 16 genera belonging to 27 and 14 families in mildly and highly disturbed areas, where as the present study records 245 genus belonging to 83 families. The total tree species recorded were comparable to studies conducted in Namdapha and Chandoli national parks (Nath et al., 2005; Kanade et al., 2008).The composition of shrub align with reports of Gupta and Shukla, 199. Herbs diversity includes weedy and light preferring species which was also reported by by Khurana and Singh 2001; Stern *et. al*., 2002.

Conclusion : The composition of corridor area which is an integral link between protected sites and sub types of forests found in the region, provide important habitat and harbour species supporting the inhabitants and faunal wildlife alike. It would form a baseline to further the periodic studies and outline disturbance indicators in the area, which provide shelter to animal movements. The various tribal communities inhabiting the area are equally dependent on the vegetation for subsistence and livelihood including food and medicine. The importance thus lies in preserving the composition which includes rare medicinal plants which are vulnerable to overexploitation.

Table 11. Enumeration of Angiospermic Species Diversity

S.No.	Species	Name of Family	Habit
1.	*Andrographis paniculata* Burm. F. Wall	Acanthaceae	H
2.	*Barleria prionitis* L.	Acanthaceae	S
3.	*Blepharis madraspatensis* (L.) Heyne ex Roth.	Acanthaceae	H
4.	*Blepharis repens* (Vahl) Roth.	Acanthaceae	H
5.	*Hygrophila auriculata* (Schumach.)Heine	Acanthaceae	H
6.	*Indoneesiella echioides* (L.) Sreem.	Acanthaceae	H
7.	*Justicia betonica* L.	Acanthaceae	US
8.	*Justicia prostrata* (Cl.) Gamble.	Acanthaceae	H
9.	*Justicia quinquangularis* Koenig. Ex Roxb.	Acanthaceae	H
10.	*Justicia simplex* D.Don	Acanthaceae	H
11.	*Peristrophe bicalyculata* (Retz.) Nees.	Acanthaceae	H
12.	*Rungia elegans* Dalzell	Acanthaceae	H
13.	*Rungia pectinata* (L.) Nees.	Acanthaceae	H
14.	*Rungia repens* (L.) Nees.	Acanthaceae	H
15.	*Adiantum incisum* Forsk.	Adiantaceae	H
16.	*Adiantum philippens* L. *syn A. lunulatum* Burm.f.	Adiantaceae	H
17.	*Alangium salvifolum* (L.f.) Wang	Alangiaceae	T
18.	*Achyranthes* sp.	Amaranthaceae	H

19.	*Achyranthus aspera* L.	Amaranthaceae	H
20.	*Achyranthus bidentata* Blume	Amaranthaceae	H
21.	*Alternanthera seessilis* (L.) R. Br.	Amaranthaceae	H
22.	*Amaranthus spinosus* L.	Amaranthaceae	H
23.	*Celosia argentea* L.	Amaranthaceae	H
24.	*Gomphrena celosioides* Mart.	Amaranthaceae	H
25.	*Buchnania lanzan* Spreng.	Anacardiaceae	MT
26.	*Lannea coromandalica* (Houtt.) Merr.	Anacardiaceae	T
27.	*Mangifera indica* L	Anacardiaceae	MT
28.	*Semecarpus anacardium* L.f. Suppl.	Anacardiaceae	MT
29.	*Spondias pinnata* (L.f.)Kurtz.	Anacardiaceae	T
30.	*Miliusa tomentosa* (Roxb.) Sincl.	Annonaceae	T
31.	*Centella asiatica* (L.) Urban.	Apiaceae	H
32.	*Peucedanum nagpurens* (Clarke) Prain	Apiaceae	H
33.	*Pimpinella wallichiana* (Miq.) Gandhi	Apiaceae	H
34.	*Carissa carandus* L.	Apocynaceae	S
35.	*Carissa congesta* Wight.	Apocynaceae	S
36.	*Hemidesmus indicus* R.Br.	Apocynaceae	C
37.	*Holarrhena antidysentrica* Wall.	Apocynaceae	ST
38.	*Ichnocarpus frutescents* (L.)	Apocynaceae	C
39.	*Vallaris solancea* (Roth.) Kunthze	Apocynaceae	C
40.	*Wrightia tinctoria* R.Br.	Apocynaceae	T
41.	*Amorphophallus bulbifer* (Roxb.) Bl.	Araceae	H
42.	*Colocasia esculentam* (L.) Schoot	Araceae	H
43.	*Colocasia sp.*	Araceae	H
44.	*Phoenix sylvestris* (L.)Roxb.	Arecaceae	T
45.	*Cryptolepis buchananii* R.&S.	Ascelpiadaceae	CS
46.	*Marsdenia tennassicima* (Roxb.)Moon	Asclepiadaceae	C
47.	*Pergularia daemia* (Forsk) Choi.	Ascelpiadaceae	C
48.	*Asparagus racemosus* Willd.	Asparagaceae	C
49.	*Drimia indica* (Roxb.)J.P. Jessop.	Asparagaceae	H
50.	*Acanthospermum hispidum* D.C.	Asteraceae	H
51.	*Ageratum conyzoides* L.	Asteraceae	H
52.	*Bidens biternata* (Lour.) Merr. & Sherff.	Asteraceae	H
53.	*Bidens pilosa* L.	Asteraceae	H
54.	*Blumea lacera* (Burm.f.) D.C.	Asteraceae	H
55.	*Blumea obliqua* (L.) Druce.	Asteraceae	H
56.	*Centratherum anthelminticum* (L.) Kuntze.	Asteraceae	H
57.	*Conyza stricta* Willd	Asteraceae	H
58.	*Cyathocline purpurea* (Don) Kuntze	Asteraceae	H
59.	*Echinops echinatus* Roxb.	Asteraceae	H
60.	*Elephantopus scaber* L.	Asteraceae	H
61.	*Emilia sonchifolia* (L.) DC.	Asteraceae	H
62.	*Lagascea mollis* Cav.	Asteraceae	H
63.	*Launea acaulis* (Roxb.) Babc. ex Ker.	Asteraceae	H
64.	*Parthenium hysterophorus* L.	Asteraceae	H

65.	*Senecio nudicaulis* Buch-Ham	Asteraceae	H
66.	*Sonchus sp.*	Asteraceae	H
67.	*Spilanthes calva* DC.	Asteraceae	H
68.	*Spilanthes paniculata* DC.	Asteraceae	H
69.	*Tridax procumbens* L.	Asteraceae	H
70.	*Vernonia cinerea* (L.) Less	Asteraceae	H
71.	*Vernonia divergens* (Roxb.) Edgew.	Asteraceae	S
72.	*Vernonia sp.*	Asteraceae	H
73.	*Vicoa indica*	Asteraceae	H
74.	*Xanthium indicum* Koen.	Asteraceae	S
75.	*Dolichandrone atrovirens*	Bignoniaceae	T
76.	*Dolichandrone falcata* L.	Bignoniaceae	T
77.	*Oroxylum indicum* (L.)Venten.	Bignoniaceae	T
78.	*Radermachera xylocarpa* (Roxb.) K. Schum.	Bignoniaceae	T
79.	*Stereospermum chelonoides* (Haines) Haines	Bignoniaceae	T
80.	*Stereosperum suaveolens* D.C.	Bignoniaceae	T
81.	*Bombax ceiba* L.	Bombacaceae	LT
82.	*Cynoglossum zeylanicum* Thunb.	Boraginaceae	H
83.	*Heliotropium indicum* L.	Boraginaceae	H
84.	*Trichodesma indicum* (L.)R.Br. ex Lehm.	Boraginaceae	H
85.	*T. zeylanicum* (Burm.f.)R.Br.	Boraginaceae	H
86.	*Boswellia serata* Roxb.	Burseraceae	ST
87.	*Bauhinia malberica* Roxb.	Caesalpiniaceae	T
88.	*Bauhinia purpurea* L.	Caesalpiniaceae	T
89.	*Bauhinia racemosa* Lamk.	Caesalpiniaceae	T
90.	*Bauhinia semla* Wunderlin *syn. B. retusa* Buch-Ham. ex Roxb.	Caesalpiniaceae	T
91.	*Bauhinia vahlii* Wight & Ar.	Caesalpiniaceae	L
92.	*Bauhinia variegata* L.	Caesalpiniaceae	T
93.	*Cassia fistula* L.	Caesalpiniaceae	T
94.	*Cassia occidentalis* L.	Caesalpiniaceae	S
95.	*Cassia tora* L.	Caesalpiniaceae	H
96.	*Tamarindus indicus* L.	Caesalpiniaceae	T
97.	*Cleome viscosa* L.	Capparaceae	H
98.	*Capparis decidua* (Forsk.) Edgew	Capparaceae	S
99.	*Drymaria cordata* Willd. ex R.&S.	Caryophyllaceae	H
100.	*Polycarpaea corymbosa* Lamk	Caryophyllaceae	H
101.	*Celastrus paniculatus* Willd.	Celastraceae	C
102.	*Cassine glauca* (Rottb) O. Ktze.	Celastraceae	MT
103.	*Maytenus senegalensis* (Lamk.) Exell.	Celastraceae	S/ST
104.	*Cochlospermum religiosum* (L.) Alston	Cochlospermaceae	ST
105.	*Terminalia alata* Heyne ex Roth	Combretaceae	T
106.	*Terminalia arjuna* (DC) Wright & Arn.	Combretaceae	T
107.	*Terminalia belirica* (Gaertn) Roxb.	Combretaceae	T
108.	*Terminalia chebula* Retz	Combretaceae	T

109.	*Commelina benghalensis* L.	Commelinaceae	H
110.	*Commelina sps.*	Commelinaceae	H
111.	*Cyanotis fasciculata* (Heyne. Ex Roth.) Schult.	Commelinaceae	H
112.	*Convolvulus macrophyllus* Sieb. ex Spreng.	Convolvulaceae	H
113.	*Evolvulus alsinoides* L	Convolvulaceae	H
114.	*Ipomoea nil (*L.) Ker-Gawl	Convolvulaceae	C
115.	*Ipomoea pestigris* L.	Convolvulaceae	C
116.	*Ipomoea quamoclit* L.	Convolvulaceae	C
117.	*Merremia emarginata* (Burm.F.) Hall.	Convolvulaceae	H
118.	*Costus speciosus* L.	Costaceae	H
119.	*Citrullus sp.*	Cucurbitaceae	H
120.	*Mukia madraspatana* (L) M.Roomer.	Cucurbitaceae	H
121.	*Cyperus brevifolius* (Rottb.) Hassk.	Cyperaceae	Sg
122.	*Cyperus iria* L.	Cyperaceae	Sg
123.	*Cyperus kyllingia* Endl.	Cyperaceae	Sg
124.	*Cyperus niverus* Retz.	Cyperaceae	Sg
125.	*Cyperus pygmaea*us Rottb.	Cyperaceae	Sg
126.	*Cyperus pygmaeus* Rottb.	Cyperaceae	Sg
127.	*Cyperus sps.*	Cyperaceae	Sg
128.	*Cyperus triceps Endl.*	Cyperaceae	Sg
129.	*Dillenia pentagyna* Roxb.	Dilleniaceae	ST
130.	*Dioscorea belophlla* Voight ex Haines	Dioscoreaceae	C
131.	*Dioscorea bulbifera* L.	Dioscoreaceae	C
132.	*Dioscorea hispida D*enns.	Dioscoreaceae	C
133.	*Dioscorea oppositifolia* L.	Dioscoreaceae	C
134.	*Dioscorea pentaphylla* L.	Dioscoreaceae	C
135.	*Dioscorea pubera* Blume	Dioscoreaceae	C
136.	*Dioscorea sp.*	Dioscoreaceae	C
137.	*Shorea robusta* Gaertn. f.	Dipterocarpaceae	T
138.	*Diospyros melanoxylon* Roxb.	Ebenaceae	T
139.	*Diospyros Montana* Roxb.	Ebenaceae	T
140.	*Cordia dichotoma* G.Forster	Ehretiaceae	T
141.	*Ehretia canarensis* (CL.) Gamble.	Ehretiaceae	T
142.	*Ehretia laevis* Roxb.	Ehretiaceae	T
143.	*Eriocaulon cinereum* R.Br.	Eriocaulaceae	H
144.	*Eriocaulon quinquangulare* L.	Eriocaulaceae	H
145.	*Acalypha indica* L.	Euphorbiaceae	H
146.	*Antidesma acidum* Retz.	Euphorbiaceae	S
147.	*Baliospermum montanum* (Willd) Muell	Euphorbiaceae	S
148.	*Bridelia retusa* (L.)Spreng.	Euphorbiaceae	T
149.	*Bridelia squamosa.* (Lamk.) Gehrann.	Euphorbiaceae	T
150.	*Cleistathus collinus* Benth.	Euphorbiaceae	T
151.	*Emblica officinalis* Gaertn.	Euphorbiaceae	T
152.	*Euphorbia chamasyce* L.	Euphorbiaceae	H
153.	*Euphorbia hirta* L.	Euphorbiaceae	H

154.	*Euphorbia sp.*	Euphorbiaceae	H
155.	*Glochidion multiloculare* Voigt.	Euphorbiaceae	US
156.	*Glochidion velutinum* Wight	Euphorbiaceae	T
157.	*Jatropha curcas* L.	Euphorbiaceae	T
158.	*Kirganelia reticulata* (Poir.) Baill.	Euphorbiaceae	T
159.	*Mallotus philippensis* (Lam) Muell. Arg.	Euphorbiaceae	T
160.	*Phyllanthus amarus* S.& T.	Euphorbiaceae	H
161.	*Phyllanthus amarus* Schumacher	Euphorbiaceae	H
162.	*Phyllanthus debilis* Klein ex Willd.	Euphorbiaceae	H
163.	*Phyllanthus maderaspatensis* L.	Euphorbiaceae	H
164.	*Phyllanthus virgatus* G. Forster	Euphorbiaceae	H
165.	*Flacourtia indica* (Burm. F.) Merr.	Flacourtiaceae	ST
166.	*Canscora diffusa* (Vahl.) R.Br. ex Roem. & Schult.	Gentianacea	H
167.	*Canscora decussata* (Roxb) J.A.	Gentianaceae	H
168.	*Curculigo orchioides* Gaertn.	Hypoxidaceae	H
169.	*Hyptis suaveolens* (L.) Poit.	Lamiaceae	H
170.	*Leucas mollissima* (Walt) R.Br.	Lamiaceae	H
171.	*Leonotis nepatifolia* (L.) R.Br.	Lamiaceae	H
172.	*Leucas aspera* (Willd.) Link	Lamiaceae	H
173.	*Orthosiphon pallidus* Royle ex Benth.	Lamiaceae	H
174.	*Colebrookea oppositifoliiia* J.E. Smith	Lamiaceae	S
175.	*Lagerstroemia parviflora* Roxb.	Lathyraceae	T
176.	*Rotala indica*(Willd.) Koehne	Lathyraceae	H
177.	*Rotala rotundifolia* (Roxb.)Koehne	Lathyraceae	H
178.	*Woodfordia fruticosa* (L) Kurz.	Lathyraceae	S
179.	*Litsea glutinosa* (Lour.) Robinson	Lauraceae	T
180.	*Careya arborea* Roxb.	Lecythidaceae	T
181.	*Leea asiatica* (L.) Ridsdale.	Leeaceae	C
182.	*Leea macrophylla* Roxb.ex.Horn.	Leeaceae	C
183.	*Gloriosa superba* L.	Liliaceae	C
184.	*Chlorophytum tuberosum* Baker.	Liliaceae	H
185.	*Scilla hyacinthina (Roth)Macbr.*	Liliaceae	H
186.	*Strychnos potatorum* L.f.	Loganiaceae	ST
187.	*Dendrophthoe falcata* (L.f.) Etting.	Loranthaceae	T
188.	*Lygodium flexuous* (L.) Sw.	Lygodiaceae	C
189.	*Hiptage benghalensis* (L.) Kurz	Malpighiaceae	C
190.	*Abelmoschus crinitus* Wall.	Malvaceae	H
191.	*Abelmoschus manihot (*L.) Medik.	Malvaceae	H
192.	*Hibiscus subdariffa* L.	Malvaceae	H
193.	*Kydia calycina* Roxb.	Malvaceae	LT
194.	*Malvestrum coromandelianum* (L) Gaertn	Malvaceae	H
195.	*Pavonia zeylanica* (L) Cav.	Malvaceae	H
196.	*Sida acuta* Burm f.	Malvaceae	H
197.	*Sida cordata* (Burm.f.) Borssum	Malvaceae	H
198.	*Sida cordifolia* DC	Malvaceae	H

199.	*Sida rhombifolia* DC	Malvaceae	H
200.	*Urena lobata* L.	Malvaceae	H
201.	*Martynia annua* L.	Martyniaceae	H
202.	*Azadirachta indica* A. Juss.	Meliaceae	MT
203.	*Melia azadarach* L	Meliaceae	MT
204.	*Soymida fabrifuga* (Roxb) A. Juss.	Meliaceae	MT
205.	*Cissampelos pariera* L.	Menispermaceae	C
206.	*Cocculus hirsutus* L. Dielst.	Menispermaceae	C
207.	*Acacia auriculiformis* A.Cunn. ex Benth.	Mimosaceae	T
208.	*Acacia catechu* Willd.	Mimosaceae	T
209.	*Acacia senegal* (L.)Willd.	Mimosaceae	T
210.	*Albizia lebbeck* (L.) Benth.	Mimosaceae	T
211.	*Albizia procera* Benth.	Mimosaceae	T
212.	*Xylia xylocarpa* (Roxb.)Taub.	Mimosaceae	T
213.	*Mollugo cerviara* Ser.	Molluginaceae	H
214.	*Mollugo pentaphylla* L.	Molluginaceae	H
215.	*Ficus benghalensis* L.	Moraceae	T
216.	*Ficus gibbossa* Blume	Moraceae	T
217.	*Ficus hispida* Lf.	Moraceae	T
218.	*Ficus microcarpa* L.f.	Moraceae	T
219.	*Ficus racemosa* L.	Moraceae	T
220.	*Ficus religiosa* L.	Moraceae	T
221.	*Moringa oleifera* Lamk.	Moringaceae	T
222.	*Embelia tsjeriam cottam* D.C.	Myrsinaceae	S
223.	*Eucalyptus sp.*	Myrtaceae	T
224.	*Psidium guajava* L.	Myrtaceae	T
225.	*Syzygium cuminii* (L.) Skeels	Myrtaceae	T
226.	*Boerhaavia diffusa.* L.	Nyctaginaceae	H
227.	*Nyctanthus arbortristis* L	Nyctanthaceae	T
228.	*Schrebera sweitinioides* Roxb.	Oleaceae	T
229.	*Ludwigia octovalvis* (Jacq.) Roem.	Onagraceae	H
230.	*Ophioglossum naudicaule* L.f.	Ophioglossaceae	H
231.	*Abrus precatorius* L.	Papilionaceae	C
232.	*Aeschynomene indica* L	Papilionaceae	H
233.	*Alysicarpus hamosus* Edge	Papilionaceae	H
234.	*Alysicarpus monilifer* (L.) DC.	Papilionaceae	H
235.	*Alysicarpus rugosus* Willd. DC.	Papilionaceae	H
236.	*Alysicarpus sp.*	Papilionaceae	H
237.	*Alysicarpus vaginalis* (L) DC.	Papilionaceae	H
238.	*Anogeissus latifolia* (Roxb.) ex. Wall.	Papilionaceae	T
239.	*Anogeissus pendula* (Edgew) A.Juss.	Papilionaceae	T
240.	*Argemone maxicana* L.	Papaveraceae	H
241.	*Atylosia scarabaeoides* (L) Benth.	Papilionaceae	H
242.	*Biophytum reinwardtii* (Zuco) Klotz.	Oxalidaceae	H
243.	*Biophytum sensitivum* DC.	Oxalidaceae	H
244.	*Butea monosperma* (Lam.) Toub.	Papilionaceae	ST

245.	*Butea superba* Roxb.	Papilionaceae	C
246.	*Clitoria ternatea* L.	Papilionaceae	H
247.	*Crotolaria albida* Heyne ex Roth.	Papilionaceae	C
248.	*Crotolaria medicaginea* Lam.	Papilionaceae	H
249.	*Crotolaria prostrate* Rottl.ex Willd.	Papilionaceae	H
250.	*Crotolaria sp.*	Papilionaceae	H
251.	*Crotolaria spectabilis* Roth.	Papilionaceae	H
252.	*Dalbergia latifolia* L.	Papilionaceae	MT
253.	*Dalbergia paniculata* Roxb	Papilionaceae	MT
254.	*Dalbergia sissoo* Roxb.	Papilionaceae	T
255.	*Desmodium gangeticum* (L) D.C.	Papilionaceae	H
256.	*Desmodium microphyllum* (Thunb) D.C.	Papilionaceae	US
257.	*Desmodium pulchellum* D.C.	Papilionaceae	US
258.	*Desmodium sp.*	Papilionaceae	US
259.	*Desmodium triflorum* (L) D.C.	Papilionaceae	H
260.	*Desmodium velutinum* (Willd.)DC.	Papilionaceae	US
261.	*Flemingia bracteata* (Roxb.) Wight	Papilionaceae	S
262.	*Flemingia fruticulosa* Wall.ex Benth.	Papilionaceae	US
263.	*Flemingia macrophylla*(Willd.)Kuntze ex Merrill	Papilionaceae	C
264.	*Flemingia nana* Roxb.	Papilionaceae	S
265.	*Flemingia semialata* Roxb. ex Ait.	Papilionaceae	S
266.	*Fumaria indica* (Hassk.) Pugsley	Papaveraceae	H
267.	*Indigofera cassoides* Rottl.ex DC.	Papilionaceae	C
268.	*Indigofera linifolia* (L. Retz.)	Papilionaceae	H
269.	*Indigofera linnae* Ali	Papilionaceae	H
270.	*Indigofera prostrate* L.	Papilionaceae	H
271.	*Indigofera tinctoria* L.	Papilionaceae	US
272.	*Melilotus indica* (L) All.	Papilionaceae	T
273.	*Millettia extensa* (Benth) Baker.	Papilionaceae	T
274.	*Ougeinia oojeinensis* (Roxb) Hocrh.	Papilionaceae	T
275.	*Oxalis corniculata* L.	Oxalidaceae	H
276.	*Phaseolus sp.*	Papilionaceae	H
277.	*Pongamia pinnata* (L.) Pierre	Papilionaceae	T
278.	*Pterocarpus marsupium* Schreb.	Papilionaceae	T
279.	*Pueraria tuberosa* (Roxb. Ex. Willd) DC.	Papilionaceae	C
280.	*Tephrosia purpurea* (L.) Pers.	Papilionaceae	H
281.	*Uraria picta* L.	Papilionaceae	H
282.	*Zornia gibbosa* Span.	Papilionaceae	H
283.	*Pinus sp.*	Pinaceae	T
284.	*Piper longum* L.	Piperaceae	H
285.	*Alloteropsis cimicina* (L) Stap	Poaceae	G
286.	*Arthraxon cillaris* P. Beauv.	Poaceae	G
287.	*Arthraxon lancifolius* (Trin) Hochst.	Poaceae	G
288.	*Arthraxon sp.*	Poaceae	G
289.	*Chrysopogon fulvus* (Spreng.) Choiv.	Poaceae	G

290.	*Cyanodon dactylon* (L) Pers.	Poaceae	G
291.	*Dendrocalamus strictus* (Roxb) Nees.	Poaceae	G
292.	*Digitaria abludens* (R.S.) Veldk. *D. granularis* (Trin. & Spreng.) Henr.	Poaceae	G
293.	*Digitaria ciliaris* (Retz.) Keeler	Poaceae	G
294.	*Echinochloa crusgalli* (L.) P.Beauv.	Poaceae	G
295.	*Eragrostiella bifaria* (Vahl) Bor.	Poaceae	G
296.	*Eragrostis tenella* (L.)P. Beauv.ex R.&S.	Poaceae	G
297.	*Eragrostis tenuifolia* Hochst	Poaceae	G
298.	*Eragrostis unioloides* (Retz.) Nees	Poaceae	G
299.	*Fuirena ciliaris* (L.)Roxb.	Poaceae	G
300.	*Imperata cylindrica* (L) R. Beauv	Poaceae	G
301.	*Ischaemum indicum* (Houtt) Merr.	Poaceae	G
302.	*Panicum brevifolium* L.	Poaceae	G
303.	*Thysanolaena maxima* (Roxb) O Ktze.	Poaceae	G
304.	*Thalictrum foliolosum* DC	Ranunculaceae	H
305.	*Ziziphus oenoplia* (L) Mill.	Rhamnaceae	C
306.	*Ventilago denticulata* Willd.	Rhamnaceae	L
307.	*Ziziphus mauritiana Lam. Var. Fruticosa* (Haines) Sebast. & Henr.	Rhamnaceae	S
308.	*Ziziphus nummularia* (Burm.f) Wt. & Arn.	Rhamnaceae	S
309.	*Ziziphus xylopyrus* (Retz.) Willd.	Rhamnaceae	C
310.	*Ziziphus rugosa* Lamk.	Rhamnaceae	CS
311.	*Rubia cordifolia* Roxb. ex Fleming	Rubiaceae	C
312.	*Hedyotis auriculata* L.	Rubiaceae	H
313.	*Catunaregam spinosa* (Thunb.)Tirv.	Rubiaceae	ST
314.	*Catunaregam uliginosa* (Stapf.) Tirv.	Rubiaceae	ST
315.	*Gardenia gummifera* L.f.	Rubiaceae	T
316.	*Haldina cordifolia* (Roxb.) Ridst.	Rubiaceae	T
317.	*Hedyotis pinifolia* Wall. Ex G.Don.	Rubiaceae	H
318.	*Hedyotis sp.*	Rubiaceae	H
319.	*Hymenodictyon oriense* (Roxb.)Mabb.	Rubiaceae	T
320.	*Ixora arborea Roxb.* J.E. Smith	Rubiaceae	ST
321.	*Mitragyna parviflora* (Roxb.) Korth.	Rubiaceae	T
322.	*Oldenlandia corymbosa* L.	Rubiaceae	H
323.	*Pavetta indica* Roxb.ex J.E.Smith	Rubiaceae	S
324.	*Spermacoce hispida* L.	Rubiaceae	H
325.	*Spermacoce pusilla* Wall.	Rubiaceae	H
326.	*Aegle marmelos* L.	Rutaceae	MT
327.	*Caesaria elliptica* Willd.	Salicaceae	ST
328.	*Caesaria graveolens* Dalz.	Salicaceae	ST
329.	*Salix tetrasperma* Roxb.	Salicaceae	T
330.	*Cardiospermum helicacabum* L	Sapindaceae	H
331.	*Schleichera oleosa* (Lour.) Oken.	Sapindaceae	MT

332.	*Madhuca indica* Gmel.	Sapotaceae	T
333.	*Lindenbergia indica* (L.)Vatke	Scrophulariaceae	H
334.	*Lindernia ciliata* (Colsm.) Pennell	Scrophulariaceae	H
335.	*Lindernia crustacea* (L.) F. Muller.	Scrophulariaceae	H
336.	*Lindernia nummularifolia* (D.Don)) Wettst.	Scrophulariaceae	H
337.	*Scoparia dulcis* L.	Scrophulariaceae	H
338.	*Ailanthus excelsa* Roxb.	Simaroubaceae	LT
339.	*Smilax zeylanica* L.	Smilacaceace	C
340.	*Physalis minima* L.	Solanaceae	H
341.	*Solanum surratense* Burm. F.	Solanaceae	H
342.	*Solanum violaceum* Ortega	Solanaceae	H
343.	*Solanum virginianum* L.	Solanaceae	H
344.	*Melochia corchorifolia*L.	Sterculiaceae	H
345.	*Waltheria indica* L.	Sterculiaceae	H
346.	*Sterculia urens* Roxb.	Sterculiaceae	MT
347.	*Helicteres isora* L	Sterculiaceae	S
348.	*Corchorus aestuans* L	Tiliaceae	H
349.	*Corchorus trilocularis* L.	Tiliaceae	H
350.	*Triumfetta pilosa* Roth.	Tiliaceae	H
351.	*Triumfetta rhomboidea* Jacq.	Tiliaceae	H
352.	*Grewia tilifolia* Vahl.	Tiliaceae	MT
353.	*Grewia hirsute* Vahl.	Tiliaceae	S
354.	*Girardinia diversifolia* (Link.)Fris	Urticaceae	H
355.	*Clerodendrum indicum* (L.) kuntze.	Verbenaceae	S
356.	*Clerodendrum serratum* (L.) Moon.	Verbenaceae	S
357.	*Gmelina arborea* Roxb.	Verbenaceae	T
358.	*Lantana camara L. var. aculeata* (L.) M.	Verbenaceae	S
359.	*Tectona grandis* L.f.	Verbenaceae	T
360.	*Verbena officinalis* L.	Verbenaceae	H
361.	*Ampelocissus latifolia* (Roxb.) Planch.	Vitaceae	C
362.	*Ampelocissus tomentosa* (Heyne ex Roth) Planch.	Vitaceae	C
363.	*Cayratia pedata* (Lamk.) Juss.ex.Gagnep.	Vitaceae	C
364.	*Vitis latifolia*	Vitaceae	C
365.	*Vitis vinifera*	Vitaceae	C
366.	*Curcuma angustifolia* Roxb.	Zingiberaceae	H
367.	*Curcuma aromatica* L.	Zingiberaceae	H
368.	*Globba bulbifera* L.	Zingiberaceae	H
369.	*Zingiber capitatum*Roxb.	Zingiberaceae	H
370.	*Zingiber roseum* (Roxb) Boohm.	Zingiberaceae	H
371.	*Zingiber rugosa* Lamk.	Zingiberaceae	H
372.	*Tribulus terrestris* L.	Zygophyllaceae	H

H-Herb, S-Shrub, C-Climber, US- undershrub, St-Small Tree, MT- Medium sized Tree, Tree- Tree, G-Grass, Sg-Sedg

References :

Levenson, J.B. (1981) Woodlots as biogeographic islands in south-eastern Wisconsin. In: R.L. Burgers and D.M. Sharpe (ed.) forest island Dynamics in man dominated Landscapes, Springer. Verlag, New York, pp. 13-39.

Henry, A.N., Kumari, G.R., and Chitra, V. (1987) Flora of Tamil Nadu, India Ser. 1, Vol. 3, Botanical Survey India. Coimbatore.

Bennet, S. S. R. (1986) Name changes in flowering plants of India and adjacent regions. Trisear Publishers.

Mathew, K. M. (1988) Furhter illustrations on the Flora of the Tamil nadu Carnatic. Vol. IV .The Rapinat Herbarium, St. Joseph's College Tiruchirapalli, India.

Mudgal, V., Khanna, K. K. and Hajra, P. K. (1997) Flora of Madhya Pradesh Vol.II. Botanical survey of India. Calcutta.

Oomachan, M. (1977) Flora of Bhopal. J. K. Jain Brothers, Bhopal.

Oomachan, M. and Shrivastava, J. L. (1996) Flora of Jabalpur. Scientific Publishers, Jodhpur. Poti, P.S. (1993) Rajaji: The Indian People's Tribunal on environmental and Human Rights. Bombay.

Pearce, D., Barbier, E., Markandya, A., Barrett, S., Turner, R.K. and Swanson, T. (1991a) Blueprint 2: Greening world economy. Earthscan publications Ltd., London.

Raven, P.H. (1987) We are killing our world: The Global ecosystem crisis. MacArthur Foundation, Chicago.

Rawat, G. S. and Pawar, H. S. (1990) Wildlife conservation in Himalaya Problems and prospects. In: G.S. Rawat *et. al.* (eds). *Proceeding of the High Altitute Ecology workshop* July 3-5 1990. World Institute Institute, Dehradun.

Rodgers, W. A., Bennet, S. S. R. and Swarkar V. B. (1986) Fire and vegetation structure is Sal forests, Dehradun. *Tropical Ecology,* 27: 49-61.

Simberloff, D., and N. Gotelli. (1984) Effects of insularization on plant species richness in the prairie forest ecotone. *Biological Conservation. 29*: 27-46.

Tabarelli, Marcelo da Silva, Jose Maria Cardosa and Gascon, Claude. (2004) Forest fragmentation, synergisms and the impoverishment of neotropical forests. *Biodiversity and conservation,* 13(7): 14-1425.

Tolba, M. K. (1992) Saving our plant. C hapman and Hall, London

Weaver, M., and Kellman, M. (1981) The effects of forest fragmentation on woodlot tree biotas in southern Ontario. *J. Biogeogr.* 199-210.

Verma, D. M., Balakrishnan, N. P. and Dixit, R. D. (1993) Flora of Madhya Pradesh Vol. I. Botancal Survey of India, Calcutta

WRI/1UCN/UNEP. (1992) Global biodiversity strategy. WR1/IUCN/UNEP, Washington D.C.

Anon., (1977) IUCN threatened plants committee: List of rare, threatened and endemic plants in Europe. *Nature and Environment Science,* No.14, Strasbourg.

Kanade, R, M. tadwalkar, C.Kushalappa and A. Patwardhan. 2008. Vegetation composition and woody species diversity at Chandoli national park, northern Western Ghats, India. *Curr. Sc*. 95(5): 637-646.

Nath, P.C., A. Arunachalam, M.L.Khan, K.Arunachalam and A.R.Barbhuiya. 2005. Vegetation analysis and tree population structure of tropical wet evergreen forests in and around Namdapha national

Park, northeast India. *Biodiversity and Conservation,* 14: 2109-2136.

Bhuyan, Putul, M.L.Khan and R.S.Tripathi. 2003. tree diversity and population structure in undisturbed and human impacted stands of tropical wet evergreen forest in Arunachal Pradesh, eastern Himalayas, India. *Biodiversity and Conservation,* 12: 1753-1773.

Eilu, G. and J. Obua. 2005. Tree condition and natural regeneration disturbed sites of Bwindi Impenetrable Forest National Park, southwestern Uganda. *Tropical Ecology*, 46(1): 99-111.

Gupta, O.P. and R.P.Shukla. 1991. The composition and dynamics associated plant communities of sal plantations. *Tropical Ecology.* 32(2): 296-309.

Anon. 2007. Achanakmar-Amarkantak Biosphere Reserve (BRIS) Vol. I, Tropical Forest Research Institute, Jabalpur. 1-134.

Sharma, R. 2005. Studies on some threatened plant diversity of Madhya Pradesh. Ph.D. Thesis. Rani Durgavati University, Jabalpur.

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

काव्य चिंतन की प्रक्रिया में मानवीय मूल्यों की अवधारणा

डॉ. ममता व्ही. त्रिपाठी
(HO.D. of Art Department)

परिवर्तन और विकास प्रकृति का मूल गुण धर्म है। क्षण–प्रतिक्षण नित्य–प्रति जीवन व जीवनेतर–चहुं–आयामों में परिवर्तन की प्रक्रिया सतत् गतिशील है। यह बात अलग है कि कुछ चीजों, प्राणियों आदि में मंद गति से परिवर्तन होता है तो किन्हीं चीजों में और प्राणियों में तीव्र गति से। तीव्र गति से परिवर्तन और विकास को प्राप्त करने वाले प्राणियों में मनुष्य की गणना सर्वप्रथम की जाती है। मानवीय विकास के पीछे मनुष्य की चिंतनशीलता और विवेक–बुद्धि ही आधारभूत रूप में क्रियान्वित रही है। वर्तमान मानवीय जीवन को देखते हुए संदेह होने लगता है कि मनुष्य प्रायः ऐतिहासिक काल या उससे पूर्व में पुशवत् रहा है अथवा किसी स्तर पर जीवन जीने वाला, अस्तु, यह बात निर्विवादित है कि मनुष्य का सम्पूर्ण विकास उसके मनस्तत्व और परस्पर सहयोगिता की प्रबलता से ही हुआ है। भिन्न–भिन्न जीव–जन्तुओं के बीच रहते हुए भी मनुष्य की जीवन प्रणाली और कार्यक्षेत्र उन सभी प्राणियों से इतनी भिन्नता रखता है कि साफ स्पष्ट है।

निःसंदेह मनुष्य के चिंतन और उसके कर्म के पीछे उद्देश्य रूप में मानवीयता विद्यमान रहा करती है, दूसरे शब्दों में मानव के समाज निर्माणात्मक कार्यकलाप में मानवता ही एक महत् उद्देश्य के रूप में अन्तर्भूत रहती है। मानव–कर्म कर्ता जिस भाव से परिचालिक होकर कार्यरत होता है, वह भाव उसकी मानवता का द्योतक है। मानवता सामान्यतः उस भाव को कहेंगे, जिसमें मानव–मात्र की ही मंगलकामना निहित हो। यह मानव मन का वह भाव है, जिसके द्वारा ''स्व'' से ''पर'' और आत्मा से ''पर–आत्म'' तक देशकाल निर्पेक्ष रूप से सबकी हित साधना के लिए अपनी शक्तियों का उपयोग करता है। यह उपयोग केवल भौतिक और उपयोग वस्तु के सृजन तक ही सीमित नहीं करता वरन् मानव की संवेदनाएं उसके मन और आत्मा के उद्देश्य भावों, ऊर्ध्व–आयामें के स्पर्श द्वारा आध्यात्मिकता तक परिव्याप्त है।

भाषा में बहुत से शब्द अमूर्त होते है अर्थात् उन्हें भावनाओं से सम्बद्ध किया जाता है। इसी प्रकार मानव का शक भी अमूर्त है, वैसे मूल्य की दृष्टि से मानवता की अर्थवत्ता को कई आयामों से समझा जा सकता है, परन्तु विशेष रूप से वह किसी भी अन्य मानव–मूल्य की भांति स्वयं में एक मूल्य है। वही समस्त मानव मूल्य की समग्रता भी है। मानवता स्वयं में वह चरम मूल्य है जिसके अंग, धर्म, दर्शन, सभ्यता, संस्कृति इत्यादि कहलाते है क्योंकि चरम मूल्य उन वस्तुओं, स्थितियों, व्यवहारों अथवा उनके विशिष्ट पहलुओं को कहते है जो मनुष्य की सार्वभौम संवेदना को आवेगात्मक अर्थवत्ता लिए हुए दिखायी देते है। सारांशतः मानवीयता स्वयं मूल्य तो है ही, चरम मूल्यों के रूप में भी मानवीयता एक ऐसा भाव है, जिसके परिप्रेक्ष्य में मनुष्य सम्पूर्ण मानवीय नियति से सम्बद्ध रहता है। मानवीयता अथवा मनुष्यता का सीधा सम्बन्ध संस्कारों से होता है। जब चरम–मूल्य के रूप में मानवीयता को देखते है, तो उसमें सभी मानवीय मूल्यों की सम्बद्धता अनिवार्य होती है।

''यदि प्रयोजन की अनुकूलता में अच्छाई है तो स्पष्ट ही प्रयोजन में अच्छाई माननी होगी; ऐसे ही अपनी व्यापार कुशलता में यदि अच्छाई है तो व्यापार में भी साक्षात् अथवा परम्परागत् अच्छाई माननी होगी, वस्तुतः इन दोनों ही मतों में अच्छाई का अर्थ उपयुक्तता ठहरता है। उपयुक्तता साध्य सापेक्ष अथवा उप कार्य सापेक्ष अच्छाई होती है। साधना के रूप में कोई चीज अच्छी हो, उसके लिए किसी अन्य चीज को साध्य के रूप में अच्छा होना आवश्यक है, अर्थात् मानवीय प्रयोजन और उसके साधन अच्छाई के विषय सिद्ध होते है।

काव्य चिंतन की प्रक्रिया में मानवीय मूल्यों की अवधारणा :– काव्य अथवा साहित्य, सभी मूल्यों का जीवन की व्यवहारिकता में अवलोकन करता है। काव्य–चिंतन की प्रक्रिया में विशेष रूप से काव्य विशिष्ट व्यक्तियों के अध्ययन–अध्यापन एवं चर्चा–परिचर्चा के विशेष संदर्भो से अलग मूल्यों को जन सामान्य के लिए शेय बनाता है। किसी वैज्ञानिक, दार्शनिक, समाजशास्त्री या सामान्य व्यक्ति की तुलना में एक कवि का दायित्व अत्यन्त व्यापक होता है। किसी एक विशेष व्यक्ति से सम्बद्ध, व्यक्ति विशेष या व्यक्ति विशेषों की अपेक्षा कवि अथवा साहित्यकार का दायित्व सम्पूर्ण मानव संस्कृति के मूल्यात्मक परिवर्धन को संभालना होता है। ''व्यापकतम रूप में साहित्य प्रत्येक आत्यन्तिक प्रकार की वास्तविकताओं के महान व्यक्तियों

पर प्रभावों और महान व्यक्तियों की उन वास्तविकताओं के प्रति प्रतिक्रियाओं का लेखा–जोखा है।[3] ये महान व्यक्ति वे साहित्यकार है जो जीवन की वास्तविकता के दृष्ट होते है। आम लोगों की अपेक्षा साहित्य सृजन की संवेदनशीलता अत्यन्त सघन होती है। इसीलिए वह जीवन की अटल गहराईयों में निरंतर अवगाहनरत रहता है।'' सम्पूर्ण साहित्य का इतिहास इसी बात की पुष्टि करता है कि जब–जब मूल्य रूढ़ होकर किसी भी युग की नयी दृष्टि और नये यथार्थ के प्रति उदासीन एवं निरूपयोगी हुए है तब–तब साहित्यकार ने इस प्रकार की स्थिर रीतियों से संघर्ष किया है। उसने अपने दायित्व को पहचाना है। इस प्रकार साहित्यकार का अनुभूत सत्य होता है वह बदलते परिवेश में कलाकार की चेतना के प्रसार का सूचक होता है। उसमें ज्ञान–विज्ञान के प्रभावों के असीम क्षेत्र, पुराने मूल्यों के विघटन की जानकारी तथा नयी संवेदना और अनुभूति की ग्रहणशीलता रहती है। मूल्य का प्रश्न वास्तव में साहित्य के अभिप्राय, उपलब्धि और उद्देश्य से बंधा रहता है।

काव्य चिंतन की प्रक्रिया को हम दो आयामों में देख सकते है – सर्वप्रथम रूप से काव्य सामाजिक विकास की चेतना से निर्मित होता है और द्वितीय रूप से वह ह्रदय की रागमयी सहज उच्चस्तरीय और स्वयं प्रकाश्य धारा है। सर्वप्रथम काव्य का उपयोग स्वाभाविक है और इसी उपयोग की प्रेरणा से प्रोत्साहन मिलता है। द्वितीय अवस्था में मनुष्य के अन्तर्मन की सहज अभिव्यक्ति का संदर्भ है। उस समय कवि अपनी प्रसन्नता आह्लाद और विषाद को व्यापक रूप देने को आतुर होता है। व्यापकता से आशय है कि वह अपनी आह्लादमयी उपलब्धि में विभिन्न में बांट दे, उसका मानस कोलाहल अभिव्यक्ति के पूर्वा पर दोनों समयों में विभिन्न मूल्यों का संघात होता है, वे सभी संघठित मूल्य बरसाती बादलों की भांति घनीभूत होकर एक प्रक्रिया में आते है तथा साहित्य रूपी धारा की वर्षा कर देते है, यहां उपयोगिता की ही अजस वर्षा होती है। प्रथम स्थिति की अपेक्षा यह वर्षा अधिक प्रेषणीय और लोक स्वभाव के अनुकूल होती है। सामयिक रचनाएं अपेक्षाकृत संकुचित परिवेश की आत्मजा है।'' और ये उदारमना व्यापक और लोकसप्ताह के निकट की अनुभूतियों से आकार पाती है। कवि आम समाज में पैदा होकर भी विशिष्ट मानव होता है। उसकी प्रतिभा विचारणीय होती है। उसकी अन्तर–दृष्टि की प्रखरता में अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों में यथार्थ को देखने की शक्ति निःसंदेह विद्यमान होती है। वह इसी दृष्टि के तारतम्य में प्राणी और वस्तु–जगत् के मूल्य को उद्घाटित करता है। काव्यकार का अंतर विज्ञान और दर्शन के तत्वों से ही आवश्यकतानुरूप परिचित होता रहता है। इसीलिए वह जीवन–मूल्यों का अनुसंधान करता रहता है। साहित्यकार की आत्मानुभूति दोहरे स्तर की होती है, पहले स्तर की अनुभूति में वह समस्त युग–बोध की सम्वेदना से गुजरता है और दूसरे स्तर पर उपलब्ध मूल्यों को अपनी कृति में समन्वित करता है। कोई भी कवि या साहित्यकार वास्तव में जीवन–मूल्यों का जहां दृष्ट होता है तो दूसरी ओर सृष्टा के रूप में भी सामने आता है। वह जीवन के महत्व को प्रेय अथवा व्यवहार के स्तर पर ही लेकर चलता है। यही कारण है कि साहित्य में वर्णित जीवन–मूल्य युग–युगान्तर तक मानव–प्रेरणा का विषय बन जाते है।

पश्चिम के कला चिंतकों में (व्यवहारवादी) आनंद–वादियों और भाव–वादियों ने इसी रस अथवा आनंद की कविता को भौतिक रूप में मान्य किया है। लेकिन यह तय है कि पश्चिम के ये चिंतक सांस्कृतिक मूल्यों के पक्षपाती नहीं है। वे निहायती रूप से भौतिक मूल्यों का समर्थन करने वाले है। शुद्ध साहित्य इस प्रकार आनंद दृष्टि का विरोधी है। भारतीय साहित्य के चिंतन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को विशेष स्थान दिया गया है। आ. भामह के अनुसार, ''काव्य, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का साधक एवं कला नेपुण्य की विधाता तथा प्रीति का कर्ता है।

ह्रदयाल्हादकर कश्चिदानन्द जनकः
काव्यामृतवसेतनान्तश्चमत्कारो।

इस प्रकार कतिपय चिंतकों की यही धारणा रही है कि सभी मानव मूल्य काव्य व्यवहार में आने पर आनंद में पर्यवसित हो जाते है। सभी जीवन मूल्यों को निहायत मूल्य रूप से जानने या बोध करने पर मानव के विवेक का विकास होता है, परन्तु साहित्य के क्षेत्र में वही जीवन–मूल्य आनंद की उपलब्धि का कारण बनते है। (मूल्य) वास्तव में सांस्कृतिक भूमिका पर या उससे गहरी शुद्ध मानवीय भूमिका पर प्रतिष्ठित है, जो आनंद और कल्याण का मिलन तीर्थ है। जहां नैतिकता एवं सांस्कृतिकता, वैयक्तिकता तथा सामाजिकता, भौतिकता और आध्यात्मिकता में अवरोध मिलता है। रस सिद्धांत में आनंदवादी और कल्याणवादी मूल्यों का द्वन्द्व समाप्त हो जाता है।

पाश्चात्य विचारक हेनरी आस्वर्न टायलर के अनुसार ''किसी कविता अथवा चित्र में सर्वाधिक व्यक्त रूप में मानव–मूल्य आनंद परितोष और इसके द्वारा

प्रदान किये जाने वाली उत्तेजना में निहित है। वास्तव में कविता जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठा का सर्वाधिक सशक्त आधार है, काव्य का अनुभूति पक्ष रसोत्पादक होता है और रस काव्य में प्रयुक्त मानव–मूल्यों का परिचायक है।

सारांश :– साहित्यकार का मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण तटस्थ एवं निर्णेयक्तिक होता है। मूल्यों को व्यक्तिगत अभिरूचि का विषय मान लेने से मूल्य, समाज तथा साहित्य में से किसी एक के साथ भी न्याय नही हो सकता। साहित्य आत्माभिव्यक्ति है और आत्मा का यह रूप व्यक्तिगत से भिन्न, सर्वात्म से सम्बद्ध रहता है। इसीलिए साहित्य में व्यक्त मूल्यों का स्वरूप व्यक्ति के माध्यम से अनुभूत सामाजिकता का ही स्वरूप है।

साहित्य के मूल्य एक देश–काल, परिस्थितियों अथवा परिवेश से युक्त होकर भी सामाजिकता के विषद एवं व्यापक मानवीय आयामों से सम्पृक्त होने के कारण भिन्न देशकाल और संस्कृति के लोागें को भी प्रभावित करते है। इसीलिए साहित्य सार्वभौतिमक और सर्वाधिक संग्रहणीय कला होती है। साहित्यकार का जीवन के सभी आयामों से सघन संवेदनात्मक सम्बन्ध होता है। प्रकरान्तर से इसी परिप्रेक्ष्य में देखने पर ज्ञात होता है कि जीवन–मूल्यों की मूल्यवत्ता उसके संवेदनों से होकर गुजरती रहती है। ध्वन्यालोककार के मत में ''काव्य संसार अपार है। कवि उसका प्रजापति है, जैसा उसे विश्व रचता है वह उसे परिवर्तित कर देता है। ''अपरे काव्य संसारे कविरेकः प्रजापतिः। यथास्मेरचते विश्वै तथा विपरिवर्तते।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. बैजनाथ सिंहल : नयी कविता : मूल मीमांसा, पृष्ठ 95–96

2. डॉ. जगदीश गुप्त : नयी कविता : स्वरूप और समस्याएं – पृष्ठ 16

3. डब्ल्यू.बी. वर्सफोल्ड जज्मेंट इन लिटरेचर – पृष्ठ 13

4. डॉ. बैजनाथ सिंहल : नयी कविता : मूल्य मीमांसा, पृष्ठ 111

5. डॉ. कमलाप्रसाद पाण्डेय : छायावादोत्तर हिन्दी काव्य की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि, पृष्ठ 13

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

NEET EXAMINATION IN INDIA - A CRITICAL STUDY

C. THANGA MARIAPPAN
M.Phil., Research Scholar, PG & Research Department of History,
V.O.C. College, Thoothukudi – 628 008, Tamil Nadu

Introduction :- "The most important and urgent reform needed in education is to transform it, to endeavour to relate it to the life, needs and aspirations of the people and thereby make it the powerful instrument of social, economic and cultural transformation necessary for the realization of the national goals. For this purpose, education should be developed so as to increase productivity, achieve social and national integration, accelerate the process of modernization and cultivate social, moral and spiritual values." [1]

Report of the University Education Commission (Dr. S. Radhakrishnan Commission), 1948-49)

The case study about NEET OR State Entrance deals with the importance of understanding the difference between the NEET (National Eligibility cum Entrance Test) and state Entrance for medical admission. It is one of the relevant topics that have to analyse the students suggestions about whether the new system will add more merits than the state entrance system. We know there are some limitations stands with both systems; still we have to find out what will be the best. So understanding is necessary on what benefits will bring by the proposed system and whether it will work well on the students who hope to secure medical admission.[2] This case study contains the merits and demerits of both systems and to collect the students and teachers re-sponsors and suggestions. For that the hypothesis raised is State en-trance provides students a better chance to secure medical admission. The students who appeared in both entrance exams. The collected data is analysed and used for hypothesis testing. According to the hypothesis testing conclusion is obtained.

Pursuant to the Notification published in the Gazette of India Extraordinary dated 21st December, 2010, the Medical Council of India (MCI) with the approval of the Central Government amended the regulations on Graduate Medical Education 1997 and made provision for a Single Eligibility cum Entrance Examination. Ad-mission to MBBS/BDS courses across the country will be carried out through an All India Medical Entrance Examination named National Eligibility cum Entrance Test (NEET)[3] which will be organized by the Central Board of Secondary Education (CBSE). The National Eligibility-cum-Entrance Test (NEET) will cater to admissions in all the government and private medical and dental colleges in the country on the basis of its merit list. Before implementing NEET, a student had a chance of appearing in various en-trance examinations where on an average each student appeared in almost 10 different entrance examinations to try his chances of getting admission into a good medical college. Making one entrance exam for admission into medical college will build pressure on many students as they have only one chance of getting admission into a medical college. The pressure might lead to bad performance on the actual day of the exam. Whereas earlier even if a student of some reasons could not perform well in one exam he always had a second chance of performing well in other. This chance will no longer exist after declaration of this announcement.

The Education System in India :- The Education System which was evolved first in ancient India is known as the Vedic system. The importance of education was well recognized in India, 'Swadeshe pujyate raja, vidwan sarvatra pujyate' "A king is honoured only in his own country, but one who is learned is honoured throughout the world." The ultimate aim of education in ancient India was not

knowledge, as preparation for life in this world or for life beyond, but for complete realization of self. The Gurukul system fostered a bond between the Guru & the Shishya and established a teacher centric system in which the pupil was subjected to a rigid discipline and was under certain obligations towards his teacher. The world's first university was established in Takshila in 700 BC and the University of Nalanda was built in the 4th century BC, a great achievement and contribution of ancient India in the field of education. Science and technology in ancient and medieval India covered all the major branches of human knowledge and activities. Indian scholars like Charaka and Susruta,[4] Aryabhata, Bhaskaracharya, Chanakya, Patanjali and Vatsayayna and numerous others made seminal contribution to world knowledge in such diverse fields as mathematics, astronomy, physics, chemistry, medical science and surgery, fine arts, mechanical and production technology, civil engineering and architecture, shipbuilding and navigation, sports and games. The Indian education system helped in preserving ancient culture and promoting cultural unity and infused a sense of responsibility and social values. The ancient Indian education system has been a source of inspiration to all educational systems of the world, particularly in Asia and Europe. [5]

NEET vs. State Entrance :- The Hindu, based on NEET vs. State Entrance. This include various response of students, parents etc. When Medical Council of India introduced NEET (National Eligibility cum Entrance Test) to replace all other entrance exams for admission to medical colleges in India, there were instant uproars everywhere. More than 80 cases opposing the undergraduate NEET led; two of these by state governments and the rest by private and minority institutes.[6]

1. State Government believed that NEET infringed upon their right to keep education a state subject. Several points of contention have been raised the important ones being its viability and the impact on students from different educational back-grounds. When the exam was first introduced in 2012, several States, including Andhra Pradesh,
2. Karnataka, Kerala and TamilNadu, opposed it. These State governments believed that it infringed to keep education a State subject. Many private colleges in Tamil Nadu and Andhra Pradesh had led petitions in various High Courts, seeking exemption from using the exam as one of the criteria for admissions.
3. Students in Tamil Nadu who seek admission to MBBS course are admitted on the basis of their 12th standard final examination marks. A similar criterion is followed in Kerala as well. These States believe that there's a huge difference, in terms of content, in the State and Central Board's syllabus. The Chief Minister from Tamil Nadu said the NEET would adversely affect the interests of students in the State, in particular those from weaker sections and from rural areas and as it infringes upon the State's right to determine the admission policies to medical educational institutions.
4. Saving big on time and money: There are only a limited number of seats for MBBS students across India. For those seats, the number of entrance tests con-ducted all over the country, including the private colleges, would one day outrun the number of students they are about to take in. All the application forms and their fee, add travel expenses to various states for appearing different entrances, and it is clear that a single common test for medical is so much of a better option, economical as well as time saving.[7]
5. Reducing pressure: Less entrance tests for admission into medical colleges will reduce the pressure o the shoulders of students who live in constant anxiety while preparing for various tests, covering too many different types of syllabuses that differ with board and states. They will now have to concentrate on a single pattern or syllabus that could guide them through the single common entrance test. Fewer burdens would also make the students more con dent and determined.
6. State level forms were already out: This year's application form for the state level medical entrance like UPCPMT, CG PMT, MHT CET, WBJEE were already out and led by students when the announcement for NEET came in. The

90 application forms to be made into one which was the main reason for protest is actually going to be 91 added with NEET. It would have been so much better and economical if NEET was to commence from 2017.[8]

7. Disturbing the flow: Students take coaching and prepare to crack the medical entrances after two or three years of hard work, an e ort based solely on the deter-mined syllabus. There must be many who should be well versed for the entrance only to suddenly face a change in plan. Some states grant admission on basis of marks secured at 12th like TamilNadu. Now they are dreaded to face an entirely different pattern of entrance for which they are at all prepared.
8. No time for tuitions: Since most of the students got the idea that it would only be another years when the new system will be implemented, they were not prepared or took extra coaching for NEET. Students of rural areas would not have the facility of taking advanced preparatory coaching at all. The so called `fair chance' is nothing but a vague statement that will only be applicable when implemented through years of preparations and planning.

Conclusion :- In this case study I have reached the conclusion that State Entrance provides better chance for students to secure medical admission. [9]The study was done on the plus two students, teacher and parents. So they agree that State entrance provides a better chance for the students to secure medical admission.[10] Future work concerns deeper analysis of the subject, new proposals or view points to it. It can be conducted for a large population. The respondents in this case study is restricted to students who study in plus two. You can consider different students who studied in different schools and the people who research about this topic. The data may collect also through the online questionnaire. To increase the sampling area the online questionnaires can be send to the students and teachers all over to know their opinion.[11]

Notes and References :-

1. Shah KV, Gibbs CJ Jr, Banerjee G. Virological investigation of the epidemic of the haemorrhagic fever in Calcutta: Isolation of three strains of Chikungunya virus. Indian J Med Res 1964;52:676–83
2. Krishnamoorthy K, Harichandrakumar KT, Krishna Kumari A, Das LK. Burden of chikungunya in India: Estimates of disability adjusted life years (DALY) lost in 2006 epidemic. J Vector Borne Dis 2009;46:26–35
3. Lahariya C, Pradhan SK. Emergence of chikungunya virus in Indian subcontinent after 32 years: A review. J Vector Borne Dis 2006; 43:151– 60.
4. New Delhi:Today& Tomorrow's Printers & Publishers; 1977:463. 5 Focks DA, Chadee DD. Pupal survey: An epidemiologically significant surveillance method for Aedesaegypti: An example using data from Trinidad. Am J Trop Med Hyg 1997; 56:159–67.
5. http://www.catchnews.com/national-news/neet-2016-advantages-and-disadvantages-1462187300.html
6. http://cbseneet.nic.in/cbseneet/welcome.aspx
7. ttps://www.researchgate.net/publication/261836295_Saying_no_to_NEET_is_certainly_not_neat
8. http://indianexpress.com/article/education/neet-know-everything-about-the-sc-verdict/
9. http://www.affairscloud.com/neet-exam-amendment-bill-passed-parliament/
10. http://www.thehindu.com/specials/in-depth/neet-national-eligibilitycumentrance-test-all-you-need-to-
11. http://www.bmj.com/content/354/bmj.i4704
12. http://www.epw.in/journal/2016/35/commentary/neet-medical-education-finding-balance.html

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

SPREAD OF COMMUNIST PARTY IN INDIA- A STUDY

N. MATHAN
M.Phil., Research Scholar, PG & Research Department of History,
V.O.C. College, Thoothukudi – 628 008, Tamil Nadu

Introduction :- A political party acts as motivator of the expressions of the people. The political parties are like channels of communication between the government and the citizens. Parties are like engineers of public policy. It is very pertinent to study the political parties in relation to their role in policy making as political parties in almost all the forms of government are involved in policy making function. Both domestic and foreign policies are the results of the expressions made by the political parties.

The term 'Party' is derived from the Latin word 'partier' which means to share or divide. Giovanni Sartori states that, "A party is any political group that presents at elections and is capable of placing through elections, candidates for public office."[1] Edmund Burke describes the political party, "as a body of men united for promoting, by their joint endeavor, the national interest, upon some particular principle on which they are all agreed." [2]Political parties may thus be termed as the bedrock of modem democracy, and they provide it with the motive force which moves the entire machinery of the government. They contend for supremacy and make an earnest effort to seize political power.

The existence of a political party or political parties is a phenomenon that is common to all states-Liberal, Democratic, Marxist or Totalitarian. Hence the structure of government is influenced by the nature of the party system.

Origin and Growth of the Communist Party of India :- The Communist Party of India was inspired by the Russian Revolution. It had its roots in the erstwhile Soviet Union. The party was bom in Tashkent in 1920 as the brainchild of M.N. Roy. Ever since India achieved political independence in the late 1940's, The Communist Movement in the country has been increasingly under pressure from the domestic solution within India. Its crucial problem has been how to gain control of national or local affairs and escape direction from communist fountain heads outside India.[3]

In simple terms, Indian Communism has been under pressure. After the split in the CPI in 1964, the challenge of India, its social and political culture and systems has been, and continues to be, the principle preoccupation of the two Communist Parties - CPI and CPI (M). According to its constitution, the CPI "is the political party of the Indian working class, its vanguard, and its highest form of class organization. It is a voluntary organization of workers, peasants and toiling people in general, devoted to the cause of socialism and communism."[4]

Some British Communists and M.N.Roy inspired a group of young Indians, who were great admirers of Marxism and the Russian revolution to set up in India an organization to spread the Marxist ideology. This organization came formally into existence on 26 December 1925, and was named as the Communist Party of India. Shortly after, the CPI was recognized on Roy's advice, as a branch of the Communist International.[5]

The Communist International not only determined the programme of the CPI, it also trained many Indian Communists in the art of fomenting discontent and rebellion among the people, of preparing them for armed insurrection, of organizing worker's strikes and the freedom struggle and of infiltrating into government and institutions so as to wreck from within. A few of the communists who were trained in Moscow were M.N.Roy, S.A. Dange, G.M.Adhikari, C.P.Dutt, Dr. Hafiz, Nalini Gupta, Ayodhya Prasad and Shaukat Usmani. The Communist Party of India is a

major political party in India. There are different views about the exact date of birth of the Communist Party of India. But commonly accepted date about the CPI is 26th December 1925. Whereas, the Communist Party of India (Marxist), which split-off from the CPI, claims that the party was founded in the USSR in 1920.

During the 1920's and beginning of 1930's the party was badly organized and in practice there were several communist groups working with limited national coordination. The British colonial authorities had banned all communist activity, which made the task of building a united party very difficult. Only in 1935 was the party ready to be accepted as the Indian section of the Communist Third International. However, only Usmani became a CPI party member.[6]

Communism during the Colonial Period :- The Communist Party of India was founded in Tashkent on October 17 1920, soon after the Second Congress of the Communist International. The Founding members of the party were M.N.Roy, Evelina Trench Roy (Roy's Wife), Abani Mukheiji, Mohammad Ali (Ahmed Hasan), Mohammad Shafiq and Acharya. The CPI began efforts to build a party organization inside India. Roy made contacts with Anushilan and Gugantar groups in Bengal. Small Communist Groups were formed in Bengal (led by Sigarvelu Chettiar), and Punjab (led by Ghulam Hussain). However, only Usmani became a Communist Party of India's party member. Between 1921 and 1924 there were four conspiracy trials against the communist movement: First Peshawar Conspiracy Case, Second Peshawar Conspiracy Case, Moscow Conspiracy Case and the Cawnpore Bolshevik Conspiracy Case.

In the first three cases, Russian trained Muhajir Communists were put on trail. However, the Cawnpore trial had more political impact. On March 17th 1924, M.N.Roy, S.A.Dange, Nalini Gupta, Shaukat Usmani, Ghulan Gussain, and R.C.Sharma were charged, in Cawnpore Bolshevik Conspiracy case. The Specific charge was that they, as communists, were seeking "to Deprive the king Emperor of his sovereignty of British India, by complete separation of India from Imperialistic Britain by a violent revolution"[7]

On 25th December 1925, a Communist Conference was organized in Kanpur. Colonial authorities estimated that 500 persons took part in the conference. The conference was convened by a man called Satyabhakta. At the Conference Satyabhakta argued for a "national communism", and against subordination under Committee. Being outvoted by the other delegates, Satyabhakta left both the Conference Vince in protest. The Conference adopted the name "Communist Party of India". Groups such as LKPH dissolved into the minified CPI. The emigre CPI, which probably had little character anyway, was effectively substituted by the organization now operating inside India.

Communists after Independence :- During the period around and directly following Independence in 1947, the internal situation in the party was chaotic. The party shifted rapidly between left- wing and right-wing position. In 1948, at the Fourth Party Congress in Palghat, B.T.Ranadive was elected General Secretary of the party. In several areas the party-led armed struggles took place against a series of local monarchs that were reluctant to give up their power-such insurgencies took place in Tripura, Telangana and Kerala. The most important rebellion took place in Telangana, against the Nizam of Hyderabad. The Communists built up a people's army and militia and controlled an area with a population of three million. The rebellion was brutally crushed and the party abandoned the policy of armed struggle. B.T. Ranadive was deposed as a 'left adventurist'. In the General Elections in 1957, the CPI emerged as the largest opposition party In 1957, the CPI won the state elections in Kerala. This was the first time that an opposition party won control over an Indian state. E.M.S. Namboodripad became Chief Minister.[8]

A serious problem surfaced in 1962. One reason was the Sino-Indian war, where the Soviet faction of the Indian Communists backed the position of the Indian government, while other sections of the party claimed that it was a conflict between a socialist and a capitalist state, and this

took a pro-Chinese position. There were three factions in the party internationalists; centrist and nationalist backed India. Centrist took a neutral view prominent leaders inducing S.A.Dange, A. K.Gopalan and E.M.S.Namboodripad were in the nationalist faction. B. T.Ranadive, Sundarayya, P.C.Joshi, Jyoti Basu and Harkishan Singh Suijeet are among those who supported China. Ajoy Ghosh was the prominent person in the Centrist Faction. In general, most of Bengal Communist leaders supported china and most others supported India.Ideological differences led to the split in the party in 1964 when two different party conferences were held: one of CPI and one of the CPI (M). There is a common misconception that the lifts during Sino-Indian War led to the 1962 split. In Fact, the split was Leftists vs. Rightists, rather than internationalists Vs nationalists. The presence of nationalists A.K.Gopalan, and E.M.S.Namboodripad and internationalists P.Sundharayya, Jyoti Basu and Harkishan Singh Suijeet in the CPI (M) prove this fact.

Present Situation :- CPI is recognised by the Election Commission of India as a "National Party." To date, CPI happens to be the only national political party from India to have contested all the general elections using the same electoral symbol. At the national level they have supported new Indian National Congressled United Progressive Alliance government, but without taking part in it. The party is part of a coalition of Leftist and Communist Parties known in the national media as the Left Front. Upon attaining power in May 2004, the United Progressive Alliance formulated a programme of action known as the CMP. The left bases its support to the UPA on strict adherence to it. Provisions of the CMP mention to discontinue disinvestment, massive social sector outlays and an independent Foreign Policy.[9]

In West Bengal and Tripura the party participates in Left Front governments. It is also taking part in the state government in Manipur. In Kerala the party is part of the Left Democratic Front. In Tamil Nadu, it is part of the Progressive Democratic Alliance. The current General Secretary of CPI is A.B.Bardhan. The party has fraternal relations with other communist-aligned parties like CPI(M), RSP and FB. The principal mass organizations of the CPI are -14,

1) All India Trade Union Congress
2) All India Youth Federation
3) All India Students Federation
4) National Federation of Indian Women

The Communist Party of India : A Profile :- The emergence of the Communist Party of India was die direct result of the October Revolution in Russia. Between 1921 and 1925, some Communist groups were operating in different parts of the country. In December 1925, these groups gathered together at a conference in Kanpur and formed the CPI. As a first task the CPI put forward a programme for the national movement based upon the idea of Marx and Lenin. They demanded complete independence in place of dominion status, initiated the Kisan Movement and functioned actively inside the Congress, backing up the radical section in it. During the period 1926- 29 the party made considerable progress and mighty working class movements were launched. But the party suffered serious setbacks in 1929 on account of the famous Meerut Conspiracy case against the whole leadership of the party and again in 1942 on account of its attitude towards the Quit India Movement.[9] The party had its first congress in 1943, and also took part in the 1945-46 General Elections in a limited way.15 However, by 1947 the party had matured and acquired the status of a major political party. After Independence, the party had its second congress in February 1948 and the third in 1953.

The third congress confirmed a programme adopted by the CPI in 1951 which pointed out that the anti-imperialist revolution was neither complete nor truly socialist in character. It also issued a policy statement which pointed out that it was not feasible to apply Russian or Chinese revolutionary techniques in Indian conditions. They resolved to achieve their aim by building a national united front of the working class, kisan and what they called petty and national bourgeoisie. The idea of forming a united front created flutter in the party and was

sharply opposed by a powerful section of the party. It was this section which finally broke away from the CPI and formed the CPI (M) in 1964.

Conclusion :- The two Communist Political Parties, the CPI and CPI (M), that arose as a result of the split, represented totally divergent views of the strategy and tactics of revolution and their attitude towards the Congress party. While CPI wanted a revolution from above through a National Democratic Front, the CPI (M) was for a revolution from below based on a People's Democratic Front to destroy the bourgeoisie landlord state. As regard the attitude towards the Congress, while the CPI vowed to follow the tactics of 'Unity and Struggle', the CPI (M) was in favour of building a Left and Democratic unity in which co-operation with bourgeois-landlord-dominated Congress was out of question. The Communist Party's vision is of India altering the 21th century as a secular, democratic and developed country where equality and social justice prevail.

The analysis of the origin, growth, aims and objectives and organization of Communist Party of India and Communist Party of India (Marxist) shows that the parties have made strong progress in terms of parliamentary strength and percentage of votes. The support base of the CPI and CPI (M), which was very limited in their initial days of establishment has also widened now. The CPI and CPI (M) have emerged as a strong force in the Indian political system.

Notes and Reference :-

1. Giovanni, Sartori., Parties and Party System : A Framework for Analysis, Cambridge University Press,London, 1976, P.4.
2. Grover, Verinder., Party System and Political Parties in India, Vol.10, Deep and Deep Publication, New Delhi, 1990, P.643.
3. Gupta, D.C., Indian Government and Politics, Vikas Publication, New Delhi, 1976, P.539.
4. Johari, J.C., Indian Government and Politics, Vishal Publication, New Delhi, 1977, P. 437.
5. Gupta, D.C., Op. Cit., P.540.
6. www.cpindia.org, Pp.12-14.
7. Ibid
8. www.indian.elections.com, P.3.
9. Ibid.
10. Zaidi, A.M., The Annual Register of Indian Political Parties: 1988, S. Chand and Company Ltd,
11. New Delhi, 1990, Pp. 193-194.
12. Ibid.
13. Ibid., P.690

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

ALEXANDER REA WORKS ADICHANALLUR, IN TINNEVELLY

P.S. MUTHULAKSHMI
M.Phil., Research Scholar, PG & Research Department of History,
V.O.C. College, Thoothukudi – 628 008, Tamil Nadu

Introduction :- The river Tambaraparni, with a small hill at the end adjoining the river. One peculiarity in regard to such prehistoric sites is that whenever Possible, high land, waste or rocky or. Such as is unsuitable for cultivation, is that which has been generally selected for burial sites. Another fact is that in the neighborhood of these sepulchral sites, there is often found the evidence of an ancient settlement. Cemeteries are usually situated on the south side of a town, the south being the abode of Yama, the God of Death; this having from time immemorial, been selected wherever possible, as the site for burials.[1] About the centre of the ground some three feet of surface soil is composed of gravel, with decomposed quartz rock below. The rock has been hollowed out for the urns, with a separate cavity for each of them.

In this burial ground the objects were found both inside and outside large urns of a perform shape. The urns were at an average distance of about six feet apart and from three to twelve feet or more below the surface. Some were found placed over other ones. An idea of the deposits which exist in the whole area, may thus be obtained, as an acre probably holds over a thousand urns. This is the most extensive and important prehistoric burial place as yet known in Southern India. There are hundreds of Prehistoric sites in several of the Madras districts which may contain two or three dozen urns, but none equal to this in extent.

Contents of the Urns and Description of the Objects :- The objects found comprised gold, bronze and iron articles and pottery. The gold articles, which were probably used as diadems, vary in size and are oval in shape; some have a strip extending beyond the two extremities with a small hole for a wire or string at each end. They are thin plates ornamented with triangular and linear dotted designs and all were found folded up in a manner which suggests that some symbolical meaning may have been attached to the practice. Of iron" many implements and weapons were found, always placed point down wards,[2] as if they had been thrust into the surrounding earth by the attendant mourners. There are no implements or weapons in bronze, all articles in this metal being vessels of varied shape, personal ornaments, such as rings, bangles and bracelets, or ornaments which have been attached to the bases and lids of vases, such as buffaloes with wide curved horns. The domestic animals represented in bronze are the buffalo, goat or sheep and cock; and the wild animals are the tiger, antelope and elephant. There are also representations of flying birds.

There are sieves in bronze in the form of perforated cups fitted into small basins, the metal of these cups being extremely thin, and the basins only a little thicker.[3] The perforations in the cup are in the form of dots arranged in a variety of designs, chiefly concentric circles around the bottom, and concentric semi-circles sometimes interlacing around the rim. Numerous human bones and skulls have been found, and one of the latter in particular, from an urn which was devoid of earth, retained its, shape in perfect condition. This skill was taken from the bottom of the urn, which contained only bones of large size and the decomposed debris of smaller ones. Against one of the inner sides of the urn, leant the bones of the legs and arms of the skeleton, while below, in addition to the skull, were the vertebrae, ribs and other smaller bones exactly as one would expect them after the body, as evidently was the case in instance, had been placed in the urn in. a crouching or a sitting position. In only a few instances did an urn contain the complete bones

of a skeleton, and in such cases it was always of large size, being nearly three feet in diameter. [4]

The historical age of the Adichanallur remains is doubtful, Thurston quotes a statement of Monsieur L, Lapicque implying that they represent a Proto-Dravidian race, while he also quotes Dr. C. Macleane's opinion "the sepulchral urns of Tinnevelly may be earlier than Dravidian, or they may be Dravidian." Rea's own views on the age of the remains are summarized by Professor G, Elliot Smith as follows:-" We have no unquestionable, but only circumstantial evidence of dates that can be variously interpreted, Speculations as to the age have ranged from 400 to 4,000 years old, and no one can disprove either assertion, but there seine to be a possibility that the site may even have been occupied during early Pandyan times, that is at least several centuries before the beginning of the Christian era,"[5]

Two of the skulls were sent to Professor G, Elliot Smith, who refers to them in the second edition of his "Essays on the Evolution of Man" (1927), These two skulls conform to "different racial types, One them is clearly and unmistakably Proto-Australian in type, and the second one conforms more nearly to the racial type that is known as Mediterranean,' which is so largely represented in the present population of India. Curiously enough, in one of the Indian skulls from Adichanallur we have precisely the same combination of characters as are found in the so-called Old Woman of Grimaldi (ii, 3). The cranial sutures show no trace whatever of closure; yet the molar series in the lower jaw had disappeared and the alveolar process has' been absorbed Before a detailed study of the skulls had been made, the Australia skull met with an accident and was broken into many pieces.[6] These were reconstructed by Dr. J. Beattie who possessed photographs of the skull as a guide for his reconstruction. The fragments were· so brittle that it was found necessary to impregnate them with size before they could be safely handled. Previous to this, 'several pieces had crumbly to dust. The bones of the base of the skull and the zygomatic arches were missing. The caldarium was almost complete and it was possible to reconstruct the face accurately. The photographs and a cast of this reconstruction, without the mandible, were available for studies in the preparation of this report determine the condition of the racial sutures, either in the photographs taken previous to the fragmentation or in the cast.[7]

The front-nasal suture is depressed and the nasal bones are small. The face is broad across the malars and leptoprosopic. The orbits are mesoseme, and the nasal aperture is platyrhine. The face is somewhat prognathous. The teeth are small; the left second and third molars are missing. The dental arcade is almost parabolic, the width between the third molars being almost equal to the greatest palatal length. The skull is micro-cephalic.

Certain features have been over-emphasized in the reconstruction. The normal occipitals of the reconstructed skull is pentagonal in outline, the parietals meeting at a well marked angle, and the greatest width is found across the upper part of the mastoid processes. The original bi-mastoid width was, however, less than the bi-mastoid width of the reconstructed skull, and the effect of this increase has been to diminish slightly the height of the skull and to exaggerate the pentagonal nature of the contour of the normal occipitals.[8] Another feature which the reconstruction exaggerates is the posterior part of the temporal crest. This appears in the cast as a wide ridge running upwards' and slightly backwards from above the external auditory meat us. The ridge completely separates the temporal fosse from a well-marked depression above the superior. This temporal-occipital depression may have been overemphasized in the reconstruction.

The burial urns and other articles of pottery which constitute the majority of the objects found at Adichanallur do not appear to differ in any important respect from similar finds made in various other South Indian localities. Many of the smaller vessels, some of which t may be remarked closely resemble objects of prehistoric pottery found in Egypt exhibit a characteristic red and black polished surface,

which w as the result of friction and not of a true fused glaze. The smaller articles consist for the most part of ordinary domestic utensils, together withes tends of various kinds on which the vessels requiring support were placed.[9] Comparatively little applied decoration I s found and that practically confined to the large urns. The domestic utensils were found both in the interior of the urns and outside them, and as many contained rice husks they were perhaps originally receptacles for grain intended to serve as food for the Spirits of the dead.

The most inters ting of the Tinnevelly finds are, however, the objects in metal, as they exit t in great variety, a considerable amount of skill has been exercised in their manufacture, and many are of hitherto unknown design. The majority are of iron, but a fair number occur in bronze, and the uses to which some of the more complicated articles were put are still somewhat conjecture].

The only object s discovered in any of the precious metals are oval frontlets of gold leaf, which were probably tied round the forehead in the case of certain of the dead, possibly those of rank or importance. The iron articles include swords, daggers, spear- heads, arrow- heads and other weapons used in warfare or in hunting, agricultural implements resembling the modern mammoth though it I s by no means certain that they were originally fixed at right angles to the shaft, and others more difficult to classify such as tridents two or three feet in length, and the peculiar hangers probably used for the suspension of iron saucer lamps of which several were found. The weapons and implements appear to have been inserted point downwards in the earth by the persons present at the interment.

Notes and References :-

1. "Some Prehistoric Burial Places in Southern India."· Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. LVII, 1889.
2. Ibid
3. It might be interesting, on some future occasion, to get this analysed as considering the age, it is not likely to have any added alloy.
4. From analysis it was found ~t the alloy consisted of copper 75 per cent, tin 23 per cent., lead 0.2 per cent, iron 0.4 per cent., and the casting seemed to contain some of the copper in the form of copper oxide.
5. On examination this was found to be a particularly pure wrought iron with a characteristic fibrous texture, with 25 per cent, carbon (by combustion).
6. Annual Report of the Madras Government Museum, 1905-06, pp.5 and 6.
7. Vida Reports of the Archaeological Survey, Southern Circle, for 1899- 1900 to 1903- 04, and of the Archeological Survey of India for 1902—03 and 1903- 04.
8. Proceedings of the Madras Government, Public Department (No. 829 of 27th March 1876.
9. Annual Report of the Madras Government Museum, 1905-06, pp. 6- 6.

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

PANCHAYATRAJ SYSTEM IN TAMIL NADU - A HISTORICAL PRESPECTIVE

G. SANGAR
M.Phil., Research Scholar, PG & Research Department of History,
V.O.C. College, Thoothukudi – 628 008, Tamil Nadu

The Panchayatraj System in Tamil Nadu is a well-knit three tiered structure of Panchayats (Village as well as Town), Panchayat Unions and District Development Councils (DDCs) at the Village, Block and Development District levels respectively. However, it can be said that in practice it is a two tier system in view of the fact that the DDCs are in effect only advisory bodies without executive power and they are not having directly elected representatives of the people. There is no provision for Gram Sabha and Nyaya Panchayats.

Village Level: Village Panchayatb/Town Panchayats :- The Village Panchayats and Town Panchayats constitute the lowest tier. Village Panchayats are constituted in all villages having a population of 500 or above. In case of population being less than 500, two or more villages had been clubbed together to form a Panchayat. T own P anchayats are constituted in local areas possessing urban characteristics where the population is above 5000 and the normal annual income is not less than Rs.10,000/-. A Town Panchayat with a population of 20,000 or more with normal annual income of Rs.1,00,000/— may be converted into a Town Municipality. Based on the annual income the Town Panchayats have been classified as follows.

Apart from the above, the Panchayat Townships also form part of the Town Panchayat Administration at the State level. About one crore people constituting almost one-fifth of Tamil Nadu's population live in these areas. There were 79 Grade II, 266 Grade I, 283 Selection Grade Town Panchayats and [1] Townships in this State as on 1990-91, The strength of the Panchayats with respect to the number of members may vary between five and fifteen which will be fixed with reference to the population. The President of the Panchayat is elected directly on non-party basis in case of Village Panchayats and on party basis with regard to Town Panchayats. Seats for SC/ST have been reserved in consonance with their population, subject to a maximum of three. While in case of Village Panchayat, the President is the Executive authority, for Town Panchayat it is full time Executive Officer.

Block Level: Panchayat Union Councils :- P anchayat union Council is formed for each Community Dev e1opmen t B1oc k. This bloc k is the unit of pianning and de V e1opmen t. A Panchayatuni on Council consists of a Chairman, Presidents of all the Panchayats in its jurisdiction and one non— official member of each Township Committee in the Panchayat Union, The Chairman is elected directly on party basis by the voters of the Panchayatunion area, Provision for co-op t ion of women and SC/ST representatives is there. The Block Development Officer (BDO) cum Panchayat Union Commissioner is the Executive Officer of the Panchayat Union, For every Panchayat Union there shall be an Appointments Committee, an Agricultural Production Commi1ee, an Educa1on Committee and a Gene raI Purpose Committee, All the Committees are presided over by the Chairman of the Council, The Panchayats and Panchayat Un ions are incharge of implementation of Development Programmes. The Panchayat Unions have been entrusted with the execution of Community Development Programme, Thus the Panchayats and P anchayat Unions are the major bodies involved in rural development activities at the grassroots level.

District Level: District Development Councils :- The District Development Councils (DDCs) are constituted in every Development District. Whi1e most of the de V e1opmen t districts coincide with the Revenue Districts, a few big revenue districts

such as Tiruchchirappa11i have been divided into two development districts. The DDCs are headed by the respective District Collectors and they function as advisory bodles to the State Government on the development schemes undertaken by the local authorities in the districts. They consist of the District Collector, Members of Parliament and Members of the Legislature from the district. Chairman of the Panchayat Unions and Municipal Councils, President of Cooperative Central Bank and such officers connected with planning and development, nominated by the State Government.

Coming back to the review of literature, apart from the studies mentioned earlier, there are a few stud ies wh i ch were carried out on various aspects of the present Panchayati Raj System in Tamil Nadu. The study carried out by Dharampal and his team stands out as on e of the most comprehensive studies conducted so far on the present system in this state. This study has been conducted in the districts of Thanjavur, Ramanathapuram, Coimbatore and North Arcot. Three Panchayat Unions have been selected f rom each of these districts on a random samp ling basis. Again, three Panchayats each have been selected from these Panchayat Unions on the same basis. Five among them were Town Panchayats.

This study has been conducted before the second Panchayat elect ions wh ich were held in 1965 - After these elections, these bodies went to polls only twice in 1970 and 19B6- Frequent this state and consequently these bodies have been totally defunct till 1986. Many functions were withdrawn during the intervening period. However, many new development activities such as IRDP (Integrated Rural Development Programme), Development of Women and Children in Rural Areas (DWCRA) and Training Rural Youth for Self Employment (TRYSEM) have come into existence in rural areas after this study was conducted- The PRIs have varying role in implementation of these programmes- Though this study has included five Town Panchayats, the uniqueness of the Town Panchayats, their role in the rural developmen t, their linkages with the institut ions at other levels, a comparison between the Village Panchayats and Town Panchayats thereby highlighting the contrasts and similarities among them have not been clearly b rough t out - The study by Sush i1 Kumar and K Venkataraman is essentially on various types of controls exercised over the PRIs in this state. Though field survey had been carried out in Thanjavur district, the role of the PRIs in rural development has rece i ved nom inal attention- This study deals with the administrative, financial and technical aspects of State- Panchayati Raj relations with a thrust on the State control over PRIs- It has concluded that the frictions that cropped up due to the con trol system had p roduced an element of f rust rat ion wh ich strikes at the root of further progress. Besides, it men t ioned that had the element of supervision and the form of contro1 and reporting that were imposed, been less exacting, it would have been possible for the Panchayat Union staff to devote more time to the regular work of Panch ayat development-

The study carried out by C Harichandran is mainly focusing on the financial management of the PRIs in this state- A chapter has been devoted to delineate the functions of the PRIs with regard to rural development. Though an attempt has been made to relate these functions with the revenue and expenditure pattern by classifying them unde r vari ous func t i ona1 heads, an understanding of the various p rocesses involved in the planning and implementation of the rural development has not emerged from this study. The selection of one Panchayat Union which is functioning effectively and another one which is average in its work ing is having a scientific basis. Apart f rom that, two Panchayats each f rom these two Panchayat Unions have been- selected. This includes on 1y one Town Panchayat- As is the case with the study conducted by Dharampal, this study has also not cone en trated on the role of the T own Panchayats in effect ing rural developmen t. A glance at the findings and policy sugges 11ons of this study leads to conelude that it is exclusively devoted to the financial performance of the PRIs.

Notes and References :-

1. Prash asn i ka, Vo**1**. XXI, No.2, Ju**1**y-Decembe r **1994**, pp 63-75.
2. Ibid.p.76.
3. Ibid.p.77.
4. Ibid.,p.78
5. Ibid.,p.78.
6. B S Bhargava and Lakshminarayan, 'Working of Town Panchayats in Karnataka: Prob1ems and P rospec ts", Institute for 5oc i a 1 and Economic Change (IBEC), Bangalore, 19B3, (Nimeographed.).
7. Ibid.,
8. As per the Census definition, all the Municipal Corporations, Municipalities, Cantonments, or other Notified Town areas have been classified as urban areas. The other areas have been recognized as urban only when they possessed a minimum population of 5000, a population density of atleast 400 persons per sq. km and atleast 75 per cent of the male worke rs of such places were engaged in non-agricultural and allied activities. The areas not recognized as urban fall under the 'rural' category.

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Volume : 4 Aug. 2017
A Quarterly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

Importance of Creativity and Education in India

Smt. Rohita Singh Rajput

Sagar

Education is the most important element growth and prosperity of a nation. Education is the fundamental right of every Indian child. It is an all round drawing of the best in child and man in body and spirit. It is the process of facilitating learning knowledge, skill, values, beliefs and habits of a group of people are transferred to other people, through story-telling, discussion, teaching, training or research. It is the wealth of knowledge acquired by an individual after studying particular subject matter or experiencing life lessons that provide an understanding of something. Education requires instruction of some sort from an individual or composed literature. The common forms of education results from years of schooling that incorporates studies of a variety of subjects.

Creativity is the use of imagination or original ideas to create something new. It is phenomenon whereby something new and somehow valuable is formed. Creativity is the act of turning new and imaginative ideas in the reality. Creativity is characterized by the ability to perceive the world in new ways to find hidden patterns, to make connections between seemingly unrelated phenomena and to generate solutions. Creativity involves two processes: thinking then producing. If you have ideas, but don't act on them, you are imaginative but not creative. It is the process of bringing something new into being. Creativity requires passion and commitment. It brings to our awareness what was previously hidden and points to new life. So creativity is the key to success in the future, and education is where teachers can bring creativity in children.

"Creativity is the key to success in the future, and primary education is where teachers can bring creativity in children at that level."

"Other profession in the world that is more important to society than that of a teacher"(55).

Kalam's View on the Importance of Creativity and Education in India :- Role and responsibility of a teacher – "Not only does the teacher provide knowledge, but the teacher also shapes the student's life with great dreams and aims" (87). Teachers have a great mission to ignite the minds of the young. The ignited minds of the young are the most powerful resource on the earth, above the earth and under the earth. "The role of a teacher is like the ladder, which is used by every-one to climb up in life – but the ladder itself stays in its place"(22).A teacher's place in our society and in the life of a youngster comes after that of the parents but before God. Teachers, particularly school teachers, have tremendous responsibility in shaping the life of an individual. Childhood is the foundation stone upon which stands the whole life structure due to the seeds that are sown in childhood that blossom into the tree of life. The education, which is imparted in childhood at a very early stage when the mind is in its fancy, is more important than the education received in the College of University.

The aim of any teacher should be focused on character building and on inculcating values that enhance the learning capacity of children. The teacher should become a responsible guide enabling them to become life-long autonomous learners, motivating them to be consistent in practice. In this regard Kalam has referred to one of the great leaders of our country, Dr Bhimrao Ambedkar. Bhimrao belonged to a community considered to be untouchable by majority of high caste Indians at one time. Ambedkar took great care of his student Bhimrao, sharing with him not only his knowledge but also his lunch. After finishing his studies, when Bhimrao became a Barrister, in order to remember his teacher, he changed his name to Bhimrao Ambedkar. This is an ideal example of a teacher that could be emulated. "Teachers are the backbone of any country, the pillars on which all aspirations are converted into realities"(22). This includes encouragement towards innovation and creativity pairing a path for healthy competitions, build confidence in them

to be innovative and creative, which in turn will make them competitive to face the future.

"Learning needs freedom to think & freedom to imagine, and both have to be facilitated by the teacher"(73).

Education that Kalam received from others :- "Education and values imparted in childhood are more important than the education received in college and university"(46).

Every child is born with some inherited qualities and later if these qualities are properly nurtured and developed, they become valuable asset of that person. Kalam too was born with some inherent qualities. These qualities include honesty and self- discipline from his father and mother, faith in goodness and deep kindness from his three brothers and sisters. There are many people who helped Kalam to continue with his education. But the greatest contribution in Kalam's education was of Jalalluddin and Samsuddin.

One day when Kalam was studying in the fifth standard in Rameswaram Elementary School, a new teacher came to his class. Kalam had the habit of wearing a cap which marked him as a Muslim. In the class he always sat in the front row next to Ramanandha Sastry, who was a Brahmin. The new teacher could not tolerate the idea of a Muslim boy sitting near a Hindu Priest's son. Following social taboo the new teacher asked him to go and sit on the back bench. Kalam felt very sad and so did Ramanandha, who started weeping. After school, they went home and told the incident to their parents. Lakshmana Sastry, the father of Ramanandha Sastry, summoned the teacher and told him not to spread the poison of social inequality among innocent children. Laxmana Sastry asked the teacher to either apologize or quit the school and island. The teacher felt sorry for his behavior and expressed regret. The words of Lakshmana Sastry reformed the mind of the young teacher. Through this incident Kalam realised that the people of any society should not practice religious discrimination because it is harmful to the values of society. The problem was solved by three religious elders - Kalam's father, Father Bordal and Pakshi Lakshamana Sastry who was a Brahmin. They settled the problems very easily without letting it grow. Here Kalam got a chance to learn the essence of being a good human being and importance of equality.

Experiences of Kalam as a young boy have shaped him not only for what he is today, but also what he has done to inspire others by unfolding his own experiences in this writings. In an incidence that he recalls, he tells us about the time just after India became independent in 1947. Panchayat elections were held in Rameswaram Island and Kalam's father was elected as the President of the village council. He was elected not because he belonged to a particular caste or religion, nor because of his economic status. He was elected because of his nobility of mind and because he was a good human being. The day on which he was elected as President, a man came to their house. Kalam was a school boy who was reading his lessons aloud, when he heard a knock at the door. In those days doors were not locked in Rameswaram. A man entered the house and enquired about his father. Kalam told him that he had gone for the evening Namaz. The man said that he had brought something for his father and if he could leave it for him. Kalam told him to leave the item on the cot and continued with his studies.When his father returned he saw a silver plate and gifts on the cot. His father asked him about the things and Kalam related the incident. On opening the gifts and finding expensive clothes, a few silver cups, some fruits and sweets his father became very upset and angry. Kalam was the youngest child in the family very dear to his father. For the first time Kalam saw his father so angry. He received a good beating from him that day. Kalam became very frightened and started weeping. Later his father explained the reason for his reaction. He also advised Kalam not to receive any gift without his permission. To explain this Kalam's father quoted a Hadith which says, "When the Almighty appoints a person to a position; he takes care of his provision. If a person takes anything beyond that, it is an illegal gain"(60). He told him that accepting gifts is not a good habit. A gift is always accompanied by some purpose which is a dangerous thing. It is like touching a snake and

getting poison in return. Kalam could not forget the lesson ever in his life. The incident had a great impact on his mind and shaped his value system. Kalam learned a great lesson from the incident and remembered it throughout his life. The ill effects of greed and subsequent breeding of corruption has seeped deep into every system of our society today. This venom has intensified due to disappearance of value based education and also due to lack of proper education system. Mere articulation of Kalam's voice to reinstate them once again is one vital way to revive a value based life and society at large." The three key societal members who can make a difference are father, mother & teacher"(44).

A Lesson learnt by Kalam from his elder brother, who was ninty-five years old is worth sharing. One day Kalam's elder brother made him a phone call from Rameswaram. He told him that one of Kalam's friends from U.S (United States) came to visit his house. During the discussion his friend asked him how old was the house where they lived? Kalam's brother told his friend that the house was built by his father more than a century ago. Their ancestors' house was in a dilapidated state about to disintegrate. Kalam's friend gave them an offer of converting their ancestral house into a museum and library. He also offered them alternative accommodation for their family. Kalam's brother called him to say that he was against his friend's proposal. He wanted to live in the house where he was born and lived for ninety years. He wanted to build a new house in the same place through his earnings. He did not want any other arrangement. He asked Kalam to thank his friend for his consideration. Kalam was surprised to know that there was a man who wanted to lead his life on his own terms and conditions and did not want any outside help of anyone. It was a great lesson for Kalam to learn that one should be self-dependent no matter what the conditions are. Kalam's brother lived for 103 years. Kalam saw a reflection of his father in his brother.

Once Kalam received a personal invitation to inaugurate the 100th year celebration of Sree Sree Sivakumara Swamigalu at Siddhaganga Math in 2007. When Kalam reached there he saw a mammoth gathering of lakhs of devotees, who had come to greet the seer. Many political and spiritual leaders were also present on the occasion. After everyone had spoken, Swamiji got up to give his speech. He blessed his devotees. Kalam was astonished by the scene. The saint was 100 years old. Despite this he was standing erect and smiling while delivering his speech. Kalam was amazed at the saints' retained energy and enthusiasm. The reason for this Kalam analyzed, could be altruism. The Saint had created hundreds of educational institutions, many orphanages and had fed thousands of needy people every day. His tireless mission of providing services and his efforts to eradicate illiteracy and discrimination had helped many people in the region. The lesson that he learned from the saint is that if you give more to others you receive more in return. This lesson has been described by Kalam in the form of poetry: - What can I give?

O my fellow citizens,

In giving, you receive happiness, in body and soul.

You have everything to give.

If you have knowledge, share them with the needy.

Use your mind and heart, to remove the pain of the suffering,

And cheer the sad hearts.

In giving, you receive happiness.

Almighty will bless al your actions. (70)

The poem is a real education bringing in the biggest wealth to one's life. Kalam worked in different fields and in various capacities, such as Director of DRDL (Defence Research and Development Laboratory), Scientific Adviser to the Cabinet and also as the President of India. During this period of work he had the opportunity to interact with many great personalities like Dr Satish Dhawan, Dr Raja Ramanna, Dr V.S. Arunachalam, R. Venkatraman, P.V.Narsimha Rao, H.G. DeveGowda, I.K.Gujral, Atal Bihari Vajpayee and Dr Manmohan Singh.the association of Kalam with these people was extremely fruitful and it left an indelible impression in his mind. The lesson that Kalam learnt from Dr.Satish Dhawan who was his boss and chairman of ISRO is that when we

execute complex missions we face challenges and problems. He said that "You should not allow problems to become your captain, you should become the captain of the problems, and defeat them to succeed" (70). That was a great learning for Kalam and also for those numerous people who are engaged in complex missions.

Dr. Raja Ramanna and Dr.Arunachalam helped Kalam to recognize the value of individuals and hard-work and also how to get the right individual for a complex task. Kalam learnt from them that it is an important task to select the right person for the right job, only then the task can be accomplished in the appropriate manner, and if the task is perfectly accomplished, success is obtained.

R. Venkataraman was the Defence Minister when Kalam was working as the director of DRDL (Defense Research and Development Organization). He as a Defence Minister foresaw the needs of the country and made decisions according to the needs of the country.

Narasimha Rao was a clear- headed person and had a grasp on every subject related to the development of the country. Once Kalam was presenting a report on self-reliance in defence systems in 1995. During the presentation Rao quickly observed that the defence expenditure was less than 3% of the GDP. Rao stated that such a limit should not be put on such an important sector. Rather a strong defense system for the nation should be built. The GDP of a country continuously keeps varying and the expenditure on defense should not fluctuate.

Another incident took place when the DRDO (Defense Research and Development Organization) took up a follow–up programme for the Agni Missile System. Rao understood the need for developing the Agni Missile and approved a Rs 800 crore programme, based on a one-page proposal, without asking any questions. The programme was later approved by the finance minister, Dr. Manmohan Singh. Kalam was very pleased with the friendly behavior of Shri Narsimha Rao.

Kalam's final verdict on his meeting with stalwarts from different sectors was like this:

"The experience of meeting good people is an education in itself. I have been fortunate to meet more than my share of such people in various phases of my life" (72).

Works Cited :-

Gandhi, M.K. The Story of My Experiments with Truth. New Delhi: Colourful Books International 2008. Print.

India of My Dreams. Delhi: Rajpal and Sons 2009. Print.

Hind Swaraj. Delhi: Rajpal and Sons Publishing 2010. Print.

Kalam, Abdul. Indomitable Spirit. New Delhi: Rajpal and Sons Publishing 2007. Print.

Inspiring Thoughts. New Delhi: Rajpal and Sons Publishing 2007. Print.

Turning Points- A Journey through Challenges. New Delhi: Harper Collins Publishers 2012. Print.

www. Brainy Quotes.com /.. / Creativity. Html. 12 Sep 2015. Web.